

सदैव छल काण, आधमी मतमेद शत्रुक
 विधापय उभुत्त क सकै छल । जनि
 बर्मानो काळ धरि एहन तत्व मानल
 जाइए जकर नाम पर कायि-इकरा ओ
 संगल रहइत हीत छल ओ बाहरी
 आक्रमे सं देश के रक्षा लेल ओ
 अवसरक छलक—स हेतुम हुंका भलि
 रक गीत छिखय पछलनि ।

कविगीत विद्यापति महान स्वामीशाली, ओ दार्शनिक छलाह; महान राजनीतिज्ञ साहि विप्राधिक युगारथा आ हथ्या आ ते महान कवि छलाह। ओना बेर पढ़ने ओ तबओरि पढ़इने छथि सानि वातावरण-परब कोटीक दरवार तक पहुँचै कलि छलाह आ सभ हीरागढ़ ओ मूळतः कवि छलाह आ ऐकतरीय हुनक हाथियार छल। एकर बाद ठाम जेत प्रयोग अमेखित हुमखनि— तहिना प्रयोग केहन। मैथिलीएक नहि समस्त आधुनिक भारतीय भाषाक पछिल कवि छलाह। हुनक पदचाल ओ हुनके सं प्रभावित भय विभिन्न भाषाक कवि लोकनि अपन-अपन भाषा मे कव्य रचना आरम्भ करखनि। ब्रजभाषा मे सूर, अवधी मे तुलसीदास आ राजस्थानी मे मीराएल प्रतिभाक पथ निर्देशक सारण्डू विद्यापतिए मेलाह।

कविपति विद्यापति के वीर कवि, भक्त कवि, श्रृंगारिक कवि आदि आख्या देखे जाइल आ सगरोहु अपन रचनाक आधार पर से ओ छलाहो किछु ओ मात्र वीरकवि वा भक्तकवि वा श्रृंगारिक कवि नहि अपितु एक संग सम छल। परबब सभ रहितहुँ प्रतिभा से सज्जन छल। परबब सभ रहितहुँ मधुतः ओ महान प्रगतिशील कवि छल। लोक कवि छल। ओ मात्र लोकभाषा मे रचनाएटा नहि बैलनि अपितु लोकक वाद दिखलनि। सर्वसाधारणक ब्याप—कथा, ओकर इच्छा—आकांक्षा केँ ओ अपन रचनाक आधार बनओलनि। एकदिल सामाजिक दुःखदेयक सजीव चित्रण कर ज लोकक आन दहि दिस आकृष्ट कइलनि त संगहि दोसर दहि दहि से मुक्तिक निमित्त दिया संकेत सेहो कएलनि। 'बैदान केहुँ' भोला गरिबक दिन, एकटा जे लोटा छलनि वेटा छलनि तीन' एवं 'नित उठि गौरा शिव सं मनाबधि, करू नै कटा दस खेत' मे ज पहिल गरीबीक चित्रण आइ त दोसर भाक—मइसाक परिचालक। एहिना 'पिया मोर बालक हम तपही' मे सामाजिक कुुरित आन सेल विचार पर सार्वजनिक व्यंग कइल गेल। अपन धरौंसम विरोधोपकार करणे कविपति गीत सभ ओतेक लोकप्रिय भेल जे एतेक दिन बीतलाक पसतओ अपन लोक—प्रियता केँ मात्र अछुण नहि रखने आइ, अछितु तार मे पूरे बुझि कला मे पूर्ण—रूपम सकल रहल। सात—सात सज्जन छल। लोककंद मे अचिकल प्रगतिद होइवला काव्य विस्तारहित्व मे मरिखक एकर अति—रसन आन नहि भेटि सकल। ओतेब नहि अपन मूल रूपहि मे मिथिलाक सीमा अति—रामक लोक एकरा अपन मानलनि। ई कविपतिन लेखनीक जादु छल जे पदावलीक

परम्परा सम्पूर्ण पूर्वी उत्तरी भारत में चलि पड़ल जकर अन्तर्गत बौद्धिक रूप से स्वीकृत नासल मुदा, बिचिचित भाउनिहारे पादाली यिक । ई दिन के मुमुक्षु नीलक प्रभाव छल के नैहिले सँ अतिनिर्मल शोधसँ परलत केविक कोकिलि सैपली । केविक ज्वालक प्रयास वैदलित आ मुलकय सँ निमल शिवाक कारणे सै ब्रह्मलुकि नामे पादाली सलिलक निर्देश भाषाक रूप में परिचित यमोदक ।

कविपति विद्यापतिक गीतक नायक
हुण्ड आ उमना अडोकिन नहि लौकिक
छथि—लोकप्रतिनिधि छथि। रामकृष्णक
प्रेमलीलाक आधार मानवीय भिक आर मे
सय शिव आ हनुमक सन्निवेश अइ।
विद्यापति निर्निबद्ध जीवनपाशक छलाह
कारण सुन्दरताए सब भिक आ सयै शिव
भिक। तहिना विद्यापतिक उमना आशुषण
चाकर भिक, सेवक भिक आ सेवा धर्म
मानवक सख देव धर्म यिह—इन्दुरिय
यिह—तै उमना केँ विद्यापति महादेव बना
देत छथि। एकरा उग्रताबादी वा
वासवताबादी भनहि केँ कुनू दृष्टिकोणक
नामे अतिश्रुत कएल जाय परब ई भिक
कविपतिक दृष्टि हुनक आन मौलिक दृष्टि।
ओना धार्मिक दृष्टिकोण रसनिहार समा-
लोचकण उमना केँ विद्यापति महादेव
मानेछ केँ विद्यापतिक भक्तिभाव तँ अप्रति-
मए हुनक साक्ष्य लेल चाकर बनि आयल
छल। ज एहूँ दृष्टिय देखल जाए तँ भारतीय
साधक ओगी नै विद्यापतिक स्थान सखत
उपर अइ। रामकृष्ण परमांस केँ कालीक
दर्शन प्राप्त भेल छन्हि त ओ अवतारी
मानल जाइत छथि, साठठाम महादेव
जनिक चाकर होथि तनिक करे की ? ओ
सरलहुँ अलुनीय छथि। किंबदन्ती अइ
जे केँ देवदासना काल मे स्वयं गंगा चारि कोस
उपर आ केँ अपन प्रिय रतना केँ कोरा मे
अडुआ अलैन। किम्बदांतिय मे विद्यापतिक
कोरी—से जे कुनू क्षेत्र मे भक्तकेँ प्राप्त
होएत।

कविप्रतिक, रचना प्रकटित सं हुनका
सर्वाधारण सं रणदरपारपरि आदर समान
देखनोन त दोस दिस पडिस कां द्वारा
उपाख्य - उवाहस सेह । नव काकोशर
अभिनव अवदेव, काकोशक कविप्रति
आदि उपाधि सं हुनका विप्रतिपद्य एहन
अहं हुनक प्रतिभाक स्त्री मूल्यवनक
आधार पर देहे गेल अछि हुनक पयसी
काय गोपीन्य दास द्वारा । कनिकाकिल त
हुनक उपाधस मात्र लेल तपखानि पंडित
द्वारा कल आन आ तहिना अभिनव कव-
नदेव हुनक प्रतिभो कें छोट क अंधकार
वदयन थिक । ई निम्बिद जे गीत गोवि-
न्दक रचनाकार अवदेवक परम्परा कें आगू
पहुँचत संव सही आ सदाक करातल देत ई
पारि धीन नहि रहलह । पतिनिहि कहि
मुकुन्द जी जे हुनक प्रतिभा बहुमली छल
उपाध छथि । रामदयाल नै रहितु ई
रामदयाल नहि वनि एकदम यम लोक काव्य
रसलह । ई दयाल सं प्रभावित नहि भेलाह
रहितु दयाल हुनका सं प्रभावित नहि भेल ।

[illegible]

बाढ चढ दिग्गजवद् भाषा
 दुहु नहि छगार दुग्जन हास
 ओ परसोत्तर हर लि सोहर
 ई गिबवद् नाअर मन मोहक
 देखिल क्याना सब जन मिथ्या
 नै तहसन जापओ अथवा

★

मैथिली विश्वविद्यापीठ केन्द्रीय विश्वविद्या

[illegible]

डा० दिनराज शाण्डिकर
कुलपति

डा० हरिनारायण डा
कुल सचिव

सम्बन्धन तथा परीक्षा केन्द्र स्थापना

मैफिली, विषय विद्यापीठ केन्द्रीय विश्वविद्यालय संक्रमणोन्मेषधाम दरभंगा तं
शैक्षणिक संस्था सादरधन परीक्षा केन्द्र स्थापना अथवा मायत्ता चारैत छथि ओ कृत
चारि सै टाका नरीक्षण शुल्क धंग अपन विक्ली अविश्वभर मसुदु करथि ।

डा० ओमप्रकाश शाण्डिल्य, कुलगुरु

नेशनल मेडिकल रजिस्ट्रेशन बोर्ड

नेपाल मेडिकल राजिष्ट्रेशन बोर्ड, संकटमोक्षशाला, दरभंगा द्वारा आर० एम० पी० ए० पी०, आर० एम० एम० तथा आर० एम० ए० के प्रमाण पत्र अनुमति एवं मौखिक परीक्षाका आधार पर प्राप्ति कलाक लेख ३५०-टाका में नियमबद्ध एवं प्रपत्र प्रा कएल जा सकैछ ।

डा० जयनारायण शास्त्री, सचिव

(विभाषन)

दू गोठ कविता

(गत अक्टूबर में कलकत्ता में मैथिलीक एक पत्रिका दृष्टि रखल बल जा दोसर पत्रिकाक बनम बेबाक तैयार आ ओरिआखोन भऽ रहल बल । अक्टूबरक पारिस घराइ से पढ़ी मनःस्थिति में लिखल दू गोठ कविता)

(१)

हमरा लोकनि भाखाकें
भाखा नहि रहऽ कऽ मगहोवा खुरचनि बनौते की
पहि खुरचनि केँ अहाँ पूबसं विचैत की
हम खोका पकिड़मसं विचैत की
पचीस बलसं पहि खुरचनि पर बहुल करैत
हमरा लोकनि अपन-अपन जोह बहार कयने
हउनि रहल की
बहरा लोक मन्दिरने स्थापित करैत अछि
तकरा हमरा लोकनि बच्चोंक नोक पर टकने
फिरेत की
पहि देराक हुकमुक लोक
हुटोक धारी ने चलैत अछि
ई हुटोक धारी अतुरागित तँ एहने अछि
जे हिल-गति विहीन बारा तकैत अछि
प्रत्येक घुटोक धारी
बिनिसे दिस बनैत अछि

(२)

हमरा लोकनि भाखा केँ कहियो नाओ बना देल की
पहि नाओकेँ लेबबा लेल सभ क्यो तैयार होइत की
नाओ खावत गाड़ी पर रहैत अछि,
हमरा लोकनि बघात में कठआरि खुमबैत की
नाओकेँ खलन पानि में घड दिओक
तँ बेसो काल खुल तमारा होइत अछि
लोक कठआरि केँ पानि में
बल्यबाक बदला में
ओकरा दहोदिस चलबैत अछि
नाओ ने आगो आइछ, ने पाछो
ओ ठामहि ठाम
बकभाथ देहऽ लगैत अछि
घासक कछेर पर ठाढ़ कलको डोक
बैत-बैत एकै तमारा देखैत अछि
ई नाओ कहियो कोनो मोहनिसे नहि
सुखल बाहु पर हुवल अछि
प्रत्येक बेर हुटो सभ
बिनीकेँ बोगामे मुइल अछि

—जीवकान्त

मैथिली पोथी/पत्र कीचू आ पढ़.
नेपाल सं प्रकाशित मैथिली दू मासिक

अर्चना

संपादक :—राम भरोस कापड़ि भ्रमर
संस्कर्ती स्वदन, जयकपुराण, नेपाल
शाब्दिक सं प्रकाशित मैथिली + हिन्दी दू मासिक मासिक

मिथिला दोष

संपादक : बबन विहारी

१४६, ललितपुर कोठी मैथिली ग्राहिक-४७४००६

मृत्यु अभिमन्युक

(जीवकान्तक निमित्त—हुनक हुन कविताक संदर्भ में)

राजु निर्मित
सात-सात टा बक्रयूह तोड़ि
अपराजेय अभिमन्यु
अखन आपस अवेछ
त
आछिगन लेल आकुल
इबार-इबार स्वजनक हाथ
ओकरा आबद्ध क लेब छैक
आ तेखन
पड़ैत छैक ओकरा पीठ पर
स्वबानल
एक नहि अनेको द्वारा—
ओ आर्त्ताइ त नहि करैछ
अनहि केँ वकैटा अछि
आ खसि पड़ेछ—
ओता
महाभारतक ओ कथा
सुन्दरे नहि
बाकबंदी बनसै छैक
जे
सातस द्वार भेदकछा सं अनिनिब
राजु सं बेरल
अछार अभिमन्यु
राजु केँ प्राप्त भेल छल
आ खरिपहु
अभिमन्युक मृत्यु
परिणाम होइत छैक ।

—राम लोचन ठाकुर

मिथिलांचलक विकास

मिथिलांचलक प्रायः पहाडक पी की
आनादी केँ नीक जेका मोजोने प्राप्त नहि
होइत छैन्हि । प्रति वर्गमील आवादीक
खेती-बाती सं गात होइत अछि जे संसारक
कोनो भाग सं आवादीक दबाव सेहो होव
में बेसी अछि । कारण येह में सकैत अछि
जे मिथिलांचलक सामाजिक वातावरण
बढ़ि रहल अछि । अनुशासन युक्त भ गेल
अछि । माई-बाराक स्थान पर माओव्ला
आबारे प्रोत्सा-धारीक बाजार गर्म अछि ।
आध्यात्मिक शानक लोप माए रहल अछि ।
नहि होइत अछि । वेद सं तोषक कार्यक्रम
कर्म आब एक परिपटील रूप में मनावल
ख रहल अछि । समाजक लोक केँ एक दोसर
केँ शकक दृष्टि सं देखैत छथि विद्यालय
नामक चीज समाप्त माए रहल अछि ।
पाहुन केँ रात्रि विश्राम हेतु आबैत मज
लोप छैन्हि रहल छथि । एहि प्रकार
समाजक जे एक थं छला छल टुटि रहल
अछि । मुदा ई सभ क्रियेक, कोन लाभक-
प्रयोजन सं ? एकेटा उत्तर अछि जे आध्या-
त्मिकताक विखानलि दए मौलिक वादी

विचार धारा में सकल समाज बहि रहल
अछि । टाका कोनो सुल-सुविधा प्राप्त
करबाक साधन मूलतःकेँ मुदा साध्य बनैतो
नहि छल, नहि होइत । सर्वत्र टाका कम-
नाक होव लागल अछि । जीवन स्तर, दान
खर्च, शिक्षा-वीक्षा, खान-पान, आमोद-
प्रमोद, स्वास्थ्य-विनोद, संगीत-नृत्य, कला-
कौशल, साहित्य, आध्यात्म आदि कस्युगी
रूप धारण करै लेने अछि । विवेक, त्याग,
सौंद, सहिष्णुता, अनुशासन, परांपरा,
संत संगम, शुद्ध भोजन आदि केँ पेश सं पेश
व्यक्ति देखा देली में अपन संस्कृति केँ
नाष्ट क रहल छथि । किछु लोक अंगन
फली आ पारिवारिक सदस्य सं अछिड़ी किम्बा
शुद्ध हिन्दी में बजैत छथि । मैथिली नबवा
सं ध्वजारत छथि ।
शीर्षक पुरान अछि मुदा अखर आवि
चुकल अछि जे मिथिलांचलक विकास कार्य
गतिशील बनावल जाए । एहि लेल प्यार-
व्ययक अछि जे ग्राम, प्रखंड, अबर,
प्रखंडल आओर राज्य स्तर पर विचार
गोष्ठीक आयोजन हो आ गोष्ठी द्वारा
पातलि प्रस्ताव केँ सरकारक समक्ष राखल
जाय । गोष्ठी द्वारा एक शक प्रस्ताव
पातलि करब आवश्यक अछि ।

अजयुत-अनटोरल

महाराष्ट्रक अतृपूव सुखमन्त्री श्रीमान अतृपुले सारिक चार समस्त विवादास्पद मुल्य मन्त्री छथि बिहारक स्वाम्य. अतृपुलेक डा० श्री जलनाथ मिश्र। ओना त दिका में बड़-भड़ गुण अछि—को बड़ छोट बड़त अपराध—परज समस्त पिय गुण—ओना कि पक्कार लोकनि कहैत छथि—छति, प्रुति बबबा मे प्रीणिता। मिथिला मे एगो बड़ प्रचिछित फरक छैक—छादय, पादय ओ आँघाय, सब न बाजय लौ मरि जाय। लोकक फल छैक जे ज उपरोक्त तीन श्रेणीक लोक मनहि सब बाजियो काय किहु आहुक राजनेता आ खास के काप्रिस (र) क नेता किहु लय नहि बाजि सकैत छथि। आ ज एकाध गोटे भूल सँ एक आध लय बाजियो छथि तेरो स्वनामधन्य डा० सोबेन त सब नहिरोटा बाजि सकैत छथि। जेना कि कुनवा मे अवेछ, मुख्य मन्त्रीक शयष लेवा सँ पहिने डा० सोबेन दू गोटे मल्लपूर्ण शयष से हो लेने छलार। पहिल त मिथिला, मैथिल-मैथिलीक विनाशक आ दोसर लय नहि बननाक। पहिल शयषक निर्वाह ई नीक बर्का करैत आबल छथि—से त हमके शते छति परन दोस्रोको निर्वाह से ई पाछू नहि छथि तकर टटके उदाहरण भिन्न—मधुबनी मे अमन दखक भवनक उदघाटनक समय दिका द्वारा देल गेल भाषा। पहिलाम ई कहलनि जे गिनक सत्कार मैथिलीक संवधानिक मायता लेल 'हुत वक्य' अछि तथा मैथिली अकादमी के एहि बर्ले चारि लाख सरकारी अनुदान सेटकेन-य। पहिलक संदर्भ मे जेना कि ई अपने कलत छथि एगो ब्यक्तिगत बिधी प्रधान मन्त्री के लिखने छथिन.... 'बर्हा धरि दोसराक बात अछि मिथिला मिहिरक सम्पादकीय सँ स्पष्ट पता चल्छ जे मात्र पत्रकारि हजार टाकाक अनुदान अकादमी केँ देल गेलछ। ओना ई दिग बात मेल जे जलनाथ मिश्र चारि कोटि लोकक भाषाक उद्धानक नाम पर बनल अकादमी केँ (ओना काजक लेल ई अकादमी हिनके स्वजनक पोषण करैछ) जे अनुदान देत आबि रहल छथि तार अनुपाल मे भोजपुरी अकादमी, एको प्रति-शत लोकक भाषा नहि रहैत हिन्दी अकादमी आ हुनके अनुहार 'दा प्रतिशत लोकक भाषा' उर्हू अकादमी के क्लोक अनुदान देत छथिन से नहि कबत छथि। से जे हो, किन्तु हमरा लोकनिक सुनाव ज 'नोकेल पुरस्कार कमिटी' मानय त ओकरा फ्रति क्लानिहारक लेल सेरो पुरस्कारक घोषणा करक चाहियेक आ एकर पहिल पुरस्कार डा० श्री बिहारक मुख्य मन्त्री बी. जलनाथ मिश्र साहेब केँ देवाक चाहियेक।

नबनी-दिहरी, १३ मर १९८१ केन्द्रीय सरकार-एक लेब फेर परिछा देलक जे संविधानक आठम अनुच्छेद मे आर. बेरी भाषा केँ शामिल नहि कएल जायत। ओना परितोषक लेल, ओ कहलक जे राय सरकार सम-अन-अन रायक ओहू भाषा सब केँ, जे संविधान सँ बाहल अर

विभाजक लेल छुविना सुयोग देक - से उचित।

प्रसन्न उतरल छलैक मैथिली, नेपाली, डोगरी आ मनिपुरी भाषाक संवैधानिक मान्यताक। मैथिलीक लेल ५० वंगालक सरकार विधान समी स एहि संदर्भ मे प्रस्ताव पास कए 'केन्द्र सँ बहुत पहिने अतृपुले जना सुख अर तथा नेपाली भाषा अंचल मे सरकारी समस्त काजक माध्यम भाषाक रूप मे एकरा मान्यता ओ ब्यवहारिक रूप द चुकल अर। मनिपुरीक लेल सेरो ओकर सरकार केने छैक। पाछू अर डोगरी आ सब सँ पाछू मैथिली। मैथिली मात्र बिहार सरकार द्वारा, अवेरिलेटेड नहि अर, अपितु वृणित षडयंत्रक विचार भेल अर। ओना कनता केँ आबो अवेसे इभक चारियेक के जलनाथ मिश्रक हयोर शैली भाषण मे कते सख्या छैक आ हुनक नोर सरियहुँ बरिपाली नोर सँ बेनी नहि।

—बचित बरका

आहुक सुग से राजकीय मान्यता



सायदा देवी

पुत्री : स्व० ५० गणेश मा

कोकन

पत्नी : स्व० सुरति ठाकुर

बाबूपाली

मैथिलीक दुवा साहित्यकार एवं मैथिली मुक्ति मोर्चा कलकत्ताक संतोषक श्री राम लोचन ठाकुरक पुत्रीया मां श्रीमती सारदा देवीक आत्मिक देवदत्ताम जगमया साहि बर्लेक अवस्था मे अपन गाव बाबूपाली मे निवत २ अप्रील १९८२ केँ मय गेलनि। ई कुछ बर्ले सँ गेलिक ब्यापि मल छलीह। ई छिलिया-पडिया, गीत-नाद मे पूर्ण षडु ब्यवहार कुशल ओ धर्मपरायण महिला छलीह। स्व० सारदा देवी अपना पछा एक मात्र पुत्र, पुत्रकुं, तीन पुत्र ओ दू पुत्री के छोड़ि गेल छथि।

'देसिल बयना' चन्द्राक दर :-

१ प्रति ५०, परसा
१ बर्लेक ५) टाका
५ बर्लेक २०) टाका

पाइ पड़ेबाक पता :-

श्री जनार्दन मा,
१७६१६, उषा नगर,
कलकत्ता-७००६८

विज्ञापन दाता लोकनि सँ:-

'देसिल बयना' मे अपन विज्ञापन दय काम उठाउ। कम बर्ले मे सुदर ढंग सँ अधिक प्रचार एक मात्र साधन।

सम्पर्क करू
विज्ञापन व्यवस्थापक
अपराधिय प्रकाशन,

देसिल बयना

पाठकीय परिवारक (साहित्यता) सदस्य
३८. श्री रामचन्द्र मां, उषा नगर, कलकत्ता
३९. प्रबोध मा
४०. स्मरल नारायण कर्ण
४१. सुबान्त मिश्र, उषा नगर,
४२. लखनारायण मा
४३. कान्ति बिहारी मिश्र
४४. सुप्रेत ताप मा, रंगकल,
४५. खुशीलाल मा, बड़वाजार,
४६. राम नारायण मिश्र, उषा नगर,
४७. अशुत काठ करण, कलकत्ता
४८. कलत्र मिश्र, नदारी, दक्षिण
४९. विश्वनाथ मिश्र,
५०. कुमारी स्मृति मा, कलकत्ता
५१. बालाधाम मा, डामरलेख

मिथिलाक कलकत्ता

मेथिल, मैथिल मेथिल दुहा मैथिलीक दर्शन कलहु नहि मेळ ॥ मैथिलीक विज्ञावा पर स्वयं देयटा उतर मेथिल-मेरे अंगले मे तुम्हारा क्या काम है ???

पत्र सुलाक मुँह जकां जतने बड़ल बा रहल अछि तें आब पत्र केँ समाप्त करैत अपने सँ कलहु प्राधान्य कइ रहल छी-जे ललहु-मकली, अहाँ केँ जे मोन हो से लिखू-जं चाही तं एडवांस मे अपन मयु गीत पंथ लिख सकैत छी मुदा भाइने-वगलायवाबूक विरोध मे किहु नहि लिखी ओ मैथिल विचार, हुनकर मातृभाषा मैथिली छनि मने ओ लट्टी 'अपन लोक छथि तें अपन लोक केँ देलार' कल उचित नहि। शेर कुशल।

अरीक

—विश्व धचित

मिथिलावासीक माड

१. मिथिला राष्ट्रक निर्माण हो।
२. मैथिली केँ अन्तिम लिखक संविधानक आठम अनुच्छेद मे स्थान हो।
३. समस्त सरकारी। अर्थ सरकारी प्रति-योगितामूलक परीक्षा मे मैथिलीक स्थान हो।
४. मिथिला मे निम्नतम सँ उच्चतम स्तर धरि शिक्षाक अनिवार्य माध्यम मैथिली हो।
५. मिथिलाक मध्यम राजभाषा मैथिली हो।
६. मिथिला मे सरकारी कल कारखानाक स्थापना ओ विकास हो।
७. मिथिलाक कृषिक अवस्था मे सुधार हो आ एहि निमित्त रौंदी दही सँ मुक्तिक व्यवस्था हो तथा यातायातक सुव्यवस्था हो।

—रामाधार मिश्र -
पालि-मैथिली मुक्तियोर्वा,
कलकत्ता

सभा-समिति

● कलकत्ता, १८-४-८२। पूर्व बोपण्णक अन्वेषण मैथिली मुक्ति मोर्चाक बेगार स्थानीय उपभोगर विद्यालय से मेले। मोर्चाक संयोजक श्री रामलोचन ठाकुरक पुष्पनीया माताक देहावसान २-४-८२ के म जेबाक कारणे ओ अनुपस्थित छलह। उपस्थित सदस्यगण एहि आकांक्षिक एवं अत्यधिक निश्चय पर एक शोक प्रस्ताव पारित कएलनि तथा दिवंगत भगनाक चिर शान्ति कहै ओ ओ शोक सतत परिवार के शाहस आ धैर्य प्रदान करबाक हेतु मां मैथिली सं दू मिनिट मौन धारणा करल गेल।

तमाक अग्रिम कार्यवाही - स्थगित राखल गेल।

(द्वारा-जनार्दन मो, सह-संयोजक)

● कनसामपुर (दड़िमंगा), १२-३-८२। दड़िमंगा स्थित साहित्यिक संस्था कौशिकी, प्रकाशना से पहिल बेर एहि अवसर मे कवि सम्मेलन एवं सांस्कृतिक प्रोग्रामक सौभाग्य सम्पन्न भेल। कार्यक्रमक शुभारंभ श्री उदयकांत मिश्र एवं हुस्नी कन्द भा द्वारा श्री वेदनाथ विमल रचित 'मरावती कन्दरा' पूजा कौन करी हे भवानी' सं मेले बाद से तबला वादन क रहल छलह श्री हुण मोहन भा।

उद्घाटनकर्ता प्रोफेसर लेखक प्रो० डा० नित्यानन्द भा अपन उद्घाटन भाषण मे ग्रामीण जनता सं अपन भाषाओ साहित्यक प्रति सतत जागरूक रहि मैथिलीक उद्योग लेल अभियानक आह्वान केलथिन प्रो० डा० देवानन्द भाक अध्यक्षता से प्रारंभ भेल कवि सम्मेलन मेले बाद से सबसँ हुनका मोहन भा, जय प्रकाश चौधरी जलक, गो० देवकांत मिश्र, प्रो० विमल तारपण ठाकुर, वरनाथ विमल आदि भाग लेलनि। कार्यक्रम धर्मार्थगत धरि चलत रहल। सांस्कृतिक कार्यक्रमक मुख्य आकर्षण छलह किशोर गायक श्री अरविन्द कुमार भा केदार चन्द्र मिश्र कुमार काल ठाकुर ओ अलग कुमार भक्त गीत सेहो मनोरम छल। संचालनक रहल छलह कौशिकी संयोजक श्री वेदनाथ विमल।

कौशिकीक अध्यक्ष श्री सानन्द रेणु अपन संबेदा से कहलनि जे जाधुरि गामक माटि नहि जागत ताथरि कोनो कानि नहि म सकत। एहि लेल ग्रामीण लोकजीवन सं अछड़ म क भाषा ओ साहित्यक उद्योग लेल अभियान करी। ग्रामीण जनता दित सं तब श्री केदार नाथ मिश्र, देवेंद्र नाथ भा, देवकांत भा अपन-अपन उद्गार व्यक्त केलथि। 'अन्त मे स्वागत समिति दित व श्री विष्णु कुमार मिश्र कव्यवाद शोषण केलनि।

(द्वारा-बंधनाथ विमल)

● कलकत्ता-१-४-८२। मिथिला सांस्कृतिक परिषदक द्वारा कबीरदा कन्दरा भा (कबीरदा जोड़ि देनाइ हम अवसरक बुनौत छी ले०) कवयित्री स्थानीय श्री सनातन धर्म विद्यालय से मनार्थोल गेल भक्त अन्धश्रुता केलनि परिषदक आयोजन हेतु निशुक्र स्थानी अध्यक्ष डा० श्री मुनीन्द्र भा।

अवगोप्य प्रकाशन, ३/३/४, डा० देवदार रहमान रोड, कलकत्ता-७०००३३

कलकत्ता-५ ने मुद्रित। सम्पादन-श्री जनार्दन भा

प्रधान क्या छलह डा० अशोक भा प्रधान अतिथिक रूप से मंचपर ल गेल गेलह श्री निरंजितु नी।

कार्यक्रमक आरंभ मिथिलाक जातीय गीत 'बन्ध-बन्ध मेरा' सं भेल जकर गायिका छलीह दुमारी हेमा। हेमा अपन गायन क्षमता सं कनेकालक लेल लोक के अपन गामभर ल जेबा से सफल रहल। ओ आरो बचकटा गीत गयोलक। ओकरा ने पूर्ण प्रतिभा छैक आ जे अन्यास करय त नीक गायिका बनि सकैछ।

कार्यक्रम पूर्ण अवसांसि छल एकटा गीत आ एकटा भाषण आ बीच से अन्ध-धीय अनुशासन। समस्त अक्षरह बात त ई मेले जे कबीरदाक छवि उपलब्ध होइतहु मंचपर नहि छल आयोजक लोकनि मारिक एक सलाता नहि हुसलनि हम सं महत्वपूर्ण भाषण छल प्रधान क्या सोदेबक। ओ कबीरदाक रूप प्रकाश केलनि कारण से केनाइ आवश्यक छलनि-मनरि हुनक रचना पढ़ल नहि छलनि, जे धननहि जगलह पढ़ब मैथिलीक आधुनिक कविता जे रिकसक उर्ध्व भाषाक कविता सं पाछु नहि अछि। तब ओर निन्दा केलनि। ओ ग० कला छलह ते हुनक पैसा के ई अधिकार भयले छलनि जे छहपि के मंचपर चढ़ि जायि आ अओर बूढ़। हाथ उठाउ। फटाक-पढ़ि लेथि-दल बल धरि डा० छोटका ओह ठाम हाट-बजार देखलक पक्काव पी एच० डी० क उपाधि पयोनिहार डा० अलापनी भा अपन पौत्रक पदाओल पाती के दोहावत अपन कविताक निरपेक्षाक बात कहलनि। डा० भा के हुनक चारिनि जे राट-बजार नहि सेरेत छैक। तहिता जे प्रधान क्याक एहि आगे स अध्यक्ष महोदय अपन वक्तव्य प्रकट केलनि त अचलै की? हुनको हेतु डिग्रीक अर्थ काकरीपेटा छनि जकर आ आधुनिक साहित्यक संसार हुनक शानक परिचय की इच्छा तसमति प्रमाणित नहि करैछ?

एहि अवसर पर श्री बाबू सतीष चौधरी अवल्ले कबीरदाक प्रति अस्सी श्रद्धांजलि मैथिलीक रंग, विकासक बात कहलनि जे आयोजनक उत्कृष्ट मानल जा सकैछ।

खेदक संग लिखए पड़ि रहल-ए जे ई आयोजनी संस्था-सम आरंभरि आयोजनक महत्ता नहि बुझि सकल-ए। उर्ध्व निरर्थक बयनी वा स्तुति दिव्य मना के द्वारा लोकनि हुनक नहि अपितु अपन, अपन देव समाजक उपकार करत छी। निरर्थक स्तुति दिव्य एही लेल आवश्यक जे हुनक व्यक्तित्व-कृतित्व सं शिक्षा ह्य हमरा लोकनि अपन देश-भाषा-सांस्कृतिक विकास लेल साथ ही आ काब करी। ते आवश्यक छैक जे मातृ विद्यापति आ कबीरदा चन्दा भा के स्तुतिपेटा नहि-मौनसं महोदयक स्तुति पर्व, व्यापारीस्वर स्तुति पर्व, महो-कवि डाक आ छाल दास स्तुति पर्व मनाओल जाव। आवश्यक छैक महामाजी लोरिक, सबेरस दीनामंदी आ रामग

पाकक स्तुति दिवस मनार्थोल जाय। मिथिलाक एकगरी इतिहासक पुनरावृत्ति आत्मबली प्रमाण थिक-एहि सं निश्चित सेनाई मिथिलाक कल्याण छैक।

मातृ अक्षरका मे नाम छपेवा लेल आ अनरा मे कनरा राखा कथाक छोमे एहि तरेहु उर्ध्व निरर्थक नाम पर प्रभावक उद्घा-नाइ हरिपुर् निन्दनीय ओ लज्जास्पद थिक। (द्वारा-अमरूल)

चिट्ठी-पुरजी

'देखिए बधना' क प्रति मेलेछ। जे के अधिकार दिखलए ने अनेके ई पत्र सदस्यक पत्र प्रदर्शक काजेटा नहि करत बल्कि मिथिला मैथिलीक अनुपस्थान लेल प्रकल संलक संग देना सं डेना मिलकए जन बागल आ चेतना प्रदान करत से आवा अछि। आबुक मिथिलाक अनेकानेक व्यूत कुम्भकर्णी निद्रा सं ग्रसित मय अस्या के पगु कएले आ दल छथि। आवश्यकता छल अनेक एहन विमुक्त फुलनिहारक से आवि गेल छी प्रवर्षी मय देनिल ब्याना लएक एहि बधना के शीतार कए हम अस्या के छुप-छुप आ वय्य बुझि रहल छी।

एता परिकारक आन दल सेहो कम दिग्भार नहि अछि, आ समाजक लेल अनेक एक-एक आखर राम बाण जकां फाव करत से विकास अछि।

—श्री देव का, हिन्दू-मोटर सम्पादकी 'भील नहि अधिकार चाही' देखि मन गद-गद भए गेल। हमरा लोकनि

बागलौल

मामा, आव बुझैछी!

मामा, अहाछो सोकटिया से आव बुझैछी।

अहां कतेक सदाछो से माव बुझैछी।

मामा आव बुझैछी।

रसकूल मे माट सब, बेर बेर करै छथि।

अहांकर जमकल, सुलभ के मानै छथि।

सुलभ सेने तिपचा, अहां काम बुझै छी।

मामा आव बुझैछी।

ज अपनेला लल मामा, हमरा ओ देव-पौ।

ओता चानीक कटोरीमे, दुधमात छेप-चो।

पतेक ताम-काम देखि, हमबोह कूचै छी।

मामा, आव बुझैछी।

सुदा दादोके सुरिखल छी, बातके दूकायब।

अहां जिना ते देते बट-बटीन गायब।

अहां जनुकेला कर्मिक मोक भवै छी।

मामा आव बुझैछी।

मामा, अहांछी कोकटिया से आव बुझैछी।

राम भरोस कामाड़ि 'प्रसर'

कह लोचन कविराय

-दूरक डोल सोहवन कहवौ छैक पुरान किन्तु मात्र कटौए नहि सुनियो रहलहुं कान सुनियो रहलहुं कान आसि सं देखि रहल छी मैथिलीक दुर्दशा हाल मिथिलाक कहब को कह लोचन कविराय विवेक एहन नवतूरक निश्चित पतनक सूत्र प्राप्ति बात त दूरक-

राष्ट्रमित्ररसना

वर्ष-२ अंक-६

जुल, १९८२

मूल्य-पचास पैसे

सम्पादकीय

सरकारी पुरस्कार आ मैथिली साहित्यकार

कुनू छोट स छोट आ पैघ स पैघ आन्दोलन मे साहित्यकारक भूमिका प्रगल्भ रहल-थ। साहित्यकार कानि द्रष्टा होइत छथि। ई युग पत्नी-पति के तोखि आन्दोलनक नव माटि तैयार करैत छथि आ पुनः आन्दोलनक बीजारोपण करैत छथि। प्रगल्भ एहीदाम दिनक काज शेष नहि होइत। ई अरुन रोचक आन्दोलनक बीच के माटि सँ चार मय विशाल दुधक रूप लेबाक, ओकरा कुछेना-कुरबाक समुचित परिवेष्टक लिखन करैत छथि, आततायीक हाथ सँ ओकर रक्षा लेल लवैत छथि। एक छोट क सेहो ओकर उपरोधिकताक मान का ओकर रक्षा लेल सचेतन जगवैत छथि। शेष मे जहन कि ओ गल्ल छल देत छैक त ई स्वयं खटि जात छथि। तँ साहित्यकारक ई गरिमा अह। ई मातः सरणीय होइत छथि, अनुकूलनीय होइत आ अमरता के प्राप्त करैत छथि।

कहू जाइत छैक जे काज, तत्सुधारि सं संभव नहि होइत छैक से साहित्यकार अरुन कर्मन सं जवाबि क वेट छथि। तँ एक दिस अं विपणन मानवताक इति दिनक फलस तिल-दिशा निरुद्धक लेल लुगल रहैल त-दोस्र दिस मानवताक शत्रु शोषक-शोषकक सेहो। पण्डित वर्गक हत्यार मे जतय आदरक भावना रहैत छैक त दोसर वर्गक हत्यार मे आतंकक। तँ पहिल उग्र जतय दिनक सहायक होइत रहल-थ त दोसर तिरोधी। परब साहित्यकार जनवल्क लहरोमे समल विरोध केँ भुल्लुंति करैत अरुन जखन पय पर अवि-राम चबैत रहैत छथि।

एहि दृष्टिकेँ जँ आधुनिक मैथिली साहित्यकार दिस तकरै छी घृणा सं मन भिनिनि बाइल, खबं माथा नत भ जाइत। किन्तु अपवाद केँ छोड़ि मात्रः सभ केँ उन अरुन अस्वीकृति चरित्र छोड़ि खान भवितिक परिचय द रहल छथि। इहए कारण अह जे एतोन-दिनक पसकतो मिथिला-मैथिल-मैथिली अरुन न्यायोचित अधिकार सं वांचत रहल-थ। मैथिली आन्दोलन जातीय आन्दोलनक रूप मे नहि स्थापित भ सकल-थ।

मानव जीवन मे भाषाक की महत्व छैक से आज लिखबाक लागता नहि। वर्तमान मे कनिष्ठ प्रदेश मे चलि रहल आन्दोलन जकर मुख्य माछ छैक 'कमल' के विभाषा फर्म, वर्तमान प्रथम अवस्थाक भाषा जेतेबाक-टटका उदाहरण भिज जे केना पब सं पब 'शान्ती' पुरस्कार विजेता साहित्यकार एकर नेतृत्व क रहल छथि। ओतबे नहि समेल बुझिबीनी कलाकार लोकनि एहि मे पूर्ण सक्रिय छथि। पडच नहि समेल साहित्यकारक कवयौचितक गल्प त पराक वाओ-विरोधे भेटैत रहल-थ। कुनू कुनू नवलिखिओ अति प्रगतिशील गीतकार त भूषक प्रथमता देखेबा लेल भाषा आन्दोलन केँ पुनित राक्षसीक संग बोझो सं बाज नहि आयल। पता ते हुनका जखन भूल अत छनि लेनाइ भाषा मे मंगैत छथि अथवा फेट डेढावय ज्ञात छथि। ओना स्वयं ई अह जे हरी गण प्रकाश करै छैक गीतकार महेन्द्र केँ भाषाएक सहाय केनय पकड़निहै। सं एक शब्द मे कही त मैथिली आन्दोलन मे सन सं कमल ई साहित्यकार जकर कनुर रहल-थ।

रहल होइत छैक जे किन्तु साहित्यकार जेतेबाक सहेल गल्लार आ तँ हुनका पय अह कुरबा लेल मैथिली तिरोधी विचार सरकारक देता जन्माय मिश नाना तकर दरबान रहैत रहल-थ। परी परबकक पडल्लुक किन्तु साहित्यकार केँ पुरस्कार देबाक योजना बनाल-थ। समाचार-सूचक व्युत्पन्न श्री नगार्जुन (पानी नहि), आरती प्रसाद विर भीरुन ठाकुर विद्यालंकार जयनाथ मिश आदिक नाम एहि योजनातगत अह। जहाँबि विद्यालंकार आ जयनाथ मिशक बात अह-हरो लोकनि जे साहित्यकार छथि से एही समाचार सं ज्ञात भेल। ओना ई लोक अवलसे जनेए जे जयनाथ मिश डा० जगन्नाथ मिशक सहर छथिन आ विद्यालंकार सदा सं मैथिली तिरोधी आ हिन्दीक प्रबल पक्षधर रहल-थ। सम्बंध मे पैघ आ मैथिली तिरोधी से पैघ देवाक कारणे ई लोकनि जवसे सरकारी पुरस्कारक योग्यता रखैत छथि।

जहाँबि महाकवि नगार्जुनक प्रत अह 'इमरलेडीक' समय मे ओ 'एरकारी चार' गायक संग अस्वीकार केने छथि आ तँ जे एहि खेर स्वीकार कलाइ तार मे पूर्ण अहैर। 'कविब आरती प्रसाद सिंह' केँ हिन्दी साहित्यकारक रूप मे पांच सैक मासिक इति कददन भेटि रहल छनि। पडच एहि बेर एकदुपरी दब दबाक 'तोरा' ओ स्वीकारैत छथि

संविधान बिनु मैथिलीक ओ
मानाचक्र बिनु मिथिला धान
छाहि जारि सुइह काब हस
विद्रोही मिथिलाक जवान

* मैथिली *

मैथिली—माने मैथिली भाषा हिना-
रुख स गंगा तक आ बंगाल स गंडक तक
प्रसन्न विद्याल बुझा-मुफला शल्य साम्रज्य
मिथिला देशक भाषा, तीन कोटि मैथिलक
मातृभाषा।

ओना ई सर्वमान्य अह जे भाषा कुनू
सात अक्षि वा वर्णक ना गंडक तक
मिथिला मे रहत भ्रामक प्रचार कइल
रहल आ एखनो कइल वा रहल के
मैथिली कुनू विशेष वर्णक भाषा थिक, आ
थोड़-बहुत अवरोध छैक एहि प्रकार शिकार
रहल। तँ एहि भ्रम केँ दूर करैक
छैक, हमरा कतबे।

भाषा पर रण करैकल उल्लाप भाषा
थिक की साइर विचार क छैक अवलक।
भाषा के विचारक सदा रहल रहल
मनुष्य सामाजिक प्राणी थिक। ओ मात्र
समाज मे रहित नहि अह बल समाजक
अन्य सदस्यक संग अरुन विचारक आदान-
प्रदान करैत, एक दोकराक दुल दुलक खोज
खबि रहैत, ओकर सहायी होइत आ ई
सम होइ छर भाषाक मायनो। कुल-दुलक
अनुभव पशुओ के होइ छर परब भाषाक
अभाव मे ओ प्रकट नजिक क सकैत जे
मनुष्य बड़ संजता सक छै। किन्तु भाषा
मात्र एतबे नहि, अवल से विचारक सात्व
रूप थिक। मावस भाषा के immedial
reality of thought कहलनिहै। भाषाक
बिना विचारक अस्तित्व ने रहैत। एहि स
हरो पता चलय जे मनुष्यक सामाजिक आ
विवेकील प्राणी हो भाषाक अत्यंत कारण
भेल। मनुष्य के अरुन मनक बात दोसर
के कइवाक तथा दोसरक बात अरुनक
आंतरिक इच्छाए कहिओ भाषा के जम
लेलक हैत आ भाषा एहि रूपे जम
हैत से निरिवात रूपे समाजक सभ सदस्य
छैक एकटा छैत, अथवा उदात्तक पूर्ति
संभव नजि छै। तेहर, भाषा मनुष्यक
छैल ज्ञाओल नेह वा पता कइ जे भाषाक

(रोचप्र मुष्ट छर २२)

वा नहि से त भक्तिमे बसत। ओना लकरी इति अनुभवक एक रसिकक अस्वीकार
कर एते अस्वीन उदात्त प्रकृति से छथि आ जवनी बरू तक ऊपरकट से
छैत छथि। परब तक नजिक इति हिन्दी ललक (१) नजिक ही से जे
क संग व रहल छथि। कुनू ने अवल से वल तक हलो रहल तक आ
रहल-थ कइ एहि तँ साहित्यकार लोकनि केँ पकल बाइत।
जहाँबि विचार सलाक प्रसन्न छैक ओ अरुन सदस्यो कलक केँ भरबा लेल हजारी
पडचन काबे फात, मैथिली आन्दोलन के अवसरक ए मैथिली विनाशक हेतु साहित्यकार
केँ कीनवाक प्रयास काबे फात पडच कि साहित्यकार सभ एते नीच, एतन दयाक पात्र
बनबा लेल तैयार अह ? कि विवेकक लेमामनो ओकरा लोकनि मे रोच नहि छैक ?
जँ सरकारी टुकरी फेकैत त निरिवात ओकर विशेष उद्देश-छैक, ओ प्रतिदान चाहेए
आ ई प्रतिदान एक मैथिलीक साहित्यकार सं मिथिला-मैथिली विरोधी सरकार की चाहेए
से ककरो स तुकाएल नहि। इतिहास साक्षी अह जे मां-बाप भनहि अरुन नेना केँ बीच
लेने हो—कुनू देना अरुन मां के हाट नहि चढओलक-ए। देसवाही मैथिलीक साहित्य-
कार लोकनि की कत छथि पडच कतना केँ, साधारण मिथिलाजानी केँ जवत इनाइ
परमावश्यक। जगन्नाथक दृष्टि शनिक दृष्टि थिक आ ते मिथिज-मैथिली पर लागि
बुल्लय—से हमरा लोकनि केँ नहि बिअवाक चाही।

विकासक मूल थिक संघर्ष। मानव
सम्यताक आदिकाइ स आइ तक देग-देग
पर मनुष्य के संघर्ष करै पकड़ैत आ पहि
रहल छैक ई संघर्ष विमर्शक विविध क्षेत्र
मे। विमर्श रूप मे होइत रहल आ
भाषा एहि मे लवयक सिद्ध भेटल। पहिने
कहि आयल छी जे कुनू विकास एकक
प्रयासे संभव नजि। स्वभावतः संघर्ष सेह
सामाजिक रूप मे भेटल। साहित्यक
अनुसार 'भाषा' शब्द वैचारिक आदान-
प्रदानक माध्यम थिक, तले संघर्षक आ
सामाजिक विकासक साधन सेहो।

आज ज विचार करी जे भाषा संघर्षक
आ विकासक साधन केना थिक त केर
शिक्षाक वर्ग कब अवलक। शिक्षा भेल
(रोचप्र मुष्ट छर २२)

आज ज विचार करी जे भाषा संघर्षक
आ विकासक साधन केना थिक त केर
शिक्षाक वर्ग कब अवलक। शिक्षा भेल
(रोचप्र मुष्ट छर २२)

आज ज विचार करी जे भाषा संघर्षक
आ विकासक साधन केना थिक त केर
शिक्षाक वर्ग कब अवलक। शिक्षा भेल
(रोचप्र मुष्ट छर २२)

● जय मैथिली

कविता

भाषासक पददा सं सम्बद्ध

तोनटा मुक्तक

(१)

नहि हो केओ मुस्लिम, हिन्दू
नहि हिन्दू हो मुसलमान
"हारामी" ई अतिबाय आइ अजि
हो दुनु पहिने इमान

(२)

सम तं "आदम" केर ओलाइ
अथवा "मनु" केर अजि समतान
माय-भाय मे केहन मताड़ा
केहन ई घटिया इमान

(३)

सम मानड ई मही के मावा
"आदम" केर अजि जन्म-स्थान
पद "शीश" केर अजि मजार आ
भर्ता-सखिख गङ्गा सुधान

—फुलपुर रहमान हाथमी

ले मशाल सभ कलुष जरा दे

झाग-झाग मैथिल संथाडी, भोजपुर-संघान
सभ मुलछ छै छोट रहल छौ, धाक साज-समान ।
सभक माय दुःख तकै छौ, अबड़ा बनि छौ ठाढ़ि
निर्लेज बनि सभ जीब रहल छै फुसिये करै अराढ़ि
आनो नहि चेतवै तऽ जेवै रहल सहल सम्मान ॥

कगदा-कुपड़ा बहिरा बोका, मिछि के तोड़ै माल
तोहार दुखधारा-मूलछें सूतो, तोहार हाथ बेदाह
अपन घर मे तोहरे भाषाकेर भेड़ो अपमान ॥
तोहार अखि छौ जाली मट्ठक, बेले नहि निज मेय,
तोहरे घर सँ तोहरे सम्पत्ति पठवौ देश-विदेश
दिन पर दिन कागाड बने छै, ककरो नहि छौ मान ॥

माइ-माइ मे लड़ा-भिड़कऽ इधजोने छौ छुराडी,
तौ प्रमादबरा फूटि रहल छै, रहि-रहि दै छौ घुड़ही
पक्कर ओक्कर पीठ ठोकै छौ, मुख नै छौ जान ॥

ठोहि पारिफऽ माय कने छौ, तैवो नहि छौ लाज
जे सम कटा सिला रहल छौ, तकरो करै छै काब
अपन परर फुहरि सँ काटे, बतल छै तादान ॥

पूहब मे पिगुल बजै छौ, रही तगाड़ा चोट
ताल ठोकि मैदान ठाढ़ हो, छोड़ तोट आ भोट
बटै बटै, आबो तऽ चेतै, कर मे घरे कमान ॥
अपना हक छै सभ लड़ैय, पलतो धरि छै दुःख,
मुह फुछोने सभ बेसल छै, बैल अन्हरिया घुप
छे मराल सब कलुष जरा दे, तलने हेतौ बिदान ॥

—अशु नलासि करण

दू गोटे लघु कथा

गिरगिट

देशालक टडाटही दुपहरिया मे अमन-
आ अमन गर्भवती लीक आहारक जोगार

कय कखन अनीन गिरगिट अमन डेरा
बुराह त देखै छयि जे पत्नी घोषना
लटकओने वेखल छथिन । बेर-बेर एकर
कारण पुछल उत्तर पत्नीक मथोन संग नहि
मेलनि त ओ खिसिया के बलाह—एहिना
घोषना पुल्लओने रहब त लोक कि अपार-
बानी जनैए जे अहाँक ममक बात बूझि
लेल ।

पत्नी ओहिना विधुआएल मनमेलीह—
लोक डूमिअ क की कत ? जं हायिहु
लोक के हसर कबोटक चित्ता छर त सत
करओ ।
—एक सत्त, दोसर सत्त, तेसर सत्त,
अहाँक कहल जे नहि करै से अतौ कुह
नक मे पुहब । अतौ त बाजब ? गिरगिट
आन सनमन क देखनि ।

हमरा लोकनि अखन धर देश सँ बलि
बली ।
गिरगिट छुनुता मे पड़ि गेलह ।
‘आखिर कत पड़ल गात मेलेक जे हमरा
लोकनि के अपन अनभूमि छोड़ि चलि
जैबाक बाही ?’

पत्नीक पाड़ा गर्भ मे गेलनि । ‘कनियाँ
जं झलक छति रहैत त ई पुरुष नहि पड़ैत ।
आखिर हुनू बाति कटोक अपन परिवार
रहैत छैक, निर्दोषता रहैत छैक । जं तेह
ने बचै त लोक के लाजे मरि नहि जा
हेतक ?’

—अहाँक कहबाक अर्थ हमरा नहि
बुझै मे आयल । हमरा लोकनि अपन रोग
बदलाक लेख किस्मत छी ।

भारत रत्न

भारतका पर पड़ल-पड़ल मीथ पितान-
मई सोचि रहल छेलह जे अन्यायी कौलक
संग दय ओ नीक नहि केहन । आगामी
प्रतिष्ठित हुनका कहियो क्षमा नहि करत ।
अत नै ओ केर हथियार उठबाक आ
पाठक दिस सँ लखबाक घोषणा केहन ।
ई रूप सबल दुर्गोचनक काम तक गेल त
पहिने त ओ बलदाएल किन्तु परबाए
शकुनीक हांग परामर्श कय दोहर दिन हस्ति-
नापुर मे तिराट सभाक आयोजन केकल ।
एहि सभा मे ओ मीथ पितामह के एगो
पेठ प्रस्तावित पत्रक संग ‘भारत रत्न’क उपाधि
सँ अर्जेंट केकल । कहल जाइछ जे तकर
बाद जे मीथ पितामह मथोन बत बाण
केलनि से का बीछल हुह नहि लेखनि ।

● अप्रदुत
थेली (सलामी) लेबाक बात । अमेरिकी
बहुचर्चित पत्र ‘अभिरोगाहक’ जे कि
दिखी त प्रकाशित होइए, तकर २-२ नई
१६८२ क अंक मे मुख पृष्ठ पर ‘काह-
मत और मित्रा’ शीर्षक सँ हिनक किम्वदंता
चोटालक मंडाओर कएल गेलह जकर
संक्षिप्त स्वर निचा देख जा रहल-ए ।

१) बिहारक तिराट ब्यक्तामी ५ माइ प्रति
छिड़र दाम बदेबाक माछ बलुतो दिन सँ
कत आधि रहल छल जकर राफू मनी-
मंडल आ जनता सकारा सोम अलीकार
क देने रहैक । पाञ्च डा० मिश एकरा-
एक रुपया पांच पाइ प्रति छिड़र दानी कि
७५ पाइ प्रति छिड़र सँ १८० प्रति दाम
कमा देलथिन । मात्र एकटा व्यवसायी
के ६० लाख टाक छल जे यदि बहो-
सरी सँ एक कोटि नका कमाएल । एहि
पुनीत काक लेल कबोद मिश्रा सोहद के
एक कोटि थेली प्राप्त गेलनि ।

२) साल बीन—१६८० मे बिहार
राज्य कोरैल डेम्बलगेट कसोरेल मात्र
रहल-ए हिनक स्वजन पोषण नीति आ

डा० जगन्नाथ मिश्र उर्फ

थेलीनाथ मिश्र प्रकरण

बिहार भारतक सभ सँ धनी प्रदेश
थिक जहदाम भारतक उपलब्ध ‘कच्चा
मालक’ चावल प्रविशत पाओल जाइत
छैक । पाञ्च एते होइलहु एहि ठामक
जनत सम सँ गरीब आ अशिक्षित अह
केन्द्र द्वारा अवेछि अह । एक एक
मात्र कारा छै जे एहि ठामक नेता बह-
मान होइत ‘आयल-ए जे केन्द्रक चन्चा-
निरी कए अपन सिंहासन केँ सुरक्षित रख-
नाइ आ तकरा जेले अपन स्वजन पोषण
केन्द्रा टा केँ अपन धर्म कमा देत अह ।
एहि तरह नेता मे शीवस्थ छनि बिहारक
जमान मुखमनी डा० जगन्नाथ मिश्र—
जे थेलीनाथ मिश्रक नामे ख्याति प्राप्त क
रहल छथि । डा० मिश्र मे बहु-बहु गुण
अह—कोबहु छोट कहत अप्पाय । एक
विस जं ई मिथिला मैथिली विरोधीक रूप
मे खगत छथि त दोसर दित वर्णवादी,
सम्प्रदायवादी राजनीति करबाक लेल ।
पाञ्च हिनक चर्चक सभ सँ प्रधान कारण
रहल-ए हिनक स्वजन पोषण नीति आ

५०% (४०,००० मेट्रिक टन्स) साल बीज ३ विधारीक हाथ आ बाकी ३% कमी-शन द विधारीक हाथें नेचवाक निर्णय लेने छल परउच डा० मिश्रक प्रभाव एकेटा व्यवसायीक हाथें ११७५) प्रति टन माव सँ बेचि देल गेल जवन कि मध्यप्रदेश में एक माव २१२५) छेलक। एहिठाम स्मरण रखबाक थिक जे विद्यालाल हाल बीज सर्वोत्तम होइत छल। सरकार के एहि सँ ७-१२ कोटिक पाया पैलक लखन कि मिश्रा सोहि के कएक कोटिक आनद।

३) कोइला—कोइला मात्र लखौस सला व्यवसायीक हाथें बेचल जाइत छल परउच मिश्रा सोहि निर्णय परिवर्तन कए किछु ठीकाँदार हाथें बेचला देखथिन—बकरा सँ व्यवसायी कीनत आ तकर बाद उनोको चरि जायल। एहि तरहेँ बीचक लोकक उपस्थिति सँ कोइलाक दाम प्रति टन २५ टाका बढ़ि गेलक। किछु 'कोइलाबाजारी' बजत एक ० आइ० आर० में फल आ मिश्रा सोहि ओकरा मौलिक आदेश सँ छोड़िने में असफल रहलाह त लिखित आदेश धरि द देलथिन। बनारसक एनो नामी बरसात पकड़ल गेल छल त दिनक परबी सँ ओ सिङ्गीरी अस्तास आ ओइ भाती काओल गेल, फेर बनारस आ ओइ टाम सँ ओ फिदाह भेल। ओकरा संग सँ बहुतत कागस पत्र नेटल छलक। कर्नाट ओ एलनो दिङ्गी-पटना सीनातानि के घूमि रहल-ए आ पकड़निहार एल० बी० (सी० आइ० डी०) क बदली भ गेलक।

४) जराब—जनाता असल में नवान्दी छागू सेल छलक। मिश्रा सरकार एकरा तोड़ि एकाइज विभागक नियम के उठथन कएत 'लोडर शीप ऑक्शन' कन्द कए एने ठीकाँदार के ठीका देवेक कहाँन दुटा मय व्यवसाय त खुलेआम बजार जे मिश्रा के मुलामन्त्री नौवा लेल ओ दुनू मिलि एक कोटि टाका खर्च केने अथ।

५) कुकिया—१९८० में मिश्रा सोहि घोषणा केलनि जे कुकियार उपवोनितार के २२) प्रति किंटल दाम देल जेतक। १३ फाल्गुनी १९८१ के एकरा ६ मास लेल अर्पित क देल गेलक। एहिठाम मन रखबाक कि जे ६ मास कुकियारक दूरा 'दीवन' में जाइ। कइल बाइछ जे बिनी मिलक मासिक सभ रिडीक फिसल समेलन लेल ५० लाख मिश्रा सोहि के थकी मेट केने रहनि—अकरा लोकनिक सखाह पर उपरोक्त स्थान आदेश बहार भेल छल।

६) बाढ़ि नियंत्रण—१९८१-८२ में बाढ़ि नियंत्रण नाम पर ८० कोटि खर्च भेलक लकर अधिकारा नफ्ती बीच पर संगतन कइल गेल। १९७३ में जवन मिश्रा सोहि सिंचार मुंजी कइल तवन पर कज दू गोट ठीकाँदार के देल गेल रहैक Estimate committee of Bihar क सदस्य Associated Engineering corporation जे कि मिश्रा सोहि एक माइ कमल नारायण मिश्रक छानि सकत 'विश्विक कर्मी' लेल (१,५७,५०० स्वामय कीट) ६१,८३८) देल गेलक बजल कि दू गो आन ठीकाँदार के २,१५,५०० स्वामय पर कीटक लेल मात्र १३,१६८) देल गेलक।

अजगुत-अनटोरल

* घोटाला शिरोमणि, विहाक मुख्य मंत्री डा० काननाथ (थेलोनाथ) मिश्र के परिचय बंगालक जुगल अभिमान से देखि लोक के छगुता लागल स्वामयिक के। स्वामयिक एहि दुआरे जे अनानाथ बाबू पर दलनो घोटालाक आरोप छनि, सुप्रीम कोर्ट धरि गेल हुनका पर पट्टु चि गेल अथ आ एहि तरहक वदनामः धन्य ब्यक्ति उपस्थिति अथवा मायण सँ लोक में फास से प्रति आकर्षण बढ़ेत त एहि सँ पैघ अवगत आर बी भ सकैछ। परउच लोक साधारण लोक सोझमतिवा होइथ, ओ हुनू विषयक तह तक नहि जाइत नहि जाय चाइथ। परउच जे दू-चारि प्रतिवत लोक सभ विषय के सोइसा छोड़कइ देखल अथवासी अथ—सै एकोत रहिना देखलक आ वे ओकरा सँ नितारिया बात मुकाबल खबे केना कतक ? ई, ओकरा लोकनि के अनटोरल अवल्ले लगलक।

तमिळिक अटुलार सँ से बेसी irregularities मिश्रा विभाग में भेलनि। ७) व्यवस्था—१५००० तनखा कखा क लेल मिश्रा सोहि प्रति इन्जिनियर १००) टाका मल्ले छलथिन। प्रत्येक बदली पर कराके लक्ष्मी छलक। लव्य Engineers Association से हो एहि समय के ली-कार केलकथ।

८) क्यूरी ठगुरक मुख्य मंत्रीलाल से ६००० Assit. Engineer के पर पर इन्जिनियर कहाल कयल गेल छल, १९७८ क बैकार इ जिनियरक आयोक्तनक फलस्वरुप। दू बर्ष बाद मिश्रा सोहि लोक सेवा आयोग द्वारा विनाशित देलथिन जे उपरोक्त कम आम्तिवा के पर सँ आवेदन कार्य पढ़तिनि। शुल देल पर आयोक्तन आयोक्तनकारी अभियंता लोकनि बजल मुलामन्त्री सँ मेट करे चाहतिनि त मिश्रा सोहि अतन Personal Assit. के पता देलथिन जे अभियंता लोकनि के २५ लाखक बेसी कुल्य मंत्री के मेट करे लेल कहलथिन। थकी मिश्रा सोहि के मेटि गेलनि आ लोक सेवा आयोगक विधि लिखाई में पड़ि गेल।

९) मिश्रा सोहि के कह सेहना छनि जे हुनक बेटी के बी० ए० (Eco. Hons) में फल कलास फल भेटनि। एहि लेल ओ पटना वि० विद्यालय में मॉडरेटस बहाली कलओलनि। परउच कमार संग नहि देलकनि। मॉडरेटिंग बोर्डक अध्यक्ष डा० केदाराय प्रसाद प्रतिवाद स्वरुप इस्तीफा दय देलथिन आ छात्र आयोक्तन भइकल। बहुतो छात्र हजति में फल आ अतन हुनका बेटी के दोस स्थान प्राप्त भेलनि। ओना शिक्षक लोकनिक अटुलार हुनक बेटी दोस्तो भेगी पैवाक योग्यता नहि लेल।

१०) आ सब सँ प्रधान अथ पटना आबन को-ओपरेटिव बैंकक घोषणा बाइ में ३५ लाख गवन कवाक आरोप मिश्रा सोहि पर छनि। एकर मासिका सुप्रीम कोर्ट तक पहुँचि गेल अथ—देला बारी की होइथ।

मसिना बारात छथि। किछु लोकक कय छेक जे हुनपरु बारी ५० देवनायण भ। चौधरी बी सँ मैथिली आन्दोलन में गाछू रहितो अपना गाम में मुख्यमंत्रीक जुगलोन कला हिनक प्रियवच बनि गेल—छथि आ निकट भविष्य में विमान-परिवरक दुस्तता जाम करे बला छथि। तँ चौधरी की हुनका 'आँकर टेक' कहा लेल ई चालि चलाइ—

५। ई त मलिये बरत जे गोटी रहिते किनकर लाल होइत छथि परउच मैथिली के दल पर चहुओनाइ छेक के अनटोहात अवल्ले कोत छ। कयाहुद बानि भनहि बेसी किछु लोक नहि बाबूओ—हुनू छथि नहि कय परउच एतेधरि त कहिते छथि ई नहि उचित विचार।

* हुनू जनाओक गलतक के मुल दया, मुलक लेल मुलक लखार कने छथि। हुनका विस्तर अथ जे ब ओ आइ बीचल रहितथि आ भारतीय गलतक केरा देखितथि त निश्चित भयन चिपरी से एमेन्ड मेन्ट क ओकरा एना कहितथि मुलक सरकार मुल द्वारा ४२०० लेल। विवक्षक महान गणतन्त्र भारतक विभिन्न प्रदेश में परिचय बंगाल सभ तरह आगू मानल जाइथ। एहिठामक केनिंग अंचलक एनो मतदात्री गत १९८१ में के प्रचारिग अचल छा बा के पुष्ट छथिन—सबुकिट कयाह बाबू—आकर्षक त होइत अचल प्रति प्रन केराफिन—साराफिन। साराफिन की हरे ? महिदा—केन आमार छेले जे थोल्लो साइकिले छाप दिते ?

एही केन्द्र पर एनो दोसर बुदा मोहर आ मतपत्र ल क बजल जटा सँ बोल पर मे पडू बलौह त ओ विचारि रोकीह जे छाप हुनू चेहर पर लोवाक छथि। अतन सेटा के शोर पालनि शंकर। ओ शंकर !! अधिकारी बीच में दलक देहाफिन—कने बाकछिन ? महिदा केनो ? आमार छेले शंकर के कोषाय जे छाप दिते बल्लो दुइबा गेलनम.....।

ई व नाच नरना थिक। यहा ते

एहन कतेको मारदाज एहि देते मे छथि

बनिका लोकनिक मत पर कीटि कनटि-

निधि शालन कोट छथि।

*** परिसनी देशक कतेको पत्रिका में भारतीयक विधान छपल—हुनक अवतार भ गेल। हुनक नव नाम छनि—मैरेय स्वामी। एहि में आगा कइल गेलथ जे ओ एलन गुप्त छथि आ मास हुनक किछु विषय ई बात बनैथ। परउच दू मासक भीतरी ओ अपन परिवय प्रकाशित करलाह आ टेडीबिजन सँ विस्वक समस्त लोकक संग-जकर जे नाबा छेक ताही नया ने पत्र-पत्र कलथ।

एहि समय में विदेश बजलकरीक लेल कतेको पत्रा देल गेलथ बाइरर लयक स्थिति करे लेल कइल गेलथ। एहि में सँ एक अइरीबाय मेल, ५६, बाइमाउय पार्क रोड, लंडन।

क्यूरी हुनू केनाम छेक जे बीव त की की ने देखब।

—उदित बरुन।

अनो लोक जलय-तलय बनेत सुरुल बाइछ जे चौधरी बी बुद भेने दुरि गेलथ।

मेथिली

• कटिहार, २२-२३ मई, १९८२।
स्थानीय राठौराण विद्यालयक सभागार में
विद्यार्थी-संघर्ष पर्व समारोह मनाओल
गेल। पहिल दिन भाषण, कवि सम्मेलनक
अभ्यास मेळ आ दोसर दिन गीत-नाटक।

एरि आयोजन ने सर्वप्रथम हट्टि के
आकर्षित करे लठ कविपति
मल हित से कठकार ११ मलन ककारक
मलन नितक नितक नितक नितक

नियं केषाकर भुमुगं मादा मंडळ, तवरा
 श्री खमन भा 'तार' (कलकत्ता) हेर
 पणो गीत तामोविति ।

एहि अवसर पर मैथिली मुक्ति मोर्चा
कलकत्ता संयोजक श्री रामलाल ठाकुर
कविपति के अपन भद्राब्जलि देत उपस्थित
जनमुखाय सं मांगुमा। मैथिली विकास
के लिए हम सब मिलकर काम करूँगे।

2008 2009 2010 2011 2012 2013 2014 2015 2016 2017 2018 2019 2020 2021 2022 2023 2024 2025 2026 2027 2028 2029 2030 2031 2032 2033 2034 2035 2036 2037 2038 2039 2040 2041 2042 2043 2044 2045 2046 2047 2048 2049 2050 2051 2052 2053 2054 2055 2056 2057 2058 2059 2060 2061 2062 2063 2064 2065 2066 2067 2068 2069 2070 2071 2072 2073 2074 2075 2076 2077 2078 2079 2080 2081 2082 2083 2084 2085 2086 2087 2088 2089 2090 2091 2092 2093 2094 2095 2096 2097 2098 2099 2100 2101 2102 2103 2104 2105 2106 2107 2108 2109 2110 2111 2112 2113 2114 2115 2116 2117 2118 2119 2120 2121 2122 2123 2124 2125 2126 2127 2128 2129 2130 2131 2132 2133 2134 2135 2136 2137 2138 2139 2140 2141 2142 2143 2144 2145 2146 2147 2148 2149 2150 2151 2152 2153 2154 2155 2156 2157 2158 2159 2160 2161 2162 2163 2164 2165 2166 2167 2168 2169 2170 2171 2172 2173 2174 2175 2176 2177 2178 2179 2180 2181 2182 2183 2184 2185 2186 2187 2188 2189 2190 2191 2192 2193 2194 2195 2196 2197 2198 2199 2200 2201 2202 2203 2204 2205 2206 2207 2208 2209 2210 2211 2212 2213 2214 2215 2216 2217 2218 2219 2220 2221 2222 2223 2224 2225 2226 2227 2228 2229 2230 2231 2232 2233 2234 2235 2236 2237 2238 2239 2240 2241 2242 2243 2244 2245 2246 2247 2248 2249 2250 2251 2252 2253 2254 2255 2256 2257 2258 2259 2260 2261 2262 2263 2264 2265 2266 2267 2268 2269 2270 2271 2272 2273 2274 2275 2276 2277 2278 2279 2280 2281 2282 2283 2284 2285 2286 2287 2288 2289 2290 2291 2292 2293 2294 2295 2296 2297 2298 2299 2300 2301 2302 2303 2304 2305 2306 2307 2308 2309 2310 2311 2312 2313 2314 2315 2316 2317 2318 2319 2320 2321 2322 2323 2324 2325 2326 2327 2328 2329 2330 2331 2332 2333 2334 2335 2336 2337 2338 2339 2340 2341 2342 2343 2344 2345 2346 2347 2348 2349 2350 2351 2352 2353 2354 2355 2356 2357 2358 2359 2360 2361 2362 2363 2364 2365 2366 2367 2368 2369 2370 2371 2372 2373 2374 2375 2376 2377 2378 2379 2380 2381 2382 2383 2384 2385 2386 2387 2388 2389 2390 2391 2392 2393 2394 2395 2396 2397 2398 2399 2400 2401 2402 2403 2404 2405 2406 2407 2408 2409 2410 2411 2412 2413 2414 2415 2416 2417 2418 2419 2420 2421 2422 2423 2424 2425 2426 2427 2428 2429 2430 2431 2432 2433 2434 2435 2436 2437 2438 2439 2440 2441 2442 2443 2444 2445 2446 2447 2448 2449 2450 2451 2452 2453 2454 2455 2456 2457 2458 2459 2460 2461 2462 2463 2464 2465 2466 2467 2468 2469 2470 2471 2472 2473 2474 2475 2476 2477 2478 2479 2480 2481 2482 2483 2484 2485 2486 2487 2488 2489 2490 2491 2492 2493 2494 2495 2496 2497 2498 2499 2500 2501 2502 2503 2504 2505 2506 2507 2508 2509 2510 2511 2512 2513 2514 2515 2516 2517 2518 2519 2520 2521 2522 2523 2524 2525 2526 2527 2528 2529 2530 2531 2532 2533 2534 2535 2536 2537 2538 2539 2540 2541 2542 2543 2544 2545 2546 2547 2548 2549 2550 2551 2552 2553 2554 2555 2556 2557 2558 2559 2560 2561 2562 2563 2564 2565 2566 2567 2568 2569 2570 2571 2572 2573 2574 2575 2576 2577 2578 2579 2580 2581 2582 2583 2584 2585 2586 2587 2588 2589 2590 2591 2592 2593 2594 2595 2596 2597 2598 2599 2600 2601 2602 2603 2604 2605 2606 2607 2608 2609 2610 2611 2612 2613 2614 2615 2616 2617 2618 2619 2620 2621 2622 2623 2624 2625 2626 2627 2628 2629 2630 2631 2632 2633 2634 2635 2636 2637 2638 2639 2640 2641 2642 2643 2644 2645 2646 2647 2648 2649 2650 2651 2652 2653 2654 2655 2656 2657 2658 2659 2660 2661 2662 2663 2664 2665 2666 2667 2668 2669 2670 2671 2672 2673 2674 2675 2676 2677 2678 2679 2680 2681 2682 2683 2684 2685 2686 2687 2688 2689 2690 2691 2692 2693 2694 2695 2696 2697 2698 2699 2700 2701 2702 2703 2704 2705 2706 2707 2708 2709 2710 2711 2712 2713 2714 2715 2716 2717 2718 2719 2720 2721 2722 2723 2724 2725 2726 2727 2728 2729 2730 2731 2732 2733 2734 2735 2736 2737 2738 2739 2740 2741 2742 2743 2744 2745 2746 2747 2748 2749 2750 2751 2752 2753 2754 2755 2756 2757 2758 2759 2760 2761 2762 2763 2764 2765 2766 2767 2768 2769 2770 2771 2772 2773 2774 2775 2776 2777 2778 2779 2780 2781 2782 2783 2784 2785 2786 2787 2788 2789 2790 2791 2792 2793 2794 2795 2796 2797 2798 2799 2800 2801 2802 2803 2804 2805 2806 2807 2808 2809 2810 2811 2812 2813 2814 2815 2816 2817 2818 2819 2820 2821 2822 2823 2824 2825 2

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥
 श्रीकृष्णाय नमः ॥ २ ॥
 श्रीगुरुभ्यो नमः ॥ ३ ॥
 श्रीगणेशाय नमः ॥ ४ ॥
 श्रीविष्णवे नमः ॥ ५ ॥
 श्रीशिवाय नमः ॥ ६ ॥
 श्रीब्रह्माय नमः ॥ ७ ॥
 श्रीमहेश्वराय नमः ॥ ८ ॥
 श्रीनारायणाय नमः ॥ ९ ॥
 श्रीरामाय नमः ॥ १० ॥
 श्रीकृष्णाय नमः ॥ ११ ॥
 श्रीगुरुभ्यो नमः ॥ १२ ॥
 श्रीगणेशाय नमः ॥ १३ ॥
 श्रीविष्णवे नमः ॥ १४ ॥
 श्रीशिवाय नमः ॥ १५ ॥
 श्रीब्रह्माय नमः ॥ १६ ॥
 श्रीमहेश्वराय नमः ॥ १७ ॥
 श्रीनारायणाय नमः ॥ १८ ॥
 श्रीरामाय नमः ॥ १९ ॥
 श्रीकृष्णाय नमः ॥ २० ॥

[illegible]

अशाादय प्रकाशन, ३३/१, डा० देवदारखान रोड, कछहसा-७००३३३ क छउ शो महल भा. द. ॥

मेथिली

वाहिल्यिक-सांस्कृतिक विकासक, आपार आ
 से भाषाक निर्या समक नथि । वाहिल्यिक
 निर्या योजनाक विकासक असमक आ अवतल
 टोकन से उरु, सवष आ आन्दोलन सफल
 निर्या म सफल । एहि सम्मक मे माओ
 से उरु कहै छथि—बनला के निरु छा-
 ओने आन्दोलन जेना एडमेक छोटि आर
 निरु नथि कि—आ बनला के बनला
 छोट ओकरा अपन उंग समक छोट ओकरे
 माओ मे सवषक कक अनिवार्य सांस्कृतिक
 कक ओ अपन ठाम कहै छथि
 'मरुका जेनाक बारा टोना दूठ कि
 बा जेनाक जेनाक करीना छुन के पगलित
 नथि क सवष' ।

रेश धर किसी नमि बकिनि
 नकर हटु तै अकलक भर अ है
 अलकल अर मंग। भाषा मुसक
 नयेक किया संग। डुडक भर। अखिल
 राषा आवक्यक भर संगी खरिणि किन-
 कक भाषा। भर। इकर आवक्य कल-
 खानि कर छयि-भाषा मुसकक उल-
 दक किया स प्रयस रूपे डुडक भर। ओ
 भाष मुसकक उलदके किया संग नमि
 ओकर बिमगीक सम शेषक सलत किया,
 उलदत संग ल क निर्गामी सभ प्याय तक
 इकर कलक पिक से समकगी देश सम
 ने भाष से कलक रेट नयेक नम
 ओकर निमगीक नमि सम तमस नम
 के नयेक। एत मे कलकक रेट नमि
 कलक नम क कलक से क उलक कल
 हय अ ने उलक नमि, कि कल
 नमि नयेक अ नमि नमि एत रेट
 नमि अ नमि ने कलक नमि भाष छल
 कल कलकक सलत इलक ने कीमि
 छल

[illegible][illegible]

कछहता-७००३३२ क लउ शी मरुदेव भा। छ।।
नलकसा-५ मे सुद्रित । सम्पादक—भी जनार्दन भा

चुनताक, खुन पेसनाक, बमारा ओकरें केंड मोबाक, लेख खूब होयत रहल । मैथिलीक हंगरि नेपाही राजस्थानी कोकणी, टोपाही, सगुली आदि कतेको भाषा परि सम्राज्यः वादक प्रत्यक्ष गिम्नार प्रेम आ प्यार स मुक्ति लेख, अमन अस्तित्व रक्षापें संघर्षत अह । तें ओ प्रत्येक चेतन प्राणक आ विशेष क संसारवादीक सौंकाई प्रदान करंय ब जाह कर जै ओ प्रकृताक । हिन्दी सम्राज्यवादक विरोध करय आ बाहिर सहाता भाषाक मुक्ति संघर्ष के सफल तथ्यक क्षेपक सम सम्व प्रचार कांड—सम भाषाक प्रतिनिधि क संयुक्त-मेचक निर्माण करय अन्धश्रामुनि-वाक मुद्रा शक्त सम्वत-सम-वर्षक ट ट कांय रह, कयतें किन्तु निर्दिष्ट नै ।

—राष्ट्रीय ठाकुर
(वर्ग-१२ सं. १२)

6761-1211
H. H. H. H.

बाल गीत

पुनः

कवि रमता
सबदक पक्षि वचना
सम करते को नहि करना
सावड सत्यहि छोट-छोटे के
काय के काय के

ਕੀਤ-ਪੈਦਾ ਕਹਿ ਸਮਾਧ ਲਗਾਏ
 ਸਿਖ ਭੀ ਸੁਧਾਨਾਸੀ
 ਕਾਨ ਨੇ ਕੁਝਨਾ ਦੀਛੈ ਹੋ ਸਮ
 ਸੁਨ ਬੇਬਨ, ਸੁਨ ਕਾਸੀ
 ਫੁਟਨੇ ਹਰ ਗਮਾਰੇ ਝੜੈ
 ਰਖਿਓ ਮਨ, ਮਨ ਰਖਨਾ ॥

पढ़ माघ में खपटा सत्यनि
 देको गोरे करी
 देको ने महाबलार
 देको मुसकेलक टारी
 माइक छितैह समने खप ट प
 कार कमलै देहुन

मैथिली पोथी/पत्र कीन् आ पढ़
पाल सं प्रकाशित मैथिली इ मासिक

अर्चना
संपादक :- राम भरोस कापड़ि भ्रसर
स्वस्थी यदग, जनशुभाग मैथिलि + हिन्दी भासिक
सिधिका दीप
समापक : वञ्चन विहारो
१५६, लखिपुर कोठेनी गवियर-४४००६

हेमिन् बयना चन्दाक दर :-

१ प्रति ५०) या
१ सर्वेक ५) टा
५ सर्वेक १०) टा

श्री अनार्दन झा,
१७६/६, उषा नगर,
कलकत्ता-७०००६८

पाद प्रविष्टक प्रता : -

॥ प्रकृति तव पारिणामः प्रविष्टः ३२ वी वृन्दवन वनाख्यः ॥

हविः

३३-१०-११

જુલાઈ અગસ્ટ, ૧૯૮૨

मूल्य—पचास पाइ

समपाठकीय

बाजबय थिक अपराध

३१ जुलाई १८८२ स्वामीजीरा विहारक इतिहास में एगो अविहारणीय तिथिक रूप में अंकित होयत। कहाँही छेक के कुहुत्पिये नाम कि कुहुत्पिये नाम। से बिहारक वर्तमान सरकार, बकू नेता मानुन अटोम हाँ। कगारबा निमिष लखि, भगवै कुहुत्पिये नहि के सखल हो, बकू नेता इकर कुहुत्पिये से एही कगारबाक काम त निरिहक भगवैतन संविधान से मोट पोसा लेबल स रखल। बिदे से कून बिदे आ कून जिते निमिष देना सब त-विलिहूँ नहि होयत। धर्म-सम्प्रदायक संग भाषा के बोझि दुखलानक मोला उठूँ करि तब बिहारक दोसर राजभाषा बङ्गलादेश धरने एक कुहुत्पि छल या फ़री वृणित : अराब छल, अकरा एखनो कम से कम निम्नलिखक अनवामन तिवरि नहि सखल। एगार १९ जुलाई के एगो परवर्तन भेळ विधान सभा से भाषा ५ निमतक आ नव विधेयक पल छल सरकारक आलोचना केना दबनी अपराध। मान येयक साप्रीमता के गदनि दया देल होत। ओ प्रेस अकरा आत्मनिक पढ़ी कहल जायत। आ कबन फ़रीए नहि बल तबन गणतन्त्र सिध्दतिक अनुमान सजबि कएल जा सकैत।

ओना त भारतीय मेवक चरित्र आ निवेश के स्वाधीनताक प्रयास, यह उल्लेख नहीं रहस्यक। ई उदाह प्रेम थिंक जे रासकुमारक छापीक रंगक वर्णन करते गहि आइवत रहस्यक आ भारतीय गौरीक अनुभूत रंग-पाटिक वर्णन से मेवक-प्रेम रंगि दैत रहस्य-परच एक किराण, भगई तकर संख्या नग्ये किहक नै होइक, किमु मेव अवलते अइ जे राष्ट्र आ छोपेक स्वेमॉरि मातै रहस्यक आ कलन कलन ओकरा पर नजर मेवक, ओकर विषय कहल मेवकक त ओ सकय प्रग्रीक रूप से 'भगडे रहब' टाहि दैत रहस्यक । आ निर्विवाद एतने मेवक मुनार ताहक ओकरा प्रयास थिंक बिहार-अकारा प्रेमलियेक— जे 'काका कानन' क रूप में वर्तित रहस्यक ।

[illegible]

अंगना बिचारक ई छव्या नइ नहि ब्रह्म ब्र मंडेह । एहि के पहिने तनिज्जलक
 सरकार हए तईया लखक इहे तइक अइने आ उअइह । उअइह से त हए पलकअक
 रसीक संग बाइ नरैनाक संग बखलार बइए-गेल ओ ओकर इना बइए गेल तकर
 चचे की ? पाउब बगनाय बाबू बइयर सिद्धि दि । त प्रेम पर बबू देवी सिद्धिआइह
 छलाह । गत बर्षा त ओ कम से कम एक दिनक लेख आयलई इअिया गेलन के दखत
 कइए हेने हएथि । पाउब जखन एहि समय छल त ओ हारि गेलाह त गत भाबे मे
 तईया अबरार के तिमिनाइ पठअइलन—ओइठाम प्रेहक मुरै केना बबू मेलेह से उअय
 बनबाक लेह ओ छलाह रोप दिन ओकरा कायलए मे मगलन ।

आन्तर्गतक अयोध्या विहार सरकारक एहि चार्कि विरोध बढ़ तीब्र भेलख आ स
रखल । १ अगस्त के बिहारक पत्रकार लोकनि बगनाथ मिश्रक बहिष्कार क निर्णय
लेलनि । २ अगस्त के लगभग १०० पत्रकार के पत्रकार गैलीक पास रहितो खडद में नहि
प्रवेश करय देल गेलनि आ छठिअओख गेलनि । ६ दिसम्बर १८८० के भविषी सेनाली
लोकनि अपन वाक्प्रावीणताक दावी में मद्रास केने एहिथ त एहिना छठिअओख गेल
खलाह । २ अगस्त के एहि स्वाधीनताक शब्दीदार गेलकनि अयोध्या बगनाथ
लखत द्वारा छठिअओख गेलाह । ३ अगस्त के एहि करिय विवेकक विस्मृति से लोक सभा
सं सप्तल विरोधी नेता बाहर भ गेलाह । विदार विधान सभा आ विधान परिषद में सुलल
नाद चबैत रहल । ४ अगस्त के बिहारक वक्ता, छात्र-युवा कर्मी, राजनीतिक दलक नेता-
कर्मी (बिरोधी), शिक्षक, अधिका संघटन सम के सम बात पर राखि 'कला

एकटा रह्यि रावा । ओ जेने पप-
कमी रह्यि, तेने प्रजा वसल । राजाक
नाम-यसो अपन राज सँ बाहरो परतल छल ।
पडब सम रहितहुँ राजाक मोनसिक आनि
नहि छलनि । कारण तेधरण नीति रहल
छलनि मुदा कुसु सबा-बनान नहि भेलनि ।
एकरे चिन्ता से राजा रानी दुनु बेकरी
सतल बिनन रहित रह्यि ।

परिहा एक दिन हुनु गोटे उदाह
नेछ देखि ता एगो बाबाजी खुलाह
एवा खर्क पछिह वहर ता वचर्क
नीह वहा खपल खर्कन आ छिह
दा देवक पोषा केनि। बाबाजी एकि
राय एक छुडी भारा बाउटा भेक हरा
प्रक केनि।

बल्लभ रानी सण सं हक मुंही चाउर
वावाजीक भोव्री में देत छछियत त नाबान
जीक नवदि रानीक उपर एहक लगल
दहल-पठब राबा-रानी चामिक प्रतिक
देवाक कारणे एकरा अमर्या लेवे निषेक
कतियि। बाबाजी चाउर के भोवरी
में रखेत राजा सं बखलह—दे राजा। हम
आहं लोकनिक मनक व्यथा बुझेत छी। ते
हम जेना जैतेत छी तेन कह। आहां

लोकनि क निरिखत सन्तान' लाभ होएत। पण्डव सराण राखू ले हे बात तौनू आदमी छोड़ि चारिम नरि बनि छथय । अगिला मंगल दिन अखत अहां अथन राडी जाणय आ विदुरिया राख जे हारो आम तौब छथय । मन हय जे आम माति पर नहि छथय । दहिना हाथे मरुटा फेकर आ बाय हाथे आम लोकाज अय अगिरा जेते आखन से अगिरा नेछ । रानी सेमिटी ओ शंख

[illegible]

कानून' क विद्द भन भावाल दुल्ह केलनि आ ११ अगस्त 'माला-दिवस' क रूप मे पालन करावाक निर्णय लेलनि।

आन्दोलन चिनगारी नीक जकां छुग रहल। आन्दोलन कतां लोकनि अपनाने के वेवारा सं वेवारा स्थितियो में पहुँच रहल। जल्द के बिबसतोएण चरि जेवना लेख प्रस्तुत कर रहलह। ओम्हर लाठी-गोलीक बल पर चलेख। सभारा लेहो अपन छाडी में तेज छला रहल। बन्दुक में गोली भरि रहल। जेही त भविष्य कहैत—पकड़ ई घर तय जे जनादोखक कमल घेड़ोना अन्यथी सभार के भेक पड़ल। त जगानाथ मित्तल दून खेतक परे छथि। 'जय प्रताप-आन्दोलन' के एहनां लोक बिगिनि नहि कइख। कि बिहार अपन एहि रसगिनि के पुनः पाबि सकत ?

● जय मैथिली

100

इन्कवा-डुकदी काटि खूनीक गैलक । राख

शिवकुमार हरे संवत्—जाइराम
आ लम
त हगो गच्छ

आर जलन किछु दूर गेठ
क डारि पर दू गो बाम्बक बच्चा

देखिए क्या

लेखात लह। फेर देका बाबल—हे राब-
कुमार हमरो अथवा संग तेने कहने। छी
त हम नाम विदे, मुदा तेनो कहियो काब
मे लागि सकत छी।

राबकुमार ओकरा दिह देखलनि आ
कहलनि—चह आ देस हरी चोका पर
आ ओकरो बेरा छेलनि। छोटका फेर लिह
मने तिनका लोकनिक बाट दिह लेनेत
रहल।

बाहल-बाहल बलन सौक पड़ि गेलक
त राति-बीच विषाम कर लेल राबकुमार
एगो गाम मे पहुँचल। गामक कात मे
एगो चोबीक नर रहैक। कुइलुइ आ एगो
इदिया के दाढ़ देखि ओ कहलथिन—ने
मीठी, राति बीच हमरा खय देवे। मोरो
फेर त चलिष बायन।

इदिया बाबल—खय फिरक ने देव।
अहाँ कि हनर पर उठा क ड बाएव। दद
भाग व कहू ओकरा देखो अन्नासत
अने छर।

इदिया एगो पटिया अनि आकन मे
ओछा देखलनि आ एक छोटा पानि अनि
देखलनि। राबकुमार गोठका चरक ओथरा
मे चोका के बाहि दाय-पहर जो पटिया
पर जसि गेलह। कात मे बायक आ बायक
बना पड़ि रहलनि। इदिया मानल-भात मे
अगि गेल। मुदा ओ कते बेर चर जाय त
काय बायन आ आकन आकन त हल्य
लायल। राबकुमार के ई देखि नद छगुला
अकलनि। अन्ततः ओ पुछि देखलनि—
मोही एगो बात-पुछियोक ?

—फिरक ने पुछ ? इदिया बालिह।
राबकुमार पुछलनि—तौ कते बेर
पर बाह छे त कानय कते छे आ आकन
पदे हल्य छो छे—एकर की कारण ?
इदिया बाबलि—बाड, अहाँ एक
दिनक पाहुन छी, ई सम दुमि क की
करयक।

राबकुमार के नद हट केना पर इदिया
कहलनि—बाड, हमर एक गो चेता अह,
ओकर काबिह गोना छह—आह 'कियाती
नेछे ए। तँ ओही छुगी से हम बलन
आकन अने छी त हरे छी। मुदा परस
हमर चेता देस पेट मे चलि बाएत सेह
सोचि क कनेत छी—कलन पर बाह छी।
राबकुमार अनेक प्रष्ट करैत पुछल
दिह—रेलक पेट मे। ई देन की रेलेक ?

इदिया बाबलि—से अहाँ केना मुन्ने।
हुमेल छेक एहि नारक लोक, ककर से
चेता ओकर पेट मे पड़ि चुकल छेक। राजा
क कायल छेक—देरी-देरी समक पर स
एक गोटे क सम तिल देलक पेट मे जेतैक।
से नहि भेने त देतका एके दिन मे फेलेको
के ला बाह छेक।

राबकुमार कहलक—ठीक छे—परस
तेरा चेताक बदला मे हम काएव, मुदा ई
बात तौ कती बाबे नहि, आ ते एखन स
कनये कर।
इदिया कनेत बाबलि—ये कोना हेत
चेता—अहूँ त कनरो चेते हेने मे। हम
बयान चेता खातिर अहाँ के कोना मरवा
देव ?

—आह सँ हमरा तौ अपने चेता मुने।
हम तेरा मा कहलौ। मुदा ई गय दोसर
केओ नहि मुने।

इदिया मानि त गेल मुदा ओकरा मन
मे कनोट रहदे करैक। ओमहर राबकुमार

एक बेर फेर अथवाक संग परसक बाट
बाहय लावह। इदिया बलन चेत सँ चर
मे मानस करय छागल त राबकुमार बाय
सँ पुछलनि—बाड, आन कहै—देस सँ
केना सान्ना करलौ ?

बाय बलल—हम 'कानिक क ओकर
बाह सँ लेगे आ ठख सँ मत नहि होयय
देव।

निम्न पुछने नाम कहलनि—हम त
कट द दुर, आलिख कोछि देखैक।
राबकुमार कलकह—तखन हमरे तह-
आरि सँ ओकर पेट कटेत कते देरी लागत।
मुदा सम नैको सावधान म बाह छी।
राति मे मोहन मात क सम खुलल आ
केलक आ फेर राति मे इदियाक आकन
का विषाम। भित्तरे दिग-दिगिया पहेलक
ते आह ककर पारी छेक से पुर्बिया गेल-
सिक मोह पर देल्लाह आ ठीक समय पर
चल बलन ने त राजा ओकरा बाह-बन्ने
भाकरी ओका देखिनि।

राबकुमार तैयार भेल। चोका पर बाय
आ नाम पहिने खतर भेल आ ओ इदिया
सँ आलीबीद छेलनि। इदिया कनेत
बाबलि—चेता हमरो अन्तरा ल क को जीने-
मुदा मन कहैत छेक से ओ दुल नहि।
राबकुमार बिदा भेल—पुर्बिया पोखरि
दिस।

राबकुमार बलने पोखरिक समीप
पहुँचल त ओकरा भयंकर गहन हुनाद
पहेलक ककरा ओ देलक गहन मानि आर
सतक म गेल। बलने मोह पर पहुँचल त
ओ विवाहकाय बिकारल देल्य मुह नहि।
हुल्लक। कपना छपकल। उखल गइ। आ
चरफि उठलक राबकुमारक तलभार।
दक्षिण मे दिवरा मोह वन देलक बहाव डेर
म गेलक आ शोणितक नोमभार घूट्य
लालक। राबकुमार अन्त संगीक संग दोसर
दिस बिदा म गेल।

राबकुमार फिरको ने छल मुदा नगर मे
देसक प्रभाव खरि पसही कनो पसरि
गेलक आ फेलेको लोक देस के मानिहार
हय मे अथवा के प्रचारि करैत राखदवा
मे हाकिम भेल। एकर कारण ई छल जे
राजा देस के मानिहार के अप्पा राजक
सँ अन्त केने केने केने केने केने केने
कलह। मुदा दक्षिणक कल्ला केरी देस
हुनाद सँवेर भेलनि आ ते अह ककर पर
छेक तकर पता अन्ततः बोनिनिक मोर-
ठाम विपारी फालोले गेल। विपारी बानि
निगा के पकड़ि दरवार मे उपस्थित केलक।
राजा पुछलनि—आह तोहर चेताक पार
छलोक, ओ गेल छलोक कि नहि ?

बोनिनिया बालि—महाराज, हमर
चेता काबिह गोना कानक आपल-ए तँ हमर
बहिपुत ओकरा नहि बाय देखलक आ
ओकरा बदला मे अपने चल गेल।

राजा पुछलनि—ओ छोक कहाँ।
देतनाक पेट मे हेत, आर कनय।
बतवा कहि ओ हरोठकार म कायय लागलि।
राजा ओकरा सान्ना देत कहलथिन—
आह देल माल्ल गेल-ए मुदा के मारलक
तकर लिखनी नहि म कल। तँ तोहर
ननिपुतक कहति। तौ को, मुदा बाबरि
ओ नहि अबेछ तोरा पर पर विपारीक
पहर रातीक आ ओकरा कानिदे हल्य पता
दरी।

बोनिनिया के नेने एमहर विपारी सम
ओकरा पर पहुँचल आ ओमहर सँ राबकुमार
तेहो बुनि गेल। ओ अन्ति होत नाकल—
मोही मखु बुआ। आह तोहर देतका के
यमपुर पता छुओक। आह सँ कनरो तँ-
चेता ओकरा पेट मे नहि जेतैक।

विपारी सम अन्तर्गत सँ ओह विनिन
-राबकुमार के देखलक ककरा चोका पर बाय
आ नाम सोभायमान रौक तथा तलभारि
एकनो शोणित मे रंगल रहैक। बोनिनिया
छुगी सँ राबकुमार के पनिया ओकरा चुम्मा
देत राजाक आदेश सुग देखैक। राबकुमार
विपारी समक संग राखदवाय बिदा भेल।

राबकुमार के दरवार पहुँचिने मुह।
दावीदार सम कहति गेल। राबकुमार सँ
गण केलाक बाद राजा किस्सल म शेख
मे देलक मानतार ई पुनक बोनिनियक
बहिपुत हो बा नहि मुह देखक राबकुमार
रिक्त। ओ अन्त नमक अन्तुअर राबकुमार
क संग अन्त देरी के बिगारि आवा राब
हम देखलनि आ मुह। दावीदार सम के
पकड़ि काँटी देनाक आदेश हुना देखलनि।
राबकुमार एही आ राज पाणि चेत सँ खय
लावह।

एदिना मात्र ६ मास बीति गेल। आम
राबकुमार जेना पर-अन्तक वातावरण सँ
उमि गेलह। एक दिन ओ राजाक समक
बिकार लेलाय जेनाक प्रस्ताव रखलनि।
राजा एहि प्रस्ताव के स्वीकार करैत मुनक
देखलनि ओ सम दिस बिकार लेलथि, मुदा
दक्षिण दिस मुन्को के ने बायि। राजा-
कुमार मुनकक पावन करैक बात गछि
तैयारी मे लागि गेलह। राजा हुनाक संग
आर किछु चतुर चिकारी के तैयार कइ
बिदा केलक। संग मे गाबा बाबा से हो
रहैक।

राबकुमार मरिचिन चोका रोडपनेत
रखल पठव एकोटा बिकार हाय नहि
छाकनि अवलक। बात त ई के कते से
विपारा उठैक से दक्षिण अंगल दिस पदा
बाह—आ ई अपन सन मुह लेने पुरि
आबि। दिन खाबिवाकल बाहल छल।
अन्ततः ई निर्णय लेलनि जे आप ते कुन
दिशार भेटलनि—से बल्य निरदक ने बाओ
ई छोर कलह आ मुह माने नहि फिर-
गइ, संदेस सँ एगे हिरि हिरि देके
बनि आ ओ सलक केनि। हरिम होने
दक्षिण दिस बल्लव आ हरो कनेर लेने
गेलह। आम सम किछरी कमर बुटि
गेल से पतो ते छाकलनि। ओमहर दस
छरफुक करैत रई आ तरखन हरिण दिनक
आलि सँ अह म गेलनि। एमहर पियासे
कंठ सुखा रहल छनि। किछु दूर पर एगो
पोखरि भन हुनाक गेठनि आ ई ओमरे
चोका देलकनि। ठीक एगो विशाल पोखरि
रह्य मुदा चाल कात सँ चोल—मात्र एक
टा घाट—कल-सक जेनाक सिद्धी। राजा
कुमार चोका सँ फल्लाह आ खट-खट सिद्धी
उतारि बहलन आँख मे कल लेनय छाकलनि।
सबलन दोसकात नेवल एक रूपती कुमारी
कन्या पर नकारि पड़लनि जे तिनका हाथक
इपारा सँ चल नहि दीवान लेल कहि रहल
छलनि। राबकुमार कोन दृष्टिओ ओकरा-
दिस तबत अन्तुअर लेलथिन—दे देदी।
पियासे हमर कंठ सुखा रहल-ए आम
ब्याकुल भेल अह। वं किमे चल नहि गीनि

सकलौ त प्रागे छुटि बायल। एहना अन्त-
स्था मे अहाँक निवेद कि उचित भेल ?
युवती बाबलि—हे आगमनक, हम
आदीक स्थिति बुनि रहल छी, परसव
हमरा संग बाधता अह।

—वं कुन अखुबिया नहि हो त कि
हम ओहि बाधताक समक्य मानि सकत
छी ? राबकुमार पुछलथिन।

युवती बाबलि—वं अहाँ बालय चोहैत
छी त छर। अहाँ देखिद रहल छी जे हम
कुमारि छी आ हमर एमभाव समकल ई
पोखरि भिन्न। हम प्रण सेने छी जे एहि
पोखरिक उपयोग उपर्य व्यापक करताह जे
हमरा संग विवाह करतक छेक राबी होथि।
आ हमर विवाह हुनके संग होएत जे हमरा
पाशा खेलाय मे हरा देखि। कि अपने एहि
लेल तैयार छी ?

राबकुमार प्यासे ब्याकुल छलह। ओ
मह लेल तैयार म गेलह। युवती
कहलनि—आ वं अपने हारि बाह तखन ?
तखन को ? हुनक प्रण भेलनि।

तखन हम अहाँ के, अहाँक चोका,
बाय आ बायक संग पावर बना एहि मोह
पर स्थापित क देव। बाय तैयार छी ?—
युवतीक मन छलैक।

राबकुमार स्वीकृति दय पाशा खेलाय
केल देखि गेलह। पाशा तीन बेर चलल
परसव हीन खेर राबकुमार हारि गेलह।
युवती हुनाक सम के पावर बना देखलनि।
ओमहर वं वं राति बीते राजा-रातीक
संगहि राबकुमारक पत्नी बिना सँ ब्याकुल
रहथि। माल मे कना-रोहिट आरम्भ म
गेल आ मोर होहल-होहल सारो हल्ला म
नेलक जे राजाक कन्या ने काबि-बिकार
लेलाय गेठनि से नहि फिरलथिन। मरि-
सक दक्षिण मर चल गेठनि आ ते फिर-
नाक आवाजो नहि।

ओमहर जे मुह सन नवबीन प्राप्त
क के अन्त-अन्त देश फिरल छल अपन-
अन्त बीनक बिल्ला लोक के करैक। ई
बात एतरेत-पवत राबकुमारक नाम-बायक
कान तक गेलक। ओकर ठोठका भाइ के
बलन ई दरसयय भटनक पता चललक त
ओ माय-बाबू सँ प्रस्ताव केलक—माइ के
लोक मे बेशक। पहिने त राजा-राती
अन्तकली केहू-एन नदव होत मे अन्त-
नेलक छी। अन्त-एन होत कनेत
बिदा भेल। इहि लेने ओ सँ उमर नद
केलक काल ओकरा मन छेक से जे मात्र
क बाट जेनाक गण कलकल बदे मन्तना
भी ओकरा आलव द ददना मे केह भाइ के
ल गेलथिन। आ जेठ भाइ निरिहते बल
दिनक बाट बायक स्वीकारो होएतक ते क
गेठनि। परसव बल दिना बाट ओकर
सखा चोका मात्र एक मास मे चलि गेलैक।
मंदिर पर जेना मे अखुबिया नहि रहैक।
काण ओ रास्ता मंदिर तब बाहल रौक।
मुदा मंदिर ओकरा एकदम सुन-मशान
बुनेलक जेना कतेको बल सँ हडिठाम लोक
नहि आगल हो। आ चालकात धुरि-फिरि
देखि लेलक आ बाह बाटे आयल छल से
बाट छोड़ि जे ददना दोसर बाट रौक तार
वाटे चोका हल्लक। बाहल-बाहल म किछु
मू गेल वं कलकल सँ एगो बायक गहन
सुनेल। ओ बायकन म तलभारि चेलक
ता बाय बहुत दग बाणि गेल रहैक। बाय

भारो उठि राबकुमार चिकार पर जेवाक
 ११ राखा सं मरुत्यनि । राखा कळयनि
 क सेप चिकार खेलाह छेह रोलाह तेत
 दितक बाद निपुला ओ न आए
 राखार मे केना जेताह । युवा राबकुमार
 तेह डेय कळनि । जात-बाहल राखा के
 निम-समिल बहसि मुदा दणि
 कुन शत मे नहि आइक । संगहि
 युवा चिकारी क संग ठागि । मुदा-
 चिकार यसार जेवाक नत कळयनि आ
 इकनि ।

एतवा कहि ओ पोखरि सँ चुबक मे
स मंत्र पढ़ि पाथर पर छीटि देखकैक

पत्नी हुनक पाण्डर पकड़त कड़खति—
 यह अहाँक, हमरा किछु ने कुनाइ पड़ि
 न-इ। हमरा सफ-साफ कहू ने त हम
 दिभ जायब।

राम अमर-अमर बोझ कछहनि—तुम्ह
 दिदिनी! एक बोझ। पर बैठि चित्त मेली।
 पर नगर में शोर। म नैटक जे राजाक
 बजाए राति बिबरा म गेलैक। परतब
 स ठोकनि के पहुँचि आ अमर भौक
 सब बल सुनिरे राजा दलबक तैयारी
 गिगि गेहए। राजकुमार गामर पग-
 नेठेक। ओहो राजा बसियायि लागि
 आ हुनू मेट-मुठोर भूँ ब अनन्द
 पर अमर गेह सिकार भूँ

सभा-समिति

विष्णुपति केंद्र परिसर, किरिडिह,
मेघाधनुष क तलवाघात में अखिल "दूर"
क आत्म स्वाह में विद्यापति स्मृति पर्व
घर-घात सं-माओल गेह । कार्यक्रमक
आरंभ कुमारी धुबि, कुमारी रीता कुमारी,
धुबि, कुमारी माया तथा कुमारी वैदी क
"जय-जय भोवि मंगलारण सं मेह ।
मंगलारणक प्रकृतिकरण अभिनो इन्दु
महादक द्वारा मेह ।

निम्नलिखित व्यक्ति विद्यापतिक चित्र पर अद्यावृत्त माह्यापण करणी ।

(१) सर्व श्री जी. डी. सिंह (महा-
प्रबन्धक किरीबुर)

(२) एल. के. दास (बीप सुमीन्ट-
गव्या माहन्स)

३) एल. टी. चौधरी (कार्यकारी)
महाप्रबन्धक मेधाहनुमुर)

(४) जे. एच. भसीन (उपाध्यक्ष)
स्पोर्ट्स एण्ड रिक्रियेशन काउन्सिल मेम्बर
राजपुर)

(५) यू. के. प्रसाद (अध्यक्ष विद्यापति कक्षा परिषद)

[illegible]

ओ इहो बख्ताह जे जखन हम विद्या-
पतिक भुंगारिक गीतक सुब्बा बयदेवक
गीत सँ कहैत छी तऽ विद्यापतिक गीत
वेही जस्त आ सव्य कुभाइत भछि ।

समाक अभ्यसता करत भी बी. टी.
सिंह (महाप्रबन्धक किशुसु) बबलाह जे
विद्यापति एक महान आत्मा छलाह आ

हुनक ब्यक्तित्व जाति आ सम्प्रदाय विधी छल । विद्यापति अपन रसनासक प्रवृत्तिक कारणे कोनो खास क्षेत्रक नाई छलन । विद्यापति पर सम्पूर्ण देशवासि के समान रूप रह गन छनि । प्रवृत्ताक बात ले विद्यापति कछपतिषद द्वारा आयोजित ई पर्व जाति आ सम्प्रदाय विधीन अछि । कारण अनतिथि के पञ्चवार दल

[illegible]

एहि अवसर पर साठहें एगज रिक्तिये-
शन काउन्सिल मेबादातबुवं के विदेश
सहयोगक हेतु विशेष रूप धन्यवाद देल गेल।
तथाक दिस सँ श्री. जी. आर. तिल,
श्री. बी. आर. शाहा श्री ए. एन. भगवार्थी,

रमणोदय पञ्चाङ्ग ३३/५ आ० देवदार राह

5
 4
 3
 2
 1
 0
 1
 2
 3
 4
 5

श्री एस. के. तरफदार, श्री जी. के. छद्दिडी
तथा श्रीमती डी. अप्पाराब के साहनीय
सहयोगक हेतु धन्यवाः देल गेल ।

अंत में सहयोगी कमठ व्याक्तिक जनिक
परिश्रमे ई आयोजन सफल मेळ चर्चा नहि
करव कृतभता होयत ।

संस्थाक महा सचिव श्री हर्ष आर.
पी. सिंह, महदूब आळम (उपाध्यक्ष जे-
वी० डा० (सदस्य) बी० वी० मंडल,
भद्रस्य हा० वी० डी० मिश्र, लखनपूर सा,
अस्य सी० टोटे, अतिथि सा, आर० पाटव,
सहदेव सिंह, उमागोल सा, आर० गंगार
दिगम्बर ठाकुर विन्देश्वर भ्त सहदेव सा
गंगार सा, के० बी० तिरिया, टी० चर्की
आर० वी० दास, बबा सिंह, असोड कुशाग्र
सा, हर्ष जे० के० वी० सिंह, यूर-
एन० सा, एल० के० चौधरी आदि सह-
योग आ परिभ्रम न कराव नाई वा समेत
अभि ।

—एडेड मोदी

—सप्रेम स्मृति

बाबू भोला लाल दास
स्मृति समारोह

विगत १ जुन के वाक्यः संक्षिप्तः । कला संव कौशिकीक तत्त्वज्ञानमे हेम० दृष्ट० एवेन्सेमी जेरेविया सपयक परिसर मे मेडिथी स्वर्गीय बाबू भोला ढाल दास जीक पुण्य स्मृति मे एक मध्य समारोहक आयोजन भेल । समारोहक प्रारम्भ भगवती दयनर, गतिभार नवल द्वारा आभिलाष्यन आ श्री रमानन्द रेणुक्क स्वगत भाषण स भेल । डा० ब्रजकिशोर चर्मा मणिपदस क सभापतिव मे सम्मन अर्द्धाञ्चल कार्यक्रमक उद्घाटन करैत श्री बाबू साहेब चौधरी मैथिलीक विकास मे बाबू भोला ढाल दास जीक योगदानक चर्चा करैत मैथिलीक वर्तमान दुःस्थितिक तिल उपस्थित जोतक ध्यान आकषित करैथनि । मुख्य वक्ता डा० शम्भू नारायण श्री मिथिलाक सर्वांगीक विकासक लेख सम्पूर्ण मिथिलावासीक बख्खुता के बाबू भोला ढाल दास जीक प्रति वास्तविक अर्द्धाञ्चल बौद्धिनि, मुख्य अतिथि दयनरा जिवा उदयग केन्द्रक महाप्रबन्धक श्री रामेश्वर पाठक मिथिलाक प्रति ज्वन अपार प्रेमक प्रदर्शन करैत मिथिलाक वास्तविक महात्मा गुणमान केहनि । बाबू भोला ढाल दासजीक सुपुत्र श्री जगदीश प्रसाद कर्ण द्वारा अर्द्धाञ्चल वर्णक उपरान्त अमन अर्द्धाञ्चल भाषण मे श्री मणिपदस दासजीक व्यक्तित्व एवं कृतु त्व पर विस्तार स चर्चा करैत सम्पूर्ण मिथिलाक ज्ञातारणक आह्वान- केहनि ।

अद्यावधि कार्यनामक उपरांत श्री
मणिपदयक अव्यक्ता मे समग्र फवि
समेक मे भाग लेनिहार प्रसन्न कवि उला
सर्व श्री प्रदीप मैथिली पुत्र, मिहिर शिवा-
नाथ पाठक गीतकार नवल, चन्द्रमणि,
सीतेश सिंह, कामेश दीपक । एहि अवसर
पर एक भण्य वाङ्मतिक कार्यक्रम आयो-
जन प्रसद छल । समग्राहक समग्र श्री
सुरेन्द्र प्रसाद भीमसाव द्वारा प्रत्यवाद शायन
र मेह ।

— सम्पादक ग्रेण

ब्राया-ब्बि

जैना कि ज्ञान मेल आइ निर्मात्या
विरहास, दाम्पणा एव वमरुक्ष बैतर मे
भीषाब्ज आंचर नामे भैषिणी स्तिता बनि
राख आइ के अक्वपूर दर धरि लैथार म
जायत । एकर निर्माता छथि श्री पुरोरोपम
बोहरा । स्व शुकवक्ष कथा पर बनि राख
धरि फिर्लाक सम्राट एवं पीत चना
केवनिहि यो श्री समदेव । संगीत भी
गीतग व्यास एवं श्री एवंगण । निर्मादीक
छनि भा निर्देशन भी नेतृक कुमार क
कठकारा कोकनि मे अग्या हत्मी, बिग
कुमार, एवंग एम. दूद, कल्या दिखान,
देवानी राकर मास्टर बिहू, आदि छथि ।
गायक-गायिका छथि—महेन्द्र कृष्ण, अलका
यासी के चन्द्रणी मुखर्जी, बिरम समूण
गीतन ३५ एम.एम मे बनि रहल ।

मैमिकी में बनेको फिल्म अनाक चर्च
त अनुचित नही, परन्तु ह्मारे निम्नवादी
जे एक गोट भिस्मक पस्वतो निर्माता लोक-
निक 'झाहन' लागि जायत।
यदा-कदा ह्मरा लोकनि कुनेत आयक छी,

निष्ठुर ने आधा-छिटा आ हिठ्ठु समूण बाँन के तयारो मेले पण्डितिक दात जे के नौवरो आइपर जिय पुण्डित सकल । केदारो मेले पण्डितिक नाम पर मगरि फते 'कृष्णदात' मैथिलीक नाम पर मगरि फते पाद फिक्क के पीतने हो, पचम ओ के मैथिली फिक्क नाँव छल से मान्यो मे

—जयदेव लाभ

ਬਿਡੀ-ਪੁਰਾਣੀ

‘देहिछ बना’। खू नूक बहार मऽ
रहठ अछि । खू स्वयं । मिथिछा-विभूति
पवित्रमाळा बह भावपूर्ण छल छाप ।
नाम बन्द नहि कर । कसैक सेन देठ छी
तखन अपन रचना पठाब । —सोनेदेव

गुन अनेक सम्राटकीय बह विचारो-
त्तेक—दुन मैथिलीक सहिष्णुता छँक-
निक छेल नहि । ‘नाम हँ मू मिथिलाक
मन्त्र’ को ‘मिथिला-विभूति’ सभम हँ
अपन पाठक लोकनि ओ भाव्य देखि, दुन
एकर वही मूलतः होइत भविष्य मे ।
छाँक वी बात नै स्वयं पूछी तऽ एहि पनि-
केम समझन नै कहल जा सकैत अछि ।
‘बाल्मीकि’ आधारित ऐ प्रकाशित मेल अछि

तक को धरना करी थोड़ा होइत । की
एहिना 'बाखक्या' सेहो नहि देख बा सकत
— विष्णुदेव फा

कह लोचन कविराय

लाठी लेकर महिस तकरे छइ के नहि जानय
भनि नाम गणतंत्रक ल बलोगे उनय
ल बलोगे उअय सपिहु आन नै नेता
लाठीक बलपर जोत कहाबय बोट बिजेता
कहु लोचन कविराय सत्य-शिव-सुन्दर लाठी
गण-भक्षक तंत्रक रक्षक गणतंत्रक लाठी

प्रा. प्रकाशित तथा पायनियर अर्ध पिन्डिर्स ३२बी. बुन्दावन नेशाब स्ट्रीट,
पुनन भा

आसक्ति

अङ्क-१-२

जनवरी फरवरी ८८

सूच्य-पंचास पाद

देसकोस सँ देसकोसधरि

देसकोस-हँ १९९२ नाम थिक एक पत्रिकाक बरार सगढ़कीय जिलाक लेल हम देखल छौं। हरिना एक दिन आर नेहरू री, आई सँ हमारा अद्दाइ बल पड़िने। ओही पत्रिकाक नाम छै देसकोस। मर, १९८१ मे प्रकाशित भेल छल। लम्भावतः ओह दिनक बात मन पड़ि रहलद। पाठक से बात लिखबा सँ पहिने हम कहि देब उचित कुनै छी जे संपादक ने त हम ओह देसकोसक री आ ने आर देसकोसक छौ ओह दिन हम नेथ्य मे रही आ आरयो नेथ्य मे छी। किन्तु, सगढ़क भारतियो हमरि छल (जे तीन अंकधरि रहल) आ आरयो हमरि अछि।

मर, १९८१ मे जे देसकोस प्रकाशित भेल छल तकर सगढ़कीय जे पत्रिकाक प्रयोजनक कर्मने मे हम लिखने रही।

.....हँ प्रायः हम मानैत रहैत छल जे मैथिली जे पत्र-पत्रिकाक प्रयोजन छै। निश्चित हमरो लोकनि मानैत छी जे मैथिली मे एक नहि ओकोही नीक पत्र-पत्रिकाक प्रयोजन छै-जे अखेरि लिखिक विभिन्न समस्या पर प्रकाश द सक, तकर समाचारक युग द सक, जे जातीय चेतना आ एकताक शील फुल सक, आ दखैत-नाक आओक रवारी सक, जे मैथिली बाति सँ अग्र ओदघाती अवरोधक भंगल करा सक ओ अतीतक विभुजन विख्यात मिथिला केँ संक्षिप्त जे विश्व विषयक ज्ञानक करतक बन्म द सक, जे पुनर्जागरणक संवाहक नने आ मैथिली बाति केँ नव मिथिला निर्माणक प्रेरणा शक्ति प्रदान सक, आ ते देसकोसक प्रयोजन छै।

हँ बात बहुत पत्रिकाक संरचनाक हरा कहि रहैत छी। अकला एना कही जे हरि हम विषय केँ व्हार मे राखिब क हमरा कोकिन देसकोस प्रकाशित कराबै छै बाप मे छी। पत्रिकाक दीर्घजीवन बहुत किछु पाठक पर निर्भर करै छै। ओह संदर्भ मे हम छितने रही-कहाँवारी पाठकक प्रभु अछि जे मैथिली (मैथिली) सुख सँ छल-छल पत्रिका कीनैत छल आ पढ़ैत छल। हुनका जे देस-विदेशक विभिन्न समाचार जे हिन्दी-अंग्रेजी पत्रिका मे सेटैत छै, अपने भाषाक पत्रिका मे सेटि जाइत त निश्चित हराविक किनना आ पढ़ता। देसकोस हरि विषयक आबा पर बहार मे रहल अछि तथा पाठक कोकिन केँ विषयक विवेक अछि जे अग्रान्य भाषाक नीक सँ नीक पत्रिकाओ सँ नीक पत्रकारिता मैथिली मे देसकोस प्रकाश करै।' नीक वा देसकोस

निर्णय त पाठकक बाब थिक परब प्रभाव हमरा कोकिन अवलोकने केने रही। १९९२ कारण छल जे प्रवेशक मे सगढ़कीयक अतिरिक्त-अतिरिक्तक पत्रार चीन, चीनका देसक नहि, मैथिली आन्दोलनः के कथन, आरक्षण, देसकोस विशेष मे गोदावरी देरीक संग साक्षात्कार, चिन्तामणि हारम बाक सुनक'क डिडोक अतिरिक्त पोथी परिचय, अभिनन्दन हम हमरा अपनहि लिखल पढ़ल छल। १९९२ कारण छल जे लेखकक नाम-कथा/कविता छोड़ि-नहि देखे गेल छल। जे हो, हरि देसकोसक संदर्भ मे से आभास न हमरा कोकिन नहि द सक छी, कारण देस-विदेशक विभिन्न समाचारक निमित्त पत्रिकाक जे कलेसर देसकोस चारी आ ताहि लेल जे अर्थक प्रयोजन छै से हमरा कोकिनक पास नहि अछि।

ओनहुना हमर पत्रिका अरौ पत्रिका के देस-कोस मे थय भ रहल अछि। तथ्यादि बाह्र प्रयोजन केँ ध्यान मे राखि ई पत्रिका बहार न रहलद, तकर पूर्णिक प्रभाव अवलोकने सँ एक छन्द मे कही त जेना 'देसकोस'क अक्टूबर १९८१ सँ अक्टूबर १९८२ बरि बराबर-ओही रूप-गुणक संग ई बहार होइत। अख मे देसकोसक क नव नाम थिक 'देसकोस' जे पत्रिकाक कारणे परिवर्तित भ गेलद।

आब चलन देसकोसक चर्चा भइ रहल त भरिख हरो कहिये देब उचित जे साहित्य विरोधक (अक्टूबर १९८२) क बाद ओ फिदक दन भ गेल। एकर प्रभाव कारण मेक रचनाक अपाक, लेखक कोकिन अवरोधक। लम्भावतः आ स स बरि अग्रनहि लिखय पड़ैत छल। कहियो-काल एक आबटा बाहर सँ भेटि गेल त भेटि गेल। ओना भार जनक, उपेन्द्र दोषी आ बीकान्ताक वस्त्रोप केँ विवरक नहि आ सकै छै। ओना चलन केर बहार करय बा रहल छी त ई आवाज निश्चित अछि जे लेखक कोकिन धर्योग करता। पाठक कोकिन आ विरोध केँ देखि चयना क मादक। पाठक कोकिनक संश्लेषक-सदभाव पहिनेहि बर्र भात रोइत से विवास अछि आ बहार विमर्श हमरा कोकिनक पायेव थिक।

बस मैथिली
—रामलोचन ठाकुर

संविधान विनु मैथिलीक ओ
मानचित्र विनु मिथिला धाम
छाहि-जहारि सुहाह करब हन
विद्रोही मिथिलाक जवान

देस

शिक्षाक माध्यम आ मैथिली

अन मानुषायाक माध्यमे प्राथमिक शिक्षाक अधिकार भारतीय संविधानक अनु-धारा प्रत्येक नागरिकक मौलिक अधिकार छै। ओतवे नहि संविधान मे आर बाह्र रूपेँ कहल गेल छै जे सरकारी एहन कोनो आरन नहि बना सकै छ बाह्र सँ एहि भाषा-कारण आवाज पहुँचै। हरि लेल संविधानक सातम संशोधन द्वारा राष्ट्रपति केँ विशेष-विचार देल गेल छ जे सरकारी हरि तकर कोनो प्रवास कय स ओ होएर लोक भाषाविन। परबक एतना होइतहुँ तत्कालिन समीनताक आगमग संतीष अवलोकनादो सँ मिथिलीक सँ नेना सुटका केँ अपन मानु-भाषाक माध्यम पिछा नहि देख बाहर छै आ कबजोही कोलक प्रभाव कादा पिछा-ओल बाहर छै त तकरा की करै बाब। अख मे संविधान थिक संस्कारक लेल बुरा कोनो बखन जेना चाहर उपयोग क सकै, व्यापक क सकै। प्रत्येक सम दोष सरकारी नहि छै। हमरा कोकिन हम सँ बेसी अभिप्रेरणा छी अपन भाषा-संस्कृतिक आगमतिक छै। ओलक-यावक सदा सँ बतोक भाषा संस्कृतिक दिवसी रहल। ओ भारतक मौलिक रीढ़ तोड़ि अपन पछ-बगुना बनेबाक प्रयास कने करत आ ते ओकर हजो करकेँ भजा होइत छै। ई भाषा किरियो संस्कृत छल, कहियो उर्दू-फारसी छल। कहियो अंग्रेजी छल, आ आर कोलक भाषा हिन्दी अर। सरकारी भाषा हिन्दीक सभासभादो आकांक्षा के देखिय परबि के भारतक अग्रान्य बाति हम चेतक आ तकरे परिणाम मेक १९५६क राष्ट्रक पुनर्गठन - भाषावार प्रान्तक निर्माण। हम मैथिल बाति हरिनाम जुक गेलहुँ जे महान ऐतिहासिक भूत छल आ तकरे फल भोगि रहल छी।

परबक भूत कि हमरा कोकिन एकलेर केने छी। एखनो बखन-बखन माह भएल बाहर जे मिथिलीक सँ विद्याक माध्यम मैथिली हो अकला मैथिली भाषी जेना के मैथिलीक माध्यमे शिक्षा देल जाय। ई माह केहन अग्रकारिक थिक से विचारक पछति माह केनिहार कोकिन केँ भरिख नहि छनि अकला प्रतिक्रियाशील तल जे ऊपर-ऊपर त मैथिली भक्तक संग राबै परबक वस्तुतः ओ मैथिलीक विवास चाहेये तकरे ई माह छै। कहबाक प्रयोजन नहि जे वर्तमान मे ई तल बेसी सक्रिय अर।

आब कहै एहि माहक व्यवहारिकता पर विचार कर। मानि छै जे सरकारी हरि माह केँ मानि छै। हमरा अवस्था मे एकेँ अंगक छत्र जे मैथिली माध्यम स पढ़त तकरा लेल अग्रग शिक्षक चारी, हिन्दी उर्दू, गंगा आदि भाषाक माध्यमे पढ़-निहारक लेल अग्रग-अग्रग शिक्षक चारी। हरिनाम ई कथन नहि पढ़त जे सरकारी

रेकडेंक अधुनार मिथिलीक मे ई सम भाषाक बचनहार रहै।

दोसर समस्या थिक पोथीक। निहार मे झूठी पोथी निहार देल बुरा कर्मोरेम छुपै जे सरकारी संस्था थिक आ ते हिन्दीक पत्रकार या मैथिलीक विरोधी थिक। लम्भावतः जे हिन्दी पोथी खरक प्रारम्भ मे बाजार मे आबि बाहर छै जेना बहु खेर आबि गेल होइत, त मैथिली पोथी तकर ६-७ माह बाद मे खालीक बाहर छै। विचारणीय थिक जे बखन अवलोकन मे आरकोल कोसँ समास नहि भ पवैत छै तखन ५६ मास मे केना होइतक या हते दिन छात्र केना प्रतीक्षा करै? हरि संदर्भ किछु संस्था सम आवाजक आ थियक कोकिन सँ अंग्रेज करै छल जे अकला कोकिन केँ मैथिलीक माध्यमे शिक्षा दिया-नथि। देखि-बेरो कि बकवास नहि थिक?

जे अभिभावक एखनो बुरा बिदा भेल छल जे पहिने हराक पत्रपिप्रा द हराक वा मरिष के नरा अकला छै कहैत तकरा सँ कतेक भाषा कइल बा सकै? दोसर हरिदुका विभातीय भाषा संस्कृतिक प्रभाव मे जे अपन भाषा चेतना मरि सेरायक छै सेरो कि कइरो सँ चुकाबल अर। बाहरि थियक बात अर-दोसर थियक हुनको संग जान होइत अछि। दोसर बात जे मिथिलीक मे पिछाबति ओतेर स्थिक चयन करै छल थिक आन बाकरी नहि सेटैत छनि अकला खेतीवारी आ अग्रान्य परिवारिक अमेका बेगी रहैत छनि आ हरि चाकरी मे गामक अग्राल रहियो आवासे सम काब करारि छै छल। कोहूँ आ बहर सम एहि थियक सगुराकेँ हिन्दीक छिल पर उभैत रहल हुनक पढ़ैत छनि आ मैथिलीक नव छिल कइल। तेँ अग्रबलक बात नहि जे मैथिलीक सँ उभिते अकिचोड थियक कोकिन अपन नाक भुति जैत छल-संकीर्णताक प्रभाव ने छनि बाहर। मिथिलीक थियक गंगक थियक नहि थिक जे भाषा छै बहताक करत सुख वहर करत आ अग्रान्य करत। ई बात हमरा कोकिन केँ मन राखैत बाह्र।

दोसर बात थिक पोथीक दम। एके विषयक हिन्दी पोथिक दम सँ एकरा रहैत छै त मैथिलीक चारि टाका। हरी चाडि मैथिली विरोधी सरकारी संस्थाक थिक। मिथिलीक कोक बर्र लौकिक नहि अथि को रीढ़ टूट चुकल छै जे ईकहु तीन टका बेगी द क अपन भाषा प्रेम नहि देखाओत। हरिनाम हरो बाह्र लिखन भरिखक अवसर जे बाहरना पोथी विक्री केँ हिन्दी, उर्दू, पोथिक निर्मित मात्रा एक सड़ टाका बना देल पड़ैत छनि मात्राठाम मैथिली पोथीक निर्मित पंच सड़ टाका।

(नेवाँवा पृष्ठ ४ पर)

याज्ञवल्क्य

प्राचीन ग्रंथराम में बाहि मुनिक चर्च सार्वभौमिक अर से आम केओ नहि मिथिला सत्तात्म दोषीकर याज्ञवल्क्य छथि । अवधी भाषाक प्रहासक गोहाथी दुबडीदास अपन रामचरित मानस में सेहो हिनक चर्च कएने छथि—याज्ञवल्क्य मुनि परम विवेकी, भावदास रहहु पढ़ेकी।

ई जे केहन पंच प्रवशनी छलाह ताहि सभस्य में बुधवारय कोपनिषद में कहल गेलअ जे पंच खेर वेदेर बनक आश्रयेय पठ करइनि बार में विभिन्न देशक ब्रह्मण सम रहइल सेबाह । हिनका लोकनि में विशिष्ट प्रवशनी के छथि से बनशाक निर्मित ओ एक हजार गाय बर बा देखनि बा सोचना कइना देखनि के जे बिशिष्ट प्रवशनी होबि से सम गाय ब बाणु । पढ़ेकी कोनो पंडित के बनन शास्य नहि सेबनि राबन याज्ञवल्क्य अपन शिष्य रामअबा के गाय सम होबि कह केबाक आशा देखनि । गाय सम होइते पढ़ेकी विद्वान कोनि तमसा सेबाह आ छुट मेळ जाकाय । विषयी सेबाह इहए मिथिलाक सत्तात्म योगीश्वर याज्ञवल्क्य भा पराश्रित प्रवेदी पंडित भरना सन मुहू छ अपन सेबाह । ताहि दिन सँ ओह राबनशाक ई कुटुम्ब सेबाह । कइबाक पयो-जन नहि के ओह बंशक रामा लोकनि के ओहन प्रवशनी होइत सेबाह से हिनकहि प्रसादे ।

याज्ञवल्क्य देवराजक पुत्र छलाह । हिनक समयक सभस्य में पवनहुँ विद्वान लोकनि में सत्तात्म अछि तबावि अविवाहाय विद्वानक मतें ई १०० ई.न.क पूर्वहि मेळ छलाह ।

हिनका सभस्य में जे बात समसँ बेसी फछिछाएल अर से ई जे ई निर्गन्धक छलाह—मैचिब छलाह । एहिठाम ई बिबल भरिलक अमरंग नहि होएत जे सेबिब बाण्डोउ उगीनीतक काणें बनेको विभूति पवनहुँ होएलछथि या आन देशक लोक हुनका भागनेक निर्मित प्राणण चेष्टा करइल । कविपति विद्यापति पर हेमनन्दिनी बंगाली लोकनि दाबी करैत छलाह आ गोवीन्द रास के स अन्धहुँ अपनभोजनि छथि । काबिल के उल्लेख करल जाएत । उदयनाचार्य के बंगाली कहल जाइत छ । विष्णु दिन पहिने एगो निबन्ध पढ़ैत रही बार में कुमारीय भइ के तमिक बिबल गेबइ । परब यात्र वसन्त सग रहि तरक विचार नहि मेळ तकर प्रबान काण जे संदिता में स्पष्ट बिबल अर—'मिथिलाबास्य स योगीन्द्रः' । मिथिला तल्ल विमर्शक अमुताभुता नेपाळ में बसुलका कुसुमा राम में याज्ञवल्क्य मुनिक आश्रम अर ।

कइल जाइत जे याज्ञवल्क्य वेदाभ्यास मुनिक शिष्य छलाह पाठ्य गुरु सँ खण्ड म जेबाक कारण हुनका सँ पढ़ेक समस्य विद्या के ओ त्यागि देल । एही सँ प्रमाणित होइत जे मिथिलाक सत्तात्म केन आत्मागत भिमानी होइत छलाह । तकर बाद ओ सुदिक उपासना कइ दुर्गभयजुवेर प्राप्त कइ-जनि आ पश्चात याज्ञवल्क्यस्मृति, योगी

इहए मात-बाप !

जे कइम सस-सस करम, सस छोदि बिछु नहि रहव । कइमक ससत खा क करे छी । ओना ई बात दिगस मेळ के हम सस मात हमरेटा हो आ अश के ओह स कोनोटा सरोकार नहि हो । अन्ध में सस छर छी तछरो व आहरनि निछुकी नहि म सकइ-अ । जे भोलि सँ देखे छी जे सस बिबि आदि जे कात सँ छैने छी से सस बिबि ? जे अमुपल कर छी से सस बिबि आदि दिगस बकरा उचित बुझैत से ? तँ इहए, सस की छर से इहए नहि बन छी । एतेवसा बने छी जे के आलि सँ देखल, कात सँ सुनल आ हडय सँ अमुपल करइ—सइर कर । एह गय दिगसाक त से इहए, फेट नामक सइर रहि सोपदी में नितान्त अपाय छर । तँ एहि अभाव के अतबत बंशक गम्भी के अपन कठ सँ उतारि छी वा मायक उतर सँ खरि बाप दिऐक—बंदा खरा भरीक आभारी रह ।

पाठकक इच्छास से कोनो लेखकक हाथि नेतार सत्सारिक वारस चढव सन छर, सीताक अगि पपीशा सन आ विशेष के ओकरा छेले जे कविता छिलैत हो । आर अपने त बनिते छी जे कवि सँ केकार परि देश में यदरो के ने कुम्भ बाह छर । इहए, गहरी तयो काबक होइत जे पर सँ घाट आ घाट सँ पर करि कोनो कइना बोरइ, किनु ओह कवि के की कइल बाह जे ने त परक अर ने घाटक । ओना इह देश में बिछु कोर अक्से छथि जे यदा-कदा कदियो के दू आठु बाल ओगारि देत छथि । एउठ एहन लोक आ एहन कवि छथिरे अनेक ?

बिछु कवि के हाथ हरम अथवा सख पाठ करैक बेहोस करिबकोअ दू चारि केववा मेडि बाहर छनि, अथवा भइ होइक फिडिबका समके जे कोनो कविक प्रकल्पीय वाद बाह क दैत छर किनु ताहुठाम कवि कपर काज करछ वा गोटी दुसोरवना बात कहि सकै छी । ने त मान्यता बंगल आ आसाम छोदि समस्त भारतीय उपायक्य में छैक । बंगल आ अख में बीरबलाहनक 'दयामाग' स्वीकृत अर । एही भासक अनुसार संपन्न पौनिक सम्यति में विधवा स्त्रीक रिवाज स्वीकृत मेळ । मोतेवे नहि एहि आसाम अनुसार मुनिहारक कोनो बेटी कुमारी होइक तकर विवाहादिक खर्च छैक सम्यति फाक क देवाना सेही विधान छैक आ बंचक सम्यतिफक विधानन देता लोकनिक बीच होएत ।

दाम विषयक चर्चाक क्रम में याज्ञवल्क्य स्मृति समसँ गय दानक रूप में दान-दान के निलयति कएने अर । विद्वान लोकनिक मते याज्ञवल्क्यस्मृति माइता के देखैत उपेकाक से—बकरा कि राखीक विवाहाक सग्युग फइल बाइत शाहकीय मान्यता मास छेलेक आ एही मयक भावपर सगल राबकास चलेत छैक जेना कि भौयकाकीन शासनक भाचार कोटिकक भयंशान छ ।

—मुजताब अली

लेखा-जोवा (१)

आबिक लोक में त निरास, मुक्तिबोध आ कोक ने नामी-गिरामी कवि या स वताइ म रोलाइ या बिनु ओषध-बारीक चर्चि देखनि । ई बात पराक बिबि जे दुइबाक बाद हुनको लोकनिक छेलेक बकबटा होक समा म बाइर ।

इहए, हम हुनके लोकनिक खानदानक दगो कवि छी । कतौ गोरी नहि सुनल आ ने कपरिक बोरार छी—तँ केओ बावो नहि ओगारक । पहिने एहि नाक कचोटो हुअइ जे केओ बिबि ने सुँडै ? परच जेना जेना समय विगत गेछ, बुद्धि ठेकान उगीत गेछ । एनो इहए हमरा त कोनो तर ठेकान नहि सेलक हुन । बुद्धिबरि ठेकान जागि गेछ । मेले दया कि गुरु-गुरु में बखन कि हम नहि रहि छर-ने आइल रही, हमरा मन में कविताक सइर उमरि पड़ल छ आ हम ओर में हुनी-मारि मोटी वहाइ क क छेलेक देखि-तिऐक आ बइठा मे वाह-वाहीक सनम पनिलहुँ । ओना हम वाह-वाही चारैत नहि रहि । चारैत रही जे बाह सभासक हेतु हम कविता छिले छी, इहए सगी सन सेहो ओर में भाग किअइ । परच मेळ कि इहए, बौद्धिये दिन में हमरा सभक नेताक पला जागि गेछ । ओकरा सभके कविता स कम अपना नाम सँ बेसी विनेर छेलेक । ओ सभ कोनो पृथ्वर अपन नाम छामोनाइ आ पसरित केनाइ मे अभिरुचि रखैत छल । एक दिव त ओ सभ कोकक हुल दई क संचरि बल करै छल त दोहर दिव ओकरा लोकनिक सभ समय दुबिधा बटेरवा मे नीति बाहल छै ।

इहए, हम बेसी खूब-खिलब नहि छी । किनु देना मे हम बने पैंब कोक के पढ़ने छी ताह सँ इत्ते अक्से जुनहुँ जे बिनु निष्ठाक बिनारी में बिछु पयोनाइ संभव । परच जेना-जेना गमहर होइत गेबहुँ—देखलहुँ कि जे केओ बिछु हाथिब देबनिहि ताह मे हुनका लोकनिक टोकर-बोर, गोटी सुतानाइ बेगी छलनि ।

इहए, हम मानें छी जे आठुग युग आशंक युग नहि बिबि । हम हरी मानें छी जे सच, ईमानदारी आ मानवीय मूल्य भगवनेशन ओगार छर । आठुग युगक संग ओकर कोनोटा सभस्य सरोकार नहि । हमरा हरी बुझैक अर जे कोक उगीत सय के नमस्कार करै । जे बिहार म बाइर । बकरा कुशी मेडि बाह छर, बकरा कोनो भ्रमाण-पन वा पुरस्कार मेडि बाह छर—तेहरे सभठाम मान्यता मेडैत छैक । किनु हरी कि एहिठाम सभ उपयोग प्रबान छर इहए, चान्सक बात छर सभ ।

अहाँ सोचैत होयब इहए जे कि हमरा कतहु चान्स नहि सेलक—ते हम हटा कहि रहल छी । ई इहए, इहएत सच छर जे हमरा कतहु कोनो चान्स नहि मेळल आ भरिलक मेडयो नहि बाह । किनु इहए, एक बात पुछू, अपने बनाव देव ? की पढ़ी केळ हम अपन बाट छोड़ि दी जे सभ भोतिया गेब अर ?

हँ

लाल बुभुक्षकरक चिट्ठी

श्रीमान् सम्पादक श्री महोदय ।

नमस्कार पर कृप्य मैत्रिकी ।
आशा हाव सुरति की कियु ? विरसि
बन के घरा वसल -तकरे परि छनि जाळ
बुभुक्षर के । असल मे के पुली त जाळ
बुभुक्षर विदेर भूमिक उरवा सरगम छथि
ने, ते सरवा सं डिवासनकरि विदेर छथि ।
केओ गारि पवतु वा आयोनिद देउत, वा
इ चाट बगारइ देउत-हुनका छेले बन
सत ।

हं, अहाँ किले छी के 'देखि वलन'
क डिक्करीन नहि मेडि 'देखकोव' के सेटइ,
ते ओही नाम सं पयिका वरार करय पवत ।
बहि मे विनाक कोनो कारण त हमरा
नहि डुकि पड़ेर । देखि वलन हो वा
देखकोव-वात हके मेळ । अलने देखकोव
आर त देखि वलन रहेटा करत-से हक
बागबाय मिम के काइ हमारो बागबाय
निम ओकरा नहि मेरा सकत छथि । अहाँ
कने आनभक नहि द क विचार आ अलन
नाक दारि सरगम करु के आर सं लख
नल पतिनि बाबा विवागति की कहि रोळ
छथि-बाकचन्द्र विवाहार भाषा

उठु नहि कारण दुखत रावा
ओ परदेस हर विर सोर
ई किचर नागर मन मोहर

से दुकन सम बने किहक ने नाळि पड-
पडलओ-वाकचन्द्रमा वन हमर ई भाषा
बारिकोडि मैत्रिकी भाषीक इतरु रूरी
निर्मल आकाशपर आर दिगुल तेम सं
बागवमारत रहत-बाबुरि ई पिबो (देवक)
ते अहाँ विलोकमुक भ क कान मे गयेछ
छाव साटी सरिकोव तेकर वृति केनै छी ।

आन भगिना विषय-राष्ट्रपर संकटक
समय मे । सम्पादक श्री, श्रीमती गौरी
बलन किछु वगत छथि त तकर ओ अर्थ
नहि होए छे के हम-अहाँ बुझेन छी ।
ते ओ बलन कहै छथि के राष्ट्रपर बरिय
वर्तक मरान मावसवादी भीमान तम्बूरी-
बाद कहै छथि के सुदयारि बग युद्धक
नकाहा बाबि रहल ए त तकर अर्थ ई कप-
मयि नहि के हम सम तकरे बाओ भाबा न
शुद्ध लामना को छेक वाटर वरार बाद ।
हक लोक अर्थ होइ जर के अहाँक आलन
मे के पयार परल अर वा अलक टेरी
बागल अर, कोनो-बनारी ने के किछु अर,
पौली-पेटारी ने मे गदना-गुनिया अर-से
सम वरत प्रचलनमौक श्रुया कोष मे दान
द दिरेक । बं तार मे कट हो त ओके वर
मे बा कान मे छवेल द वहरि सं सुंद
भाषि दलि रहू-वाकी नाव देखक स्व-
सेवक कोकनि अनदि क ले । सम्पादक श्री-
जेना कहरी छे के के डुइ म नेबा आ
नाक कण्ठे छनि से तकरे परि अहूँ के
अर । हेओ भीमान, शब्द मन्त्रि बल
होइत होइक परव ई के बरक के ओकर
अर्थ सेरी बडम दौरत छेक ? अर्थ त
देस-कान नावक सुदयार कल्लेन रहैत छेक ।
सं वर पुली त रहर सम लोचि क हम
राजनैतिक शब्दकोष तैयार करवाक काब
हाथ मे छेक अर आ जोइ-नुवत कानो
मेलेअ । असल मे गायः बल दित सं हम
श्रीमती गौरीक समल भाषणक प्रत्यक्ष

देरा मगर महान छइ

अपाठक के देरा हिन्दुस्तान छइ
आर जे किछु हो मगर महान छइ

वारवधु अइ पतय पटरानी बल्ल
कुलवधु कलपत अइ बलबास मे
आइ भरथा पर पतय अभिमान छइ

अतय कने पर चले घरकार अइ
शक्तिशाली हाथ तम बेकार अइ
देरा बहिले जा रहल आरु मगर

बंवल हड्डितक ने सावुत राष्ट्र के
को देते, सावुत बंवल त शान अइ

गोध-गीदर सनावपर महोत्सव
देरा के सेवक बल्ल जलगाइ अइ
नाक बुनि विबुही सदांच पतय बहो
बीस सूखी इल के पैगाम अइ
ठीक सं देवू शमशान न ई विके
अरे एकर नाम हिन्दुस्तान अइ

को कहल ? छुहर जेना भूलेते अइ
अरे ई त छेक माया राष्ट्र के
आर ई सब शवान नहि छथि राष्ट्र कवि
राष्ट्र नायक के गवै छथि आरतो
बात भनहि विभिन्न अइ सावियव
तखन ने ई देरा हिन्दुस्तान अइ

-रामलोकन ठाकुर

कारण ओकरा अधिकार मेडि गेळ छेक से
त छोटि नहि सकेछ । भाषा विस्वाक
सोभ अर्थ सेळ खु बनि गेनाह आ सुविधाक
छेक खुओ मे गदरा वरत उपयुक्त होइर ।
वर्ग विचरि बाउ-माने माकि-मतबन
सरकार अपन हकमुदर कलतो अहाँपर
कमदाक मोटा बादि संकेछ, कलनो उस
बादि संकेछ आ कलनो कपने चडि सकेछ-
अहाँ कान छनि पटरानी । युनि विचरि
बाउ-माने छनि के पोखरि वा हाट-बजार
वा पक पर न गेळ बा सकेछ-वास
चरनाक पबलियो मेडि सकेछ ।

अहाँ के हमर मायया बुनि-पुदि
अबल कानि सकेछ । अहाँ कहि सकी के
कोनो देखक प्रचन मंची पुरन बात केना
बाबि सकेछ ? पडबल हल छुली त भान
देखक बात त हम नहि कहि सकेछ छी
पडबल भारत वन विषक कुरलम गणनायिक
देरा मे हमर बात प्रचन मंत्रीहटा क
सकेछ । बं दोहर केओ लोक के गदरा बने
छेक कहै त ओकरा मारि दोहा सं कपार
कोहि देख जेतेक, छुहरा हुका देख जेतेक
आ हरी मे सं नहिगो टोळक बाद त काँके
अबरो पठा देखे हते । अहाँ ई बात सत्य
होइत छी कोनो मसल नहि रल्लिय के भीमती
लोक अपन कहिके भूमि-भाषा वर्ग-संकेत
किछुओटा नहि छनि । महानुर्ण त ई छेक
वे माडि सं अरमुक रल्लिय ओ समस्त
भारतीय भाषा-वैयक्तिक विचार कुबारी
पर अमरवादी बन पयल छैथ ।

हं त जेना कहैत छलहुँ ब ई समस्त लोक
बकरा वर पर भीमती की के राबिबिचन
मात छनि गदरा बनि बाछ त राष्ट्रक
अबलवा वरा वर छेक बकरा रहत । जेना
कि देरा विभाषित मरगो के अलंछ अर,
किछु भाग पकिस्तान बकिषा छेक आ
किछु चीन दवा छेक, किछु बंगा देग के दान
द देक गेळ आ किछु बंगा देग के दान
के अंगो मे देरयो के राष्ट्र अलंछित अर-

आशा अछि के हमर दहि शक्त्य सं
अहूँक राजनैतिक सुदक किछु विकल
होइत । ई वन निरान वैयक्तिक आ गोप-
नीय थिक-तें हका उपबाक कट नहि
करी ?

प्रयोचर नहि देवाक प्रलभ आकांक्षी

श्रीमान् लालबुभुक्षर

बुभुक्षक मास बायो

किछु देखल : किछु सुनल

वियत ३४ दिअर के अ० मा० मिथिला संघ कलकत्ता, अरन रजत बरती सर्वक उपबन्धन में मिथिला-विभूति पर्वक आयोजन कैने छल। स्वामीय स्वीट्र भातो विस्मयिषयक समाचार से। कहि अवसर पर बगो भासिका सेहो बहार कर गेठ कम सं कम दोहर दिन संस्कार कवि समेन-जनक समग्र अरनरि हयितो देसक भासिका विहलनि संघक प्रोप्राइटर श्री बाबू साहेब चौधरी। भासिका देख। सं पदिते कोषक मुई नीक कबो निहारि लेनार भासयक छलनिरे—फरी अयनक हाथक हाथ से रवि बाइक। मोना विहलजाक बाद कहि देलनि—सम तयार नहि म सहे।” मोना ई बात धिया नेह के अतिरिक्त ठहर ने छल छेक—मिथिला विभूति पर्वक अरनर पर उपस्थित समस्त मैथिली मेथनी के खलेह।” बे हो भासिका से कय-कम क विषय नहि छै। पहिब दिन के हगो पयो निहलक नेह छेकैक तकर मयूरा देखू—अखिल भारतीय मि० संघ कलकत्ताक रजत बरती भा’ मिथिला विभूति पर्वक कार्यक्रम। ३-२२ नर शनि ४ भेलें सं। १. प्रमोनीत अखल ओ अय अतिथि के संस्कार रजत प्रथम २. मास्य प्रथम ३. गोशालिक गीत ४. रागाताहालक भाषण ५. संघ अयनक भाषण ६. उपाध्यक्ष भाषण ७. प्रथम अतिथिक भाषण ८. प्रथम ब्रह्मक भाषण ९. मान-पत्र अर्पण १०. विभिन्न व्यक्ति भाषण ११. अयनदीय भाषण १२. कवि सम्मेलन १३. फंड संगीत १—(अ) कदमर्मा (ब) सरस-रेख (ग) एलन गोविन्द (द) रमण (घ) प्रदीप (क) रवीन्द्र महेंद्र। मनमोहन-विजय ब्रह्मराजण भा।

पत्नी से छपक तिथि के बाद २ देख बाद छपद नीक, काण हारर कालकम प्रायः दुनू दिवक छल। दोसर दिन अतिरिक्त से दुवधक अयोजन छल का से नीक छल त रमण, प्रदीप, मनमोहन-विजय आ ब्रह्मराजणक फंड संगीतक कोष गट तकिरे रवि गेठ। कलिको कति के परिक दिन किबो नहि क्योमात्र गेठनि।

केना देखल, मिथिला विभूति में किण बी मणिपदम मिथिलेनु बी देवभारायण बाबु भा विन्नेवर मंदब समानित गेठार। केना दुनब, मधुप बी आ ठदित बाबू के समान भी० भी० सं पठा देख जेतनि। दोसर दिन जे कवि सम्मेलन गेठ तकर अयनछता केतनि अरं म किण बी आ भाग जेतनि सर्व श्री मायातन्द मिश कोरेन्द्र महिषक, सीनर नाथ ठाकुर, रमण प्रदीप मैथिलीपुत्र, उदयबन्धन भा ‘विनोद’ राम जोचन ठाकुर, विभूति आनन्द, कश्यप भा बगर अर्जुन काक कण, विनोद कुमार भा, सरल, कदमर्मा, रमेश, जनेरी प्रेमोदत दास, कुलकांत भा आदि।

अरुणोदय प्रकाशन ३३/५, छा० देवदार रहमान रोड, कलकत्ता-७०००३३

हुन्दवान वैशाख स्टेड, कलकत्ता-५ मे मुद्रित।

22/2/84
SHI GANESH

बालमंद

अटकन मटकन

अटकन मटकन दहिया बटुकन
बजै छौ हिनरो त मार दू बटुकन
मिथिला मे रहि क हिनरो बजै छौ
हा होरे अन्न अपनानो करे छौ
खई खुषबाय छौ को कोने के अनियों
गदनि पकड़ि छु क्यो हरी पटकन
बिनु राख्य मिथिला बिबिह मेळ रहवै
भाषा भिहोन मेळ कोठे गौ मरब
मायक ई काज फाज होरे से आनि के
जाति पति भेद बिहिरि आबो ठ बटुक
आइ ननि बिहार गीठ भीरु भरोजन छई
एकचोड काइबान करे मने मन
—रामलोचन ठाकुर

मैथिली पोथी/पत्रिका कीनू आ पढ़ू

इतिहासदंता (कविता संग्रह)	२५ टाका
वेताळ कथा (हास्य-व्यांग्य)	४ टाका
आदुगार (अनुचित सादक)	४ टाका
प्रतिबन्धि (अनु० कविता)	४ टाका
अर्धनारीश्वर (वपन्यास)	२५ टाका
मुत्तरी धुनन्दन रास : (व्यक्ति ओ कृतिस)	७ टाका
मैथिली लोककथा	५ टाका

सम्पर्क करू :-

अरुणोदय प्रकाशन

कलकत्ता

मिथिलावासीक मांग :-

१. मैथिली के संविवानक आठम अनुच्छेद मे स्थान हो।
२. केन्द्रीय लोक सेवा आयोगक परीक्षा मे मैथिलीक स्थान हो।
३. मिथिलीक मे निम्नतम सं उच्चतम स्तरपर शिक्षाक अतिवार्थ भाषयन मैथिली हो।
४. मैथिली बिहारक दोसर राजभाषा हो तथा मिथिलीक मे एकरा प्राथमिकता देल जाइक।
५. आकाशवाणी दक्षिणा तथा मातङपुरक प्रसारणक माध्यम भाषा मैथिली हो।
६. छतरपुर सं अयनगर बरिबड़ी काइद बनाओल जाय।
७. मिथिलीक मे यातायातक सुव्यवस्था हो।
८. मिथिलीक मे कृषिक अवस्था मे सुधार हो तथा रोहो दाही सं बचबाक उपाय हो।
९. मिथिलीक मे कृषिपर आधारित सरकारी उद्योग-धंधाक विकास हो।
१०. मुखपत्रपुर मूर्धनर केन्द्रक प्रोग्राम मे मैथिली के प्राथमिकता देल जाइक।

मैथिली मुक्ति मोर्चा

कलकत्ता

—सुशतका अलो

□

प्रो० हरिमोहन भा

प्रो० हरिमोहन भाा माने वर्तमान युगक सर्वाधिक पठित साहित्यकार प्रिय साहित्यकार।
हरिमोहन बाबू, हास्य सम्राट हरिमोहन बाबू, मिथिलाक दार्शनिक परम्परा प्रवल स्तम्भ
हरिमोहन बाबू जीवैत छथि आ ताबनि जीवैत रहता काबनि मैथिली भाषा-साहित्य ।
कृष्णाक प्रयोजन नहि जे हरिमोहन बाबूक प्रति उचित समान / श्रद्धांजलि मैथिली भाषा
साहित्यक कें समुद्र केनाइ ओकर विकासक पथ प्रसस्त केनाइए या होएत आर किछु
नहि, किछुओटा नहि ।

हम—आश्चर्य ! एहि दिस हमर ध्यान नैसि

बुद्धि । दही चूड़ा चीनी खाला उत्तर पंठ म

समाल नीवाँ मुँहे दुहुँकि रहल अछि ।

पिता : मृत्युसज्जा मैं / □ विभूति आनन्द

□ □
येणपण्ण विनगीक समया उच्च-नीच
हमरा अनेकल अछि बाउ ।
हम एकटा सोहिनक गाछ भऽ नीलछुं
सकर सर्वांग मूआ सँ आक्रान्त रहैत आपल
ह्मरछ ई देह - गाछ तहिये ने कोकानि बुझल
बहिया सँ एकर देह पर दोसर गाछ अपन अलिल बनास लगल ।

बाउ !
हम अपन छहि मानसिक लहरमनीन केँ
छाल बापक मनबनाक प्रयास करैत अपलछुं अछि,
ई चाहे तऽ फूल-फुल भऽ बाहल रहल अछि
अथवा, शून्य मे विचरैत कोनो नीरा-बीदी
अथवा, विजया-सेवी मनुष्यक कबाल भऽ कऽ
एहि समाज द्वारा मान्यता प्राप्त करैत रहल अछि ।

□ □
आ तँ,
जीवनक छहि तोंछा वेला मे
परिलत्तनक ओर होत विमल सपूण व्य
अह मुन ओई उमर-ते मुद्रा मे
कुन नदने उज्ज्वल का रहल अछि

□ □
हमरा कोए,
अपन संस्कृतिक मोह आ लड़पनक कटाह बंगल मे
अनेरे लोयाइत रहलछुं
मृति मे जीवाक हमर-अहांक ई आम मानसिकता
मोहलछन कऽ कऽ लोक केँ तोह्रि कऽ छुंज कऽ देत छे बाउ ।

□ □
अपन मिलनक तपण करैत
मनुवादी बरपरा मे गढेत
मुक, गोम आ मूकक ओर-ओर निखवेत
अथवा
गौरवपूर्ण इति-वृत्तिक नीच मिस्टरि खेलाइत
आइ जे कि हम वत्तमान सँ कटल रहलछुं—
जीवनक सम सँ अपरहाइ शब्द पर
स्वीकारक मोहर मारवा पर बित्त छी ।

□ □
आइ हम
हिमालयक कोरा मे चलल अपन गामक
धीव चौपटी पर ठाढ़
आलि मय्य विपट शून्य केँ छन्दे
अरीकक अवस भास केँ
बूढ़ा कमबोर पयर पर
संभारि रहला मे विकल भऽ रहल छी ।
ई कछा मुद्रा यिक पत्तालापक
केँ हमर दीप जीवनक सोमक निकरई अछि ।
□ □
हम आर अधिक ई पीड़ा नहि सहि सकन
हम जा रहल छी बाउ !
अहाँ सम द्वारा उठल ई असंख्य तउनी
कलनो हमरा लौछवत तन बुझाइत अछि,
कलनो केघेत तन छात अछि मीत ।

□ □
हम नीलक तायकता मादे सोनियेदा सकलछुं—
कऽ नहि पौलछुं किछु ।
बहिया खुआनी क उठान पर रही—
गबदी मारव नीक छोट छल
बहिया अमीतिक विरोध कऽ सकैत रही—
ह्मरि-छना सँ होवल रहलछुं
वैचारिक स्तर पर जतने सकोच रही
बकवार मे ततने शिथिल होइत रहलछुं
हमरा वहाँ सम किनछुं माफ नहि करव
अहाँ सम केँ धाइ

x x x

लाल बुभुक्करक चिट्ठी

श्रीमान समादक जी !
नमस्कार सह लस मैथिली ।
आगा हाल-पुरति की खिखूँ अहाँकेँ
त बुझैले अछि जे दिनानिदिन मिथिलाक
विवाहल हाल-रति सँ मनभरि मनदुखी
बाखी मास छवीतो दिन छल बुभुक्कर केँ
घेनहि रहैत छनि । ओना ओ मे-बे-बे-
मदामकि माथिकक मामूलाद मन केँ कुने-
बाक प्रयास करैत छिय जे—

पिछे गवरी बुके हुआ क्या है
आखिर हय रद की क्या क्या है
तुमको उनसे क्या की है उमीद
जो नहीं जानते क्या क्या है

किन्तु तैयो अबूम मन दुर्गतिनहारे
नहि । आ ताइ पर सँ कहे छी समादकजी
पद्याक एक मासिक पत्रिका मे कृष्णलाल
कोनो छबील बल सँ बुलकुनिया कहेत
नेताजी क साक्षात्कार पढ़ि त आर छिन्नी
भरि छुत्तना मे पडल छी । समादक जी
अपने त नहिने पढ़ैत होएब कारण मैथिली
पोथी-पत्रिका कीनते-यदुने ब्याँदव अपने
लोकिन केँ पतिया छात अछि, परन्तु जे
पूति कहैत होइ शहीक सपत त अह
कम सँ कम अक्लसे कहिरी—बहिरारी
समादक लोकनिक विवेक जे जे एहन पण
शंकर सत्यमे केँ प्रामाणिक दोगित क
देहनि । समादक जी अपन परिछल बिट्ठी
मे हम अहाँ केँ पीकिंग करवाक उभाव
देने रही । अहाँकेँ बुझैले अह जे हम नै त
बिला सतनक पटिया छी आ नै मुनि समाज
क प्रचारक । तबन एहन धैर्य छिबवाक
कारण लाही अपनेक समाज-शक्ति केँ मलबुत
केनाइ छैहि आन की मऽ सकैछ ? आ जे
अपने हमर सुभास मानि अग्रास करैत
होएब त नमक दासि समण करैत चल, जेना
जेना हम कहैत जाइत छी ।

नेता जीक अतुलार कलकत्ता जे किछु
कालक तकर भय मास छओ गोटे केँ
छेक जाइ ने तीन गोटे हुनक बिरोधी
विपक्षीग स्थितिक योग भोगि रहल छी ।
समक भानी समही छी/समही या छी ।
x x
हम जा रहल छी प्राण,
मुदा संघर्षक ई प्रवाह चलेत रहनाक बाही ।
पुरति ने भऽ बाय ई धार
हमरे क्का अहुँक संतति ने दिअय ई उपराग
मनुष्यक स्वयं होइए अपन भाग्य विधाता
से जानव हे हमर जान
बेरागी ने भऽ पायब ई मोन-प्राण !
x x
रामनामी चहरि ओहि बिकब, चाहे
मंदिर-मस्जिद भऽ कऽ रहन, चाहे
पाग, पागड़ी आ भवनामक कोर तकैत रहव
तऽ रहि बापन मैथिल मानै मिथिला वाली
x x
अहाँ सम केँ एकटा सौत मनुष्यक मनवाक अछि
मिथिला आ मारिलक क दद भोगनाक अछि समान हने ।
एकटा होइछ
विगतनाम सँ भवविभरि चरिक कथाक मूल कथ
से बानन हे हमर नीत
मुद्रा कानव नहि गीत
भाउहे हमर मीत

नेता जी कहे छथि जे मैथिल समाजक
ओ कृणी छथि जे बेटी-भतीशिक कुमा-
दानक भार नहि देखनि । आता अह
(देपांडा पृष्ठ ४ पर)

लेनामे छलियन, जनिहा-लोकनिक संग
नेता जी हर्षकोट धरि मुकुंदमा खल छथि
आ महाबाति धदनक धामावत से मन-बुरा
धरि चखल अछि । एक जेन हुनक कथान-
उतार दुखुल छथि आ एक जेन प्रायः नीला
बल सँ दिखीक बानिन्दा छथि । की, छद
ने छुत्ताक राय ? जे महेन्द्र नारायण सा
मिथिला-मैथिलीक पाछा अपना केँ चौपट
क लेखनि वेदनाय का, मुकुंददेव ठाकुर आदि
क चर्चा नदर ।

समादक जी अपने केँ त बुझैले होइत
जे मैथिली मुक्ति मोर्चाक बेतार मे मिथिला
राज्यक प्रभु पर नेता जीक बकार कम भ
गेठ रहनि परन्तु एहिठाम ओ अपना कु-
मुल जना अपना केँ दोषमुक्त क लेखनिहै ।

मिथिली पोथीक प्रकाशन जे मैथिलीक
काल मेल समादक जी तबन कलकत्ता सँ
आइधरि जतना पोथी प्रकाशित मेखल तकर
दवाही हुनका द्वारा नहि मेखल छैक परन्तु
वाकी जे तस्या सम छैलक तकर नामो
बच नैहै

१७ दिसम्बर १९७० केँ जे मातनिधि
मंडल दिल्ली गेठ छल ताइ मे त अहूँ रही
समादक जी । सँ अहाँ केँ कायाक संपत—
जे हम फुल कहैत होइत कहूँ ई—कि ओइ
प्रतिनिधि मंडल केँ हवारक-हवार टाकाक
संग पूल माळा सँ छद हवा टोशन पर
एही दुबारे लोक बिदा केने छल जे ओ
लोकनि छलित बाबूक हेरा पर राब भोग
पावि श्रीमतीजीक संग फोटो छग घुरि
आबि—आदि आभरण भजनभन-अथवा
मैथिली केँ संविधान मे लान दिखवाक
लेख ? मुदा ताइ विवालयत केँ, बकरा
मुक्ति मोर्चाक आन्दोलनक बादे एहिठामक
लोक विचार ककछ, नेता जी अपन कुतिल
बवारैत छथि ।

नेता जी कहे छथि जे मैथिल समाजक
ओ कृणी छथि जे बेटी-भतीशिक कुमा-
दानक भार नहि देखनि । आता अह
(देपांडा पृष्ठ ४ पर)

बारी बूझा चीनी

थिक। परन्तु एकटा हेतु संतरणक अधिबन्ध रोमक चारी अर्थात् दही बेनी रोमक चारी।
स - अहा ! चायन दलक एतल तल दोसर के करि लेवैत अछि।

लखरकका बगलह - यदि पहिना निम-
नग देव रहत त कसबा : सम दहिना तल
मुस देवौह। विगुणमिना प्रकृति दया
पुनर के निकसैत अछि। एकर अर्थ जे ई
विगुणमलक मोहन भोक्ता पुनर के नबजैत
छथि। ते नृत्वन्ति भोक्ताविधाः।

सम कहिछिछि - परन्तु 'लखरकका'।
पहिमाहा सम त दही चुन्ना चीनी पर हवैत
छथि।

लखरकका अंगरोगा हें भांग बोटे त
बलछाह - ही, साधु ल्छी लोनिहार दधि
विपरान्त सौरभ की दुननाह। पवित्रमक
जेतन मरि बज्जत देहने अनन बज्जत देहने
लोको बज्जत सन। आना देशक भूमि सारा,
भोजन सल, छाका, अल। चुन्ना पुष्पी
तल। दही बल तल। चीनी अतिन तल।
ते कद पित शयु - तीव्र दोग के समन
बलक सम्पत्ति रहि मे छै। अन्ध,
अमरि काह हें दही चुन्ना चीनीक लेव
करैत-करैत हमरा लोकनिक शोणित कथा मऽ
नेह अछि। ते मैथिल बलि के आह
धरि कहियो बुद्ध करैत देलबहक अछि।

सम - लखरकका करौ हें कौरी शर
बजा देवौह। चीन-चीन मे तेहर यात्रिक
आग कऽ देव छिरेक जे...

सम - आंग - नहि, यथायं कहैत
छिओह। देवाह, भोजन सँ प्रकृति बनैत
छैक। चाली मरि ला कऽ माटि सेह रहैत
अछि। सोय स्वात पीबि कऽ फलकैत
अछि। सोहब सम अल्ल रोटी ला कऽ
पुलक रहैत अछि। मुनो खेनहार मुनो
कको कहैत अछि। आग सम सारा
भौटा ला कऽ सारा-भौटा सेह छी। सम
लोकनि भवत (भाल) क मेनी धिपुछ, ते
एक दोहरा सँ विभक्त रहैत छी। ताह
पर की त दिदक (दाहि) क योग मेले
तयस। तलन एक दल मऽ कऽ कोना रौं
सकैत छी।

सम - अहा ! की अलंकारक छटा।

सम - केवल अलंकार नहि, निशानो
छैक। कोनो जातिक सम्राज दुननाक हो त
देही जे ओकर सम सँ प्रिय भोजन की
विकैक। देवाह, बंगाली ओ पछिमाहा
सम्राज मे की अन्तर छैक। जेह मेद रस-
गुण ओ छह हू मे छैक। लखरकका बलओ
कोयल होइछ, छह हू ओ ज्यो। लखरकका
पूर्वक प्रतीक चीन, छह हू पवित्रमक। ते
हम कहैत छिओह जे ककरो जातीय चरित्र
बुझबाक हो त ओकर प्रधान मधुर दाली।

सम - लखरकका, अपना समक प्रधान
मधुर की यथिक।

सम - अपना समक प्रधान मधुर यथिक
खाबा। देशत मे मिठाह कहने ओकरे
बोब होइछ। सावा मे रसगुल्लकौ लियव
होइछ, ने छह हू जकौं ठोस। ते हमरा
लोकनि मे नै बंगालीबला स्नेह अछि, ने
बंगालीबला ददना। तलन लाबा मे

अखोदिय प्रकाशन ३३५, डा० देवदार रसगन रोब, सूरकता ७०००३३ क लेल श्री सिंहस्वर भो द्वारा प्रकाशित तथा पामनियर आट मिट्स ३२ वी, इटावन बेशाल स्ट्रीट,

सूरकता-५ मे मुद्रित। सम्पादक : श्री जनार्दन भा

सूरकता-५ मे मुद्रित। सम्पादक : श्री जनार्दन भा

सूरकता-५ मे मुद्रित। सम्पादक : श्री जनार्दन भा

सूरकता-५ मे मुद्रित। सम्पादक : श्री जनार्दन भा

सूरकता-५ मे मुद्रित। सम्पादक : श्री जनार्दन भा

सूरकता-५ मे मुद्रित। सम्पादक : श्री जनार्दन भा

सूरकता-५ मे मुद्रित। सम्पादक : श्री जनार्दन भा

सूरकता-५ मे मुद्रित। सम्पादक : श्री जनार्दन भा

सूरकता-५ मे मुद्रित। सम्पादक : श्री जनार्दन भा

सूरकता-५ मे मुद्रित। सम्पादक : श्री जनार्दन भा

सूरकता-५ मे मुद्रित। सम्पादक : श्री जनार्दन भा

सूरकता-५ मे मुद्रित। सम्पादक : श्री जनार्दन भा

सूरकता-५ मे मुद्रित। सम्पादक : श्री जनार्दन भा

सूरकता-५ मे मुद्रित। सम्पादक : श्री जनार्दन भा

सूरकता-५ मे मुद्रित। सम्पादक : श्री जनार्दन भा

सूरकता-५ मे मुद्रित। सम्पादक : श्री जनार्दन भा

सूरकता-५ मे मुद्रित। सम्पादक : श्री जनार्दन भा

कालकाल कालकाल

सम्पादक नी जे हारि कसकस्य सँ अहं लखरक
होएत जे ओ गण विचारि जाह जे कहियो
नेताचीक संस्थाक मेनी बनबाक विशेष
नैयता मानल जाइत छैक-ओकरा सर
सम्बन्धी मे जा प्रभाव मे कोनो नीक नर
रचनाह। १९७२ ई० क 'ध्वनि' जे अपने
लखरक उठाबी आ लख के अमल मातक
त विपय आर सपट म बाइत।

बहोचर नेता चीक नाट्यकार होह-
बाक बात थिक से त पोथी छथि मेने
सम कतेछ। कलकाल प्रगल्भ नहि जे
बाल बुझबल सेहो ई नैतिक आ वैज्ञानिक
दामिल म बाइत छनि जे नेता की के
नाट्यकार मानि छथि। परन्तु अहाँ त

ओही नगरक लोक छी आ नाटक सँ सेहो
बुझ छी तँ हम अहाँ वं निखली पुछथ
चाहे छी-कि सविहू ई नाटक नेता की
अने छिने छथि ? एकटा गण आर - कतेक
संस्था के कलकाल क तोहबाक अर्थ नेता
नी के छनि तकरो पता लोनाह जुनि

लखरक मुँह सम्पत्ति नीक, उदा बहि
नेता की के कहतिनि। सविहू बहो मेने
आक कि छना दुरि जाइह ?

प्रत्येक पत्रा फाक-फाक रहैत छैक से
अने सम मे रहिते अछि।

हम-बाह। ई त समकारक गण
अछि। नीकिक।

सम-देह वा पाणि गात हम पाणि
गहैने छी।

हम-वासस मे लखरकका। अहाँ
ठीक कहै छी। गाम-गाम मे गलेबी, व-

र मे पदीदारी भगवा। कलहरी मे पागे-
पाग देलाह अछि। से कियेक ?

सम-एकर कारण जे हमलोकनि
आमिल-मलबाह देवी लाइत छी। तीव-

चोख मेले ताबल। तीतो मे सम रुचि नहि।
नीम-मौटा, कोरल पटुयाक भोरे...। हौ।

जेह गुण कारण मे रहैक होह ते काप मे
प्रकट होइत। कलहा, अल्लता ओ निखता

हमरा लोकनिक आंग बनि गेल अछि।
स्वाइत हम सम अपना मे हतेक फाउक

करैत छी।

हम-परन्तु बंगाली सम मे हतेक प्रेम
कियेक ?

लखरकका भांग मे एक ओखर चीनी
मिलैत बल्लाह ओ सम प्रत्येक कल मे

मधुरक योग देत छथि। दाखिओ मीठ,
तल्लाखिओ मीठ, माछो मीठ, चटनिओ मीठ

तलन कोना नै माधुर्य रहैत ? अपने
जाति मे पहिना मीठक सम्बन्ध होमऽ

सागय तलन ने। ते हम कहैत छिओह जे
अपना जाति मे जौ संगठन कलबाक हो त

मधुरक बेनी प्रचार कइ। केवल सम कोने
की होइह ? भोजन मे मात, हल्लर गीत।

गाम सँ दुरीक दूर कलबाक हो त 'ध्वनी'
चुन। चीनी लबण कदोही नाहू वरसीक

भाज कइ।

ई कहि लखरकका भांगक लोटा उठौ-

लटि और दू-चारि बूद विखलीक नाम पर

छोपि कइ-कइ कम समटा पीबि गेलह।

(सूरकताक तरंग सँ)

अखोदिय प्रकाशन ३३५, डा० देवदार रसगन रोब, सूरकता ७०००३३ क लेल श्री सिंहस्वर भो द्वारा प्रकाशित तथा पामनियर आट मिट्स ३२ वी, इटावन बेशाल स्ट्रीट,

सूरकता-५ मे मुद्रित। सम्पादक : श्री जनार्दन भा

सूरकता-५ मे मुद्रित। सम्पादक : श्री जनार्दन भा

सूरकता-५ मे मुद्रित। सम्पादक : श्री जनार्दन भा

सूरकता-५ मे मुद्रित। सम्पादक : श्री जनार्दन भा

सूरकता-५ मे मुद्रित। सम्पादक : श्री जनार्दन भा

सूरकता-५ मे मुद्रित। सम्पादक : श्री जनार्दन भा

सूरकता-५ मे मुद्रित। सम्पादक : श्री जनार्दन भा

सूरकता-५ मे मुद्रित। सम्पादक : श्री जनार्दन भा

सूरकता-५ मे मुद्रित। सम्पादक : श्री जनार्दन भा

सूरकता-५ मे मुद्रित। सम्पादक : श्री जनार्दन भा

सूरकता-५ मे मुद्रित। सम्पादक : श्री जनार्दन भा

दोहा-ओका

दोहा-ओका बरो मे बने छह आ तेवर ओ
जे कि ओ सविहू होइह।
किन्तु हल्लर तीव्र स्पर्श भोजन
एक चापि रूप सेहो भोजनक होइ छह।
ओ ई, कि जे ओ नहि होइह, माने जे ओ
बनबाक इच्छा रहैत, बाह सँ ओकरा अपना
कलबाक आ उन्नति करवाक आकांक्षा अछि
छह। संभवतः इच्छाओ चापि आयास
छह। बकरा द्वारा मनुष्यक जिनगी मे किछु
क छैह। हल्लर बहिया हमरा होइ मेह
तहिया अपना के एक समुद्र पवित्रक
दुष्कला कलबाक रूप मे पावबाल। तहिया
सम तहक सुविधा छैक। पिता रक्षिक मन
छाह। माँ परम संस्कारी। बाना कट्टर
सनातन धर्मी। नाना आय लमाबी। दाहक
एकलौताक परिह संतास। माने दाहक
अभियानकालक उत्तराधिकारी। आ फेर
समम करोट फेकैक जे रहैक से नहि रहैत।
ट्रक छोके छह आर ओकर अतीतक बाद।
हल्लर पादक हक नमा विखलिछ छह जे
पुर म गेल त बल्लैक नाम नहि छह।
हल्लर मे लल्ल बहो जे लल्ल एक नहि
ओकर भीतर आ ओकर संग चलेत कोनो
लिखत।

ते माह-बाप अपना बरो मे कलगाइ
बह साब नहि। किछक त लल्ल केनो
अपना बरो मे कहैछ त ओ भीले-भीतर
कोल अपना के 'कल' पाने' मे तद्विहक
साहि ओ स्वयं के कलवाक हो वा दोहरा
आदमी व जनायिते शह खतरा उठावैलेछ।
नह। नह लल्लकाल काल छह ई। किछु
क कलवाक किना अपना-अपन के परिवार
हल्लरक घटना कल्लो अहाँ के अल्लित
धरि पहुँचय नहि देल किछु कल्लो मे ज्यो
पहुँचाओत धरि अल्ले।

ई पहुँचाइ विशेष अर्थ लेखै। लल्ल
के तलन अलन कि अहाँ अपना बरो मे
महेत दोहरा के समेटि रहल होइ।

खुल दोहरा के समेटाक सेहो कल्लका
छल्ल होइ छह। आतिथि निमगी, अल्लवे
अपन किरीधानी दुल्लसुख के एक छल्लकेन
रूप लेत छह।

कल्ल माफ हो। हल्लर माह-बाप, जे हम
नही जे एह समाज मे बहिया लोकक कहियो
ने लगता मेले। जे होइत ते अल्लक वा
हमरा देखैत छह समाज मे पाइ छ के
'कल्ल' नामक जे दिनपय धरि रहल छह
ओ कहिया ने खतम मे गेल रहैत। किछु
अहिना दिनपयकाल के कल्लबाक आदति
पहि जाइ छह आ कल्लगाइ मे ओकरा
परमानन्द प्राप्त होइ छह - ठीक इहह हाल
हमरा समक अह। शिवालय कलबाक ठीक-
दारी त लोक नेने अह परन्तु ज्ञान-अभियान
मे आइ 'कल्ल' केर हिल्लेदारी कोत
जाइह।

आओर अहाँ त जनिता छी माह-बाप,
शिवालय वेवब जकेछा कहै।

कुम्भक श्रामबाजी

प्रमोद नहि देवाक प्रकल आकांक्षी
श्रीमान छल्लकुम्भक

कुम्भक श्रामबाजी

प्रमोद नहि देवाक प्रकल आकांक्षी
श्रीमान छल्लकुम्भक

कुम्भक श्रामबाजी

प्रमोद नहि देवाक प्रकल आकांक्षी
श्रीमान छल्लकुम्भक

कुम्भक श्रामबाजी

प्रमोद नहि देवाक प्रकल आकांक्षी
श्रीमान छल्लकुम्भक

कुम्भक श्रामबाजी

प्रमोद नहि देवाक प्रकल आकांक्षी
श्रीमान छल्लकुम्भक

कुम्भक श्रामबाजी

प्रमोद नहि देवाक प्रकल आकांक्षी
श्रीमान छल्लकुम्भक

कुम्भक श्रामबाजी

प्रमोद नहि देवाक प्रकल आकांक्षी
श्रीमान छल्लकुम्भक

कुम्भक श्रामबाजी

प्रमोद नहि देवाक प्रकल आकांक्षी
श्रीमान छल्लकुम्भक

कुम्भक श्रामबाजी

प्रमोद नहि देवाक प्रकल आकांक्षी
श्रीमान छल्लकुम्भक

कुम्भक श्रामबाजी

प्रमोद नहि देवाक प्रकल आकांक्षी
श्रीमान छल्लकुम्भक

कुम्भक श्रामबाजी

प्रमोद नहि देवाक प्रकल आकांक्षी
श्रीमान छल्लकुम्भक

कुम्भक श्रामबाजी

प्रमोद नहि देवाक प्रकल आकांक्षी
श्रीमान छल्लकुम्भक

कुम्भक श्रामबाजी

प्रमोद नहि देवाक प्रकल आकांक्षी
श्रीमान छल्लकुम्भक

कुम्भक श्रामबाजी

प्रमोद नहि देवाक प्रकल आकांक्षी
श्रीमान छल्लकुम्भक

कुम्भक श्रामबाजी

प्रमोद नहि देवाक प्रकल आकांक्षी
श्रीमान छल्लकुम्भक

कुम्भक श्रामबाजी

प्रमोद नहि देवाक प्रकल आकांक्षी
श्रीमान छल्लकुम्भक

कुम्भक श्रामबाजी

प्रमोद नहि देवाक प्रकल आकांक्षी
श्रीमान छल्लकुम्भक

कुम्भक श्रामबाजी

प्रमोद नहि देवाक प्रकल आकांक्षी
श्रीमान छल्लकुम्भक

मैथिली आन्दोलन आ मैथिलीक
साहित्यकार

मैथिली आन्दोलन' कहिय़ा आरम्भ भेल से निखुरी त नाई कइछ आ सकैछ, तबल एतेधरि त दबल्ले जे तीस-पैंतिस बरस चँचक चच वाँछ रहल अछि । जँ ६, दिसम्बर १९८० प्रदर्शन, जँ मैथिली मुक्ति मोर्चा, कलकत्ता आ निखिल भारतीय मैथिली भाषी छात्र संघ, पटनाक समिखिल प्रयास वं, भेल छल आ पहिलि-पहिल मैथिल-सन्ताननिकाइधरि शोणित सं संगमथ-भीरल छल-कै-बाद द देस जाय त मैथिली आन्दोलन आइधरि नाब-नान आ प्रस्ताव पणित केनार धरि सीमित अछि आ इहए कारण छैक जे बारि कोटि मैथिली भाषी ग्रहि तथाकथित स्वाधीन भारत मे प्राचीन अछि, गुलाम अछि । भाषा सन प्रमुख आ पबित्र अधिकारो व ओकरा वंचित प्रयत्न भेल छैक, तबल आन अधिकारक चच-की हो । स्पष्ट छैक जे अधिकार भेल सबल पड़ै छैक, कोटि-कोटि अधिकारक चच-की हो । एहि लेल शोणित बहस्य पड़ै छैक, कोटि-कोटि अधिकारक चच-की हो । एहि लेल शोणित बहस्य पड़ै छैक, कोटि-कोटि अधिकारक चच-की हो । एहि लेल शोणित बहस्य पड़ै छैक, कोटि-कोटि अधिकारक चच-की हो । एहि लेल शोणित बहस्य पड़ै छैक, कोटि-कोटि अधिकारक चच-की हो ।

[illegible]

संविधान बिनु मेथिलीक ओ
मानचित्र बिनु सिधिला धाम
डाहिन्नाड़ि सुहाह करब हम
विदोही सिधिलाक जवान

मिथिला राज्य कहिया धरि !

मिथिला राज्यक गप होत अछि । यह गप लखन आसत विचारक अपास मे कहल जात अछि, तँ मिथिला राज्यक स्थान पर ओकरा मिथिलांचल कहल जात अछि । ई गप जवन कौनो नेता स्वतः छथि, तँ हुनक निराशा सचित होत अछि, जवन कलनो प्रदेश नेता होत छथि तँ निराशा मे मिथिला राज्य आ मिथिलांचल मे मिथिला राज्यक गप होत अछि ।

चलक गप करत छथि । कोनो सार्थक फाय-
मिथिलाक लोक संगठित नहि अछि,

कमो आ उहो ब्याल्लु कडो आयेतुन गम नाई
 जेत छथि । मिराबा बा कुठक पीडा मे
 मोकिनाक अवगामे घेत जेलना जेत
 छथि ।

ई गप, जलन कोनो सांक्रांतिक संस्था
 करेते अछि, तँ ओकरा नजोसि गीत-नांद
 रबैत छैक, बत-चिट्ठा रहैत छैक । कोनो
 कार्यक्रम भा नीति नहि रहैत छैक ।
 मिथिलावल्लभ चर्चा जलन मैथिलीक
 कोनो लेखक करैत छथि, तँ ओ होश
 कोनो देवी चमत्कारक आरा करैत छथि जे
 ओकरा सँ कोनो अन्तार उलटाह आ
 गहन मे हुबल मिथिलाया मैथिली मे
 उपगिर रहैत ।

उमर २५ वर्ष
पति मरुत लाल मल्ल
पत्नी मरुत लाल मल्ल
शेखर ५५५ × ५५५

THE UNIVERSITY OF CHICAGO

म. मेथिलीयोक निमित्त किछु नारा दत छथि । आ एही दुइ जाक लोक बोले पिरबल जाइत छथि । अतः कहल जाइत छै कोहल वालिक कारणे मेने नवी गाम-
जाइत मैथिली सभिये ।

यथा ह इत एव - आ मेर नवल्लेसु एक पर य जे किमाल जाय त दातुक प्रलाभ लिन इही

निराधार बुक्ति पडत । सोबोपत विद्यापि । असम जे पाला । हुनका ते त मोती । सीमा गए कर नेपाल समाल । उदीमि त आबमधर । हुनि गिलाह ।

कौटुंबिक ला ने अन्वयक आश्रयक (साता भेल न) स्वीकृत नशः बगले मा. वि. ख. नशः
कवि समग्रह आ हन्का बगले रचना एहि महान भारतक राष्ट्रवातिक पद आवाजीन

[illegible]

काठमाडौं, १३ चैत्र २०७३

सद्यः प्राकृतिकजनसंभूतमभ्युदयिकमहाविप्लवकालीनप्रगल्भमनोविकासोपक्रमं प्रारम्भयामास।

प्रतीक्षा कोना गहरा नहीं रखता है। एक कठोर भावना एक दुकड़ी की रसोई की भाँति है।

नाट्यं द्वौलोकः स्थातुः । तदा साहित्यकार उपस्थितिं मे सन्निभति । तं प्रस्ताव प्रस्तुतः ।

जैसा कि मैथिली कोनो स्वतंत्र भाषा नाह ओपहु कोठाक भाषाएक अगः यिक आ जाइछ जे मैथिली कोनो निष्कासित क देल जाय । त मैथिलीक कोनो महाकवि एकरा साहित्य अकादमी सँ निष्कासित क देल जाय ।

मैथिलीक प्रतिनिधित्व करै लेल आभूति रहिनु कोटाक भाषा मे सोजन प्रयुक्त करै भूमकीपरगढ़ दया आशी जीहाक मुसो मैथिलीक महाकवि दया

लेख आत्मत तदि छथि । त कोनी मैथिलक महाकवि पुदा आत्मत छथि । त कोनी महाकवि अपन मैथिलीक मंच स कोदाक भाषा बोजएणल लगत छथि ।

शुद्ध अमनवि पाटि हत छथि, तँ कोनो मैथिलीक महाकाव अपन 'मनुष्या' काठोक माँ
मियत छथि । एहि सन्दर्भ से 'माटि' पानि'क अवील अंक के प्रकाशित श्री प्रदीप

मैथिलीपुष्पक चिट्ठी आ 'देसकुल'क एहि अंक मे श्री धनवक्त्र 'प्रतगववा' बिहार

एल्लखनीय अछि । ध्वजक बात जय । वन्दे पर आनन्द । कोनो पाथक्य नहि । के अति उग्रवादी — मायसवादी कहओहिनार साहयकार ।

आप्रचय नहि जे स्वप्न मंदिर, मे सैनाक प्रवेशक विरोध मे बहराएल सारक जुद्ध मे शत्रु सभ पर पाछमादी दल भाग लैत अछि । एह मैथिलीक नाम पर नाक सिद्धए । ओक

ॐ धर्मिय आन्दोलन प्रगतिशील आ भावुभाषाक भाषाक आन्दोलन बुझ आ आन्दोलन

बुझाइत एक ।
एहिठाम ई कहि देव आवयक जे जाहि मैथिली के साहिबकारक हम जवन कहलै छै ।

नहि तकर अपवादो अमले छथि—परच अपवाद त अपवाद थिक । आजा हुनए सब ठो अपवादो अमले छथि । अमल अपवाद नियमक रूप छैत ।

है। तब ही हमें यह पता चला कि वह एक बड़ा कारखाना है।

घण्टा

प्रसंगगवश

— सनचक्र —

मात्र अपना समक भावते रा मे नहिः
अविष्ट सूर्य दिवस मे काल-काल शालतक
लेख अवलम्बिक पदति के स्वीकार कण्ड
नेहक अछि, ओकर बुरा स्तर पर दू रा
चीन समान रूप परिलक्षित होइत छैक —
बनता द्वारा प्रमुख विभिन्न प्रकारक 'भाग'
आर सरकारी द्वारा निजीक रूप देल गेल
किमि कमिशनक आभासक परमाणक
दुखता कण्ड पर कतह सम्-केर मोने मऽ
सकेछ मुदा 'भाग'क स्तर' आ सरकारी
'आवाक'क 'प्रकृति' मे सबस समानता
मेळत । अन्ततः मांग पर सरकारी आवाक-
सतक समीकरण के हल कला मे लागल,
प्रशासन-सर्व समर्थक देलवा मे आखेट
मुदा स्वीकरणक दूर पथ मे मात्र संकोक
हुइत रा रोइत देलख गेलक अछि, आर
किछु नहि । ई 'भाग' आर 'आवाक'क
चोरा-चुकी कोनो सब दख वा घटना नहि
छियेक बल सानिके से चल आदि रखैक
अछि परलु एहि मे एकटा बात तथ्यक
छैक, ओ ई के अग्रगणित / अग्रमणक मांगक
लेख देल गेल आवाकसक निवारता क
व्यय कऽ केत छैक तँ ओ दस्तावेजी पर
उत्तरि अवेत छैक आर तबल ओकरा जे
किछु प्राप्ति मऽ जाउक (अनुकूल कादा
इच्छा) ओ ओहि मे वैयक्तिक अनुभव कऽ
छोत छैक वा दुस्कारि देल गेल पर अपन
नांगरि सक्ता सघरि जाइत छैक मुदा समय
एवं परम्पराक औचित्यपूर्ण मांगक, निमित्त
देख गेल आवाकसक अवहेलनाक परलवा-
सिध्ति, विनिमयक रूप, प्राण, इत, केत
छैक — केतदा कुत्सेन मे मृत्यु-सन्ताना प्रारंभ
मे, जाइत छैक ई प्रकार सतिवायिक
तथा चिन्तनक तन्त्राल नहि जा सकैत
अछि । ओना एहि तरी के सेहो अवी-
कार नहि केत जा सकैछ जे अग्रगणित
अग्रमणक समग्र मांग नानाजने होइत छैक
वा आका कोनो ओहिले नहि होइत छैक
नरु सरकारी एवं प्रशासनिक आदिष
अग्रमण लोक समक चरित्र के सीधो रहैत
छैक तँ ओकरा समक जायजो मांग के
छका देत छैक — ओकर निमित्त देल गेल
आवाकस पर च्यान नहि देत छैक — ने
कहिना ध्यान देखैक आने देखैक ।

उपरोक्त परिचय मे जे हम सम
आने-अपने स्थितिक पर्यवेक्षण करी तँ
पलक देखु ई निगूण कलाक लेख प्राप्ति
समक स्थिति काय पढ़त जे बहुतत हम
सम कोन गोल से समर्थित छी ? अर्थात्
अग्रमण / अग्रगणित गोल से वा समय/
समयक गोल से ? ओना हमरा कोन
मैथिल तँ अग्रमण / अग्रगणित भरो नहि
सकैत अछि ? ? ? ? आ जे हम सब
दोसर गोल से समर्थित छी अर्थात् अपना
के वक्षम / समय दुनै त छी तँ मिथिला-
मैथिलीक सर्वांगीय विकासक लेख व्याप-
नित एवं औचित्यपूर्ण मांगक एहन भीषण
उपेक्षा किछक मऽ रहल अछि ? हम सम
पञ्चियाओल किछक जा रहल छी ? एहि
तथ्यक अवेषणक लेख हमरा सम के सम
पद्धति अपने-अपने ध्यान निरीक्षण
(Self-Introspection) कऽ पढ़त
पढाति अपन मांगक औचित्यक निरूपण

कऽ पढ़त आर विफलता अवस्थाक कारण
ताकऽ पढ़त ।

एहि तथा के अवलोकन नहि केत
जा सकैछ जे अस्ता के जगत्क कदनिहार
मैथिल समाजक तन्मे से पंचावने प्रवृत्तिक
मैथिल सिद्ध नहि मऽ सकैत छथि । अत-
एव, हुनका लोकनिक मांग मे हुनका
लोकनिक निहित स्थाय स्त-मवाक
भाकांश-स्व स्वं के दोहरा पर आरोपित
करवाक दायित्व आर की मऽ सकैछ । हम
अपन व्यक्तित्व अनुभवक आधार पर ई
कहबाक माहुर कऽ सकैत छी जे मिथिला-
मैथिल आर मैथिलीक इष्ट सदृश अछि
जे मुदाया छाा कऽ कीहि रहल अछि —
ई सदृशय मैथिल जनताक तम वा मे
विद्यमान अछि बारो ओ कसक सदृश हो
अमजीवी हो, चाकरी पैसाक का हो,
बुद्धिक समयादा हो ; राबपुरक वा राजनी-
ति हो । जे निष्फल भौष देलख वाय तँ
आखक मैथिल समाजक स्वरूप सदा परि-
वर्तित देलवा मे आओल जगत्क दुविधा-
वादी एवं अवसरवादी मऽ गेलक अछि
अकरा अपना पर विचार नहि छैक,
अपन अपन माति-पतिन ; अपन संस्कृति,
नहि रहि गेलक मूलतक वाते कोन । गाम-
पर से कऽ कऽ महानगर पर किछकएल
मैथिल समाज के ई महापारी दूरत स्तर पर
प्रवृत्ति कएने छैक आ जे समय रहैत एहि
रोगक उपचार नहि केत गेलक तँ एकर
परिणाम भीषण मऽ सकैछ । गाम-पर
नौआ-दहाग आउ, कतहु एहि बतक
आमास नहि देवता जे सिध्दक लेख सहो
कोनो समया छैक । लेखितर सभ कवि
काय मे भीम, पशुपति, वायिप, रामान-
महिषा-मौक्तिका मे बासल, चाकरी पैसा
बलासम, अग्रमे से अलमल, भुक्ति-
व्यापारी भागक लेख नोनेलेक सौम मे
जगत-बहुलक अतिरिक्त कोनो नकार मे
छैक जे विशाल-छात्र के सरकारी आवाक
पाठन, लेखन मे लागल आना मात्र
मे बातो, कलाक लेख अकरा पलवते नहि ।
ओ ओस भन्ने अछि मिथिलाक स्त्रीगण
समाज जे पलतो घरी मैथिली आ मिथि-
बाक छोक कला के विद्योते अछि ।
सेहि मिथिला नौआ भाक, कतहु कोनो
बनलपक बचे नहि सेवत धरायो मैथिलीक
जे पञ्च-पञ्चिता अछि ओहि तम से बात
होइछ जे 'समस्या' मिथिलाक पर्यावाची
शब्द बनि गेलक अछि । अर्थात् भाषाक
पञ्च-पञ्चिता सम से सेतो यदा-कदा एहि
तरिक समचार पद्धतिक लेख सेटि सकैछ ।
पस उठ छ जे मिथिलाक लेख बलन कोनो
प्रकारक समलो नहि, मैथिलक लेख जलन
कर कोनो औचित्य नहि :
अपन माति-पतिन से बलन कएरो मोरे
नहि अपन मातृभाषा से जलन कएरो
अवगतो नहि तँ ई समस्याक प्रति बिचारा
भाव की ? ई बिचारा लोकनि के ? ?
हिन्दीक लोकनि के बीचक आवश्यक नहि
अनिवार्य दुष्प्रभाव चाहै ।

हमर कलाक भाषाक ई अग्रमण नहि
जे हमरा समक समक कोनो प्रकारक समस्या
नहि अछि । नार से बाहर बरि विभिन्न
प्रकारक समस्या सब दूरसम जनो मुँह नोते
गुद अछि । भारत जन अदर विकसित देश

मे समस्या आर अभाव नहि रहैक तँ आर
कतऽ रहैक — आ कतऽ धरि मिथिलाक
प्रम अछि अतो समस्या आर अभाव नहि
रहबाक तँ प्रसे नहि रहैत छैक परलु प्रम
उठैत अछि जे की वस्तुता मैथिल समग्र
के अपन समस्या आर अभावक पूरा जान
छैक ? की मिथिलाक जनता के ई बात बात
छैक जे ओकरा समक सब से पैघ समस्या की
छियेक ? कोन प्रकारक अभाव ओकरा समक
जीवन मे आस छैक जाहि लेख प्रकाशक
समक 'भाग' राखल जा सकैछ । अभाव
आर समस्याक सेटि रहैत छैक 'भाग' (*Part and*) जकर अनुचित शब्द मात्र
केनिहार के रहैत छैक जे अकरा समक इष्ट
छैक छैक । आर दल-भाषक आदि अभावक
प्रस्ता, समस्याक समाज के विधा बोध देत
छैक — शुद्ध-निष्पत्ति निधारण करैत छैक ।
सरकारक समक अभावक रूप 'भाग' रहैत
छैक जे व्यक्तिगत नहि मऽ सम्भावना
समर्थक कल्याणक निमित्त होइत छैक ।

आर एहन मांगक अवहेलना कएला पर सर-
कारक कतहु मिथिलावाक्य से ममा कऽ पढ़ैत
छैक तँ कतहु हाइड गाम । एहि परिस्थिति मे
ज अपन मिथिला शैवक मांग पर विचार
करी तँ देवता मे आखेट जे मिथिलाक जन
सदृशय के अपन 'अभाव' आर समस्याक
समुचित कल्याणक निमित्त होइत छैक ।
आर एहन मांगक अवहेलना कएला पर सर-
कारक कतहु मिथिलावाक्य से ममा कऽ पढ़ैत
छैक तँ कतहु हाइड गाम । एहि परिस्थिति मे
ज अपन मिथिला शैवक मांग पर विचार
करी तँ देवता मे आखेट जे मिथिलाक जन
सदृशय के अपन 'अभाव' आर समस्याक
समुचित कल्याणक निमित्त होइत छैक ।
आर एहन मांगक अवहेलना कएला पर सर-
कारक कतहु मिथिलावाक्य से ममा कऽ पढ़ैत
छैक तँ कतहु हाइड गाम । एहि परिस्थिति मे
ज अपन मिथिला शैवक मांग पर विचार
करी तँ देवता मे आखेट जे मिथिलाक जन
सदृशय के अपन 'अभाव' आर समस्याक
समुचित कल्याणक निमित्त होइत छैक ।
आर एहन मांगक अवहेलना कएला पर सर-
कारक कतहु मिथिलावाक्य से ममा कऽ पढ़ैत
छैक तँ कतहु हाइड गाम । एहि परिस्थिति मे
ज अपन मिथिला शैवक मांग पर विचार
करी तँ देवता मे आखेट जे मिथिलाक जन
सदृशय के अपन 'अभाव' आर समस्याक
समुचित कल्याणक निमित्त होइत छैक ।

हमर कलाक भाषाक ई अग्रमण नहि
जे हमरा समक समक कोनो प्रकारक समस्या
नहि अछि । नार से बाहर बरि विभिन्न
प्रकारक समस्या सब दूरसम जनो मुँह नोते
गुद अछि । भारत जन अदर विकसित देश

अवस्थाक छैक, मैथिल के मिथिला राज्यक
समस्या देला कऽ कोट वोटकावा महा-
पुरुष समक विरुद्ध कलाक — स्थाविक
राजनीतिक द्वारा शासन मे पुनः प्रवेशक
लेख मैथिल समाजक समक प्रचारक माया
बाळ के छिन्न-भिन्न कलाक ।

मुदा ई कार्य हम के कत ? मैथिल
समाज कोन कति रहल अछि । राजनीतिक
सम प्रश्न मऽ गेल छथि । राजनीतिक दल
सम मात्र आसन दियेबाक प्रयास मे व्यस्त
अछि, बुद्धिजीवी वर्ग अन्तर्गत अन्तर्गत
गोल बना एक देवता के दलदलक दल
रैव नहिना मे बल्ल अछि — अन्तः
एक निश्चित छी ?

देखक आहुतिक परिवर्तन मे अग्रगणित,
राजनीतिक वा कोनो प्रकारक समस्याक
समाधान सरकार द्वारा ताबत अर्तु नहि
केत जाइत छैक वास्तु धरि समस्या समक
समाज मे मऽ कमबख्त रूप सरकारक समक
नहि राखल जाइत छैक — सरकार पर प्रत्यक्ष
वा अप्रत्यक्ष रूप दबाव नहि देल जाइत
छैक । आर दृष्ट्यन्त अछि जे एहि सब
कारणक निमित्त कोनो के इच्छापूर्वक वा
अनिच्छापूर्वक जे कोनो राजनीतिक दल
पर निर्भर करि पड़ेत छैक कारण राज-
नीतिक दल हम एहि समक लेख परलत
संगठन कएल जाइत छैक — समय होइत
छैक । भारतीय राजनीति मे राजनैतिक दल
समक छवि यद्यपि विकृति मऽ गेलक अछि
तथापि ई तम काय ओकरा समक माथमे
मऽ रहलक अछि । तँ हमरा समक अतो
समस्याक प्रति देखैतल सार्वभौम अधिकारक
परि लेख माइ तँ काहू, कोनो के कोनो
दलक-समक से बाहर पढ़ैत जा कोनो दल
राजनीतिक दलक समक कस्य पक्षक कस्य
लेख मिथिला मैथिल मैथिलीक समक
सर्वोपरि होइक । देशक प्रतिष्ठित जेन-
तेतिक पार्टीक काय से जे ओनो पक्षक
आर अतः न्याय होत जाहो ओ इतिहासक
कतिब होनि वा काजोनिजीवा वा अन्य
मितो के लोकक — चौधरी चरण सिद्ध
व्यक्तिगत नीति से अग्रगणित मऽ छलत
रहैक अछि भारतीय जनता पार्टीक
इतिहासक चरणबद्धक परीक्षा कऽ
विचारक न्यायक परीक्षा कऽ
रहैक अछि जनता पार्टी अन्तरे मिथिल
ओकराद्विधा समस्याक मे दलदल गण
वास्तुक लेख प्रणायाम कऽ रहलक अछि
तबल गोलक सार्वभौम पार्टीक सम से भर-
तीय साम्यवादी पार्टी (सीपीआई) आर
के धृष्टिगत विचारक समक समक अपन
साम्यवादी विचार आर तँ सेहो अन्तर्गत
उत्पन्न होमल कालक अछि — तथ्यादि
एकरा एहन चानपनी पार्टी सम छैक जे
निष्ठापूर्वक अपन काय कलाक प्रयास करैत
छैक — जकरा जन समयत सेहो कऽ किछु
अद्या ओकरा से कलक वा सकैछ । तो
एहन निष्पत्तिक परिस्थिति मे सार्वाधिकार
हम सम कोनो दल पार्टी विचारक जगत
कछी तथा ओकरा सम दियेक तँ हमरा सम
के बहुत कितु समस्या मेर सकैछ । मिथिल
लोक जनमतक के भ्रष्टाचारक कऽ उदाहरण
मे मिथिलाक छात्र समक के आवास मे
जे हस्तक निष्ठापूर्वक कोनो निष्ठापूर्ण पार्टी
के सदस्य करियेक तँ कलक काय आर
जकरा मऽ सकैत अछि एकरा सब कला
से पूरा सारा समक एहि बातक लेखक
पलत राखल पढ़त जे हमर सामक जनता

मात्र अपना समक भारते टा मे नहि.

मान अमना लमक भास्ते था मे नीर ।
अगिउ संपूर्ण दिवस मे अउर-कउड वालसन ।
लेख जनताधिकार पद्धति के लीकार कर
नेलेक अछि, आउड 'इहल स्तर पर दू था
नीच समान रूप परिलक्षित होत छै ।'
जन्ता द्वारा प्रखल विविध प्रकारक 'मार्ग'
आर सरकार द्वारा निःशेष रूप देख नेलेक
किस्मि किस्मिमा आधान । परमाणु
पुलना कएछ पर कएछ कम-केश भने भांड
सकेछ मुदा 'मार्ग' के 'स्तर' आ सरकारी
'आधान' के 'प्रकृति' मे तब समानता
भेटत । अउरक मार्ग पर सरकारी आधान
समक समीकरण के हल कला मे छागछ ।
प्रधान-तंत्र समर्थ भूत देखबा मे आयोतोतो
मुदा समीकरणक दूर पक्ष मे मान संलेक
वृद्धि था होत देखल नेलेक अछि ।
किन्तु नहि । ई 'मार्ग' आर 'आधान' के
चौत-नुकी कौनो नव रस था वृद्धा नहि
छिकेक वरर लविके सँ चल आबि रहके
अछि परछु रहि मे प्रकृता वात तंपरक
छै, ओ ई मे अवाहिल / अममक मरि
लेख देख रोख आधानक निःशाला के
खरउ कर ले छै तँ ओ दैतलिटी के
जउत आबैत छै आर ताल ओकरा के
किन्तु प्राति भऽ जाऊक । (कुछक काइ
इलय) ओ ओ मे त्रिक अतुप्रव कऽ
छोत छैक वा दुतकारि देख रोख पर
नागरि वरक-सवर्धि बाउर छैक मुदा
एवं सक्षम ओलिपूर्ण मार्गक
देख लेल आधानक अवैतनाक पल्लव
दिशति, निःशालक रूप पाएल कर
छैक । ओकरा कुरेछ मे पूर-रतना प्रारंभ
मे बाहर छैक ई प्रकृता ऐतिहासिक
ताथैयिक जकारा नेकाल नहि जा सकेत
अछि । ओना एहि तरिके सेरो अली-
कार नहि के छै वा सके छै ओ आबि /
अममक इमंता मार्ग नाजाले होत छैक
वा ओकरा कौनो ओलिपूर्ण नहि रहैत छैक
आर सरकारी एवं प्रधान-तंत्र आबि ।
अममक लोक सोक-विय के प्रीनने रहैत
छैक ते ओकरा समक जालो मार्ग के
हड्डा देत छैक—ओकर निमित्त देख रोख
आधान पर ध्यान नहि देत छैक—ने
आबिथि ध्यान देखके अने देतक ।

उपरोक्त परिचय में जै हम् सम आन-अन श्रितिक पर्ववर्षण करी तें पर्वक हेतु ई निग्य कदाक लेख मायस सभके यमिक जाय पद जे वसुतः सम सभ कीन गोल सँ सम्बन्धित छी । अथवित आमय आगुनिक गोल सँ बा समय सभक गोल सँ । ओना इरा ओतत मैथिल तें अमय / अवजिह भये नहिह सकेत आछ । । । । । आ जै हम् सब दोसर गोल सँ सम्बन्धित छी अथवित अना के सभम / समय कुत छी तें मिथिला मैथिलिक सबीगन विज्ञासक लेख ग्यास-नित एवं ओतिल्यन मांगक एहन भीषण उपेक्षा किपक मऽ रहल आछ । हम सम भवियाआछ किपक जा रहल छी ? एहि तथक अव्यवेषक लेख इरा सम के सम तें पहिने अपन-अन आत्म निरिषण (-Self Introspection) कऽ पदत छति अपन मांगक ओतिलक निरलेखन

करऽ पड़त आर विफलता अवपल्लाक कारण
ताकऽ पड़त ।

परि तप्यं न अस्मीति नहि ।
 वा सकेछे ये अन्ता के जगत्सक प्रविहार ।
 मैथिल समानक नबे न पंचानन प्रविषत ।
 मैथिल सिद्ध नहि मर सकै छथि । अन्त-
 र्वन, हुनका लोकनिक मांग' मे हुनका
 लोकनिक निहित स्वार्थ' लन्-भारक
 काकादा-पद' स्वयं के दोसर पर आरोपित
 करक अतिक अपर की मर सकैछ । हम
 अपने व्यस्तित अत्यधिक आचार पर ई
 कइबाक साहस कइ सकै छी जे मिथिला-
 मैथिल आर मैथिलिक इहइ सदाय अछि—
 जे मुसौली ल्या कइ बीच रहल अछि—
 ई सदाय मैथिल अन्तगत सम वर्ग मे
 विभाजन अछि सारे ओ दुयक सदाय हो
 अमानवी हो, जाफरी पेसाक हो । गाय-
 दमिक सदाय हो ; राजपुस वा राजनैतिक
 तिरा हो । जे निचल भाग देवल आय त
 आयक मैथिल समानक स्वस्य सव्या परि-
 चरित देखबा मे आबोत नै पणताक दुखिबान-
 वारी, एवं अमरवासी मर नैले अछि
 ककरा अमरा पर विचार नहि छैक, छ
 शरार अथन माटि-पानि । अपन संकति
 अपन भाषा अपर छरि-भासक प्रति लोहारक
 पर नहि लेकेक ममत्वक नते कोन । गाय-
 नर ई कइस महानगर भरि दिगभ्रमल
 मैथिल समान नै मरामीरी इत तार कए
 अस्त कएने छैक आ जे समय रहैत एही
 रोगक उपचार नहि केले लेकेक तँ एकरा
 परिणाम भूषण भइ सकैछ । गाय-यात्रा
 नौआ-दहा आर, कतहु परि जाकाक
 आवास नहि भेटत जे मिथिलाक लेल
 कोन समया छैक । खेतिय' सम
 काम जे छीन' मध्यम आयी
 माथिला-मरकदमा मे बासल' चाकरी पेसा
 बहासक आयो नै अवसर । विनि-
 व्यापारी समानक लेल नोन-लेक
 उत्तार-चढ़ावक अतिक कोनो समार नै
 छैक । शिल्पक-श्रम के सरकारी आशंकक
 पाबन' उत्तरपन मे लागल' अपन
 मे पारो करवाक लेल कए पखेत नहि ।
 ओ तँ स' धन' अछि मिथिलाक
 समान जे एखनो प्रति मैथिली आ मिथि-
 जाक छैक कइ के बिओने अछि ।
 वीस' मिथिला नोवा भाका कतहु कोनो
 बमस्याक वच नहि भेटत मुदा तयो मैथिलीक
 जे पत्र-पत्रिका अछि ओहि सम सं जात
 होइछ जे सगला' मिथिलाक प्यायवाची
 पात्र बनि नैलेक अछि । अन्यत्र भाषाक
 व्यवस्था सम मे सेहो यत-कदा परि-
 तपन छैछ जे मिथिलाक लेल जवन कोनो
 प्रकारक समये नहि, मैथिलक लेल जवन
 एकर कोनो औचित्य नहि ।
 अपन माटि-पानि जे जवन कए सो
 नहि । अपन माटुभाषा व जवन कए
 मारुनो नहि तँ ई समयाक प्रति बिचार
 अगु' की ? ई जगत्सक लोकनिक के ?
 भिन्ना लोकनिक के चीज अत्यन्त नहि
 अनिबाय दुस्साक जारी ।

इस कश्चाक आवाय ई कथमपि नहि
जे इसरा सभक समझ कोनो प्रकारक समस्या
नहि अछि । पर से बाहर धरि विभिन्न
प्रकारक समस्या सब सुरांग जकाँ मुह जोने
शुद्ध अछि । भारत उन अर्थ विकास देश

मे समस्या आर समाव नहि रहैक ते आर
कतऽ रहैक -- आ जतऽ धरि मिथिलाक

[illegible]

मैथिली राज्य.....

छोक कोनो प्रलाप कोनो बिडा अथवा कोनो राखक विकास लेख ने कहियो बाबल आने बाडस चाहैत अछि । एतेक लार्पाप जनताक संगठन नहि भऽ सकैत अछि ।

देसत छोभादुर जनताक बात पढ़ना आ दिखीक, छोटका नेता सेम किएक उन्नत छथि । ओ अपन निर्दिष्ट क्षेत्र के हाव बुझैत छथि । बिना काबो कमेने ओ चुनाव नीडस चाहैत छथि । दस-बीघटा भोजक ठीकदार के ओ मिठा कऽ राख चाहैत छथि जे हुनक क्षेत्र मे जनमान्य कहैत रहैत । हमरा ओहि टाकन नेता लोकनि मैथिलीक नेता बनियो ने सकैत छथि । ओ अपन निर्वाचन क्षेत्रक नेता छथि आ ओकरे नेता बनऽ पछ चाहैत छथि ।

अपना मोहि टाकन नेता लोकनि अपन चुनाव क्षेत्र टाकै देवा राख, निज-सत्कार बुझैत छथि । ओतने दूर ओ पकी सकक बिबली आ पुष्क बात करैत छथि ।

जे सिवरी-बलियापुरक नेता छथि, ओ जनमानसक बात नहि सोचैत छथि । जे पड़ोसक नेता छथि, से बाँझक बात नहि सोचैत छथि ।

बालगीत

करिया: जुमरि सेले छो

ढील पठापर सारै छो

लीख पठापर सारै छो

ओहिद रिपु जे मजकस के

तकरे सारै जार छो ।

एके पपती समतरि पहिना

बोटल कहाँ अकास छइ

एके चान सुरज छइ तहिना

एके बहै वसत छइ

भेट भाव के बात करै जे

तकरे सारै-पार छो ॥

इषा-दूष हटाबै छो

घृणा-विरोध भेटाबै छो

बुद्धि-विवेकक दीप लेसि हम

प्रेमक ल्योति पसारै छो ।

—शम सोचन ठाकुर

मैथिली पोथी आ पत्रिका कीनू आ पढ़ू

	मूल्य
१. इतिहाससंज्ञा - रामलोचन ठाकुर	२/४ टाका
२. वेतालकथा - कुमारेश काश्यप	४ "
३. प्रतिष्ठा (अ०) रामलोचन ठाकुर	४ "
४. जादूगर रामलोचन ठाकुर	५ "
५. मैथिली लोककथा रामलोचन ठाकुर	५ "
६. अर्द्धनारीश्वर - मणिवर्द्धन	२५ "
७. मुन्शी रघुनन्दन दास : व्यक्तित्व ओ कृतिस (संस्करण)	६ "
८. निष्कलक - जनार्दन झा	३ "
९. लुआएत कनकनी - महेंद्र मल्लगिया	३ "

अरणोदय प्रकाशन सं भेटि सकैछ

अरणोदय प्रकाशन ३३५, डा० देवदर सभान रोड, मल्लकता-७०००३३, के लेख श्री महेश्वर झा द्वारा 'अनकलित देश' पापनगर आद-मिस्त्र ३२ की बुलबल बेचाल लीह।
मल्लकता-५ मे मुद्रित । सम्पादक: श्री जनार्दन झा

अपना-अपना निर्वाचन क्षेत्रमे वही पर चीनी परखतिहार नेता मिथिलाचलक बात करैत छथि, तँ छोट अछि जे ओ ठकैत छथि आ कोनो मनोबिकृति क कारणो बढ-बढा खल छथि ।

ई लोकनि एम० एल० ए० क मोट जीतवा लेख जनताक खुशामद करैत छथि, बाकी बात लेख दिग्गज लेख जनताक कोनो मोबा नहि अछि ।

मोट जीतव आ तकर बादक काज लेख ई लोकनि जनदमाक हुना पर अवलम्बित छथि, योग-टोन आ भास्य पर आश्रित छथि ।

जऽ नेताक टाइट एलेक एकांगी हो जऽ मिथिलाचलक बात करब पलख बुझाबल अछि । स्वतंत्रता मेरठक एतेक बलक वादो मिथिलाचलक विकास नहि भेल, अछि आ ने ताहि दिवामे कोनो प्रकारक सर-सार देलवा मे अवैत अछि ।

एतन दिल्ली दूर अछि ।

चिन्ता जागण आ संगठन कमेने ई दिल्ली एकांगी दूर रहत ।

जि १९५५/५६

लेना मे
मो० श्री नानेन्द्र झा,
शिक्षा मंत्री,
बिहार सरकार, पटना ।

महाशय,

आपने के श्रोते होएत जे प्राथमिक स्तर धरि मातृभाषाक माध्यम सं शिक्षाक अधि-कार संविधान लीङ्गट छैक आ ई अधिकार भारतीय नागरिकक मौलिक अधिकारक अन्तगत अवैत छैक । लेखक बात जे तैतीक बख देवा स्वाधीन भेलक उपरान्तो बिहार सरकारक मैथिली विरोधी नीतिक कारणे मैथिली भाषी छात्र अपन एहि प्रमुख आ गवित अधिकार सँ वंचित राखल गेल अछि । एकरा कागजी भाषाया भनीहि देखेल होइक परख्य वास्तविकता इएह छैक जे मात्र पहिल आ दोसर क्लास मोधी मैथिली मे उपलब्ध छैक दोसर क्लास धरि मैथिली आ तेसर क्लास सँ हिन्दीक माध्यमे पढ़ाव के क्लेक अनु-विधानक ओ अव्यावहारिक छैक से कह-चाक प्रयोजन नहि । स्वभावतः कोनो नेता आ एकर अधिपत्यक मैथिली माध्यम के नहि चूतैत अछि । तँ आवश्यक छैक जे अनतिविलम्ब बरा अठ धरिक समस्त विष-यक मोधी मैथिली मे उपलब्ध कराओल जाइक । अपन-अपन-अपन-अपन-अपन-अपन-मिथिलाचलक प्रतिनिधि छी तथा ई विभागा-अधिकारीन अछि त निवेदन जे शीम

छेला-जोला.....

एक परस्परक सम-बच्चा एक रंग नहि होइत छैक । कलायुत कोनो जीव होइत छैक से हम नहि मानैत छी आ ते तँ स्कार सन बाबरीय भावना मे हमरा कहियो बिसवास भेल ।

हजूर-माद-दाम, हम कहल करैत छी जे हमर शान वा जनकारीक परीति बख छोइ अछि, तँ जे अतीन्द्रिय छैक तकरा सम्भव मे हमर कोनो वकल्य नहि । जानक अथाह सागरक कक्षक्य लहरि छैक । के कते जानि एओकरा तकरे पला, कतेक के छैक ? काही एक बातक पता अछि हमरा कि हमर माछ मनोर जे प्रका अविकत भेल जड से भाइयो अनुत्तित अछि । हमर

कह लोचन कविराय

माइक, हया करैत अछि, जठ मोक कए पुत श्राद्ध कए पुनि वैदिकी, कनियों नहि अजगुत कनियों नहि अजगुत कए पुनि भोज जबरी मुह देस के दान करैत छि लोटा-थारी कह लोचन कविराय बुद्ध जगदिक पाचक भेल मधाइ सधल सम काइ माइक

शिक्षा मंत्रीक नाम पत्र

एकर व्यवस्था कराओल जाय । एहि सदस्य मे इस अपने के समय दिवाक्य चाहैत छी जे नवम्बर १९८० मे जवन इतर लोकनि पटना मे अपनेक निवासस्थान पर अपने सं भेट-कैने रही तँ अपने मंथन अवस्यता देखबोने वही परख से अवस्यता तँ आइ नहिने अछि, बत एहि किमार्गक अपने रहबो छी ।

जनक्य जे एहि समय मे हम राष्ट्रपति के नेह मय छिल्ले छथिनि संविधानक समत संशोधन (१९५६) द्वारा प्रदत्त विशेष अधिकारक अन्तर्गत बिहार सरकार के निर्देश देयक बाझ केने छथिनि । जेना कि हमरा शाय संख्या-३१०/५० दिनांक २२ जून ८४ द्वारा सूचित भेल गेल उचित कलाइ देव राष्ट्रपति राजि-वालय बिहार सरकार के लिखि चुकल छैक (य संख्या-३६५-पी १११११८४ दिनांक २४-१-८४ ।

आशा अछि जे अपने मया देव इहि समय मे उचित कार्य क राखै दीन कोटि मैथिली भाषीक ईक अन्तर्गतक इति न रहब ।

बाद मैथिली

सदस्य

शम सोचन ठाकुर

हजूर

मैथिली दसि मंच-मल्लक-

पहिल स्तरा शाय प्रका अहिछ छइ भोक्त संग छइ केने छथिनि । गौतम शत्रु के शाय देने छथिनि हेतु हुनक संग होइत परख अहिछा निरराय होइतहु शाय प्रका भेलहु एतु किङ्ग मर-क-ई छलनामही व्यवस्था आबुक देन नहि युगो सं एहिना होइत एके-प । जे श्रोतक बख तकर आय शोषण होइत छैक । जे शालक अथ ओ दुवक चलेइ आ आकर मरिदद्वी दोकर दसक अभिमान । किंव अथाह सागरक कक्षक्य लहरि छैक । के कते जानि एओकरा तकरे पला, कतेक के छैक ? काही एक बातक पता अछि हमरा कि हमर माछ मनोर जे प्रका अविकत भेल जड से भाइयो अनुत्तित अछि । हमर

५५

一九四九年一月一日

छेक जे 'देवो दुर्बल वातकः । कारण कोषी एखनहुँ मिथिलाक सैल अभिभार

प्रकृतिक विपर्यय एकर रीढ़ कमजोर तऽ समस्त मिथिला प्रभावित मेल भछि

वैष्णवी भाग्यवादी कलना राहल अछि ।
 दरभंगा, समस्तीपुर जिला सभ मे बहुत
 अधिक एकर मिथिपिडा रहलक अछि । एहि
 सबस अधिक शक्तियो मेलक अछि । संझौ लोकक नान-मालक शक्ति मेलक
 अछि आ ओसब आयबवादीक अस रेलक
 अछि आ । बार खाली आ बाहर साफ ।
 रेलक ।

बालक वर्गों को प्रोत्साहित करने के लिए प्रत्येक वर्ष के लिए एक विशेष अवसर है। यह अवसर है कि बालक वर्गों को प्रोत्साहित करने के लिए प्रत्येक वर्ष के लिए एक विशेष अवसर है।

मे एक नज़र एलक भा ओवण अपन सपूर्ण प्रकृति चार-बास मे लागि गेल छन्हि। दीक दूने समय मे बाहु एलक बलक लेल निकल भऽ रहल छन्हि। बलक लेल निकल भऽ रहल छन्हि। बलक लेल निकल भऽ रहल छन्हि।

सामने रोबी-रोटी की समस्या चक्रपात की
देमय ब्याजक ।
मिथिलाक भरिफैके कोनो एहन अंचल
हैक बाँडिआम नदी नहि होइक । एहि

वर्षाकाल में नदी का जल अत्यधिक बढ़ जाता है। इससे नदी का किनारा बहने लगता है। नदी के किनारे बसे गाँवों में नुकसान होता है। नदी के किनारे बसे गाँवों में नुकसान होता है। नदी के किनारे बसे गाँवों में नुकसान होता है।

इतिहासिक लोक यदि स अत्यस्त भइ गेछ
 अछि । दोसर उपादोग नै छैक । सरकारी
 अस्पताल आ भौषल बातिक अस्पतालना-
 दूनु पहि लेल समानरूप स दायी । तें
 प्रतिवर्ष बाँदिक ताण्डव लीला होइत छैक ।
 प्रतिवर्ष लोक मरेत अछि, पर आँगन-
 खनि गेछ आ नाम गेछ ।
 रहीत आयल अछि । समष्टिक सुरक्षा आ
 ताहिना सब ज सम्पादक संग सम्पादक
 उचित उपयोग नहि पओने विष त के
 दारल नहि जा सकैछ । कृषिकाल मे ई
 नदी बम भरि बाइत छैक आ उछल्य
 लगेत छैक आ संगहि ताण्डवदृश्य करय
 लगेत छैक । ई दृश्य मिथिला वासीक हेतु

कहने विना। कारा मंडल। इत एक
एकरी पोट पर अंबेत लोक नाना रंग

महबलेश्वर पूरान भुवना उभय भात एकत अछि ।
निधिलोक देव देव नदी से रांग, करैह, कोरी, कमला, बलान, गंङ्ग, करैह, देशा दड अबाद मेल मरुद उरै वर्षक बाढी वागमती आदि अछि । बाढि मे एहि नदी सभसाक निरात ? समाधान के करतक ?

सबह भूमिका रहै छेक वाघ बोऩ मे एहिनामे ई समस्या समसे बाल रहि लाला. वजात के दुहायब, शाभ-घर के गेलेक । किशक ? — जयदेव लाम

अमन आँख बहार कम भगवती पर शेष पुण्य रूप मे बड़ेबाक हेतु उद्यत मेलाह । भगवती तेबन प्रकट सेलथिन विषय पर प्रदान केलथिन ।

आह फेर मैथिली अशोक वाकिना मे बनिन्दी छथि आ हम चारि कोटि मैथिललोकन सन्तान-सुख-चाप हाथ पर हाथ वेने देखल छी । कि हमरा लोकनि माइक दूध नहि पीनेने छी ? कि हमरा लोकनि बहिर छी जे बंगलालोकनि बहिर छी जे गुजराह पदैह ? कि हमरा लोकनि ननु सक छी ? आ ब से छी त की अधिकार अह यकि पूबाक ? आ कि हमरा लोकनि ननु सक छी ? आ ब से छी त आउ—एहि पवित्र आ शुभ अवसर पर हमरा लोकनि अमन मातृभक्ति भाषाक उदारक शयथ ली तेबन यकि पूबाक वायकता आ उल्लेख व्ययोगिता ।

मिथिलाक भरलके कोनो एहत अंचल जे ओकरा सवहक एहि अवसर वृष्ट के दूर करवा मे ई अनुदान कतेक सहायक भऽ सकलेक अछि । अनुदानक विनिर्देश अफसरक कोष के निबन्धते भरलकेक अछि आ अस्वास्थ्य ओहि दुखक समुद्र मे डोटल गेलक अछि ।

निषिद्धाक पेव पैव नदी में गंगा,
कोरी, कमला, बलान, गंडक, करेह,
बागमती आदि अछि । बाढ़ि में एहि मदी
सबहुन भूमिका रहैत छेक वाक्च वीन मे
लागत जनज के दुखायब, गांव-पर के
कटेथ अछि । कतय छेक ओकर एहि
सम्पाक निरदत ? सम्पाक के फलकत
देश तइ अजाब भेल मुदा इरे वर्षक बादो
एहिनाकेँ ई समस्या समझे वाल रहि
गेलक । किधक ? - ज्योदेवलाम

आर फेर मैथिली अशोक वाटिका मे बन्दिनी छथि आ हम चारि कोटि मैथिल सन्तान चुपचाप हाथ पर हाथ धेने बैसल छी । कि हमरा लोकनि भाइक दूध नहि पीने छथि छी ? कि हमरा लोकनिक देह मे शोणित नहि ? कि हमरा लोकनि बहिर छी के बंगलादेश पहुँचै ? देहा, अवम, दक्षिण अफ्रिका, फिजीसाहन वा आयलैंडक गर्जन नहि हुनार पहुँचै ? आ कि हमरा लोकनि नपुंसक छी ? आ व से छी त की अधिकार आर शक्ति पूजाक आ व से नहि छी त भाउ—दृष्टि पवित्र आ शुभ अवसर पर हमरा लोकनि अपन मातृ भाषाक उद्धारक शाय्य ली तैलेन शक्ति पूजाक सार्थकता भा उल्लेख शयोगिता ।

कलकत्ताक रिकसा बाहक

ऊँच प्रधान मिथिला देश से अमरक महत्ता आदि काल से बुझल गेल अर आ मात्र बुझलैय नहि गेल अर एकरा नइ प्ये स्थान देल गेल अर ई गोरख मिथिले देश केँ टा छह जे माथ पर राजमुकुट आ हाथ मे लगामि जेने कुन राजा हरबाहि केने छथि। राजर्षि जनक केँ दृष्टान्त इतिहास मे अन्तीम अर। तँ मिथिला घन धान्य सं भरद-पुरल छह। अभाव नामक वस्तु लोकक जीवन मे नहि छह, ई शब्दकोषक एगो उच्च मान छल। इहए कारण छह 'जे' एहिठाम विद्याक ओतेक प्रसार छह, ज्ञान-विज्ञानक, साहित्य कलाक ओतेक विकास भ सकल। केँ नहि जेने-ए जे भारतीय इ गोट दर्शन से चारि गोट एही श्रमिक देन थिक। पश्चात आवि केँ स्थिति बदलि गेलैक। लोक श्रम केँ अन्धकार नभरिजे देखब लागल अर श्रमिक वर्ग समाज मे नीच श्रेणीक चोकर रूप मे दुमल जाय लागल। अन्धविश्वासक आधार पर जनल समाज व्यवस्थाक स्वस्थ सबल देह मे जण नारक गादी लगि गेलै। प्रह्लाक कथन केँ 'पुन आरम्भक आधार पर' हम चारि वर्णक विवरण कइल अर 'विस्मय देल गेल अर तकरा स्थानपर प्रज्ञान युद्ध सं आह्वान आ बाहि सं राबधूत आदि जनताक कथा केँ मति देल गेल राजर्षि जनक हर बौद्ध वाक काज केँ नून तेल लगा मिथक बना देल गेल। तथा कथित उँच वर्णक हेतु आँव लगामि घेनाइ पाप भ गेलै आ एही-ठाम सं मिथिलाक अयोगातिक इतिहासक आरंभ होइए।

श्रम केँ देय दुकानार तथा एहि सं विमुक्त घेनाइ विलासिता आ संचयक प्रवृत्ति केँ बन्म देल आ ई प्रवृत्ति पुनः शोषण प्रवृत्ति केँ बन्म देए। स्वभावतः श्रमिक वर्णक शोषण आरंभ भेल। समाज दू वर्ग मे बँटि गेल—शोषक ओ शोषित। एक दिस शोषक वर्णक समय विलासिता मे कटय लागैक त दोसर दिस शोषित श्रमिक वर्णक अभाव यातनाक बीब। एकर प्रभाव उत्पादन पर पड़नाइ स्वाभाविक छह आ धन-धान्य सं भरल मिथिला मे गरीबीक नवन दल्य प्रारंभ भेल।

एक दिस जनसंख्या बृद्धि आ दोसर दिस उत्पादनक कमी सं मिथिला दिनानु-दिन अभाव ग्रस्त होइत गेल। खेती पर आधारित रहितु ओर मे नव-नव तरीकाक खोज उपयोग नहि कइल गेलैक। फावे केँ करैत ? भूखामी अहरी भेल आ दिन-राति विलासिता मे डूबल रहल त दोसर दिस श्रमिक वर्ग शक्तिहीन छह। ताइ पर सं रौंदी-दाही महामारीक प्रकोप बढ़ै लगलैक। जीविकाक अन्याय साचन रहलैक नहि। एहि यंत्रणुगुह मे मिथिला

मे कलकाराजानाक विकास नहि भ सकल। एकरो कारण मैथिल अतिरिक्त अवचेतनता तथा पुणित राजनीति आ नचक मिथिलाक राजनेतागण छथि। आलूक राजनीतिक पंडित बर्त होइ छह जनता केँ मुर्ख बना-कइ रहलाइ तथा अभाव मे रहलाइ, आ एहि निमित्त आवश्यक छैक जनताक भाषा, ओकर संभृता-संस्कृति केँ नष्ट क देनाइ। राजनेतिक नेतागण अपन एहि पवित्र काज मे पूर्णतः सफल भेल छथि। दोसर दिस श्रमिक वर्ग केँ दिन-राति खटलाक बादो पेटभरि भोजन आ देहभरि वस्त्र नहि उप-लब्ध भ प्रभोजक। पेटक स्वाडा मे ओ स्वर्ग दुँ सं प्ये भोजन बननी-बनमरूमि केँ, भोजन भाइ-बहिन, कनी आँ नेना केँ परिवर्जन - पुरजन केँ तेजि शहर दिस पड़ाएल।

मिथिलाक श्रमिक भारतक कुन शहर सं बेसी 'बंगालक कलकत्ता तथा ओकर समीपस्थ नगर मे अर। एहिठामक जड़ मील हो वा गंजीनील या छापलांना सम ठाम मैथिल श्रमिक बहुज्या छह। साँका वाला, टेखावला आ रिकसावला मे अहरी प्रतिष्ठति मैथिल अर।

रिकसा कलकत्ता मे दू तरहक होइ छह पहिल त साइकिल रिकसा जे आनोठाम पाओल बाइए परंच दोसर तरहक रिकसा जे मात्र एही ठाम टा पाओल बाइए ओ थिक 'टाना-रिकसा'। 'टाना' बंगाला शब्द थिक—जकर मैथिली भेल लोचनार। एहि मे रिकसा वालक नहि रिकसा खिचनि-हार होइए। एकर आहुति एतनेन टमटम दन होइत छह आ टमटमक घोड़ाक स्थान मे एहिठाम मनुख रौए—मनुक संतान। घोड़ाक गारदनि मे घंटी रहे छह आ एकरा हाथ मे इयदा पर टम-टम मारेत गादी आ बस सं चलेत ओकर संग दौड़त।

कलकत्ता मे सरकारी रिपोर्टक अनुसार एगारह हजार टाना रिकसा छह आत्ययावतः एगारह हजार परिवारक दून रोटी एही सं चले छह।

एहि रिकसा पर देसत काल प्रायः अरणा केँ अमानुष सोचबा लेल बाध्य भेल छै। वेवाक्य दशहरी दुपहरिया मे बलन खुब गोलाइ आगि ओकरे छथि आ नीचा नाटक बीच घमि जाइ छह तलने खाली देह आ खाली पादरे दूतीन आदमीक स्वारी लय दौड़ना मे जे की परिश्रम होइ छह तकर हमरा लोकनि कल्याणओ ने क संकेत छै। तहिना भलाइ मे बलन सुखाधार बला होइत रहे छह बाट पर पानि बमि जाइ छह आ खाद-खुधिक पना नहि चले छह, आँकड़-पाथर जागि जाइ छह—जैन स्थिति मे हमरा लोकनिक हेतु खाली पादरे चलै अवंभव तेहना स्थिति मे सबारी लय दौड़नाइ क

परिश्रम आ खतराक अनुमान सहजहि कइल जा सकै छ। आ एहन बीतोइ परि-अम कैलाक बादो एकरा लोकनिक दैनिक आय ५-१० टाकाक बीच रहै छह। एर मे दू टाका रिकसा मालिक केँ देमय पड़े छह। बाँकी मे अम लेनाइ-पीनाइ आ परिवारक हेतु मनिआइर।

ओना त छ बे तक मे एगो रिकसा मेटि बाइ छह, पलव सेहो दुत्ता एकरा लोकनि केँ नहि रहै छह जे अपन रिकसा कीनि सकल। दोसर बात जे खाली रिकसा कीनि लेजा सं त होइ नहि छह। रस्ता वाटक जे स्थिति छह ताइ मे सदिलन किछु मे किछु मर्यादा लिखे रहै छह आ ताइपर सं पुलिसक खर्च आप क छह। तेहना स्थिति मे भाड़ा पर रिकसा लेनाइ छोड़ि दोसर उपाये की छह ? याते मालिक केँ द 'क' जे बचे छह ताइ मे भरि पेट भोजन आ भरि देह वस्त्र सपनाए कल रहि बाइ छह। टेखा—मिथिलाक हजार-हजार श्रमिक, जोरिका सलहेर—श्रम सं विमुक्त नहि होइत। ओ श्रमक मरुता, माँ बाप आ परिवारक प्रति अपन कर्तव्य केँ नोक बर्का हुनैर। तँ एक टा पाँच रोटी आ एक रुप चाइ पीथि दिनभरि रिकसा नेने घंटी बजवेत दोड़त रहेए।

एमहर बंगाल सरकार बाट आमक बहला केँ बिनु लाइसेंसक रिकसा केँ चल करवाक योजना बना रहलै अर फइवाक प्रयोजन नहि जे वास्तव मे बाइ ट्रक-ट्रेयूक कारणे आ ट्रफिक पुलिसक बंदी ओइसी कारणे वाट जाग होइ छह तार पर सरकारक किछु चलि नहि सके छह आ तँ अपन 'पामार'क उपयोग एही अंशमंडित मजदूर वर्ग पर करय जा रहल अर। एहि ठाम मात्र पाँच हजार रिकसा केँ लाइसेंस छैक आ बाँकी बिनु लाइसेंसक अर।

मैथिली सिनेमा : स्थिति आ अपेक्षा

आँकड़क युग मे सिनेमा केँ प्रचार ना लोक शिक्षाक सम सं सहज आ कारगर माध्यम कहल गेल अछि। परंच लोकशिक्षाक लेल आवश्यक छैक जे ओकर माध्यम लोकभाषा हो। बिहारक तीन गोट प्रचल भाषा—मैथिली भोजपुरी आ मगही एहि संदर्भ मे पूर्ण उपेक्षित अछि। ओना भोजपुरी मे कइकटा सिनेमा बनलै केलेक अछि आ नीक बर्का चलैक अछि। मगही मे सेहो सपत्त खाय लेल सिनेमा बनल छलैक परंच सम सं प्रधान प्राचीन आ विकसित भाषा मैथिली एकरे अपवाद अछि। एमहर कइकटा सिनेमा निर्माणक समाचार यदा-कदा सुनमा मे आयल अछि परंच आश्चरि एकोटा पूर्ण नहि भ सकल अछि। १९५८ मे हमहूँ एहि क्षेत्र मे प्रचारण कइल स्व० राजकमल चौधरीक शमर कथा 'छलका पार्क' संग। ई एगो एहन जीवत सामाजिक कथा थिक जाइ मे मिथिलाक संस्कृति बनेत

अछि भारतीय नारक आदर्श सीत प्रथम दर्शन होइत अछि। एहि कथ वर्तमान समय मे बूढ़ बेटी आवश्यकता सं उपयोगिता छैक। तँ हम एहि कथ चयन कइल।

सिनेमा संसार मे यद्यपि हमर प्रथ पदावर्ण छल परंच नाट्य-मंचक दोष ड पर्यति अनुभव तथा सिनेमा जनतक स्था विनामा कलाकर लोकनिक संग सहयोग हमरा प्राप्त छह। हमरा पूर्ण विश्वास अछि जे बं ई फिल्म बनि सकल त निश्चित टकर के होइत। प्रमाण मे एकर गीतसम जे रेकर्डिंग भ चुकल अछि आ गाना मे पूर्ण लोकप्रिय भेल अछि। एहि फिल्म मे लगभग पचास हजार टाका खर्च भ चुकल छैक आ गीत रेकर्डिंगक अतिरिक्त कला-कार-चयन आ इत्य चयनक काज सेहो शेष क छैक गेल छैक। मात्र अर्थक अभाव मे कार्य स्थगित अछि आ न अर्थ लगभग नि-रोपार्थक पुष्ट ४ पर

कन्नकत्ताक रिकसा बाहक

कृषि प्रधान मिथिला देश मे श्रमिक मजदूरा आदि काल सं हुकल गेल-ए आ मात्र हुकले टा नजि गेल-ए एकरा बड़ पेच स्थान देख केने-ए । ई गौरव मिथिले देवा के टा छर जे माथ पर राजकुंड आ हाथ मे लागनि छैने कुनू राजा इत्यादि केने छथि । राजर्षि जनक के दृष्टान्त इतिहास मे अतीत अह । ते मिथिला धन धान्य सं भर-पुरल छथ । अभाव नामक वस्तु लोकक जीवन मे नजि छथ, ई शब्दकोशक एगो शब्द मात्र छल । इहए कारण छर जे एहिठाम विप्राक ओतेक प्रचार छल, ज्ञान-विज्ञानक, साहित्य कलाक ओतेक विकास भ सकल । के नजि जने-ए जे भारतीय ६ गोटे दर्शन मे चारि गोटे एही भूमिक देन थिक । पश्चात आदि के स्थिति बदलि गेलक । लोक श्रम के अन्धकार नजरिने देखय लागल आ श्रमिक वर्ग समाज मे नीच श्रेणीक चोकर रूप मे हुकल जाय लागल । श्रमविभाजनक आधार पर वगल समाज व्यवस्थाक स्वल्प-सवल देर मे जेन बरक गान्धी लागि गेल । प्रजाक कथन जे 'गुण आर्कर्मक आधार पर' हम चारि वर्गक सिद्धान्त कहल-ए' विचार देल गेल आ तकरा स्थानपर ब्रह्माम मुह सं ब्राह्मण आ बहि सं राजपूत आदि जनजाक कथा के मति देल गेल राजर्षि जनकक हर जोत-बाक काज के नूत तेल लगा मिथक बना देल गेल । तथा कथित उंच वर्गक हेतु आब लागनि जेनाह पाप भ गेले आ एही-ठाम सं मिथिलाक अत्योगतिक इतिहासक आरंभ होइए ।

श्रम के हेतु हुकनार तथा एहि सं विशुद्ध सेनाह विलासिता आ संचयक प्रवृत्ति के जन्म देल आ ई प्रवृत्ति पुनः शोषण प्रवृत्ति के जन्म देए । स्वभावतः श्रमिक वर्गक शोषण आरंभ भेल । समाज दू वर्ग मे बँटि गेल—शोषक ओ शोषित । एक दिव शोषक वर्गक समय विलासिता मे फटय लगल त दोसर दिव शोषित श्रमिक वर्गक अभाव यातनाक बीच । एकर प्रभाव उत्पादन पर पड़नाह स्वाभाविक छर आ धन-धान्य सं भरल मिथिला मे गरीबीक नग्न दृश्य प्रारंभ भेल ।

एक दिस जनतन्त्रा बूढ़ आ दोसर दिव उत्पादनक कमी सं मिथिला दिनानु-दिन अभाव मस्त होइत गेल । खेती पर आधारित रहितहु ओर मे नव-नव तरीकाक खोज उपयोग नहि करल गेलक । कार्य के करत ? भूस्वामी अरही मेल आ दिन-राति विलासिता मे डूबल रहल त दोर दिस श्रमिक वर्ग शक्तिहीन छल । ताइ पर सं रौंदी-दाही महामारीक प्रकोप बढ़ये लगलक । जीविकाक अथान्य साधन रहलक नजि । एहि यंत्रणुहु ने मिथिला

मे कलकारखानाक विकास नजि भ सकल । एकरो कारण मैथिल जातिक अवचेतनता तथा वृणित राजनीति आ बंकर मिथिलाक राजनेतागण छथि । आखि राजनीतिक पहिछ शर्त होइ छर जनता के मुल्ल बना-कर रखनाह तथा अभाव मे रखनाह, आ एहि निमित्त आवश्यक छैक जनताक माना, ओकर सम्पत्ता-उत्कृते के नष्ट क देनाह । राजनेतिक नेतागण अपन एहि पब्लि काज मे पूर्णतः शफल भेल छथि । दोसर दिस श्रमिक वर्ग के दिन-राति खटलाक बादो पेटभरि अन्न आ देहभरि वस्त्र नजि उप-लब्ध भ पओलक । पेटक खाजा मे ओ स्वर्ग हु सं पेच अन्न जननी-जनमभूमि के, अपन भार-वहिन, पत्नी आ नेता के परिवार-पुखन के तेजि शहर दिस पढ़ाएल ।

मिथिलाक श्रमिक भारतक कुनू शहर सं देवी, बंगालक कलकत्ता तथा ओकर समीपस्थ नगर मे अह । एहिठामक जट मील हो वा गंभीरील वा छापाखाना सभ ठाम मैथिल श्रमिकक बहुख्या छर । नौका वाला, टेञ्जवला आ रिवाजवाला मे अस्सी प्रतिशत मैथिल अह ।

रिकसा कलकत्ता मे दूर तरफ होइ छर पहिछ त सादकित रिकसा जे-आनोठाम पाओल बाइए परंच दोसर तरफ रिकसा जे मात्र एही ठाम टा पाओल बाइए ओ थिक 'टाना-रिकसा' । 'टाना' बंगला शब्द थिक—जकर मैथिली मेल लीबनाह । एहि मे रिकसा वालक नहि रिकसा खिचनि-हार होइए । एकर आकृति एननेन टम्पन सन होइत छर आ टम्पनक चोढ़क स्थान मे एहिठाम मनुखल रोइए—मनुक सतान । चोढ़क गददिन मे घंटी रहे छर आ एकरा हाथ मे हथड़ा पर टन-टन मारेत गाड़ी आ तब सं ज्वेत ओकर संग दौबत ।

कलकत्ता मे सरकारी रिपोर्टक अनुसार एगारह हजार टाना रिकसा छर आवासभावतः एगारह हजार परिवारक नून-रोटी एही सं चले छर ।

एहि रिकसा पर देसत काल प्रायः अमरा के अमानुष सोचवा लेल बाध्य भेल छी । बेलाखक टहाटी हुपरिया मे बलन सुख गोलाई आगि बोक्रे छथि आ नीचा बाटक बीच घमि जाइ छर तबने खाली देह आ खाली पाएरे दू-तीन आदमीक सवारी लय दौबना मे जे की परिव्रम होइ छर तकर हमरा लोकनि कथनाओ ने क सकैत छी । तहिना भलाहू मे बलन मुसलधार बलों होइत रहे छर बाट पर पानि बमि जाइ छर आ खाचि-खुचिक पग नहि चले छर, ओकड़-पाथर जागि बाइ छर—बैठन स्थिति मे हमरा लोकनिक हेतु खाली पाएरे चल्की असंभव तेहरा स्थिति मे सवारी लय दोबनाह क

देसिल बयना

परिव्रम आ खताक अनुमान सहजहि कएल जा सकै छ । आ एहन बीतोड़ परि-अप केलाक बादो एकरा लोकनिक दैनिक आय ५-१० टाकाक बीच रहे छर । एहू मे दू टाका रिकसा मालिक के देसय पड़ै छर । बाँकी मे अन्न खेताह-पीनाह आ परिवारक हेतु मनिश्राद्ध ।

ओना त छ से तक मे एगो रिकसा भेटि जाइ छर परंच सेही कुता एकरा लोकनि के नहि रहे छर जे अपन रिकसा कीनि सकल । दोसर बात जे खाली रिकसा कीनि लेजा सं त होइ नजि छर । रस्ता बाटक जे स्थिति छर तार मे सहिखन किछु ने किछु मरमति लगले रहे छर आ ताइपर सं गुलिसक खर्च आप क छर । तेहरा स्थिति मे भाड़ा पर रिकसा लेनाह छोड़ि दोसर उपाय की छर ? आतेँ मालिक के द 'क' जे बचे छर तार मे भरि पेट अन्न आ भरि देह बल्य उपनाह बतल रहि जाइ छर । देया—मिथिलाक हजार-हजार श्रमिक, जोरि कलहेस—अन्न सं विमुख नजि होइछ । ओ श्रमक महत्ता, माँ बाप आ परिवारक प्रति अपन कर्तव्य के नौक जका बुझेह । ते एक टा पाँच रोटी आ एक कप चाह पीवि दिनभरि रिकसा नेने पंटी बबैत दौक्रेत रहेह ।

एमहर बंगाल सरकार बाट आमक वहसा के के बिनु लाइसेंसक रिकसा के वज्र करवाक योजना बना रहलेह । कइबाक प्रयोजन नजि जे वास्तव मे जाइ टूक-टेपूक फाणे आ टूकिक पुल्लक बढी ओटलीक कारणे बाट जाम होइ छर तार पर सरकारक किछु बलि नजि सके छर आ ते अपन 'पामार'क उपयोग एही अंगण्डित मजदूर वर्ग पर करय जा रहल अह । एहि ठाम मात्र पाँच हजार रिकसा के लाइसेंस छैक आ बाँकी बिनु लाइसेंसक अह ।

मैथिली सिनेमा : स्थिति आ अपेक्षा

आजुक युग मे सिनेमा के पचार वा लोक शिक्षाक सम सं सहज आ कारगर माध्यम कहल गेल अछि । परंच लोकशिक्षाक लेल आवश्यक छैक जे ओकर माध्यम लोकभाषा हो । विहारक तीन गोटे प्रान भाषा—मैथिली भोजपुरी आ मगही एहि संदर्भ मे पूर्ण उपेक्षित अछि । ओना भोजपुरी मे कइकटा सिनेमा बनबो कैलक अछि आ नीक जकां चल्लेक अछि । मगही मे सेहो सघत खाय लेल सिनेमा बनल छलक परंच सम सं प्रधान प्राचीन आ विकसित भाषा मैथिली एकरे अपवाद अछि । एमहर कइकटा सिनेमा निर्माणक समाचार यदा-कदा सुनमा मे आयल अछि परंच आइबि एकोटा पूर्ण नहि भ सकल अछि । १९७८ मे हमहुँ एहि क्षेत्र मे परवर्ण कएल स्व० राजकमल चौधरीक अमर कथा 'ललका पार्ग'क संग । ई एगो एहन जीवन्त सामाजिक कथा थिक जाइ मे मिथिलाक संस्कृति बजैत

लोककथा

महाकाली

(स्मिन्धनक बेटी सीता भारतीय नारीक आदर्शक रूप में मानल जाए छथि। अना ओइठाम कही छर— सीता कन विदोने गेल, दुख छोड़ि दुख कहियो ने भेल। परदेब, धर्म, कल्या आ त्यागक प्रतिमूर्ति सीताक आत्मास्मान पर बनन चोट पहुँचलनि त ओ महाकालीक रूप धारण केलनि। मिथिला में प्रचलित लोककथाक आधार पर प्रस्तुत अछि उपर्युक्त कथा—महाकाली।)

जका विषयक उपराल अपन मन वासक अर्थात् दोष कइ राम बानसी आ लक्ष्मणक संग ओषध फिछाए। कतेको दिन तक हुनका लोकनिक छकुछ फिरेक आनन्द में डुबल रहल। अवन ई क्रम दोष भेलक ठ किछु दरबारी हम प्रतापक केननि के रावन सन पराक्रमी के ब्य करताउ उनकरस में महराज रामक बानिक पूरा हेवाक चारी। विरोधक मने ने उठ सकत छल। पूनरोलकक सेवारी बड़ बोर-दोर सं चलय लागल। सीता के सेहो इकर भनकी लागलनि। तेवो ओ इकदिन रास सं पुछि देखियनि—केर कउन उलखक आयोवन म रहल छर? महराज राम अवन सं प्रतिप्रश्न केलनि—अहाँ के नथि पता? सीता अँसर सं निहुरित बगळी—अवन केओ कहने ने केननि सं पता रहत कोना? अखनो तकर प्रयोगने अहाँ लोकनि नथि हुनैत छी। ली त माय मायेव रावनक नियत होत अर। ओकरो के आत्मा दोर छर, इत्य दोर छर, से सोचबाक अवसरिअर अहाँ लोकनि के कही अर। राम बगलार—दमर खेर अर के अहाँ सं विचार नथि केन। प्रभावणक विचार छनि के महराजकी राजा रावन के ब्य कलाक उपर लक्ष्य में हमर बानिक पूरा हो। प्रभाव विचार में हम तेवा म न कहि गेलहुँ मे बनिका द्वारा पूरा होयत तिनको मेल केमार विचारि गेलहुँ। परदेव माय बाबुरि अहाँ अवन स्वीकृत नथि देय—ई पूरा नथि होयत।

सीता कहलबन—रम स्वीकृति नथि देन से अहाँ किछक सोचि लेहु? कानो बहुत अग्रभा गेऊय।

राम—से कते किछक ने अग्रभा नामो—तकर किन्ना हमरा नथि।

सीता—अहाँ हमर विचार पुछे छी अथवा स्वीकृति बाहे छी?

राम—निश्चित विचार पुछेछी। जँ अहाँक विचार ई जान उचित हो तेवन स्वीकृति दिय'।

सीता गंभीर अर मे कहलियनि—अहाँ के पता अर के राजनो सं बेच पारकनी आर एगो रावन अर। बार देयक महिलागण कौटुकबस रावन के पकड़ि

ओकरा दहो माधुर रीप कस्योने छुड़ारि आ नई अनुपय निय कलाक बादे ओकरा मुक्ति भेटख लेखक। ताही पताल लोकक राबा खलनाहु रावन इलनो—कीवर। राम गंभीर म गेलाह आ घर सं जुमे बहरा शेजार। माय सेने भरिनगर मे डिगडिगमा पीटवा देर गेले के बाबुरि महराज राम खलनाहु रावन पर विषय नथि प्रस्ताह ताबुरि ई उलव स्वयंति रहल।

रावन लक्षण के ई बात पता चकनि त ओ फन के के राम तथा पहुँचला बानसी केठियनि—मार हमरा आबा देल बाओ हम आदर हाँकबुरि ओकरा पराल कइ बन्दीबना आपस आवि बायब। उलखक भावोवन स्वयंति न के हेवाक चारी।

महराज राम किछु लेव कहलियनि छलन ई अहाँक शक्ति सं बाहरक बात थिक। हमरो शक्ति सं बाहरक। हरि निमित्त हमरा दुनू भाइक संग जेदेसीक रहनार परमावश्यक अर। बाउ हुमान के कहिल्यु रय तैयार करिय आ वेदेरी के सेहो तैयार हेवाक निवेदन कननि। हमरा लोकनि आर देरी नथि ब्य छिय निदा हो।

दक्षम रामक दुनू तनेत खुवाप निदा गेलाह। कनिज बावक बाद रय तैयार भेल। रामक बामदिल बानसी आ हरिना मे लक्ष्मण गेलाह। सारथी हुमान।

अवन रय खलनाहु रावनक राखक सीमा मे पहुँचे त गुप्तबर द्वारा ओकरा खबरि लागल। ओ ओहीठाम सं दोर होइलक आ समदिया द्वारा समद लेलक त पता चललक सारथी बातर निपचा म गेलक। रावनक बाँन सं हुमान शतवृद्ध पार केला गेलाह। ओ दोषव बाण होइलक त लक्षण के खबर गलि। तेवर मे राम प्रकृतिय अर रय पर टरि गेलाह। तकर बाद ओ कौनो वाण छोड़लक परंतु सभ धर्य गेलक। सीता विकलरूप बनी रय पर खल छडीर। रावन के अवन रय पता चललक त ओ आनन्द भेल। ओकरा हुनका मे देरी नहि लगलक के रय पर केवलि मदिना दोख केओ नथि आदि थिकि थिकीह। थिकि उपायक हेवाक कारणे ओ मनेमन हुनका नमस्कार केलक आ अपन भूलक लेल क्षमा याचना केलक। एमर देखलक मे खलबी मचिगेल आ सभ देनाथि देख महरिकक ओतय पहुँचलाह जे ऊनू द्वारा चराउ मे त अनर्ध म बायत। देवणक आखुला देखि महरादेव प्रस्थान केलनि। ओ सीताक समीप अवन रूप बदलि पहुँचलाह आ हुनका क्षिप्रियाक हेतु नाना तपक अव्य वाण छोड़्य लगलाह—बय छी हे देवी स्वामी उलपलक लक्ष्मण सन दोषोर मल, हुमान सन सेवक मारक बनार अहाँ अर

वसन्त गीतक मादे

(कवि जीषकात्मक लेख)

एक गोट सन्तुष्टीन-बढाल पतभट्ट बन मे भेल छल हमर जन्म आ असीस बहल वीरशक बादो स्थिति ओहिग छह। ओना सुनछ त हमरो आइ जे कहियो पहिठाम रहैत छल बाहीमास छतीसो दिन वसन्त बहार आ ताही आशा मे हम पटवैत आएल छी साभ्यानुसार पछि पतभट्ट बन के वसन्त सन पावस सेहो दसकथा बनि चुकल-य छना स्थिति मे हमरा सं वसन्तगीतक आशा भइ हे। आइ ने हमरा लोकनि संग मिछि पटाबी (कारण)

गाछ सभ पखनो अइ श्रानवत व हमरा विश्वास अइ आइ ने कलि पछि मे होयक नव पछव जकर माइक गंध सं महमद करत सर्वत्र पावि मधु मातल मधुप गुजन करत तालन हमहूँ लिखब आ निरचित लिखब वसन्त-गीत जे अकारणक नहि परिवारेक उपलब्ध थिक

—रामजीवन ठाकुर

अमर, हेवाक परवान देने छलनि तेनो अहाँ देखे बन लन। ई त अही सक हो। मानन रूप मे आवि मानव के कंककित किछक करैत छी।

एवं प्रकारे बहुत कलक बाद सीताक आन मंग भेलनि। कोबने भनिते हुनक शरीर कड़ी म गेलनि ओ साभा बादल केस छुबि फहराय लागलनि। ओ रय सं उतरि रोफे विदा मेली आ बे शान्ते मे पढ़नि ताहि मे जुटो त हुनक मंयकर रूप देखि आलकें सं प्राण त्यागि देलक। इक राखल हुनका पर प्रहार केलकनि ओ तकर हाथ पकड़ि कता छीनि केछाँयन आ बेर व मदरि यागा यदि गेलीर। ओ कता सं समक माय छोपैत अगुआत रहली आ कलन खलनाहु रावनक नगर शून्य म गेल त दोख दिख छुलौ। सीताक एनबही रूप सं पुनः देवण वगैर ओ छोचलनि ज एता मे त शरीर लोक विदीन म

कविता

बाहर। ओ सम फेरि महरादेव आ पछुवि अनुपय नियन केलनि। अवन टान महरादेव परिचर अथि महाकालीक बाटेने पहे रहलाह। उदयुली कालीक नगरि नथि पछलनि आ हुनक पहर महरादेवक हाथीपर पकलनि। ओ कता खक्यानि नीचा तकलनि त महरादेव के चीन्ह खावे की रुचि लेलनि आ पुनः अपन पूर्वक रूप मे आवि गेलीह। सीताक इहर रूप महराकालीक रूप मे सर्वथ प्रकृत होइ-य। सीता अपन रथपर दलीह आ अपन कन-गुनिया आगुर चीरि अनुपयन कर रामके चेतन अवस्था मे अनलनि। केर हृदयन आ हुमान के खोबि खोबित केलनि आ सभ मयं आ फिछाए। रामक बहिदूबाक बदला सीताक बहिदूबाक प्रताप उठल परब भैरवली तकरा भव्यीकार केलनि ताहि दिन सं सीतामम माने राम सं रहित सीताक नामक परिपटी चलय लागल।

चेत कबड्डी

चेत कबड्डी अबे ओ
होरा ठे फिछु छमै ओ
जलय बहै छह गंगा-काछा-
सकरी गीत सुनवै छी ।
जाहि माटि सं जतमलि सीता
सयई हमर ई धाती
याज्जबलन्य गंतम, कबिल के
भूमि रहत नबि परती
सुगौ शासनक गय करै छल
तकरे गोट सुनवै छी ॥
ई लोरिक-सलेहसक धाती
ई शिवसिंहक धाम छह
महादेव बनि चाकर अपछा
मिथिला देरा मदान छह
जाधरि चान-सुख ता रहलै
सहर शायय देहवै छी ॥

— रामलोचन ठाकुर

मैथिली सिनेमा

हमर प्रेक्चरर नेटि जायि १. मासक
अन्दर फिल्म बनि के देवार न बायत ।
आना दूरि केर हम बिहार सरकार सं सेहो
धमरक कवाक प्रयास भरत पल्लव सरकार
दिल सं बक ठल्लो टक नहि आबि
सकल ।

फिल्म भार भानो ई ई सं उन्नेगी
अछि । भार देकरिह के उमसा ठेक
सकर बहुदूरवनि समानन हरि नामने
म सकत छै । बटेको दुता हूट कान्कार
मे व कमिश्नर के रेकी-नेटीक संहरि
अमन प्रतिमा बिकसक सुयोग मेरे ऊन
छनि । समझय फिल्म वन, के तिवेन के
सल मंगोरक होइ, लालक लाल टाका
निमिषाबल सं ब बाइल । मैथिली
फिल्म मेने साइपर रोक अगतक भा परक
पार बरे मे रहत । मिथिलाई अयसवादी
लोकनि देखा-देखी एहिमे अंगर होय-
ताह । फिल्म उद्योग के आर्थिक सहयोग
केल एगो केन्द्रीय संस्था छै—एन०
एफ० डी० ए० (National Film
Development Corporation) के
राज्य सरकार माध्यमे फिल्म उद्योग के अर्थ
सहयोग देत छै । महाराष्ट्र, प० बंगाल,
तामि नाडू, उड़ीसा, मणिपुर आदि राज्य-
सरकार एहि सं प्रचुर टाका कम अमन-

मन्त्रालय प्रकल्पन, ११, नुवामन अफसर टेर, कलकत्ता-७०० ०१३ के लेउ की नोरेसर म्हा द्वारा प्रकल्पित तथा सपत्तियार भाट मिटने, ३२-बी, बुन्दलब बंगाल स्ट्रीट,

कलकत्ता १ मे मुद्रित । सम्पादक : श्री कमलदेव झा

आन्दोलन समाचार

मैथिली युक्ति मार्थाक अपील

तुम्हिन भङ्गा—हमरा लोकनिक दकि-
मंगा प्रतिनिधि सूचित केलनिहै
के स्थानीय मिथिला जनसर्व मोर्चा
नवम्बरक दोसर सप्ताह मे एगो इतिहा
उमेलनक आयोजन करय बा रहल ह ।
परिल दिन मिथिलाक सर्वांगिक विकास
पर विचार-विमर्श होयत । एहि मे उमल
मिथिलाक प्रतिनिधि मांग लेयि तकर
प्रयास बलि रहल ह । दोसर दिन विराट
प्रदर्शन होयल जाहि मे लगभग सवाल
हजार लोक के मांग लेयाक बात अछि ।
जनसर्व मोर्चा एहो निर्णय लेखल ह,
जे मार्च १६८२ मे जनकपुर मे एकटा
अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली साहित्य सम्मेलन
आयोजित करत । कार्यक्रमक एकलखा
केल 'देसिल बयना'क शुभकामना ।

× × ×
टिप्पणी—हमरा लोकनिक दिल्ली प्रति-
निधि सूचित केलनिहै जे अखिल भारतीय
मिथिला संघ, दिल्लीक तलबबान १४
विमानत के रोममबना प्रदर्शन । १४४
मंगल कार्यक्रम तालाल स्थगित म गेयल
ई कार्यक्रम कहिया बरि हेत से अनात
अछि । आदर्य जे श्री भोगेन्द्र म्हा, एन०
डी० एहि संस्थाक गृह दोषक छयि तथा
राष्ट्रवादक, दुम्भदेव नारायण वादक,
सिखेन्द्र म्हा (बाबुर) आर्थिक सहाय
एहि संस्था के मात छर । देशक राब-
बानी मे देवाक कारणे तथा राजनैतिक
नेता लोकनि छात्रछाया मे रहवाक कारणे
ई संस्था निरिबले मिथिला मैथिली निमित्त
वहुत काब क सक-ए आ हमरो लोकनि
तकर आधा करत छी । नेही त भविष्ये
करत ।

अमन राज्यक फिल्म उद्योग के बड़ा रहल
अछि राज्यक बिहार अकामनाक कारणे
निहार राज्य एहि सं संचित अछि । एकर
दिलाल टाका बहार मे फुका रहल छै ।
द्विहार जन देव आ समझिवाही प्रदेश मे
एगो फिल्म स्टूडियोक नहि मेनार बेदन
सबजसद विषय फिल्म से सहजहि ठोचक
बा सकल । कहरी छैक के बरे बुलिक त
केलक के छै ? पता मे बिहार सरकारक
ई दुलिके छैक अपवा ओ बिहारक विकास
नहि बाइत अछि । परंन स्थिति देह छै
आ मिथिलाक संगहि समस्त बिहारक
लेखक, कलाकार, तक निधियन सरकार सं
ई अपेक्षा रखैत अछि जे ओ आनहु एहि
दिशा मे सतर्क होअओ आ अनुचित प्रयास
करओ ।

—श्री कान्त मंडल

विपत्ति असगरे नहि

अबैछ

समाचार सुन सं शात मेलेछ जे दकि-
मंगा अबैछ मे देवाक प्रभाव छै ।
बादिक बाद एहि तरहक महाभासिक पसर-
नाह कुन नव बयना नहि थिके । बादिक
समय सातावर्णक संगहि येन बलक दुखित
म गेनाह स्वाभाविक छैक आ ई महाभासिक
कमन प्रयास एहिनाम सं होयत छैक । परंन
अवसरक बात त ई छैक जे एहि सं बच-
नाक छेउ सरकार द्वारा कुन तारक प्रयास
पडिते नहि भेल—नहि होयत छैक ।
बलन रोग पूर्णतः पसरि बाइ छर तलन
सरकारी संन सक्थि होयत अछि जोके
ठकवा-कुविषय केल । ओना सरकार के
भीमारी रोकनाह सं भीमारी खलनाह मे
खम छैक कारण ओकरा बयना हम के
कमेवाक स्वर्ण-सुयोग भेटत छैक आ सत्ता-
रक पला सकत होयत छैक । राज्य रे
अभावगल मिथिलाक लोक । कि आनहु ओ
सं नहि चेतत आ एहि कुतियम रोग-यातना
सं मुक्ति देवाक प्रयास नहि करत । ओना
ई बात त भविष्ये मे एह होयत पल्लव
एतेबार रह छैक जे व आनहु ओ नहि
चेतत त ओकरा दुखक नहि ओर । जागि
सकत छैक ।

वितरक लोकनि सं—
'देसिल बयना' क इलेक्ट्री केड सम्पक कल—
वितरण व्यवस्थापक,
अखण्डेय प्रकाशन,

विज्ञापन द्वारा लोकनि सं—
'देसिल बयना' मे अपन विज्ञापन दय सभ उठाब । कम खर्च मे सुन्दर ढंग सं
अधिक प्रचारक एक मात्र साधन ।

सम्पर्क कर
विज्ञापन व्यवस्थापक
अखण्डेय प्रकाशन,

लेखक / पाठक लोकनि सं निवेदन

१. अपन मौलिक आ अप्रकाशित रचना 'देसिल बयना' मे प्रकाशनाय पठाव ।
२. 'देसिल बयना' मैथिली आन्दोलनक मुख पत्र थिक । आन्दोलन सम्बन्धी
रचना के अप्रकाशित देल जायत ।
३. मिथिला-मैथिली सं सम्बन्धित समाचार पठाव ।
४. 'देसिल बयना' स्वयं विचार आ रचनात्मक सुझावक संगत कर्जे ।

कह लोचन कविनाय

जगन्नाथ बिनु नाथ के तोड़ल पगड़ा छान
खइ हमकी माइय संतत निविन कयल बथान
निविन कयल बथान माछ ई सरङ्ग-ताली
अपनन के खाएत सोचत शुभ भनके खाडी
कह लोचन कविनाय बजा नट जल्दी छावू नाथ
बेचू दण कटाइक होय ई अलच्छ जगन्नाथ

चेत कबड्डी

चेत कबड्डी अवे छो
तोरा छे किछु लये छो
जतय बहै छर गंगा-कमला-
तकरे गीत सुनबै छी ॥
आहि माटि सं जतमलि सीवा
सण्ड हमार ई आती
याहकइय गोटन, कजिल के
मुमि रहत नलि पतली
सुगो शासक गप कइ ब्रह्म
तकरे गीत सुनबै छी ॥
ई कोरि-सलेहसक धरती
ई शिबसिद्धक धाम अइ
महादेव बनि चाकर अण्डा
मिथिला देश नहान अइ
जाधरि बानसुख ता रहते
सहय राधय दोहबै छी ॥

— रामलोचन ठाकुर

मैथिली सिनेमा

हार प्रोड्यूसर मेडि जायि त ६ मासक
अन्दरे फिलम बनै तैयार भ जायत।
मोना एहि छेक नहान विहार सरकार सं सेहो
सम्पर्क कलाक प्रयास करल परलव सरकार
दिल सं पत्रक उत्तरो तक नहि आबि
सकल।

फिलम आर अतो दृष्टि सं उपयोगी
अछि। आर केन्द्रिक जे समझा छैक
सक बुझाएत विचारमय एहि माध्यमे
भ सकैत छैक। बतेको युवा युवक कान्ता
मे त कमिशन के रोकी-रोटीक संगहि
अन मतलब विकासक दुगुण मेटे सकैत
छनि। कमबस्य फिलम सभ, जे बिदेस के
सला मनोरंजक होइत, लाखक लाख टाका
मिथिलाकल सं छ जाइत। मैथिली
फिलम सेने ताराए तक जगतक भा बरक
पाइ नै मे रहत। मिथिलाक व्यवसायी
लोकनि देखा-देखी एहिने अमरक होय-
तार। फिलम उद्योग के आर्थिक सहयोग
छैक एगो केन्द्रीय संस्था छैक—देन-
एक० डी० सी० (National Film
Development Corporation) जे
राज्य सरकार माथमे फिलम उद्योग के अप्प
सहयोग देत छैक। मद्रास, प० बंगाल,
तामि नाडू, उड़ीसा, मणिपुर आदि राज्य-
सरकार एहि सं प्रचुर टाका कम अत-

अखण्ड प्रकाशन, ११, दुलान अलाम रोड, कलकत्ता-७०००३३ के छेक श्री मेहवर भा द्वारा प्रकाशित तया पायनियर आर्ट पिक्चर, ३२-बी, इन्दरबन बेशाल स्ट्रीट,
कलकत्ता ५ मे मुद्रित। सम्पादक : श्री नारायण झा

आन्दोलन समाचार

मैथिली मुक्ति मोर्चाक अपील

मिथिला मे दुर्गाशोक परम्परा बढ
पवित्र आ प्राचीन अछि। लाख विकदारी
अछेतो निरिधते पर खेप सकल मिथिला
मे एजनेसल होइत आ बहुशोक सांकि-
तिक कार्यक्रम होइत। मोर्चा समस्त अखण्ड
युवागर्ग सं निवेदन करैत छैक जे समस्त आखण्ड
सकल कार्यक्रम मैथिली मे बढत जाय।
बढत जाय नहि त समस्त मैथिली मे
मैथिली मे देवक जाही। भारक अचाना
नारक मोर्चा मे हो—केछक भावमे
दिहनु नहि। गंगाबलक बढत गरी-
शकक उपयोग सर्वथा अनुचित—जे स्थान
राखल जाय।

मिथिलाक छी—मैथिली छी

मैथिली बचू, पढ़, लिखू। समकाल

मैथिली मे कर।

चन्द्रकूर—

एक प्रति

संख्या

पंच शासक

वितरक लोकनि सं—

देसिल बयान

वितरण व्यवस्थापक,

अखण्ड प्रकाशन,

अखण्ड प्रकाशन,

अखण्ड प्रकाशन,

अखण्ड प्रकाशन,

अखण्ड प्रकाशन,

अखण्ड प्रकाशन,

अखण्ड प्रकाशन,

अखण्ड प्रकाशन,

अखण्ड प्रकाशन,

अखण्ड प्रकाशन,

अखण्ड प्रकाशन,

अखण्ड प्रकाशन,

अखण्ड प्रकाशन,

अखण्ड प्रकाशन,

अखण्ड प्रकाशन,

अखण्ड प्रकाशन,

अखण्ड प्रकाशन,

अखण्ड प्रकाशन,

अखण्ड प्रकाशन,

अखण्ड प्रकाशन,

अखण्ड प्रकाशन,

अखण्ड प्रकाशन,

अखण्ड प्रकाशन,

अखण्ड प्रकाशन,

अखण्ड प्रकाशन,

अखण्ड प्रकाशन,

अखण्ड प्रकाशन,

अखण्ड प्रकाशन,

अखण्ड प्रकाशन,

अखण्ड प्रकाशन,

अखण्ड प्रकाशन,

अखण्ड प्रकाशन,

अखण्ड प्रकाशन,

अखण्ड प्रकाशन,

अखण्ड प्रकाशन,

अखण्ड प्रकाशन,

विपत्ति असगर नहि अबैछ

समाचार सुन सं जात मेहवर से दहि-
अबैछ से देवाक प्रकाश छैक।
बादिक बाद एहि तरहक महाभारिक सगर-
नाथ कुटु नव बटना नहि बिकैक। बादिक
समय वातावरणक संगहि येप बलक सुखित
म नेनार स्वाभाविक छैक आ ई नमोस्कार
बनम प्रयास एहिप्रकार सं होइत छैक। परन्तु
अबैछक बात त ई छैक जे एहि सं भय-
बाक छेल सरकार द्वारा कुटु तरहक प्रयास
पहिले नहि मेहवर नहि होइत छैक।
बलम रोय पुनः एकरि बार छर तलन
ठकना-कुटिलना केन। ओना सरकार के
मीनारी रोकरनार सं बीमारी भलाहार मे
खाम छैक कारण ओकरा चमका खम के
कमेवाक स्वर्ग-सुयोग भेटैत छैक आ सरकार
रक पाया सकत होइत छैक। हाम रे
अभ्यास मिथिलाक लोक। कि आनहुं ओ
हर नहि चेतत आ एहि दुर्लभ रोय-भालना
सं मुक्ति देवाक प्रयास नहि करत। ओना
ई बात त भविष्य मे एह होइत पड़ब
एतेवरि एह छैक जे वं आनहुं ओ नहि
चेतत त 'ओकर दुलक नहि ओर' जगि
सकैत छैक।

वितरक लोकनि सं—

देसिल बयान

वितरण व्यवस्थापक,

अखण्ड प्रकाशन,

अखण्ड प्रकाशन,

अखण्ड प्रकाशन,

अखण्ड प्रकाशन,

अखण्ड प्रकाशन,

अखण्ड प्रकाशन,

अखण्ड प्रकाशन,

अखण्ड प्रकाशन,

अखण्ड प्रकाशन,

अखण्ड प्रकाशन,

अखण्ड प्रकाशन,

अखण्ड प्रकाशन,

अखण्ड प्रकाशन,

अखण्ड प्रकाशन,

अखण्ड प्रकाशन,

अखण्ड प्रकाशन,

अखण्ड प्रकाशन,

अखण्ड प्रकाशन,

अखण्ड प्रकाशन,

अखण्ड प्रकाशन,

अखण्ड प्रकाशन,

अखण्ड प्रकाशन,

अखण्ड प्रकाशन,

अखण्ड प्रकाशन,

अखण्ड प्रकाशन,

अखण्ड प्रकाशन,

अखण्ड प्रकाशन,

अखण्ड प्रकाशन,

अखण्ड प्रकाशन,

अखण्ड प्रकाशन,

अखण्ड प्रकाशन,

अखण्ड प्रकाशन,

अखण्ड प्रकाशन,

अखण्ड प्रकाशन,

अखण्ड प्रकाशन,

लेखक / पाठक लोकान सं निवेदन

- अपन मौलिक आ अग्रसारित रचना 'देसिल बयान' मे प्रकाशनाथ पठाव।
- 'देसिल बयान' मैथिली आन्दोलनक मुख पत्र छि। आन्दोलन सम्बन्धी रचना के आग्रहिकार देल जायत।
- 'देसिल बयान' मैथिली सं सम्पर्कित समाचार पठाव।
- 'देसिल बयान' स्वयं विचार आ रचनासंग सुमावक स्वागत करैत।

कह लौचन कविराय

अगल्लाथ बिनु नाथ के तोड़ल पागदा छान
खइ अमकी गाइय संवत निचिन फल बयान
निचिन कल बयान माल ई सरकपाली
अपन के लाएत सोचत शुभ अतके खाली
कइ लोचन कविराय बजा नट अलदी लाखू नाथ
देवू बरत फमाइक होथे ई अलखू जगल्लाथ

— श्री कान्त मंडल

संविधान विनु सौधिलोका आ
मानवित्त विनु निधिया धाम
छाहि-जारि सुहु।ह कःव हुन
विप्रोहो मिधियाका जमान

बहारी-भत्ता सचार्क राजनीति

अन्यास प्रांतीय सरकारें अर्का बिहार
सरकार सेही दुइदो-भ्रंशता योजना वाल
केलक भअल । ई भन्ता बुद्ध लोक के भेरेत
ऊँ के काव बरक बाँकर नहि रहैत अछि
तथा गगर-बगर करेक दोषर द्वारा नहि
रहैत छैक । समाकान लोक एहि दोष-
र दोषर हनका उचित बुझैत नि ।

अछि कि वरिपहुँ ई भत्ता अवसर-अग्रहार
बुद्ध-पुरनिर्वाह के भेटैत छैक ? भत्ता दानक
पाछा कान भवना काज करल अछि—
छोक सेवाक या नै स्वयन पोषण ? कि
हत्थी तगे दूजित राबनीनिक गुटबन्दी
काज करल अछि ?

देसिह दयनाक बनसाधपुर संवाद
प्रतिनिधिक अनुसार इहि भत्ताक नाम पर
खुकि के स्वतन्त्र पोषण आ राजनीतिक दल-

देहिछ कन्याक वनवासपुर संवाद
 प्रतिनिधिक अमुशार एहि भवाक नाम पर
 खुकि जे सबद रोपना आ राजनीतिक दम्-
 बाबी खलि रहल अछि तथा आंगिला
 युनायक भाषार सेन रोपार देहिछ वा रहल
 अछि । ई भाषा ओहरो भेटत छैक जे
 मुनिया एएएवक सर्गभित हो, सवाधारी
 रहल समर्थक हो । मतहि ओकरा उमेर
 तीख-गैतसे बिबलक नै होइक आ खान्नी
 भीयन्ती बिद्वक नै बात हो । किछु ओहरो
 व्यक्ती के भेटत छैक बकरा सं भगिना
 जुनाब नै नीक सहयोगक उपेद सकार
 के छैन । दोसर दिख जे सते अमुशार अछि
 वकरा संग पूर्ण उद्येमेछ केछ बा रहल
 छैक । डाहरी-शरी चढ़ेबाक पसवात किछु
 लोकक मतोकामना त पूरा प्र बाहर छैक
 परन्तु जे दोहलछक समर्थक रूप मे
 बिचार अछि मयबा डाहरी-शरी चढ़ेबा
 नै अपुसमर्थ अछि—उकता छैक कोनो ड्राटा

नहि होके। नीन्दीओ-स हत० दा
ओ० तक दीन-दाहा केलाक बादो कुह
आवाखन होदि आर किछु प्रास हु
रोहत होके। एहि अग्रत-अष्टोटक
विन्दु अरु कतो केओ बाबल अ ओकर
पण सरकारक बदोबारी च विना बदो
वाज निगदो। एहि आंगि पवैत होके अ
अस्वाभरि बसा देत होके।

पद्म एकदा घटना भट्टि मनीगाळी

एहिन एकटा घटना भेलि

कृष्ण पत्नी क्षेत्रज्ञ । कुशी दादशुद्ध म

माल बनसमविश ललक । नऑकक सम

संज्ञा. याना-प्रभारी आ क्षेत्रक एम०

७० ॥० प्रो० श्री नारीन्द्र झा उपस्थित

सुविख्यात लेखक डा० ब्रज किशोर वर्मा

अध्यायी चत्वार

कीज् खा पढ़.

1

सुविख्यात लेखक डा० ब्रज किशोर वर्मा

अध्यायी चत्वार

कीज् खा पढ़.

1

मैथिली आन्दोलन

मैथिलिक आन्दोलन बनबे पड़ल

भारत या नेपालक समृद्धिवादी भाषा । नहि रहि सकत । यदि निराशाक की कारण परिवारक सदस्य होइतो मैथिली के अन्त । मैथिली भाषाक प्रति समर्थक आकर्षक बनबिब अधिकार नहि मेलेक अछि । चौदहम शताब्दी सं आठम शताब्दी धरि छ' हम शताब्दी सं आठम शताब्दी धरि छ' शेरछु' मैथिली सम्मानित भाषा रही मे स्थान नहिगति रहल अछि । भारत नेपाल भिन्न तीन करोड़क दबा बसनिहारक होइतो आइ शासकीय निकाय सं उरोक्षित पड़ल अछि आखि की कारण छे यदि अखेरै समाक ?

एकर पुष्टमे सोनगले मैथिली भाषा के संगे बदलेल बगि वाराणसी सभ के कइल होल अछि । मैथिली के पोती मेढारी किवा पोथी-पतराक परिचित स्मेटिक स्लनिहार मुना संस्कृताइ रचित कोननि एकरा बन बीनत सं काटिदेब होइत । ब्रह्मगोत्र वर्गक लोक एकरा अन्त भाषा मानला पर तैयार नहि भेलाह । हुनक मानसिकता मे अटक पड़ल के संदेह रहिहै सं क्रमिक अवधार सं पुष्ट होइत गेलहि आ ओ लोकनि अन्तर्गत मैथिली भाषाव फराक राखि लेलन्हि । आ केन ओ आगे दबा बसनिहार वर्गक सारथि-शत मेरी छल, यदि दीशि रुचि नहि देली छल हकर विराट भाषाभाषीक स्वी होइतो एकरा अन्त वर्गक भाषा हएवाक सरकारी ठग्याक मारि भोग पड़लक मैथिली सार

भारतेमे नहि, नेपालो मे सरकारी सार किना उच्च सरकारी भोदराक लोक सभ उत्तरि ई० धरि एकरा चारणा बसोने छलाह के मैथिली छ' वर्गक मातृ भाषा थीक । मुदा तकर परिवर्तन एत भोगेलेक अछि एत बहुआंशमे लोक इहिदोय सं मुक्त अछि । भारतीय छेकले इमेरेलेत छी मैथिल वामे विराट अस्मानता । भाषा छ' के प्रखरता लोक मैथिली अंदक भाषा अछि से कहल' आन्दोलन भेट अछि । समा केत अछि-पत्र पत्रिका मे विचार छेत अछि । ई दुर्भाग्य नहि तँ भार की मेक । पटना दरभंगा सहरनी, खोसी, बयनगर, रजिहा, कलकत्ता, दिल्ली, कर्नाट सभधाम मैथिली भाषाक मान्यताले' एतहन आ कर्पकृता सक्रिय छथि । बरोबरि कार्य क्रम हम वीनित रहल अछि । लोक सभ अमल सेहो करैत रहलाह अछि । मुदा, हमरा बनिने दिनका सभके बाहिरामे रहि योग मेववाक चाही ताहिरामे कोन कोन सं भेटत नहि होइतनि से हमरा ओरे विवश अछि । एकरा मूल मे उदर भाषा सम्बन्धी सभसभदा प्रमुख कारण मानल जा सकैछ ।

मैथिली सभ-पत्रिका निकलैत अछि । एतन तँ आकाशवाणी पत्रिका आ पत्र हमरा आगामे राखल अछि । बहिन-बही होइत अछि ई बागमरक दौर देखिक । बहिन-करी दसक भान सेहो अछि ई दीप बीबी

मैथिलीक पुस्तक सभ निकलैत अछि । मैथिली अकादमी सन-सन मास सरकारी संस्था निकालि पावि रहल अछि । सेहो ओकर तीनगोट रूपमे एकगोट मात्र पुरा भ' रहल छैल । मुदा यदि सं अविरलक मैथिली गोथी प्रकाशनक की रहित छैक । एक तँ प्रकाशनक अभाव छैल नहि सकत । तँ छविमोक्ष तँ कीनत नहि । एकर मूल मे सेहो समर्थन मैथिल के माया हाहिरामति आकाशक अभाव मानल सतवाक चाही । अखिर मैथिली सतवनी कोनो किवा सड़ काब मे सम्पूर्ण मैथिलक आसन्नोय किपाक मयवर्ण बाधा अछि । अन्तर्गत भाषा आ साहित्यक प्रति विराग छपी छैक । तँ हम अद्व कइतो ब्रजामोक्ष अन्तराली मे फँसल लोक अन्तराल अछि । सोचिआ गेल अछि ।

तँ मैथिली आन्दोलनक दू दिशा मे गेल । एकटा साम्य दीशि-दोसर अधिकार दीशि । एकरा महत्त्वने विशा सेल, साम-साम, बर-बामे पेल । मैथिली भाषा अर्थाक भाषा थीक से ओकर चिनगारे लिखाउ । ओकरा जलबन्ध, से समाज दे-दीयाव समक दीपगामे पल । ओकरा महादीपनी । ओकर पदल लिखक संगल के मंदरीलोक, हावमे सँझा दीपोक, नेतृत्व दीपोक । अन्तर्गत अगविवी ओहिवर्गक । ओ वर्ग जागत मैथिल जागत आ बलन मैथिल जागत कर्पुर्ग मैथिली जागत । मैथिली आन्दोलनक मैथिलक आन्दोलन काउ ।

—राजेश्वर कपडि 'भारत'

कलकत्ताक ठेकाखला ओतला ब्याह रहैत छैक के एक आदमी-ओर मे पेलि के दाद म सके । लखक स्थान मे इहद आदमी गद्दी पीवेइ । नामिक नीचा रस्ती पर ओर देत आ हाथ में हुनू नीच पकड़ने । पाछा सं एक आदमी ठेलैत रहैत छैक । गरिगर लोक अने लगता अन्तर एक अथवा २ आदमी हुनू काट पहियाक गछा सं ओर लावेत छैक । कोनो कोनो ठेलामे खुआम स्थान पर हाथ दु-एक बाँध रहैत छैक वकरा हुनू दिस दू आदमी पकड़ि के पीवेइ ।

कलकत्ता मे आमाता १० हजार ठेका छैक वकर मेरी भाग बड़ा सवार मे छैक । सदावासर व्यापारक केन्द्र देवाक कारण काब मेलेब सड़ सार छैक । भान अन्तरक ठेकाखला के कहियो काब मेलेत छैक कहियो नहि भेटैत छैक । बार बार मे दूक टेम्प नहि जा सकैछ ठेका ताहू बाटे बलि बाहल । दोसर सामानक नामा कम रहैत दूक टेम्प न-आमा मे काब नहि म सकैत छैक-ल-आमा ठेकाक प्रयोजन ।

(शेतांग पुष्ट ४ पर)

बहिनदाइक नाम एगो चिट्ठी

बहिन दाइ !
अहाँक चिट्ठी भेटल छल
सुदा बारा देवा मे भेल बड़ विरहम
पूबि बिह' अही छे/छछु' बड़ बला
'सविपु' की छिबी/बा बिपु' छिबी
तकरे नजि क पओने छछु' निर्णय
तँ बहिन दाइ !
उबारा देवा मे भेल विलम्ब ।
बहिन दाइ !
हम कोत छी जे अहाँ छहुँबेर
अनओने छहुँब शामा-चकेवा
क्याहार आगि विरदावन मे / आ नजि पावि हमरा
मेले छहुँब उदास / बड़ हलत आबि वं दरो-भो नोर ।
किन्तु बहिन दाइ !
अहाँ माती बा नजि माती
पिक बरि ई वस्त्र / जे
हुनू दावानल के नजि भिराओल बा—कहेछ
सोभनी छोटा वं/आ,
जेना अहाँ छिल्ले छी—
ठीके हम बड़ बदलि गेलोह
हम बुझेत छी / जे विरदावन / ओ विरदावन नजि रहि गेल दू
आइ / एकटा नजि
हजारक हजार सुनिहा बर्गमि गेल-द / आ
एकर विरदावन पिक ओकरा सभक स्याती आवाव
एकर पुरान गल सभक पोचरि मे
एक वं एक अओब बिपार करैए निवास
आइ
अहितमक वसतो अइ विपयुक्त / हाँगे छेवाक अनुपलुख
तँ
हमरा बिचार / एकरा बसिह गेनाह पिक नीक
भिराओल प्रवास सल्या अनुचित
अधिक अपत्य / जे कदाक पिक संवय
आमाती कालिक निर्मित
जवन कि हमरा लोकनि ल्याएन
निचितले ल्याएव / एगो नव विरदावन
पटाएव / हुनू डबरीक पानि सं नजि
अन धाम सं / आ फुलएव
रंग-बिरंगक फूल / अन भाशाक अनुपलुख
अन कस्यान के देव वासव रूप ।
बहिन दाइ !
हम सोनैत छी / आ अहाँ मानव
जे आइ / अनले गाम मे
हम सभ छी अन'छा-अन'बिहार
वकर नजि छर हुनू पता-ठेका—
सविपु' कहेक अवश्य पिक ई पीहा
मुदा/ताइ छैक
कथमनि उचित नजि जानव / बल
बीरव अन धाकि आ
बाहरीक अन्तर के अकानन—आ
एगो मय टानव
त काबि—आमाती काबि
हमरो एगो परिचय रहत
विरदावनक सभ—हम विरदावन ।

—राजेश्वर कपडि

चिट्ठी पुरजी

देखिल क्याना प्रवेशक मेटल। ब्लोक नीक लागत के वर्णन नहि कर सकत छी। वास्तव मे पत्रिकाक भाषा, विषय आओर सग पदन सेह सुन्दर आर उपयोगी भेल अछि। एहि प्रयास देख अमना दिलि सं आर "देखी समाचार" परिवार दि'चि सं शतशः अभिनन्दन आओर शुभकामना स्वीकार करू।

—डा० लक्ष्मण सिंह, इलाहाबाद
देखिल क्याना पहुँचल। मन प्रफुल्लित भइ गेल। हम शारीरिक शुभकामना व्यक्त करैत छी छी पत्रिका रखल छुअर से कामना करैत छी।

'देखिल क्याना' जन जीवनक प्रतीक बनए से हमर इच्छा अछि आ तबने विचारपतिक भाषाक समुचित समार होएत।

'निबु भाषाक लोक अछि
बाबू मृतक रामान
बरेत बास पीतेत पानि
मान घुसक सनान'
हमरा आशा अछि ओ पूर्ण विस्वास करैत छी के अपने ब्लोकक चाहिस्य सं मैथिली भाषा सेवा करैत छी तकर मूल्य भाषी पीढ़ी पंन करत।

—डा० मदन मिश्र, मधुपुरा
बाँदा देखल क्याना सब बन मिटइ तहिना ई पत्रिका हम मैथिल युव के मीठ खेत ररेन आ ई अतबाल प्रकाशित होएत एकर इच्छा हमर विचार अछि। हमर सभ सुश्रमस आ-सहयोग बनल रहत।

—सूर्य नारायण मंडल, नई दिल्ली
देखिल क्याना लेल बहुत रास शुभकामना। भरिलक वसंतमा देवा से पाछू नहि हटन, विज्ञापन राखी। अगिला अंक सं भूख आपूर्ति करत।
अनेने लोकनि मैथिली लेल जान-प्राण लगा देने छी। हमरो छाप लोकनिक किछु कृतब्य भए जात अछि बकर निर्वाह करत, से आशा अछि।

—बोरेंद्र झा, दक्षिणंगा
देखिल क्यानाक पहिल अंक देखलौ। बौ ई 'मैथिली मुक्ति मोर्चा' के प्रमुख मार्गिक पत्र भिक तखन एकरा एतेक सामान्य टंग सं छपने मुक्ति मोर्चाक अपराध हैत।

हमर निवेदन के एकर प्रकाशन स्वीकृत गंग सं केल जाए। मुक्ति मोर्चा एतनपरि की हम फलक आ भविष्य मे की सम कदमक योजना बना रहल अछि से हमन-सारी सं छापि देल जाए। ओहि अंकक एक प्रति श्री बरेंद्र कुमार पता सं पठा देल जाए। 'मिहिर' मे एक बेर ओ मुक्ति मोर्चाक प्रति किछु अपमानजनक शब्द समक प्रयोग कएने छलैत, बकर बलाव हम 'मिहिर' मे पठा देने छलौ।

—नवीन चौधरी, इन्दौर

अरणोदय प्रकाशन, ३३/५, डा० देवदार रमलान रोड, कलकत्ता-७० १३०० १३ के लेल श्री महेश्वर आ द्वारा प्रकाशित

पत्रिका छोट, कलकत्ता-५ मे मुद्रित।

मिथिला एक्सप्रेसक सामने धरना

हमरा लोकनिक उत्तर कलकत्ता प्रति-निधि बनगोलनिहें से मत २५ अक्टूबर के विचारक संख्या मे मैथिल युवक लोकनि राबड़ा टीशन पर क्या सेनाह आ क्याए लेल पट्टी पर चलता दय मिथिला एक्सप्रेस के पत्राव मिमिट छरि अंककओने रहलह। बाद मे अधिकारीक आवाहन मेटल्लाक बाद पट्टी शुक्र मेल आ स्वाभावतः गांधी घंटाभरि विराम सं प्रस्थान केलक। युवक लोकनिक माँग छलनि के उत्तर बिहार लेल मान्य दू गोटे गांधी सेवाक कारो बह दिवसारी होएत छैक तँ गांधी-बहाओल बाय। पूर्व देखैक भेनेबर महोदय अपन आवाहन पूरा करा केल छल पाननचरि राबड़ा नरैनीक शरी लेखल गांधी सेवाक घोषणा तकर पत्रो क चुलल छथि। ओना त उचित छैक के गांधी सल्लाखीए तकर बाहल आ रोब बाहल, पञ्च...

मिथिला आ नार्थ बिहार एक्सप्रेस—
इकर दू गोटे गांधी-हक्का सं पहिले सम-सलीपूर बाहल खल आ आब गोखलपूर तक जाएत। गोखलपूर चल गेल एतेचरि अहस्ते-मेल्लेए के मीढ़ बहिल गेल्लेए आ बाहल आ रोब बाहल, पञ्च...

देखिल क्याना आओर आन्दोलना-त्मक कार्यक्रम मे बाहि सं मैथिली ओ मिथिला के नव स्फूर्ति आ युतगाय आभा मे संजीवनीक संवार करय एहि केल हमर शारीरिक कामना अछि। पर-पत्रिकाक मुठ पर कोनो भाषाक ताल-चलेत अछि। देखिल क्यानाक प्रथम अंक देखि कोनो-तने एतेचरि अछि। मुदा एकर प्रभावता पर लन्दन बुलना बाहल। कारना एकरा संगे एकरा पृष्ठक अभिप्रेत आवश्यक। देखिल क्याना आने मेय मन्द स्वर मे सुतङ्क-सिद्ध रह, सुतङ्क-सिद्ध, माँग-साही-गाँगा मे हुकी लेत युतगाय मैथिल जनानस के उद्वेगित करय एहि लेल हमर आकांक्ष अछि। हमरा से सहयोग करव से देन।

—वेदनाथ मिश्र, गन्वा

□ पिय पबलेक कथुण
बय मैथिली।

सुभाष भा खयोगक आस्थास लेल आभारी छी। एक खेप केर कहि दी के 'देखिल क्याना' आन्दोलनक पत्र भिक, फेब्रिक नहि। एकर जेद आन्दोलना-त्मक चेतना बाण्ड केनाह पिक—देखल घोषा बहसोनाह नहि। एकरा ताही दृष्टिमे देखल बाय। बं एहि मे कोनो खासि कुमता बाय सं निमंत्रण लेलि, तकर तरहक रचना पढावौ—हमरा लोकनि राब तखन होएत बखन कि एकर प्रवेश गान-गान मे होइक—ई बन-क। क्या पहुँचि सकए। एहि कार्य मे अपने लोकनिक सहयोगक अपेक्षा अछि श्रास्ते प्राप्त होएत—ताही विचारक संग—

—धनपदक

संगहि सुतोकाळ लोक के मुश्किलपुव वा समस्यीपुर मे चदि एकोनाह अंगभय म गेलह। एक त गेट पहिले सं बल रहे छर आ बं कोहुना एक आश्रय टा खुबो केलेय त माहि-पीट बलिहटा बाहल छैक लोक दू-दू-हीन-हीन दिन तक अंतःकरण पर बल रहैछ—खुलल-पियातल। आपसि नेवटरी मे जाब केनिहार के नामा मेला त ओ फिरीधानी होइत छैक तकर अनुमान त अकुमोगीर क सकैत।

लगभग बीस बर्ष पहिले सं इकर दू गोटे गांधी छैक बाहलपूर एकोनाह उवा बिहार नेवाल आ उत्तर प्रदेशक एक पंच भागक लोक के निर्भर करय पड़ैत छैक। ठाँना ई दिवसारी सेहो नव नहि छैक। ओना लोक संख्या एर नीच बल मे कते बढैल तकर अनुमान सहजे करय वा सकैछ। तँ लगता त ई छेक के गोखलपूर तक बं खाना मेले कएल त ताई लेल आर कम स कम दू गोटे गांधी देखल बहलैक आ ई दुनू गांधी समन्तीपूर तक रहैत। दक्षिणंगा तक नही जात भेने ओतय तक बाहल। पञ्च उचित सं सकार के की मतलब? केनर बन्द गोखलपूर लेब के गांधी देखलिन सेर की बहल? मिथिलाचलक लोक मुखल आर तँ हीमान छैन होइतहुँ बयनगर के कय दक्षिणंगाक न्ही लाइत सेहो गताल-खाति मे पक छैक। एहि निमित्त एक नहि अमेक बेर लेल मंगल्य के लिखल गेलह। पञ्च बयानो नगर। कम स कम के समानक अपाव अभिप्राय सुतेत छैक के समानक देत छैक। कोविड सरकार त गोर माउंग गोरवे भान्ने। तँ आब-अकता छैक गोगर आन्दोलनक। दिवा खुनि छैने स्वामी समानाक अपेक्षा नहि कएल वा सकैछ। आशा अर के युवाकण अगिला दिन लेल तैयार रहत। देखिल क्यानाक शुभ कामना।

खलकत्ताक ठेकावाला

देखलकाल मेंनति सेहो रिक्ताकालक अनुसरे छैक। बड़ा-नाबार अंचल मे एक ठेकाक दैनिक आमदनी ५० सं १५० तक होइत छैक बाद मे हीन व चारि आदमी तक रहैत अर' एहि मे बालिब टाका मरि-नचारी बानाक सखामी खात छैक। तार-पर सं दिन मे ५-१० टाका द्राफिक पुल्लि के देस्य पकैत छैक। पुल्लिक गारि आ हुलचन उपकर मे भेति बाहल छै।

कह लोचन कविराय

चमचा गुण के खाति पिक करैछ वेद-मुलाण जकरा चमचा छर जते से तबैक महान से तबैक महान रालनेता युग चेता प्रातिशील कवि, ज्ञानाकार, शिलपी, कश्मिरेता कह लोचन कविराय छर सम संभव चमचा भारत मान्य विधाता जम-जय-जय हे चमचा

एहि तारे के उगमन करैत, ताड़ मे अपन कवि भागिदार के प्रतिआह्व। छेना एक लेल एकटा लोकनि के देखी किता नहि रहैत छैक। बल' तार' मोड़ पर खु-आ' वला वेखल रहैत छैक। सातेला' यानि पीवि लुसम बाहल। राहत मे ठेकेपर सूति रहल। दिवसारी होइ छर, नखिलकाल'मे। पञ्च पर भाषा जेबाक दम रहैत नहि छैक। बेहरो टुटखी महेया लेल केनो अंचल मे लेत से देह सं स कम मे भेट निहार नहि। दुखर गेने खाब मे अष्टविबा रहैत। फळा कटिन परिभ्रमक परचातो खान पानक ठीक नहि रहैत छैक आ तँ इरद लोकनिक बेर पर कवियो माउल नहि होइत छैक।

एहि चंचा मे बेरो लोक मोबपुरी छैन क अर। मिथिलाचलक मुंगेर, मुजफ्फर पुर समथालक मकूर सम अर। मधुबनी दक्षिणंगा आदि क्षेत्र मकूरक संख्या रिश्ता मे बेसी छैक ठेका मे लड़ मोइ। से के कुटुंबा मे किपक ने हो सम-अम आ आर्थिक स्थिति धारने छैक। समक संग अपन डीर डाबर छोड़बाक विवस्ता छैन बीबलक प्रति मोर छैक आ अपन प्रति निष्ठा छैक।

—जुगतवा अली

बाल गीत

हुक्का-लोली

हुक्कालोले खेले छी हम
मकूर के भइकोने छी हम
अष्टाचार भोगने छी हम
मेथिल-पुन बहने छी हम ॥

मराी के ललकारे छी हम
दुलचार के बारे छी हम
भन-पन-अमी पर करेछी
निबंता बेखाने छी हम ॥

मेद-भाव के मेदे छी हम
दंभ-द्वेष के घडे छी हम
नाट-बाट मे दीप बरा के
सर-वर खोति बगबि छी हम ॥

परिजन, भरिजन हो बा हरिजन
सम सं हाथ मिलाने छी हम
हुक्कालोली गीत गने छी
नव उडाल पसरने छी हम ॥
—सूर्य नारायण मंडल

मैथिली आन्दोलन

६ दिसम्बर, १९८० : एकटा अभिनेता
संस्मरण

ई कड नरि पवत के कोनो आदो-
वनाक पुछउ मे बुझि की कौ तैयार करैत
छैक । कोनो सामूहिक सतया छेल ई कौ
अतयाव एह डूअर मड बाहर अछि । ई
मानड पवत के सय-सय मे रोहो एता
मेलैक अछि । समय-समय पर गोछी, सम-
मंच आ पत्रिकाक माध्यम सँ आबाज उठा-
ओर गेलैक अछि । इदा एहि खे मे
नीहित स्वार्थक प्रयुक्ता रहलैक । तदा
कथित भैरवही हेतो भैरवही मिथिलाके
आगू मे राखि अयन उखर सोका करा
मे थपल रहल । कोनो-कोनो तरहँ अयन
स्थान समाज मे बना लेबाक छेल के
ठकेत रहल । एहि सँ भैरवही मिथिलाके
काज खुसाइत गेलैक । आ मिनीफरक
पताका फहराएत रहलैक । एकर बलंत
उदाहरण कछि अयन विहार सरकार आ
बोकर मिथिलाक प्राति किया फहरा, इदा
भैरवक एहि लक्ष्मण सम सँ कहिया तक
उकाइत रहत ।.....आ तकरा बवान देखैक
हुँ,सम्भर, १९८० क दिन ।

૬. રિશ્મકર, ૧૬૮૦. ક. પતિને તક
 લોકેક ધારણા રૈક છે મૈયલ ઓલોન
 નરિ કડ સકતે અથિ. અર્પતે સ્ત્રુન નરિ
 કડ સકતે અથિ । મૈયલ પતિનક હોદત
 અથિ, તે ઓકર લોશ આ ગાંગ ગમં અમિ-
 વ્યકિતિ બિનમાર આ વરે તક રૈત છેક,
 આરિ સાઈસ આ પેલુ યટ યુલકાડ આ
 આરિ કાઈસ તક રૈત છેક, ઓકર યુજિ-
 યારી મમિલા આ પરીકા પાસ કડ તક
 રૈત છેક । યુદા, ૬. રિશ્મકર, ૧૬૮૦.
 ઘરિ ધારણાકૈયિયા પ્રમાણિત કડ દેલેક ।
 તમા કપિય મૈકીરી મિયિલા સેવી કેં દયિ
 અગુર કાટડ વજનિ । મૈયલી કું મબા
 કડ લાયકાશા નિલેબક માય ટગિલ ડહ-
 લેક । ગોલેશી આ તિકમ લ્યાકાડ મંચ
 સ યુશોવિય હોડ લ્યાક હોય હેકાન વર
 અથિ નેલેક' આ વગરે લેવી 'લોકમતિ-
 નિચિ' તમા મિતારિલકા જૂટિ ગેલેક,
 ઓકર યુશી લોકાડ લ્યાલેક ।

खुश गांधी मैदान में आराम मंजेल
विवाह रईस के पटनाक बुद्धि मैरि-
ज्ज आमा खाति केति, मैजलक भीर
गांधी मैदान में बंकास आर ठाडक बारि
देकि केति। एतेन विवाह कइ लेबा मे
आजांकक कोनो प्रस्ने नहि उठे खलैक।
कारण एहि सं पूर्व बनता सरकारी समय
पटना मे मेल कइता आर प्रदर्शन बाहि मे
पटनाक बट आर टाह धारिखि केरो मैज-
लक यहुत कइबऽ मे जाणक अमुमय नहि
कयने राखि। मुदा एहि प्रदर्शन मे हुनका
लोकिनि के कोन भय, केतेन बाधा बल

केलकनि नहिं बानि सरकार ककर आ
ककरा छेड़ ? सरकार नहिं रखलनि ?
राष्ट्र अछि जे इक्नो तक मैथिलक अर्थ
यो लोकनि किछु घुडी भरि लगा कयित
समुद्र लोक तक छि मित रखबाक चेष्टा में
छिनयता, रहि गल्ल आराकन निपारण
ह दिग्भर, १९८० क दिन क देलक।
असली मैथिल-पुत्र सभ नाटिक रंग लाल
क देलक। यो आबो अपरत हम हेर
बनल रम्य त जगदार ओ, आ बातनि
हुनकर भविष्य, ई बात अवल्य छेक—
ने अपरत मयल ने खुदहार कुरय अर्थात
अपरत लगल नहिं मरैत अछि। पुरा ओ
मरत अवल्य तहिं मे सदैव नहिं।

ओरि दिन चोटाएल वंशान सम क
 दवाइ-बीरोक बरुति छुके। ओरर
 किछु लोक चिनहार हावड लेठ प्रेम मे
 पतियानी मे वाहु छल। दारर ओकर
 वंसी ऊहार रहल छुके, ओरर ओ सम
 बसवाइक पना मे अपन-अपन नाम छापवड
 लेठ देहाल छल। एहिँ वं बेरी निरन्तर
 बार की भऽ सकत छैक ? एहिँ वे बेरी
 पुनता बार की भऽ सकत छैक मे खुबा
 आदोलकारी लठीक मरि वं ओखवाय
 लेठ छल, आ ओरर किछु लोक यचा-
 चारीक ओठड चिनहार-परिवय करबा मे,
 हुनकर अपन बनबा मे लागल छल।
 वाइ रे विवेक !

के रोहत छे से नीके रोहत छेक ।
बहुत के बिहवाक मोना लोक के मे-
लेक । ओकर छल-बलक देवानक अवसर
एलेक । एतए करीयो एतरे सन छेक —
ऊँझै नायो, छि बुझै नायो ।
केहन शायसद बात —ले परां भनु मर
रदक भीनवा नहि ५३, कलनै—इसरी
हुनि गेलौं ५३ कहुना नायो छेत ।
इसरा जागल जेना ओ थार ब्याक पुछि-
सक हँकिया होला ।धुरा, से किं
लोक एहिं से होलासद भ बाहर ? के
कि मर अपन संभारनिक अजिक छोडि

देने ? बौ मरुत माटि डेल बारि स
हमर समक करि नवल भडि । हमरा
बारि पर मात्र ओकरे अधिकार छेक
नकर दूव पीनि हमरा समक बनिम संव-
रिति नेल भडि । ६ दिगम्बर, १६८०
एकर पक्षा समूत छेक । वो दिन मैबल
सतानक बीरबल दसावेब छेक ।

माय कै माय कहवा मे लाख कयीक ?
बयोवृद्ध दोखर बी, सर्वश्री भीम भाइ,
प्रवासी भाइ गोकुल नाथ बी, पूँण्डु बी
एवं भाइ राबभोहन जी अपन कर्तव्य नीक
बेका निमाहेत रहबाइ । मुलिया बी मा

विचि की ? भी चंद्रकांत की भांती
पीताम्बर पाठक पूर्ण सक्रिय छलह कि-
केली सै किन्तु नहि, आ कष्टक त
बढ़े अवकाश । एकदिव प्रभातक रक्षा-
पत्र-पत्रिकाक नियुक्तता पर जोर आ दोसर
दिवस पर आन्तरिक देवाव । प्रेस क
कड देवाक घनकी । मति-पानिक सतान-
कत खूत निरुध्दक चोखता पर बहल,
सै भूत, अथवा शान प्रथनकारी पर
ताम्बतोरि खटीक पहर भूत : सैचि की
तोन करोड़क भाषा, सै भूत, मिथिलाक
सुलमानक भाषा मैथिली, सै भूत, अर्थात्
सीता, बलक आ विष्णु तह मिथिला
भूत !.....तखन सय की !...सय भाष
बिहार सरकार नैयमा, आ सय भाष सर-
कारी कुड दारा प्रेस सै सतावर के तंकि-
नितोरि कड कति देवाक बहल/लेलो
सतराखन सै मतलना हल्लै । सतान
हल्लै ।.....है मायक नहि भूत
सल्लै सै आन ककर !.....तकर अर्थ
भूमिलीय मेळ ह विगम, १८८० ककर
सय नारा छलक :—

हिन्दू-मुस्लिम बोर ख़वान,
हम सब छी मैथिल संतान ।

ज्ञोणिन त्वाज्ञोणिन मैथिलार्थ

મિથિલા ગોલ ઢાંગ દર્શકના મ્હો
મિથિલા-મૈથિલીક ઉદારક લેલ આંદોલ-
શોલ કુળે રશિ ઢા કાતિદશી વીર કવિ
રાખાચર્યક ક્ષત્રમ ક્રાંતિક વિનયી
ઉગિયમ લાગલ ! મિથિલીચલ સંસ્થાવર
વસલ મૈથલક બીચ રાખાચર્યક હિનાદ
કુનાદ પેલેલક—ઓગિત લે શોગત મૈથ-
લ્ય, યાસ તકપલ અહિ હાસત ! મિથિ-
લાન-ચરક કુલલ સ્થાનામલ્ય મૈથલ
વંશુ લેલ બન બન ! ઓગિત સંપૂર રહ્યો,
પામ વ્યંત્ર દેવક કુના નહિ કેલો ।

[illegible]

डा० लक्ष्मण झा के गारि पढ़ब, राज-
बाचार्य के कुरैत छटपटात छोटि देव,

दामोदर साठ दास के बेहाल देखन बा
विद्यागति पूर्वक मंच से मैथिलक गर्वक
कमाल देखन ।

आय ई स्पष्ट भंगोल अछि जे मैथिलक आ दूटा बग अछि—समर्पित सेवक आ सौजन्यरक। दुनुइ कल्या-अन्त्या उ पोष छैक। मैथिली के अन्तरे अपोती गुणवत्ता सौभाग्य बग चलिखल मरु भूभागक ताक मे बकथान लगौने रहैत अछि त दोहर रिस समर्पित लोक दिन-राति स्वयामयक कार्य मे व्यस्त। जं साहिल के बात कहल बाय त आगधरिहक मैथिलीक प्रकाशित साहित्य जं बहुत बेसी अग्रप्रगति अन्तरक दुनिया मे चाल अछि। जं मूर्याक कहल बाय त निश्चित ई अग्रकाशित साहित्य प्रकाशित साहित्य सं वेदी सिलखण आ स्वामीनी आ भाषा प्रेमी हेबाक कारणे सदा अन्तु बंगा मे रहला अछि, अन्तनिवार रहला अछि। ई दुनितहुं सभा कथित मैथिलीक कन्वावर लोकनि गुम्मी लउने छथि। सौभाग्य बग समस्त मुल-कुबिवा हथिया अन्तना शायं सिद्ध क रहल अछि। आ एहि दूटा विरोधे बिन्दुक बीच ठण्ड छथि निष्पार्जित एक दिस ताकि हरेत छथि त दोहर दिव रसिते आलिख जं नोक धार बहर खोत जनि।

अय-अय भंरनि इसारो वर्षपरि मुनल
आ गयल सं की हेतक ! नापरि गइ

शेर्षाद्य पृष्ठे द पर

रेड डंकरी

प्रशासने लकन अछि

रेड-कुट्टा तथा रेल डकैती आद-काहि भारतीय रेलक दिनवर्षा बर्षा म रेल अछि । समाचार पत्रक पठक लोकनि सेहो एहि तरहक घटनाक समाचार वा त पढ़िने नहि छथि ना बँ पढ़ना केँ-नि तँ वइ सामान्य ढंग सँ । स्वभावतः हुनकर कोनो प्रतिक्रिया नहि होयत छनि । घटना भनहि छ'त सँ ओट हो वा १२ नवम्बरक साखा अगत जन भा ६ जुल ददगवाट जन पेब सँ पेब किबक ने हो । तँ भरिलक लोक ई नहि जानय बाहिल जे बलन एकटा बगी धुकुवा म गेलक सलन ऊ-इ आदमी केना मुख हेतक बलन रात रात या बगी कोणीक घेठ मे जना गेलक सलन तवाँए आदमी केना मुख हेतक ? तँ लोकक मन मे भारतीय समाचार पत्रक प्रति ककर समाचार मे मिथियो भरि खलता नहि रहैत छक घुमा नहि बाँत छैक । लोक नहि जानय चाहैत अछि जे प्रेस-व्यावसायिक बाहि छैक प्रेस कल सम बिचिया रेल अछि अखली अर्थ 'कलत्कार' 'कण्युद' 'धन्युद' आदि जनविरोधी समाचारक उपाहन प्रसारण या फिर होइ छइ । परन्तु एकटा सुकपागी केँ एहिरादक समाचार पढ़ि प्रतिक्रिया अवश्य होइत छैक आ वेह प्रतिक्रिया हमरा लिखना छैक बाप केरक अछि ।

घटना घट छोट अछि समाचार पत्रक माघा मे । परन्तु एगो समाचार पत्रक अनुसार लगभग आधादजन लोकक सामन डकैत छ गेलक । लगभग, शन्दक अर्थ भारी स्वयं लगा छी से हमर अग्रप्रेष । योगा भारी अगो लोचि सकैत छी जे डकैतक दल मे छलक कतेक लोक आ ओकर समक आवश्यकता कतेक सीमित छलक जे मात्र लगभग आधा दर्जन लोकक सामान ज्य बाँकीक बीच-बान बकलि देलकैक । सले संतोष नामक यक्षु एकनो कम सँ कम डकैत मे त छेक ।

घटना विगत ८ नवम्बरक थिक । गाड़ी टाटा मुम्भरपुर एक्सप्रेस । मोटरक क एकटा डिन्ना लगभग १२५ अर्कि, जाहिमे मोट दशक महिला छलीर अनन-अनन बान्ह दैते बलन गाड़ी लुडैत अछि । गाड़ी बाजन बरौनी मे रुकैत अछि त डिन्नाक लोकक संख्या दोसर म बाइत अछि । ठीक-ठीक त नहि कहि सकैत छी, परन्तु बिन्नु दूर गेलाक बाद गाड़ी फेर बिलमैछ आ फेर बलि पड़ैछ । रातिक लगभग साढ़े एगारह बजे बलन राजेश्वर पुष्कर भग, बीच-बीचवा मे गाड़ी पहुँचैत त डिन्ना मे दगो बलक मोतक मिश्रित कोला हल जुगाह पड़ैछ । पश्चात् देखल जाएछ जे जुग पितालक सँ छल गोर दसैक लोकक पंदि-

वार केँ मोरैत पीटैत नगदी वही रेडियो तथा अन्य जेकर लीन रहल अछि । हमरो पेटी के छुपै सँ फाहि रेडियो तथा टेबुल वही छ कैरक । संयोगवश हम शेष मे रही आ ओकरो सभ केँ उतरलाक हड़की रहैक तँ हाथक वही कोनहुना नीच गेल गाड़ी बरहिवा टंछन पर हुनर छैफ सँक बीच रुकलाक अवस्था मे भेलक । डकैतक दल उतरि गेल आ वंगहि गाड़ीक गति देख म गेलक । गाड़ी ऐकबेर कपूल मे रुकलक त हमरा लोकनि ल्हेजम मात्र केँ कहिल्येक तेलन हक ब्यक्तिक घेठ मे जुग्रा छानल छलक टकरो दवार किरो लेलक । फेर पुडिवाँक भाग्यमत नेलेक आ हमरा लोकनि लगभग बीच आदमी सँ बयान लेल गेल ।

आम बँ समाचार पत्रक रिलोटर विचार करी त स्पष्ट म भावत जे प्रकाशित रिपोर्ट पूर्णतः मनोहृत अछि, प्रुति अछि। एहि तरहक रिपोर्ट छपलाक पाछा निश्चित उद्देश्य छैक अधार्मात्मिक तत्व केँ बढ़ावा देनाइ, रेल प्रशासनक भ्रष्टता पर मोपन देनाइ । आ यैर थिक भारतीय पत्रक-रितिक अखली बरिय ।

आम कने घटना पर विचार करू । सुरक्षित डिन्ना मे प्रवेशिकार मात्र ओतवे लोक केँ रैत छेक जे स्थान सुर-क्षित करओने हो । तेरना अवस्था मे बँ बरौनी मे ओतेक लोक टूटि गेल त निश्चिते टी० टी० सहरक अनुकम्पा सँ कातल हुनकी आमदनीक बरिया त वेद छनि । ओना डकैतक दल बरौनी मे उठल वा तकर बाद बलन गाड़ी बिलमल तय से निस्कूकी त नहि कहि सकैत छी—परन्तु बरहिवा मे जेना गाड़ी थमल आ मुते बरिड पकड़ि लेलक—चार पर विचार करी त स्पष्ट म बाइछ जे इश्वरक छवि-नाछि डकैत दलक संग छलक । स्वयं टी० टी० महोदय सेहो घटनाक समय उपस्थित नहि छलाइ । हुनकेँ बयानक अनुसार मीडक कारणे ओ गाडक डिन्ना मे छलाइ । डिन्ना मे पुलिसक कोनो व्य-स्थाए ने छल आ बँ रहने करैत त ओहो टी० टी० बर्का घटनाक समय बाहरे रहैत । विचारणीय हरो थिक जे एहि अवलक ई पहिल घटना नहि छल ।

स्पष्ट छैक जे रेलकें मसक अछि । रेल प्रशासने डकैत अछि । बँ उपरका कोनो अधिकारी एकरा अपवाद होय आ रेल प्रशासन केँ एहि कलक सँ मुक्त करय चाहिये—त प्रेसबलाक अनुकम्पा सँ हुनका लग वही रिपोर्ट बाइछ ने पाओत । बनता मे अत्यन्त घामने प्रतिरोध करबाक मनोबल रहैत ने छैक वंगहि आनो व्यवधान रहैत

छेक ! कोनो आवश्यक काज सँ नियत समय पर पहुँचनाइ वा नोकरीक शक्ती । तँ सर्वाधिक रामायो केँ भरोसा सँ छुट्टी चाहैत अछि । आ एहि तरहें ई घटना निवेष्टी कर्न सन दिन दुबारा रति बौगुना बलक वा रहलए ।

—उदय कान्त मिश्र

शोणित दे शोणित मैथिलायं
अन्तःकरण मे भौलीक नाद, कलकल
निनाद नहि होयत ।

हरक विषय जे हमर दू वर्ष सँ जन सामान्य मे चेतना आयल । मातृशया प्रेमी प्रवासी मे यैर पूरा जोर-शोर लगे-छनि अछि मुदा पबली मैथिलक आन्दोलनक बात, हुनक गर्वनि कि गाम बरि पढ़ि सकैत ? मैथिली प्रुति मोनो अम्बा अन्य कोनो संस्कार मेय स्मर स्वर सँ उल्लेगे गाम-घर बागत बलन गाम परक सरभमीन पर मैथिलीक हेत संगठन होमय । मुदा से अछि नहि ।

• वैद्यनाथ बिगल

बोनिहारक गीत

चढ़ा छे रे दुधना तौ हंसुआपर शान रहो ॥
हंसुए मे शान अपन हंसुए गुमान हइ
हंसुए हइ अव्यत पतन आर जान रहो ॥
हम सम कसाव आर खास केओ अन
छातर छुगुत्ता ई हइ केहन बिधान
कयरा छे' धन कर्म कयरा छे' देश हइ
अभखल के ठकना छे' हइ भावान रहो ॥
सोनिह मुखा क पसेना बनेछिये
तकरा युवा क छे सेनो पटेछिये
बगिले मे घली ई सोना सुगन्धि भल
मरुआ, खेसारी, गहूम आर घान रहो ॥
रोपने छी कटबे आ घर अपन भव्ये
अन्तक अभावे ने आव हुने सवै
ठकलक बहुत मुदा आव ने ठेकैवै हम
काजो सँ लहवै अरोपि सेवे जान रखा ॥

—राम सोचन ठकुर

With the best compliment from :



ASHOK ROAD LINK

9, Munsri Sadruddin Lane,
Calcutta-7

सभा-सम्मिति

नवम्बरी दिहली, १० नवम्बर १९८१ स्थानीय मौलिकर समारोह मे निमिषा हच न० दि०) द्वारा दू दिना विद्यापति स्मृति पर्वक आयोजन कइल गेल। पहिल दिनक उद्घाटन कर्ता छलाह श्री केदार पाण्डेय गेल मंत्री, भारत सरकार तथा मुख्य अतिथि श्री वसंत साठे, सुब्बा एवं प्रचारण मंत्री, भारत सरकार। अध्यक्षता केलनि पंडित श्री हस्तिनाथ मिश्र, संवद सदस्य। मुख्य वक्ता मे बनिक नाम छलनि श्रीमती राम दुलारी विद्वा, अम राय मन्त्री, भारत सरकार, ओ अनुपस्थित रहलीह। अन्त्यस्त गणमान्य व्यक्ति से एवं श्री मोटा रावबान शाल्की, उत्तल वन्दर मिश्र कृष्ण चन्द्र पंत, मो० शशी कुँसी, डी० पी यादव, के० पी० तिवारी, विध-वन्दर झा प्रो० अवीत मेहता, राम उदाय पाण्डेय, श्रीमती अवीका शमाम, आदिक नाम उल्लेखनीय अछि। संस्कृतिक कार्य-क्रम मे माग केलनि श्री सौंदर्य बी, श्री मती शारदा विद्वा। एहि अवसर पर दूगो प्रम्य मजदारी दुख प्रस्तुत कइल गेल। अन्त मे श्री दुर्गानन्द ठाकुर द्वारा वन्द्यवाद ज्ञापन कइल गेल।

दोसर दिन, १ दिसम्बर उद्घाटन कर्ता छलाह प० श्री लक्ष्मीकान्त झा, अध्यक्ष, आर्थिक सुधार आयोग, भारत सरकार। अन्त उद्घाटन भाषण मे श्री झा की कहलनि जे बंगला भाषण मे उद्भव कवि मानवाक हृदय काण छल। दुनू भाषा मे बड़ समानता देखै जे कालान्तर मे निरंतर सम्यक्क अवाम, स्वतन्त्र बुरी आ स्थानीय आवश्यकता कारणे पराक होल गेल आ बंगला भाषा ओ जिकि अन्त विदाय अलेक। एहि संदर्भ मे ओ पूर्ण चक्र भाषाक उद्भव ओ विकास एवं पक्षपर प्रभावक गहन अध्ययनक आवश्यकता पर जोर देबनि। अपन अन्त-शोध भाषण मे हिन्दुस्तान दैनिकक सभा दक श्री विनोद कुमार मिश्र बी कहलनि जे विद्यापति पहिल कवि छलाह जे परम्परा गत संस्कृत तथा उपग्रह के छोड़ि जन-भाषा मे काव्य रचना केलनि आ मात्र रचनाए नहि ओकरा लोक प्रिय सेरो बनेलनि। एकर कारण कि जे एबनहुँ बरि पर-पर मे हुनक गीत गाओल जाए अछि। मुख्य वक्ता ओ गंगा घाग विर बीक अनुवार विद्यापतिक काव्य मे आधारता, भक्ति आर सौन्दर्यक अद्भुत सन्तन्ध अछि। हुनक गीत मे गति, लय आर भावक तेज सान्मन्थ अछि जे ओकरा आधार पर कोनो सफल तुल्य नाटिकाक आधारन कइल बासकेछ। आबुल मुख्य अ अधिक पद पर छलाह श्री वेदानन्द झा, भारत स्थित नेपालक राबेदू।

एहि अवसर पर एक प्रम्य कवि

अरणोदय प्रकाशन, ३३/५, डा० देवदार १२मान रोड, कलकत्ता-७०००१३ क लेख श्री महेश्वर झा द्वारा प्रकाशित तथा प्रामाणिक भाट मित्र, ३२-बी, बुद्धवन

बाल कविता

समोहनक आयोजन सेरो मेलेछ। आनि-पित कविगण मे छलाह सर्व श्री महा कवि शानी, राम सहाय पाण्डेय, रामानाथ अवस्थी, आर० सी० भारद्वाज, कवि चूड़ामणि 'मछी', कविचर सुमन, प्रवाही, अमर नारायण कुँवर, रवीन्द्र, प्रहेश बीरेन्द्र एवं मायानन्द मिश्र।

अन्त मे सर्वश्री शिलाकान्त, गिरिया, खोब, लेखनाथ, शारदा विद्वा, ड० के० सिंह, एवं नाटक प्रभागक कलाकार लोकनि द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत कइल गेल।

(देसिल कयनाक दिहली प्रतिनिधि एवं नारायण मंडल द्वारा प्रेषित)

× × ×

कलकत्ता २१ नवम्बर ८१ का बजार दुइक रमा हौल मे निम्नलिखित लोकिक परिषद द्वारा विद्यापति स्मृति पर्व मनाओल गेल। अध्यक्षता केलनि श्री दुर्गेश्वरी मिश्र तथा प्रधान वक्ता छलाह मिथिलेश्वरी कवि पति के श्रद्धांजलि दिनिहार अग्रज वक्ता मे छलाह सर्वश्री बाबू शोभे चौधरी, राम मोहन ठाकुर, शरद चन्द्र मिश्र, नम नारायण झा, शोभेव झा आदि। एहि अवसर पर विद्यापतिक 'सखि हे शरद दुइक नहि मोर' गीत पर अपासित भावपूर्ण प्रस्तुत कइल गेल तथा आर संगीतक कार्यक्रम प्रस्तुत कइल गेल।

कलकत्ता, १५ नवम्बर १९८१। संस्कृत साहित्यक मर्मज्ञ आ मैथिलीक प्रकाशक पत्रिहते प० बयकान्त झा 'अन्तर' क आकस्मिक निचन पर स्थानीय मिथिला सांस्कृतिक परिषद द्वारा एक शोक समारोह आयोजन विद्यापति विद्यामंदिरक सभागार मे कइल गेल। अवस्थता कएलनि परिषदक अध्यक्ष श्री दुर्गेश्वरी मिश्र तथा भाग केलनि स्थानीय सम मैथिली सेवी संस्थाक प्रतिनिधि लोकनि। अन्तर्गत क्रम मे विभिन्न वक्ता लोकनि 'अन्तर बी' क व्यक्तित्व आ कृतित्वपर प्रकाश देलनि तथा ओहि संविधा केबाक अनुरोध सभा मैथिली भाषी सं केलनि। स० अन्तर बी मे काव्य सभनक तथा दुनू वस्तु के नव दंग सं आ हृदयमौलिक रूप मे प्रस्तुत कइल अद्भुतक समता छलनि। 'सीतायण' महाकाव्य मे हीताक गरिमाक उपासनापन हुनक कला-कोशलक परिचायक थिक। मैथिली मे 'प्रेमदूत' ओ 'गीता-बाल'क पद्यानुवाद अन्त विद्यापति स्थान रखै। एकर अतिरिक्त ओ कतेको मैथिली सेवी संस्थाक संरक्षक छलाह। मैथिली भाषी सदा एहि विभूतिक श्रृंगार रहल। अन्तर्गत अतिथि केनिहार मे छलाह सर्व श्री शरद चन्द्र मिश्र, कालिकात झा, हरिवन्द मिश्र, मिथिलेश्वरी, राम मोहन ठाकुर, किशोरी काय मिश्र, एवं प्रकाशन विर भा। अन्त मे दिगत आभाक धानिक छे दू मित्रवरि मीन प्राथमिक उपरगत सभाक निवर्तन गेल।

अरणोदय प्रकाशन, ३३/५, डा० देवदार १२मान रोड, कलकत्ता-७०००१३ क लेख श्री महेश्वर झा द्वारा प्रकाशित तथा प्रामाणिक भाट मित्र, ३२-बी, बुद्धवन

नजि छइ तकर विनाश

सत्तथा तिलकोक कइ-
ककरा छो ने नोक
अनसोहांत ककरा छो
कोबर घर के गीत
जिनु सावटा नीह सं
होएल की मयलम
लोक नपुसक के कइ
की करैत भारव
पुरुष सिंह निरिबत सकय
तोहि अकाशक चान
पुनि दुर्लभ पहि जगत मे
सकरा छे' की आन'
मरियो अमर नतैत अछि
कीर्तिक संग महान
वचै ने नाम निशान
दिय' दिय' टा मात्र सं
मेदय नबि अधिकार
बंजलोटा दुरि साइ छइ
तेहने छइ संसार
हाथ पसारल बाटपर
भरय हजरो लोक
के मनवै छइ शोक
हाथ बढ़ा जे ल' सका
छइ तकरो इतिहास
जगल सदा सतक जे
नजि छइ सख बिनाश।

—राम लोचन ठाकुर

विज्ञापन दाता लोकनि सं—
'देसिल बयना' मे अपन विज्ञापन दय छाम छटा। कम खर्च मे सुन्दर टंग सं अधिक प्रचारक एक मात्र साधन।

सम्पर्क रूप
विज्ञापन व्यवस्थापक
अरणोदय प्रकाशन,

लेखक/पाठक लोकनि सं निवेदन
१—अपन मौलिक आ अप्रकाशित रचना 'देसिल बयना' मे प्रकाशनार्थ पठाव।
२—'देसिल बयना' मैथिली आन्दोलनक मुख पत्र थिक। आन्दोलन सम्बन्धी रचना के अपाधिकार देल जायत।
३—निधिरा मैथिली सं सम्पर्कित समाचार पठाव।
४—'देसिल बयना' स्वस्थ विचार आ रचनात्मक सुभावक स्वागत करैछ।

कह लोचन कविराय

आज एम एक के कइ थिक एक दूना सबो मर्ज
बक बेचि सार्थानता प्राप्त करव
प्राप्त करव ते ते फर्ज ई आइ समय के
समाजवादक तज वस्तु क्षमताक उदय के
कह लोचन कविराय ओ महा शत्रु देश के
जे करैछि निन्दा कर्जक आइ एम एक के

प्रज्ञान रेखा

वर्ष-२ संक-४

जनवरी, १९८२

मूल्य-पचास पाइ

सम्पादकीय

भीख नहि, अधिकार चाही

विद्यो मे आसोबित शिवालय-पर्व सतारोदक उदघाटन करैत रेखमनी श्री केदार पाख्य मैथिली के संविधानक अठान अनुच्छेद मे दम्पितकित कथाक माछ के समर्थन करैत एहि छिद दक धियमंडक के प्रधान मंत्रीक हांग मेट करवाक आवश्यकता पर बोरे देलनि। ओ आरों कहलनि जे एहि धियमंडकक नेतृत्व ओ स्वयं क संकेत छथि जे कहल जानि। केदार बाबू एहि सं पूर्व राखी मे सेहो ई पोषणा केने छन्ह।

एहि मे कानिको उद्देश नहि जे केदार बाबू मैथिलीक छुमेछु छथि। मिथिलावासीक दीर्घकालीन माछ आ भाषा—मिथिला विषय विरासत तथा विहार लोकसेवा आयोगक परीक्षा मे मैथिलीक स्थान दिनकरि दुषयमनीच काळ मे भ सकल। मैथिली अकादमीक निर्माण मे दिनक सदस्यो वदनासनाके विवरल नहि बा सकैछ।

बरीबर धियमंडकक प्रश्न छर, हमरा पूर्ण समर्थन छर जे १९७० मे अख्येय स्व० ललित बाबू मैथिलीक प्रतिनिधि लोकनि के कइने। रक्षित जे एहि निमित्त संस्थाक नहि, संवदीय समिति (Parliamentary Committee) क प्रयोजन छैक, ओ मुनके निर्देशावली छर। संविधिक निर्माण मे छल चक्र संशोधक छलार ओ खुना प्रवाद मंडल आ प्रायः मैथिलीक निमित्त यदा-कदा बर्निशार समस्त राष्ट्र लोकनि सदस्य छलार। छेदक हांग लिखल पड़ल जे ई समिति तेहन अकर्मण्य भेल जे एकर चर्चा नगरद। पता मे धियमंडक सं केदार बाबूक ताल्ल मे कोन तरहक धियमंडक सं छनि। पत्रक जे बइने धियमंडक सं होनि त आभा प्रभाव केनार सय्य। कइनाक प्रयोजन नहि जे मिथिलाक बाहर सम 'चौधरी' धिक, जसक हारम धिक। ओ खलत त निजि-आक यत्नक बरा सदत दिहो पटनाक। दोख ओकोर समक नहि छैक। ओ सम हमरा समक मे, मिथिलावासी के बड़ोद कावरी नहि बुझेद। काठी-कठोरे' बौन्दबाद। करिया टाका बौन्दबाद ॥

जं केदार बाबूक ताल्ल आन तरहक धियमंडक सं होनि, बकरा समक प्रवासे आरबरी बाँके-बहुत काँक मेलेर, त तहाँ संकष मे हम फेर १९७० क कथा दोहराव। १९७० क दिवस मे एहि तरहक धियमंडक प्रधान मंत्री श्रीमती इन्दिरा गाँधी सं भेट केने छल आ ओरो वराहपुरीपूर्वक विचार कलाक आधारन देने छली। पत्रक १९८२ बीति बुकल। आरबरी श्रीमती श्री के एहि प्रस्ता पर विचार करलाक पछाति नहि मेखनि बा बानि मे वराहपुरीक स्वीय दुखा नेछनि। तें जे केर कुल धियमंडक नोट करै करनि आ म संकेर फेर आरैन आसना वनो भेटि बानन तदायि संभावित फलक संभावना नहिछे दुभन्ता बाइछ। स्पष्ट छैक जे आखुन राजनीति में, आखुन नेता लोकनि छैक स्मार-पत्र बा अस्वास्थ्यक कोनो महत्व नहि। आसपासक टक्का छैक होत छैक आ स्मार-पत्रक भाषा ओ लोकनि बुझैत नहि छथि। ओलोकनि एकेटा भाषा मुक्त देल कानिक, रखनी की कानिक। प्रमाण अह भाषामक आन्दोलन।

केदार बाबू के हुनक यदनासनाक छैल कथबाद परबत हुनका बुझि लेनाक चाहि-यनि जे हुनको कथन सं मिथिलावासीक साधनर कोनो प्रभाव पड़निहार नहि। सान प्रभुतिक हांग विवेकक प्रश्न मे उठि सकैछ। तें मिथिलाक रीती-रासी महाभारीपर पटना-विद्यो दवारा मे वस नहि होइ छर। तें बिछु जाल किन्तीक भाषा के संविधान मे स्थान भेटि भारत छैक मुदा चारि कोटि लोकक मातृभाषा ओहि सं नारल रीइ। अस्वास्थ्यक-मैथिलीक यन रायक निर्माण म बाइ छर मुदा मिथिला के खिचरी राज्यक संघ रानिद देल बाइछ। एकर कण छैक जे मिथिला मे रेल-बल नहि बाटो-बाटक संविधानी संवर्धनीय छैक। कलकत्ताकानाक चर्चा की हो—एयो अणिक पेपर मिल कराइ त सेरो उठि जे आशाम चलि गेलै आ कोशी सल्ला त 'धरर काँटिंग हलरी' अहिर।

मिथिलावासी के भीख नहि, अधिकार चाहिये। मैथिला के संविधान मे स्थान हो—जे हमर न्योनोबल माछ धिक। हमर अधिकार धिक आ तकर पूर्ति केनार सरकारक कर्तव्य। एहि निमित्त धियमंडक क प्रयोजन नहि देनाक चाही। पत्रक

संविधान बिनु मैथिलीक ओ
मानचित्र बिनु मिथिला घाल
डाहि जाति सुझाह करब हम
विद्रोही मिथिलाक जनान

जनकपुरक विद्यापति-स्मृति पर्व :

स्थिति आ अपेक्षा

बलन बलनो हमरा लोकनि मिथिला-मैथिल-मैथिलीक बर्च करैत छी त निश्चिते भारत वा नेपाल तार बीच मे नजि असेइ। एरो केना कता बलन कि मिथिला-मैथिल-मैथिली असे आप मे सगुण अह अनेक नजि-इक अर। ओतवे किदक, विचार-वानुहुक समय हमरा लोक-निक मन मे एहि तरहक भावना नजि बनैए जे बीच मे एरो आदि छर जे एके जमीन के जमीनक पवित्र के पू माग मे विभाजित करे छर, इक दिवस पानि के दोसर तित जेना मे बापक होइ छर। आ इहर भावनाक नजि बननाइ एर आदि क उठिमा के प्रमाणित करै। पत्रक आइ एहर उचितता सय छर काण इकर पाछा एखनीति छर आ आखुन युग मे राबनीतिर सम सं एव सय धिक। ओना भावना सं राबनीतिके बन्य जेनाक बटना कुल नव नजि, किन्तु मिथिल-मैथिल-मैथिलीक संदर्भ मे एहि तरहक बात केनार नम अस्वास्थ्यक बात केनार सन बइछ।

जे हो, किन्तु ई बरि सय छर जे आइ आदि क उर कातक मैथिल-मैथिल-मैथिल-मैथिलीक आ अर, ओकर भाषा-संस्कृति आ सन सल्ला सय सरकार द्वारा अस्वीकृत छर। एहि सन मे एहि पत्रक तथा कचित गण-तानिक आ ओर पत्रक राबनीतिके सरकार मे बड़ बेटी फेकनि छर। फल नजि छर उर कातक मैथिल जे मे भयन दीन-दीन अवस्था छैक सरकार सं बेसी दोखी अपने अर कारण ओकरा मे सय वनिदानीक भावनाक, बकर वड़ दीव आ तोरवनाको परम्परा मिथिलाक रलेइ—एखनो पूर्ण अधास छैक। अभाव छैक संघर्ष जेतना छ। किन्तु, जे रीद बहुत चेतन लोक अर से अमन भान-समर्पि छैक, अपन अधिकार पेवलिछे मुगुङ्गा रहल-र, आवाज बुकन्द क रहल।

एहि सनक अतिरिक्त नेपालक स्थिति भारत सं भिन्न छर। ओरिहाम राबनीति अस्वीकृत त ई अछि जे सरकार कमीरी सरकार—बकर बर्चल सपदिन मिथिलावासी मे रहलै, जमनात मिथिला-मैथिली विरोधी अछि। आइ समय आदि गेइछ जे मिथिलावासी के साधुसरी इहि सरकारो रावण के चीरस पकति। चीरस पकति एकरा द्वारा बनाओल। पठाओल कथिमक क्षणस्य के जे नगबलक नीच पीक आ भार-भार मे कम फोड़ोअछि फलेइ आ भारिक समझौता समझौता छैक, जातीय उत्थान छैक हमरा लोकनि के एक हांग नहि होय देइ। हमरा लोकनि के अपने बाहुबल आ बुद्धिबल पर सरोध राखि अग्रगण्यक चाही। प्रश्न आसल क छैक। अधिकार भील पालने नहि भेटैत छैक। इहि लेल चाही संघर्ष—एक संघर्ष।

—पय मैथिली

मात्र अपने स्वाधीनताक नहि देखरोक स्वाधीनताक ओतवे चित्ला समान रहै छर आ मातृभा बाबू एकर प्रत्यक्ष प्रमाण छनि। ओना व मातृका बाबू कतेतो खेर, कतेको मंच व मैथिलीक सम्बन्ध मे अपन विचार प्रस्तुत क चुकल छलिय उपरोक्त अमर पर ई के किछु कहलिन तकर पराक मइल छर। ई मात्र सुभाषे नलि अपन वरयोग आकाशमे सेरो देखनि आ कोक कनेह जे दिनक आस्वादन भारतीय नेतृत्वन उन्माक निमित्त नलि होइ छेनि। ई भगदि हलन समया मे नलि छयि पञ्चव जपतारीन त किन्हू मे छयि आ तें ज ओ चारदि व निश्चिते मैथिलीक करण भवति विद्वन् म सकैर। किन्तु प्रमन दिनक बाबूबाइक नहि। दिनक सुभाष भययोग लेबाक छर—बकर ओ आस्वादन देखनिहै। आशा अर जे परि-पदक कमी ओकनि एहि मे नलि चुकवाइ कारण अमर देख-बैर नलि अत छर।

मातृका बाबूक वक्तव्य मे तीनटा विषय ध्यान देबाक अर, महत्वपूर्ण अर। पहिल ई जे नेपालक दोनवार लोकनिक माया मैथिली थिक। बहोबिर किछ-रूपक प्रमन छर से बाबल बाबयका माया मे त गलि कोनवर अमर होइ छर आ स्वरीय मायाक संग भंगाने ओ किछु उपेने करत। ई पार्थ-य बाबू साहित्य जे माध्यम वं हर कइल बा वक्तव्य मे विद्या भेटनि, शिक्षाक प्रसार होइक, हुनको लोकनि द्वारा साहित्य विर-जल बाय आ आन अंतर्लक संग सम्पर्क गाढ़ होनि त अपनहि ई पार्थक्य समान म बावत। उदाहरणक लेल पूव बंगाल आ पश्चिम बंगाल मे बाबल बाबयका माया मे वद अन्तर छर। ऊरू-ऊरू अंतर्लक प्रजा त बहिराणक लेल बुझो कनि किन्तु साहि-स्य मे, पठन-पाठन मे मोटासोटी एक तरहक प्रभावक प्रयोग होइ छर। सम अंतर्लक लोक गर्वक संग अपना के वंगाणी आ अपन भाषा के वंछा मानैत छयि आ माय मानिनि नलि छीअओकर मान-मोदा रक्षार्थ ऊरू दूय देवाक हेतु कदा-कदा प्रवृत्त रहैत छयि।

देख बात जे ओ कहलनि से ई जे आर दोसर विद्यापतिक प्रयोजन अर। टीके आर विद्यापतिक नाम बनैत मैथिलीक विकास नलि होतैक। प्रयोजन छर विद्या-पति परम्परा के बिदाक आ तें एक नलि भन्देको विद्यापतिक प्रयोजन—बै फेर एक लेख 'बात बाद विद्यापति भाषा'क उद्घोष क सकयि, जनसेवना बणा सकयि, पुरस्क-जितिक क सकयि आ विरिदा-मैथिलीक जालिह किरकक नव प्रवृत्त क सकयि। एहिमे विचारक लेखन आनियन कइतैक प्रयोजन होइक प्रयोजन बा ई विद्यापति के नाम लेल गेलो छर। एहिमे विचारक लेखन आनियन कइतैक प्रयोजन होइक प्रयोजन बा ई विद्यापति के नाम लेल गेलो छर। एहिमे विचारक लेखन आनियन कइतैक प्रयोजन होइक प्रयोजन बा ई विद्यापति के नाम लेल गेलो छर।

हुनक तेसर मुद्दाय कनि मैथिली मे एगो नियमित मासिक पत्र बहार करबाक।

सपरदक दरबार वं व केन्दा एहि सपरदक पत्र बहारो होइक, मुदा ओहपार एकर अभाव छर। तें इहि तरक पत्रक वद देखी लगता छर जे ओहपारक ओकक समया ओकर आशा आकांक्षा जे स्वर देक। पोषी बरो किइक मे छयि बाबो मुदा पत्रिकाक अपन फरके मइल छर आ आहुक युग के एकर उपयोगिता के भगठा-ओल नलि बा सकैर।

इहि अमर पर भूपूर्व मंत्री श्री मनेश्वर प्र० सिंहक वक्तव्य जे एम ६० क. शिक्षाबहिर मैथिलीक मान्यताक ओचित्य तबले प्रमाणित इत बबन प्राथमिक कला वं मैथिलीक माध्यमे शिक्षणक व्यवस्था हो—पूर्वतः संघ अर आ श्री सिंह वक्तव्यक पात्र विचार। ओ मैथिली के नेपालक दोसर भाषाक मान्यता देबाक माल करैत कहलनि जे क्षेत्रीय भाषाक विकासक विना ओइ क्षेत्रक विकास असंभव छर आ तें सरकारक कर्तव्य छर जे दर दिस आन दियस। श्री सिंहक निर्भीक-निष्पक्ष आ सरी विचारक लेल मैथिली माओ हुनक आभारी रहत। की भारतीय नेता लोकनि के इहि वं कनियो चेतना बसलनि ?

इहि अमर पर कानकपुर नगर पंचा-यतक प्रधान पंच श्री दामोदर प्र० उपाध्याय तथा राम नगीना सिंह उद्गार सेरो प्रार्थनीय छर। परसद दिख वं श्री उदय कन्त ठाकुर द्वारा मात्र कइल गेल जे राजकीय शान प्रतिष्ठान मैथिली पोषी वं पुरस्कार दिव्य तथा देख्यो नेपाल पर मैथिली मे नियमित कार्यक्रम प्रचारित हो।

आर परसदक दरबार बलन कि विद्यापति स्मृति पत्रक रूप पूर्णरूपेण किछु म चुकल्य आ अपन मइल गमा चुकल-ए, ओहपारक लेल ई निश्चिते महत्वपूर्ण अर आ एकर उपयोगिता छर—बै उपरोक्त विवरण वं वटा चलेइ। आयोचक लोकनि इहि पुनीत अवसर पर ऊरू बमेठी बाइक मोहरा बा भित्ति भगवाणक नाव नलि आयोचित केलनि, गान निरिखिदा-मैथिलीक समया पर विचार-विमर्श लेल विचार गोष्ठी आयोजित केलनि, समाधान लेल शपथ लेलनि। उदय श्री अपना के पूर्ण उत्तरण करवाक बात कहलनि। भोता-दुवाक लोकनि सेरो नाच-गान देखबा-सुनबा लेल, नलि, अपन समया बनबा बुझबा लेल, ओकर निदानक बाद तकरा लेल बमा लेल, कइर। महेन्द्र मूर्तिगिरि नाटक 'ओकरा जेन्दाक बरमावाला' क संस्करण के सेरो बरी छिन्ने विचारक लेखक बरी।

कइर ईमे, किछको बा जे कइक लेलनि एहि सभ पर वि-र क मुद्दा छर। ऐह सभ पर वि-र क मुद्दा छर। ऐह सभ पर वि-र क मुद्दा छर। ऐह सभ पर वि-र क मुद्दा छर।

—कइर बरो

गीत

ओ लोकनि : ई लोकनि

बूढ़ पुरनियां सोचि रहउ जे मुले ठाउं पुरना बाव नवपुरिया छै तक्का सालक नवका चुरा नवका मात ॥

बुढ़वा के नलि चाह ते चिल्लो
बुढ़िया के नलि हुक्का पिक्री
बुढ़िया के छै उल्लूक सांसी
कर्मक जइने भल्यानाघी

बुढ़वा पोखल घोबक टारा, बाव मलय छेनीपर हाथ ॥

बुढ़वा जमलक विकसी कोठा
बुढ़ियाक झलल चोचमी कोठी
बुढ़वाक माल गों यों खोड़ा
बुढ़िया हाथक गों-यों रोटी

मोन पड़े छै अपन लुजानीक चालीक रालि आ सोनमा मात ॥

जो लुजानीक आसुन कारी
ओहेन जहाजी काक सुपारी
कठड विठायल ननसुल साड़ी
हंडकस - हंडुछी भारी - भारी

बुढ़ियाक गाओल कोवर सुनि-सुनि, के बर बकर ने जिहरे गाव ॥

नवपुरिया छै गम-गम चुरा
कउर दप-दप नवका गुर
झल्लिगार भितगार सही दहीपर
नोन भिरिच आ ललका मुर

जे नवपुरिया तोरहि परसठ, ई पाव ई पुलीक पाव ॥

नवपुरिया छै मिमिट पिटाओल
मइल-मइल पर मइल ओढ़ाओल
भारत मे खलखल नवपुरिया
लेलन मे भोजन बनवाओल
सामक सेर कक चला पर, मंगल पर जा खाइ बसात ॥

चल चल चल चल, चल नवपुरिया
चल नवपुरिया चहुँ पहाड़
बोकिठि स पाग कटे बहार
पवन चोरि क भागि फारि क
गान भेद-कर खगार पार
चल सुठाम मे ठाम-ठाम मे

चल सुठाम मे सोनिय र क, हाकिम क छे अपन बिरात ॥

—श्री सरस

६. द्विसहस्रक प्रदर्शन

[illegible]

विगत ३ दिवसक के विचार अभावमे
लोके रावदाही जीवन पर बना भेल छल ।
“माहीक वक्त” आम कते—इकरो लोक-
निक नारा छलक आ नाक झेलक—रावदाही
तथा विभाजक सं द्वा-द्वक गोठ बावदाही
माही युवकपुरक के छेक देह बाव (२)
निमेष आ नाथ विहार युवकपुरक
सं भागा नरि बाय, (३) रावदाही
युवकपुरक एगो सुपर दबकोस
माही देल बाय, लखीसराय
युवकपुरक बरि दोहरी जाइन हो ता
खमतीपुर दरमंगा वही लाइनक पु
निर्माण हो । परदाशनकारी सन के पु
मीतर नरि बाय देखके सं माहीकरी
बाय स नही मेह पारस केछिन ।
भासन नाराबाही आराम दिह यही
किन्तु अक्कि लाट फारम दिह पुलिछक
प्रयास अवलै केछिन फलतः पुलिछक
वापं भेलक आ गोठं पवाते लोक
मेह । दोहेक काटक ऐगु मीह र
“सुदृष्ट” लोक नरि दूर आसन
नेतृत्व कारणे ओ सन कर बना
भास्य कोटिद्वक प्रादुर्भाव किछि
भोल रोह, नमेर के सं गाल प
आ धनर नाराबाही खलैत रहल ।
मेह सक्सी के नर अस्तर अपना
नर सक्क खलभोजनि ।

खड़ीबोली में गोपीबन्त का के साथ
कुटित नेहनि, राखवेर का, भट्टल हवन
या कमैय का के सेरो बह बेदी मारि
छाखनि । एकर अतिरिक्त मनुख सकुट,
मो० कृष्ण, बनारसी प्रसाद, मो० अक्षय,
हर्ननाथ का महेन्द्र ठाकुर आदि पचासों
नामिक गायल भेलाइ । से जहो पांडव

यों संपन्न रहल आ तकर खातिर
उक्ति नू अरुद के आ तकर बाद
मुलुख शुकु आ अरुद हवन के। सुदर
विहार भवानी चंपारक अतिरिक्त
गोट फेहरन देलक गेट उल—हस
परि हसन वार १४ तां के विहार
मुलुख मुल्य मंत्री भी कूरी ठाकुर
बांगक रावराज आ देल्ले सिक
कर्मिटीक डेवरन ओ वी. डी. रावे
मेट केरन आ इहवा तथा विचार
हक भार गादी देवाक नाक केरन।
हरी कहलियन के तत नीर वलन से
टीन आ उसा बिहार तथा उषरी
प्रदेशक नीर वल्लेवा गादीक संस
वहरीन नहि काज होय। कर्
के निजनी सं सरी, विलेक मेहन
सेठ वल्लार देव बा उल्ल। भोना
त इहद आ के चीन बल कोरी
—ने—

राजा ने छत्राखन कहिये कि तुम ने कछ कह्यो ।
 छत्राखन ने हुनको दख लोक
 देखनो दिखी दहार मे हुनको दख लोक
 भय, पवच सम दुप्री सबने भर । बं
 कर्त्तौ बी ह्वा खवाय दोगेनि त
 तकर समायक निमित्त फिर के पाटीर
 खर पर संवै केत छवि । गादी बावडा
 दीयन पर नहि समझिपुर मे रोकाफ
 प्रोषन छेक ।

योना त स एहि सँ पूरै निजि
 मुकल छी ते एहिठाम सँ ते लोक नाराय
 विहार आ मित्रता एतरोठे ते बातपय
 कोइ सकल दिवसि भायक बला सँ नीक
 नहि रहैत छेक आ तँ रेल मंत्री के कहक
 बेर लिखलै रोमनि । एतन्व, बरौतम एहि
 आन्दोलक प्रजा छै ई आन्दोलन एहि
 ठाम नहि प्रसारीत-मुकुप्रसार मे हेबा
 चारी बे ओरोठाम सँ गादी आरु ना
 बाय । अं काहनक विचार करछ गेले
 गादीक ठेका मे पुदि अखले हेब
 चारी । आन्दोलन मात्र राबका मुकुप्रसार
 पुक गादी केदा छै नहि मित्रिबला
 स भारतक वम प्रमान गहर मे बाय आ
 व गादीक संस्था देबाक छै आन्दोलन
 हेबाक चारी । आन्दोलन हेबाक
 प्रसारीत-मुकुप्रसार (दक्षिणा
 वी कादन मित्रिबला निमिष । आन
 हेबाक चारी मित्रिबला मे नव रेड
 निमिषक निमिष आ कोछक

संख्या तदुक्त, निम्नप्रमाणे । स्वतंत्र
मनेत ही वे बरेक समय इच्छा सं समझी
पुर बार मे लोख ततवे समझीपुर सं
मनगर का संसारु आय मे काम
बाछ आ पकर इक मात्र कारण गादीक
अभाव छेक । वयनगर सं संसारु देवा
मे भरिनि समय जोत छेक । भादोल

एक नाम से हगो गरीब लोक
ओ जेदे देखा-सुना से मुझर,
तेरे मेघाबी आ तेरे पदार्थिका से
उठाल बहुत दिन वरि परदेस से
रहि पढ़कनि । ओ बडी विद्वान व मेलाह
चालसर हुनक विद्या डूडिक बडी हमन
कामा । पाहरो-कौडीक नीक आसन
होमन लाबनि । तखन दिनक भजन गाव
गामक मरिडालिनक सोरे मेकनि आ
गाम बलि बहाए ।

गाम पटुचला पर ठप्पालक खू
सेकनि। सर-समान मे कुनू काम

चारी निम्नलिखित से कलकारखाना की
 स्थापना आ विकास केन्द्र हो लोक के
 रोकी-रोटी केन्द्र लगे नये निधिद नहि
 पड़े। ई गणत निविदा अर जे भाव
 कलकथा-पटना मिथिलावासी केन्द्र नहि
 रलेके। ओगीय भावना आ राबनीपिनि
 बाह्यल से बहि राउ केन्द्र-वर्धना ।
 नोकरि नहि होत छेक । तें अभायल
 उरोके विभिन्न समस्य
 निम्नित होयक चारी । देशर छन्द
 निबिबलन छवोगिण विकासक निमि
 होयक चारी ।

इसका लोकनि बलन कल्लो सीखे।
हमरा लोकनि बलन कल्लो सीखे।

[illegible]

स्वतंत्र-सामाधार मिश्र

1991-2000

कठपात्र

प्रथम दौर व दिनका आरंभिक कक्षा में पाठ्य-
 सामान का विचार गुरुक बाल। पाठ्य-
 सामान शरीरकुं कहलौ-काल दिनका मने मे
 पुरातना नावक दुख होशन। से बात ई
 ले लोक किङ्गका टयापारकि नामे बननि
 ई सोचलिन जे बटे पयुवा-विश्रामक बादो
 हम उसारे रहि गेलहुं। एतनो खो नाम
 भेटेले? मुदा उधार की? गायक नोक
 बनहरि त बार नामे बने-ए तबरा बहल
 जो केना बाण? ई, एतो उपाय तेक ब
 गाय जोकि दूर देख राखि बाह। ओतन
 कुनु कोन् नाम राखि ले। आ इहा
 सोचि ओ हक दिन अपन नाम जोकि मिल
 म रोलाह।

भार-भारत बलन भो नदी दू-
 नेहाह-स यानिखन नेहाह या ते बरौ
 मोऊक-बहि भे वैधि सुखाय जगहाह।
 मोही गालजर आर बरौ लोक देवह लह।
 मोकर पहिरन स्त्री-नयी मैद लजेक भो
 दगो बनिन सं डडदम मीबारि डुका रलक
 छह। 'उडगल के भोकरा पर दया भानि
 पुनलिन।' किन्तु बिहासाक जन भे नरप
 नेहाहिन त ओ कलकति-बनयति धु
 दिरका भयनिगन-बह हूँरी जगलिन धु
 हनेने बनयति भायसा भे सोनय से बिहा
 भोकरा भाति खडि बिदा भे नेहाह।

र आगा हगो टोळ पर गलाह पर न वारि
 आवळनि-। घामने मे हगो टोळ पर न वारि
 परवळनि, जे ओ पोआर दोहट राह ।
 त्या वया के एक होटा पाहन देवाक भाव
 केळयिन । ओ प्र, लोक अन दरवा पर
 पोआर राखि होटा माखि एक होटा टळा
 पानि हिदा देवळनि । पाहन पीनि है
 गुग मेवा पर ओकर नाम पुठळनि ।
 ओ कदळनि—अवळी । उलाह आगा
 कलाह । गाम हं बरागहले रह्यि कि
 हगोअधी पर नविर पवळनि । आगा-
 आगा भरी आ ठकर पाळा, कडिरीक-
 दिवाळ पाती । मनेमने सोवळनि—
 निर्निवार मुग पेव लोक मुठल-र, ते त
 हगे कडिरी कतये पावी । मृत लोक
 परियय बनवाक बह इन्डा मेळनि । भन्त
 मे एक आदमी सं पुठिह देवळनि—भूत
 मराबात संघार त्याग केळनि है । 'भगर

[illegible]

हड़ताल आ तकर मुकाल्ला : बिहारी रटाइल

बिहार सरकारक छे मास मन लेवेत
कर्मचारी आ स्ट्रेट सिस्टम मत ११ दिन-
मर सं हड़ताल पर छथि। एहि हड़तालक
चलते के केन ममानद स्थिति छेक छे
ओहीदामक लोक कोत अर। शहर मे व
पीनाक मानियो अटाना पराम्भ म गेल
छेक। बिजुलीक तेनेने स्थिति छेक सकेन
कि सामान्यो स्थिति मे बिजुलीक जे ओर-
ताम स्थिति रीत छेक से अटलीयर।
गाम परक व चर्च मे हो। प्रति कसि मिशु
गाम मे बिजुली खरा गाड़ि तार दमा
देख बाहर—अखबार मे प्रचारित क देख
बाहर जे तेने गामक बिजुलीकरण म गेल।
ई भिन्न बात जे मात मे दुइयो दिन
'आरन' नहि रीत छेक। अखताल परक
स्थिति सम सं सोचनीय छेक—पानि, बत्ती
रः। लोकक अमावे। आरेशन शय्या पर
पडत रोमी कुहरि रहक बाहर—देखनिहारक
पता नहि।

विचारणीय बिच जे एहन स्थिति
छेक बिमेवार के अर ? हड़ताली कर्मचारी,
जे सरकार ? तपर-उपर देखने त पुजने
कहा जे दोही सरकारी कर्मचारी अर
परख बिहिया के देखला-लेखलाक बाद
अच्छी बात समिना सकेछ—असली बिमे-
वार के सोचब का सकेछ।

हमर विचार अर जे कर्मचारी लोकनि
लेहने हड़ताल नहि करै छथि। हड़ताल
फेरेन किन्तु नहि करै। दुइटा
ज्या अमन दासी अदा करवाक कुएँ दोहर
बात नहि रीत छनि तखने ओ हड़ताल पर
बार छथि। दोहर शब्द मे कहने ओ
सकत हड़तालक छेक वाय कइल बाद
बाह—सकते हड़ताल करै छथि। आव
देखलाक ई अर कि हरिनु हटन स्थिति
आनि टुकारक छेक ?

हड़ताली कर्मचारी लोकनिक ओना
त छोट-पेव कइया माळ छनि परख जे
पमान पाळ छनि आ बाहर कर्मचारी आ
सरकार मे बीच बलि रहल-र ओ बिच
चारिम तनाका संघोवन समिति (4th

हडत ? हम व्यर्थक विधान देवाक रम
पोखने ही...। एहि तारे सोचेत बिचारत
ओ गाम घुरि दलाइ।

पतात मेने सैनी-साथी सम, जकरा
सम के हिनक गाम छोड़वाक विषय सुल्ल
रहेक मेट छोड़नि घुरि एवाक कारण
पुछनि। ठगाल सम के एके खान
देखनि। ओ खान छलनि—बनपति देर
पर ल्हाफता नहि अथकीं दोयि पोआर
अमर साहु के मरिते देखल भनहि नाम
ठगाल।

प्रसूति—अमरदू

एकनो बयान कि स्थिति खतराक
रूप ल बुझल-र, सरकार तयारीमा करवा
सैक उलुक नहि बुझता बाइल। ओ सम-
भोताक गप व करैत अर परख दोहर
दिय अली-गोलीक मड पर हड़ताल के
देखाक पूर्ण प्रयास जे लाल अर आ
तकरे प्रमाण बिच जे समस्त मान मे सीमा
सुरा दल आ केन्द्रीय सुरक्षित पुलिस के
नरि देल गेल अर। एहि सं स्थिति आर
विस्फोटक म बुझल कारण कुनू आदोहनक
प्रतिरोध व बाकि मेटव छेक। दोहर दिय
सरकार समस्त अखारी कर्मचारीक आकरी
समात करवाक आ खुलाय ल्हायी कर्म
चारीक बाकरी खानक आदेश द बुझ
अर। १७ दिसअर के बे मुख्य मंत्रीक
नामा पर वचार गेल आ पीर आदरीक
समिति एहि स्थिति निपटारा लेल गठित
गेल-र, तार मे एकोटा मंत्री नरि छथि
'म्युरोकेट' छथि, बनिकर खलाह व ई
स्थिति कम छेकअर। एहि व हरो प्ला
चलेछ जे मुख्य मंत्री के अमन 'सरोयोमी
लोकनि पर भरोसा नहि छनि, बिस्वास
नहि छनि आ ओ पूर्णतः 'म्युरोकेट' पर
निर्भर छथि। हड़ता स्थिति जे समस्त
छिन्न समाजानक संभाना व नरिछ छेक
देखा बाही एहि प्रतिष्ठाक लदार मे
उंट दून मुँहे घेरेद।

—अमरदू

(१४ दिनक बाद उपरोक्त हड़ताल
समाप्त म गेल। समस्तोताक अनुसार
चारिम PRC क खलाह के बिगत अभील
हं जानू कइल बाइत। मुख्य मंत्रीक
अनुसार बिहार सरकार के ल्हाया सचिव
कोटि टाका एहि मे व्यतेक आ तीस कोटि
अत्येक दसह मेलिया शुगतान मे जे पंच
स्य प्रति कर्मचारी के देल गेलैक।

—सम्पादक)

विज्ञापन दाता लोकनि सं—

'देखिल बयना मे अपन विज्ञापन दय लाभ उठाव। कम खर्च मे सुन्दर हंग
सं अधिक प्रचारक एक मात्र साधन।

सम्पर्क कक

विज्ञापन व्यवस्थापक

अरुणोदय प्रकाशन,

लेखक/पाठक लोकनि सं निवेदन—

- १—अपन मौखिक आ अग्रप्रार्थित रचना 'देखिल बयना' मे प्रकाशनार्थ पठाव।
- २—'देखिल बयना' मैथिली आन्दोलनक मूल पत्र चिक। आन्दोलन सम्बन्धी
रचना के अप्राधिकार देल जायत।
- ३—मिथिला मैथिली सं सम्पर्कित समाचार पठाव।
- ४—'देखिल बयना' स्वयं बि गार आ रचनात्मक सुभावक सागत छेक।

चारि गोट मिनी कविता

(१) सुखेदय

● माइक आंचर सं

बहार कक मुँह अपन

बिहूनि देलक

मिशु अबांच

(२) राति

● दुगमनिवा कलिया बनि

बल्ल सॉन्क मरफा मे

भेटी प्रत्येक दिन

बलि आइल

देने बिछोड़, जया

पसारि मन विधारी पर

कारी धन अन्वकार।

(३) चन्द्रमा

● परदेशी पाहुन केर

जोहैत होयि बाट जेना

बिहूनी लमा ठाढ़ि

कुनू राबिका।

(४) बलान्त

● इहो बल

ओछिना भीति गेल

जुड़ अखबळ सूर्य

बस गेरुजक

पछुआर मे हूँबि गेल।

लाल बुभुक्करक चिट्ठी

एकटा आर गीत

अन्तर्जाली, संवादक जी, नईदिल्ली।
कय मैथिली।

आमा हाउ-सुरति ई के पूर्ण सामयक संग लिख पढ़ि राख-र के हमर मना केलाक उपरासो अहाँ हमर पत्र के छाँप देल आ मात्रा छापिएटा नहि देख-तकर प्रति हमरो नामे सरकारी डाक सं पठा देल। बाबा देवनाथ अहाँ के तत्नोपर संतोष दिताथि। किन्तु वाहरर सँ अहाँ चिट्ठी दिखे छी जे बकरा संगमरूप रूप मे रहि तइस पत्र लिखि पठाओल करी। एकरे ने चैत बर 'पत्र पर नूत छिट-नाइ।' चिट्ठी पढ़ि मन त मेले जे अहाँक पूर्व नोटि छी सबस अहाँ त छी अजिवा कोहरप आ तँ अपने केय नोटि संतोष काय पल्ल।

हेयो सभापदक प्रभर! मिथिला मे हगो बस्ती छर—नोक की बानस प्रसव के बीर? से तकरे परि। अहाँ त परदेश मे छी। दोहर राख, दोहर राखा। तँ अपने जिज्ञानमे गेलिजे के पहिलाम लोक केना खोएर। अहाँ सभ सेचित होएत जे मिथिला मे रहनिहार सभ भरिसक दुख-दुदारी थिक—जे मैथिलीपर ओहर पेव बसोता होएतहुं करेट नहि केल्क। किन्तु अवल्यत जे नहि छेक। अखल मे बसोती आताव करार ने मेले? किछु सरकारी कौरा पर पाखि लोक केँ छोड़ि सभ मीतरे-मीतर मधुपल अर। पञ्च डर होइ छर बाल-मायक, बीनिकाक। सँ अहाँ के विचार नहि हो त हमर एकार रहल, अपने ओमाय दुखमनोबीक सेव मे आनि बाड। एत म बायत जे किछु बनी-मानी लोक, मुक्तिवा-संघसं तथा उबार कीटाबना अफरत छोड़ि सभ तामरो निबस मेले अर। पञ्च अर। कतिनो केओ चूँ केल्क कि उपरोक्त लोकक निद-दृष्टि ओकरापर एहि बाहर छेक। सरकारी वेसरकारी गुंडा ओकरा पछा लागि वारत छेक आ नके सुते पानि पिया देत छेक। नहि किछु मेले त भने-मुक्ति कर देल्क आ दू-चारि केस गुञ्ज देल्क। आ केना कि बस्ती छर किने जे 'चोर न्याये नष्ट' से विरोधी अन्त्ये नष्ट म वारद। सव्वे आतकक सेव पसरल छर।

ओना अहाँ कहि सकछी जे एक बादमी के ने तंग बइल वार छर, सँ लोक संगठित मय आवाज उठाव्य तबन। त हमर उपर रहत—ओमान बुधियार बी मारल, अते पोन पर शय बले छर तवे दोहरर तले तबन ने? बागथि दिनकर दिनानाथ जे मिलियोपरि फूलि कहैत होइ, समाल ने काब आनय बलिम वर्णवादक वेदन ने निब लिखिया देख गेल

छर—जे लोक केँ संगठित केनार सँ वारत भरिसक डुमरीक फूट अलनार होखत। पहिलाम त सभासमित पेव आ ओट वन मे भेदा-महिषाक कानिह सलेत छेक आ दुनु वर्णक दुई पुखसम सफेदोरी दुध-केर। ने त आर मिथिला-मैथिलीक कती ई राखत रहित? सभसँ अवबक बात त ई जे जे अवररा सँ मैथिली केँ अपन हिरदेक मणि आ कंठहार बना केँ रखलक—से आर अमना केँ मैथिल कहितो ने अर। मैथिल माने मेले बाभन। आ वामन सय त दुम्मे अर—अनार कुहर माँकेँ तिरपीत। बाभने ने दुखमनो छर। ओना खुशीक रात जे वामनो ने मन्-रागीय आ निम्नवर्गीय समुदाय मे चेतेना एखर पञ्च बोटवाला समठाम आनाबी मैथिलेक छर। अहाँ के त दुम्मे हिर जे हहि अंचल मे नोट अथवा सीट सँ मोट छेक वार छर। आ तँ हमर किटल भरि विस्वास अर जे अगिलो सुनाय मे अहाँक मिथिलाक निर्वापर विपुल मत सँ विस्वी होतारि आ अहाँक सपना-अपने रहि बायत।

तँ फरवाक आशय मे तात्पर्यक मतलब ई जे रामबीक इच्छा सँ आ गुद गंगाक परताप सँ—किटोरि आगि नोक बकाँ पबल छेक—मुदा उक लेवनार त चारी।

जे सँ वारस हो त हमर नोट-दकार दल। आ नहि हो त सभसँ दुरितक दीनानाथ—माने छोले दुम्मेर केँ नहि बुझनि।

हमर पत्र ने छापी आ ने दुनु तरहक सयक राखी—से अरुओप। ओना त हम रहितरि सँ बदनाम छी। बल्ले किने जे नामी चोर मारदेवा—से तकरे परि।

बानिब बाबा नेवनाब अजिया सँ अहाँ हमर पत्रा छापि देखल तहिना सँ हम निबाल भयानक पूजा छोड़ि मलायक पूजा जे खाल छी जे कोनहुना एहि सेव नहिचि बार। यत अन्दरियाक एकादशी सँ अमका बहुल नामक रोचना वात सेरो आरंभ क देने छी। इरी कम मे आनाथ वालीया लिखनार सँ आरंभ बइल से त आवद आनिबल वन अर। विस्वास त अलिइ जे सँ कहियो आक्रमण मेले त ई इतिहास हमर कवचक काब करत। आमा त उगिलदे बानसि।

अपने सँ फेर हमर आयाद-मलाक प्रायना जे एर पत्र केँ जुनि छापि दी। दोशर ओइपरक छी।

फोचर नहि वेनाक प्रवल आकांक्षी श्रीमान लाल बुभुक्कर दुम्मेरक प्राम वाली

देश-दशा

की भेले किय भेले, भैया ई केना भेले तीनु सुनलक परसिद्ध मिथिला, आइ किय पना भेले आइ किय पना भेले, आइ किय पना भेले बल-बुद्धि-विद्या किछु ने रहले, सब कत' होरा गेले अकर माति सँ जनमलि सीता, अहिनाक शाप भेटा गेले रेह बखैत विदेह कहेलकेँ, से परताप कदा गेले से परताप कदा गेले, से परताप कदा गेले सुगो शास्त्रक तप करे ब्रह्म, से परताप कदा गेले

ओ शिवसिंह सबहेस कदा अर, विद्यापति कदा गेले नहुँ या कुपूर रीत कोटि अर, सिंहक नाम भेटा गेले सिंहक नाम भेटा गेले, सिंहक नाम भेटा गेले तोहि पारि क कने मैथिली, की कले बा की भेले

—राम लोचन ठाकुर

१. मिथिलाक छी : मैथिल छी ॥

२. मैथिली बचाव : द्विती हटाव ॥

३. मैथिली बाजू पढ़ू लिखू ॥

४. मिथिला मे यातायातक सुव्यवस्था लेऊ,

रोदी-चारी सँ मुक्ति लेऊ, कल-कारखानक

विकास लेऊ—जनमत सँधार करू।

मैथिली आन्दोलन केँ सफल बनाव ॥

५. मिथिला-मैथिल विरोधी जयचंद-मिरजापर के चीन्हि क राखू।

निवेदक

मैथिली मुक्ति मोर्चा, कलकत्ता

मैथिली पोथी आ पत्रिका बनतो कीतू पढ़ू,

आ अनको कीतवा पढ़वा लेल मोस्ताहित करू।

किछु नहु बर्चित पोथी—

१. अरु नारीश्वर (अन्वयास) / मणिपदम दाम—२५ टाका

२. इतिहासहंता : कविता संग्रह / रामलोचन ठाकुर दाम—४ टाका

३. वेताल कथा (हाय-व्याय) / कुमारेश काश्यप दाम—४ टाका

४. जुआयल कनकनी (नाटक) / महेन्द्र मल्लगिया दाम—२ टाका

५. निधर्यक (नाटक) / अनार्दन झा दाम—२ टाका

मैथिल बयना' कार्यालय सँ सेटि सकेछ

★

आइ भिक्षापात्र नांज, चाहौं महाकालीक खापर

कथुगण !

युगों सं हमरा लोकनि विवापति मृति पर्व समेत आ प्रलाय पाव करैत आनि रहल छी परन्तु मिथिला-मैथिलीक समस्या बने छल तै पढ़ल अछि । कहिक प्रयोग बन नहि, जे प्रस्ताव-परित केनाइ तथा मंच सं कटका-बटका भाषण देनाइ, संगहि नेता लोकनि आस्थावान देनाइ कोनो अर्थ नहि रखैत अछि । इ कहू सख हमरा लोकनि भरिसक छलनोचरि नहि दुकलैहें आ काचरि नहि शुभ्र तापरि समस्या समाधान अउंभव । तै, कोनो विशुद्धि स्तुति-पर्व मनओनाइ बेकार नहि, परन्तु प्रस्ताव पास केनाइक बदला अधिकार प्राप्ति लेल संघर्षक क्षय ले परलामयक । मोन राखू जे हाथ पतलै मिल मनहि भेटि बाप पुरा अधिकार नहि । अधिकार लेय पढ़ैत छै आ साइ छैल लगन, बहिदान आवश्यक । जे नाति मरनाइ नहि जेनेर ओ ने त बीवाक मरल दुमेर अपना ने बीवाक अधिकार खेद । आ भन भाषा-भूमिक उदार रहै जे मत अछि, तकरा बं मरे मानि छैल काइ त कमरका मेलेक की ?

निब 'भू साषा हिल मयल,
मरल ने अपन कनेत अछि ।

चिट्ठी पुजौं

'देखिल क्यना'क अंक-२ प्राप्त भेल । आभारी छी । मुक्तिवाचक ई प्रभाव अति स्वागतीय—हमर शार्दिक धन्यवाद स्वीकारी । यथायोग्य सेवा छिली ।

—धनचक्र
देखिल क्यना'क तीसरा अंक देखबाक पड़बाक मजबूर प्राप्त भेल । मैथिली ने बाहि तराक कसक आवश्यकता छेलैक—तकरा ई पूर्ति करैत अछि । ओना तऽ एकर सम रचना उषा-उषरी रीत छैक परन्तु यामा सं दूग मिथिलाक मजदूर हमरा विचार सं बल सं महत्वपूर्ण सामयिक । जं अन्य रचना के ओहियो देख बाइ तऽ एकमात्र यही सम्पदक कारण देखिल क्यना अमर रहल । 'कह लोचन कविराय' (सद्यपि दोसर अंकक पूर्ण प्रकाशित नहि) केऽ सकल नाव-सीत तथा पहिल आ दोसर अंक मे प्रकाशित श्री रामकृष्ण ठाकुर जीक कविता तथा तेसर अंकक 'दोनिहारक गीत', दोसर अंकक 'धुल्लोतिक सारपर सत्ताक सबूत' तथा 'दुहारी-भुजा बनाम सत्ताक राजनीति' एवं तेसर अंकक समस्त रचना एकर उत्तराधिकारिक । श्री कुमलक कथा 'हकैत' पद्यपि पत्रिका मे देही बाइ छैत अछि—तथापि प्रशंसीय अछि । नूतन दिनक बाद एहन भीक आ सफल कथा पढ़बाक मौका भेटल । और जन्त मे एकर सम्पादक के एहन समर्थन प्योनी सुन्दर-सफल सहायकीय विवेकाक हेतु अक्षेय प्रवृत्ति । ई सब विचारी हो जे हमर कामना । —राजेंद्र कुमार सिंह

अभिनव प्रकाशन, २२/५, डा० देवदार रहमान रोड, कलकत्ता-७०० ०३३ क लेल श्री मेहरवर भा द्वारा प्रकाशित तथा पावनियर आर्टिस्ट, २२-बी, इन्दिरा

पेनाल स्ट्रीट, कलकत्ता-५ मे मुद्रित । सम्पादक : श्री जनार्दन झा

मालगोठ

क्रान्तिक पथ अपनाले मिथिलाबासी रे

सीता कानि करे छथि मिथिलाबासी रे
माथक बोल बचा छे मिथिलाबासी रे
जे समयिन सभसँ आगू छल
संद वनल छथि मिथिला विविडा
विद्या-बुद्धि-कला या हो बल
चोरि कोटि सुत के मां अपला
नवतुरिया बट जगो मिथिलाबासी रे
माथक छाव बचा छे मिथिलाबासी रे
सभसँ मजुर मैथिली भाषा
चारि कोटि मैथिल के आशा
मिथिलाक्षर सन लिपि पुरातन
करय उपेक्षा सासक राबण
बट युवागण बने राम अवतारी रे
मैथिलीक मान बचा छे मिथिलाबासी रे
उपय भारती सीता लखिया
गोतम विद्यापतिक भूमि ई
जे कहियो सभठा पूजित छल
आइ धिय सभठा अवहेलित
आबहुं बेत, बने छुनि सत्यानारी रे
क्रान्तिक पथ अपनाले मिथिलाबासी रे

—सुभाष चन्द्र झा

विशेष सूचना

मिथिलाक खर्चीला विकासक हेतु अश्विगत वनबागल आ बनारसक पर विचार-विमर्शक घरी भाग ताकबाक हेतु आगामी १० जनवरी के इन्द्रप्रबल मैदान (रक्षिमंगा) मे प्रातः ६ बजे सं सां.क.७ बजे करि मिथिलाक विकास मे अभिरुचि राखयबला प्रत्येक संघसद आ राजनीतिक दलक एक-दिवसीय प्रतिनिधि सम्मेलन, मिथिला बनसँवर्ष मोर्चा मायोजित भइल । एहि सम्मेलन मे भाग लेबाक हेतु मिथिलाक प्रत्येक प्रातिनिधिक बुद्धिजीवी आ भ्रमजीवी केँ जालर आमन्त्रण ।

—धर्मेन्द्र कुमार
संयोजक, मि० ब० मोर्चा, दसंता

'देखिल क्यना' कन्दाक दर :-

१ प्रति ५० पयसा
१ बर्लक ५) टाका
५ बर्लक २०) टाका

पाद पठेबाक पता—

श्री जनार्दन झा,
१७/६, उषा नगर,
कलकत्ता-७०००६८

कह लोचन कविराय

बारिक पढ़ाया तीत आ, हो बाजारक मीठ
कुहरि रहल तँ मैथिली, छनियां टेरल गीत
छनियां टेरल गीत, नवैप पश्चिम गामक
चाम-दाना सं मोहि, पुत सभ मिथिला घामक
कह लोचन कविराय, कलकत्ताक लेपल कारिस
मैथिली युवजन मानि, मैथिली पढ़ाया बारिक ॥

'देखिल क्यना' प्राप्त भेल । विषय बहुत देखि मत प्रकटित भइ गेल । ई एक आन्दोलनात्मक डेग थिक आ माइल-स्टोन प्रमाणित भेल अछि । हमर खयाल सं रहल । —अनिल सुखा
पढ़ि अत्यधिक प्रसन्नता भेल । हम बाहि छैन जे छी उत्तर मैथिली भाषाक प्रति जनमानस मे कोनो भावना नहि । परन्तु 'देखिल क्यना' ओ कारण बहुत छैन मे स्वयं समय मे यथासाध्य कह देलक अछि । —शम्भुनाथ झा

'देखिल क्यना' दू खेप सं पढ़बाक मौका भेटि रहल अछि । आर-काखि... सेकड़ो पत्र-पत्रिका प्रकाशित भय रहल अछि । हमरा बुझने किछु केँ छोड़ि बाकी सब बिना आदर केँ सामने रखैत प्रकाशित भय रहल अछि । ओकर सवइक उपेख छैक दृष्टान्त । दृष्टान्तन लग आदर कतय भेटल ? तँ 'देखिल क्यना' सन-सन आदर पर आधारित पत्रिकाक प्रकाशन पर बल देनाय पड़ैत ।... हम प्रत्येक मिथिली-बोलक बासी सं एहि पत्रक द्वारा अनु-रोध करैत छिनैत जे ओ सब 'अपन डफ्ठी अपन रातो' नहि अछारि बकरा सहयोग बनय देथ । सहयोग अनेक टंगक रोइत छैक—स्वयं-पेसाक सहयोग, आदर-अनुकूल करवाला देखि छिल और यदि ताहि मे सभसँ नहि छी तँ कम स कम एक-एक प्रति प्रत्येक मैथिल केर हाथ रुझा केँ ।

—समस्त मोहन झा, अधिकारक,

प्रभिन रेशना

नर्स-२ अंक-५ फरवरी, १९८२ दृश्य-पंचांग पाइ

सम्पादकीय

सुगता मिथिलाक्षरक

छिपि आ भाषा मे उपर सम्बन्ध छैक जे देख आर मन मे । सुगठित स्वस्थ शरीर माथ सुन्दर आ आकर्षक नहि होइत छैक अपितु प्रखर मन आ स्वस्थ-सही चिन्तनक आधार सेरी होइत छैक । तद्विना उपन्यास-सुगठित छिपि सेहो कोनो भाषाक विकासक आधार होइत छैक । इहए कारण छैक जे छिपिक निर्माण मे विद्वान लोकनि के अक्षय परीश्रम कार्य पड़ेत छनि आ एहि क्रम मे सुगठु' जागि बाहरत छैक । इहए कारण छैक जे कोनो लोकनि जाति अपन छिपि के ठेकि दोसर छिपि अपनेनाक छैक तैयार नहि होइत अछि ।

छिपि जे देख भाषाक देर पिक तँ ओकर पहिल पहिचान थिक । ई छिपिबद्ध विशेषता छैक जे पहिले नजरि मे दर्पक के अपन अस्त्रिणाक, अपन विशेष परिचितक मान करा दैत अछि । कइएक प्रयोजन नहि जे ई परिचित गमा देने कोनो भाषाक भविष्य संदिग्ध भ जाइत छैक, ओकरा चारुकात संकटक देव सदितल भइराइत रहैत छैक ।

उत्तर-पूर्व चलोय नय-भारतीय भाषा सम मे सम हं प्राचीन आ सट्टइ भाषा होइतहु' मैथिलीक स्थिति आर सम हं दयनीय आ सोचनीय छैक आ एकर कर्तव्य कारण छैक मिथिलाक्षरक अवहेलना ओ देवनागरीक व्यवस्था । हिन्दीक फारा पर पाठित तथा-कथित विद्वान लोकनि द्वारा यदा-कदा मैथिली के हिन्दीक बोली कहि देवाक दुसाइलक आधार निवृत्त लवे ई छिपिबद्ध पिक । एह विचारसि कि स क हमरा लोकनि हलैक नवैत छी, जं हुनको मेसुकीयत खाद विचारसि कि स क हमरा लोकनि हलैक नवैत छी, जं हुनको मेसुकीयत देवनागरी मे प्राप्त भैत रहैत तँ निविचते हुनका मैथिलीक कवि मान्य करो-ओनाइ ओतेक एकर नहि भ प्रवेश । ओना मिथिलाक्षर मे रहितहु' प्राचीन मैथिली नाटक सम कि हिन्दीक नाटकक रूप मे अवस्था छिलख गेल-ए परख ताहु मे मैथिलीक पाइएर पाठित विश-नाटकक रूप मैथिले प्रोफेसरक परंपरा छैक जे समस्त पोथीक सूची आ परिचय उपलब्ध करा देलथिन । आ से होइतहु' मान्य नहिने भ सकलैक ।

अब बहुत इहए कारण छैक जे बहुत दिन परि विद्यार्थि वंगालक कवि मानल जाइत रहलाह । ओना ई मैथिलीक हिले मे रहलैक जे त कथिपतिक पायः याला पदक संकल्पन-प्रकाशन जे कि निय-मुसदार नरायण इरक प्रयासे भेल से अक्षरमय मैथिल भासि सँ निरुपु' संभव नहि भ प्रवैत । आदरो वरीपर तथा मैथिलीक प्राचीन नाटक भाषा के मल्लकासीन नाटक के बंगाली लोकनि अपन पोथी मानत छथि आ तार पर बह-बेली कान भ रहल छैक ।

सब छैक जे मैथिलीक विकास मे सम हं पेव बाचक मेरुद आ य रहल देवनागरी छिपिक प्रचलन आ मिथिलाक्षरक विरलकार । एहि सँ ई मान अपन विशेष परिचितिद टा नहि गमओलक-ए अपन जाति सँ (पूर्वा'चली भाषा-समूह सँ) सेहो कटि रोख । आ बाद विज्ञातीय भाषाक संग जुटल या बाँधि देल गेल-से सुरा सन एकर बाद मे नेरुल अक्षरक पवित्रे सीढ़ि जेबाक टाक मे अछि । ई विज्ञातीय भाषाक सामान्य इकर स्वस्थ के पुमिठ त कदै केल्के एगहि मिथिलाक संकृति तथा मैथिलक सचि के सेहो निहित केल्केर आ ओकर कातीय जेतना एकता के, कातीय संस्कार के पूर्ण परे नइ क देखैपर ।

ते आइ बं सरपु' हमरा लोकनि अपन जातिक, भाषा संस्कृतिक अस्तित्व रखा कय चाहीत छी, ओकर विकास चाहीत छी त ई अनिवार्य छैक जे अपन छिपिक रखा करी, ओकरा प्रयोग मे आनने । प्रथम डाँटि संकच जे हले दिवका बाद पुनः मिथिलाक्षरक प्रयोग मे बाधा-अवधान कि नहि होलैक । उत्तर छैक-हेतेक । कोनो नौक काब मे हिन बाधा-अवधान अनेत छैक-पञ्च मे ध्यानी नहि, सगिक होइत छैक । हले इतर हमरा लोकनि पाठ मे पब निर्दिन नौभाइत रहलौह आ भाषा जखन सक बाट सेटि गेल-ए त जेहेक याकल-ठेहिआइल किएक ने होए-बसु हा चखानक शक्ति-गति अव्यतिम होइत छैक । निरिचल समय सँ पहिने हमरा लोकनि पठु' चि सकैत छी ।

संविधान बिनु मैथिलीक ओ
मानचित्र बिनु मिथिला धाम
छाहि जाहि सुहाइ कख हम
विद्रोही मिथिलाक जवान

मैथिली आन्दोलन

मिथिलाक जन-आन्दोलनक सन्दर्भ मे

जीवैत रहबाक छेल मनुष्य के ने मान
माओक प्रतिवद्धताक विरुद्ध खल, संघर्ष
करऽ पवैत छैक अपितु ओकरा समाजक
ओहि प्रतिक्रियावादी शक्तिक विरुद्ध सेहो
संघर्ष करऽ पवैत छैक जे अपन राजनैतिक
एवं आर्थिक वर्चस्व कोनो रक्षाक छैक
वर्गीय एवं जातीय शोषण उत्पीड़नक कल-
पर समाज के कर्ब, कंगाल, सूख ओ
बहिर बना, ओकर अग्रिम विकास के
'शीर्ष' कऽ देव छैक । कर्मिद बना समाज
मे वर्गीय शोषण-उत्पीड़न, जातीय आ
राष्ट्रीय शोषण-उत्पीड़नक माध्यम सँ अति-
व्यक्ति पवैत छैक । मिथिलावन विरुद्ध
छेत्रक जनता मे प्राप्त वर्गीय खल कातीय
बा राष्ट्रीय शोषण-उत्पीड़नक शिकार
होइत रहल अछि । जनऽ किछु अर्थ लोखर
आपारी, परसता लोखर राजनैतिक आर
किछु सामंतवादी विचारधाराक दोषक सम
एकट्ट मऽ मिथिलाक अछिबिच एवं
अविनिवृत्त जनताक शोषण करैक आर ते
आइ वर्तमान मे ई आधारके नहि अनि-
वार्य गऽ गेलैक अछि जे एहि राष्ट्रीय
शोषणक विरुद्ध खलखल बा रहल संघर्ष
के अविलम्ब गति देल जाय । "मिथिलाक
संस्कृतिः भाषा-साहित्यः कला-कोशलः
वाणिज्य-आधारः उद्योग-वंशा आदि के
उचित संरक्षण दऽ मिथिला खलक विरुद्ध
खलामोल बा रहल पटपटन के विफल कऽ
देख जाय ।

आबादी प्राप्तिक पंचाव, अपना देस
मे के प्रगति भेल अछि ओकरा नकार-
नहि जा सकैछ मुदा जाहिरियर 'मिथिला-
वन अविनिवृत्त खल' प्रवेचित राखल गेल
अछि ओ कथितः विचारणीय अछि ।
ओना सरकारी साधन कागजी खर्चति
आर विकासक अभाव कागल छैक मुदा
वस्तुस्थिति ई जे मिथिला के माध्यम जन,
केन्द्रीय एवं राज्य सरकारक टाछ सप मात्र

भारत मे रहलनो साक्षरक संख्या पचीस प्रतिशत सँ बेसी नहि छैक । मिथिला मे
त भारो कमे रहल । एहि मे शिक्षितक संख्याक अनुमान रहनहि कमओल बा सकैछ ।
मिथिलाक छेक ओतेक मइल मे छिलो के
देल बा सकैछ आ ते रचना के । भारतक
सीमान्त प्रदेश इहएक कारणे मिथिलाक
अत्यन्त अन्धम मइल छैक । सामरिक सुरक्षा
के हर्षि मे राखि सरकार बहुत विराट
'प्लेडिजरी'क निर्माण रातो-राति करा
सकैछ-—छिबीबत छिबीबन 'मलेटरी'
एकट्टा कऽ सकैछ मुदा मिथिलाक शिक्षा-
पचीस प्रतिशत सँ बेसी नहि छैक । मिथिला मे
त भारो कमे रहल । एहि मे शिक्षितक संख्याक अनुमान रहनहि कमओल बा सकैछ ।
मिथिलाक छेक ओतेक मइल मे छिलो के
देल बा सकैछ आ ते रचना के । भारतक
सीमान्त प्रदेश इहएक कारणे मिथिलाक
अत्यन्त अन्धम मइल छैक । सामरिक सुरक्षा
के हर्षि मे राखि सरकार बहुत विराट
'प्लेडिजरी'क निर्माण रातो-राति करा
सकैछ-—छिबीबत छिबीबन 'मलेटरी'
एकट्टा कऽ सकैछ मुदा मिथिलाक शिक्षा-

● जय मैथिली

पाकिस्तानी कथा

इफ्तारी

‘मरिदुका उगावळ हो। गरीब के

एक डकरी रोटी सेटोक। अन्नाए अर्धा

मन्ना करताह।’ ई मार्तल्ल, कडमनाइ

पुननाइ चि दिवटी कडमनाइ वारिक मकानक

जनाती-मन्ना के प्रवेश करेड। डिस्टी

वारिक कडमनाइक येनाब ओहिना सभ

समय चढल रीस छकि, ताइरर हँ मरि-

दुका उगाव। स्वमाताः एहि घोडातल्लर

स खीका ठेठेड छकि। ‘मरिदुन ई फर-

बरमा मीलमंगा सभ जानि ने कुन चुदि

ने राइ, मुदा सभक पक्षिने अं अने जेन वं

एरा बाँक्य घेइ कि किमिना क ब्दार

इरत।

‘अन्नाइ अर्धाक मेरबानी पर दुभा

करताह।’—उपर कतिबल्लर लगातार बरा

इरत रहल।

‘नहीनन। ओ नहीनन ॥ पसुका

मधुर सभ बे रो से मीलमंगा केर दही।’

नहीना—अपनि नोकरी—बाँचय-

हठक। बाइर-बाइर माकर अंतरा राखि

लेलक। सभ खाँसि बरंडाक सोना पर

ओखल पुरा वेठा आ लामो क बाट लाकि

रहल छीर। सामनेक देवु उबर। इपर

बन्दा हँ बाँकल छेक आ ताइरर नाना

एरक सुलावु लाय-सामरी ॥ सामरी

तेरेक छेक के आर के बलु आइर बाँकी

छेक, तकर खल्लक बाहरी नलि। छेक-कन

ओ सरी देखि राइ छीर आ अनेव

म एरक छीर के कलत रोना मणि एर

निमी जवानी मुँ ने देती।

एक स मोहिना देवमक मिठखियाइ

मेनाब हँ नोक-चाकर तंग रीर छेक

ताइरर रमकनक समय त ई मेनाब आर

मुग पर चदि बाइर। प्रायः सभ

सामय बिहार छर नहीनक बगार।

देकारी कुकुड के केओ छेक के आ ते

समूणल्ल देवम पर आभित। देवम

साहिना सेरो अन्न दिह वं कनिवो कमी

नजि रखे छ’न। सालि-रीठ वं कहिरो

कनिवो कुठि नजि होइ छ’न। वल

एहि बिनेक काबक छेक बाइ-गमी

को ? निचित होदि गेलें। देखिनी, जग
आ।’

‘नजि-नजि, हम नजि खेओह—

नहीनन बौत रहल हम देवम हाकिनाक

ओखि रकन रकिम वकी नहीनक मुई

भीतर उगावळ एर डकरी मधुर पर पड़ु चि

गेड। देवमक पंखा तैपारे छेक, ताइरर

जगजी ओइया डेगाब। ‘चेरिगिया,

चुईक। इपर रोना होइ छर।’

‘लोहातगा दुभा करता। कुड़, आनर

अफादिब के कोइ रफ्तारी सेटोक।’ बाट

पर वं ई खर लगातार आबय लागल।

‘ओ—बाय रे। आर नजि मरिदु-

नन। अर्धाक पडर पकड़े ली देवम खादिब।

फेर कहियो ने खेन। बर दे। ओदि दिम

हम लोदा कडम करे ली।

‘बर ने तोरा हम कलम लोभने ली।

आर तोरी ने की सपरी ने।’

‘अन्नाइ अर्धाक बाँक-बाँक के मन्ना

करताह।’ फेर उअर कडमकर।

एकसम हकिम नेलाक बाद देवम

साहिना नहीनन के पडर हँ छेक बबली

नेने आ। कलम वं ने देवारा फंड फादि

क जिबिया रहल। आ इरी द दिवटी

चगेरी वं अने भूइर मुग दकि देत

करतलन। अंबरी वं अपन नोर रोछेड

नहीनन बरताते तिस अयभाइक।

नया-रास्ता निचित हो कियो न-

रहल हेल परन्तु बलन खाकि-खुचि माल

छर। इर, कातक मकान सभक राजा

सेरी वेले। खली एगो मकान

एखनो रम लोग छर। बाट तवेक

जोगा ने एर बाट से रोपी, कोइर,

कुइरर सभ दोकन सभा क रोखि छेक।

गरीबी राति ने त तते ने बाट प्यारल

रे छर के कुइ गान्दी बोधा मरि टोलक

कोकक बिनु निनन होइने बाइर ने सके।

टोलक लोक सभ तीनटा सतिबिद

रवाना कारणे खु-गति। गरीब-गुरा

सभक कुइरकार कुंआंग ल मोट रेना छेक

मुझा सभ ने बर प्रविदिदिटा। बवा सभ

के कोरात स मुक क क, तंग-मंग, वंतर-

संग लिखोनाइर सभ सभ प्रतिदिदिटा

बकिरे रीरत छेक। एक एर मे बने

कोक के ठकवाक सभल सोवाक भानोने।

मकानक छत पर कवराक बीच ओ सभ
रोइर। उत्तर पस्किम सीमान्त के भायल
एहि जोगा दलक सभ उअरबोर। कोक
इकरा सभ वं देवारा। इर, दहाइर आ
सी ओकर सभक लग द क नजि आ
एकटा। इहि इलाकाक प्रायः सभ लोक
इकरा सभक रिगिया आर आ मोटाउ
चदि खेवा ने सभक बिचि प्रजातक।

‘दिसमरि बन्दा लोकनिक सभ केवारा
सब रहोक आ ई सभ हिब बाननर बकी
मरि बर रहनन मात। सोकल रोटी
माउस छेने कीरत। फेटीर बर सभक
बारीक भाब करेलक। सभ देवतास खात
इरी सुवेर-सुवेर भान उबर म लेते त
बाटर फेकि देत। ओइ इरडीपर हमला
केल बाटर कुइरर सभ बेना तैपारे रेइर।
देव रातिबिदर मुकक कयउक सुनल
बाइर।

खान सभ सेनाइ-पीनाइ रोच क
रिगानक हाता ल देवि बायत। एक-एक
पारक रिगान करत। फेर केमो-केमो
मुका ल क मैल कुचेल कडमकर पदि
रहल। जे कने कुडीबाच रहल पारक एक
चक्र मोलेल बरा बायत।

एर सेनाइ सुखमानक छेक चम-
शालक निगि छेक। किनु निर्दोषापूर्वक
सुरि-मुखेलो ई सभ नमाब पडरा आ
रोना खलकाइ बर निछाबान बेना बोदा
ताल्का के खु द क प्रमन। रायक जरीरत
हो। खलबल-रमकनक समय मुने
कारिमेक सभक पडर पकड़े कीरि बरत।
सुरासिक टोक कयटा मरि पछिछा सभ
जेना बीते ने चाहत। केमो-केमो मानवो
ने जनि ने बाइर आ बाकी वंरवार टखन
देत। जग देते इर अंतरा जगानो के
बाइर देखि बाट वंर नमरा रीत आ
असोक एरक सभ ओइवे। युता कान
वदिकन सभक रहित के कलत मस्कर मे-
अन्नान पदतक-यानेमरि दिनक उताव सभा-
सिक बोणा हेलक।

एरदे सभक हंगामाक कारणे दोइर
कातक मकान खाली पडल छेलक। परन्तु
नमाक घटे लग आ एते रोच मकान माब
बीच टाका भाषा से पति एर टोलक नव
वर्षादा अन्नाइर अशी सोचने छ जेना
ओ कुइ नव वल्लक भाकिन्नाइ केने हो।
ते बेरी खोख-खरि नजि क अपन माय
बीरी आ पवा के क सोकि एर मकान
ने भावि गेल। बीवी नहीमा के सेरो बड़
पयिन पकड़े। ओ बलु बाट सयिवाय
ने जागि गेल। परन्तु पछि दिनक सोकि
मे कने सुलेवाक हेतु ओ उपलब्ध
बिकरी लग टादि मग नौका जेना-मुटकाक
लेल देखल छल कि इलाख ओकर प्राण
आनि ओकरा सीतर क बाय बाइलने।
मोइ। मरिषा खान सभ के त देख।
केना ताकि रहलए जेना आबिक डिदा
बाय म वेलेक।

‘बीवीमा बाकर ने देखलक जे बंडापर
भीड़ केने खान सभ ओकरे तिस ताकि

रहल छेक आ इहि इहि हवाका क रहल
छेक। बलन खान सभ देखलक जे नहीमा
ओकरा सभ दिह देखेछर त अपन
निजिमाय लागल। नहीमा निजिमाय
इपचार देखे छल आ ओकर हाडक हर
कान ने पकड़े—बं नौगोइ के कनिवो
खान-बाख न ज होइ त मल्लक हुन
देख।

कइ बल हं नहीमा आ अन्नाइर बीच
एगो दुहीप दूरी लगल छर। दुइ पतिमोदे
भार बनि छल आ जे ने ने मे बागदान गेल
रहे। परन्तु खान दलन जे मेट-बाट भावः
नजि मे वकी होइ। ओना कहियो काब
हुइबा-हुइयाक आबि मे छाउर भोकि
इर भेट क लेत छल। बाइराम जगानी
के अन्नाइरक बासी जग राखल बाइर छर
ताइरामक छेक इर तरहक पटना सारण
बाट गेल। बाट मे ओकरा दुइरक नीब
मेम बढेले आ चिड़ी पुरसी सेरो बढय
लगेक आ तकर बादे अन्नाइर नहीमा के
हलु मे भली काखेले बोर करइ
हालक।

बहानीक हाकि, अन्नाइर-उमरा हाकिब
बीनक आरम मे अन्नाइर मोइन छल
सभ मे वं छल जे सभ देखल खाबीनाक
बाट छोड़ि आर किडु सोचिइ ने खने
छल। बिधानक गरीबी, कनोदलक सोप
कोनहार सभक दुइहायस अन्नाइर आ पूबी
पति सभक सुखी छिल्ला आदि सभ
जिब पर सभ-सभ माय देवाक छेक ओ
बेइ अन्नाइर छल ओते सुखक, वेलेर
अन्नाइर छल सभ ओकरा वदीपमान नेला
दिखने देखिछेक। नहीमा जग सेरी नाप-
कोचि, चमडुक मासिका मे कनिवो कप
नजि। नहीमा जग ओ अपन रंगीन
कपडिबीक तर उपलब्ध करत। अप-
बार मे ओकर नाम देखि नहीमाक छतो
खलन म बलेक। ओकर सको-वेरी,
परिबन-पुलन मे केमो एरन नजि छेक
बकरा मे अन्नाइर वं बेरी देख सभ
मावना रोइर। नहीमा सेरी ओकरा संग
नव बीन आरम कवाक हेतु अपना के
देवारा करय लागल। अन्नाइर उवेरबीक,
मुदिमती इहि बाकिनाक बिदा बाटा के
इदि पडर अन्नाइर के लेल मान कने
रहितक लगला छे। छिन्न ओ मात
वर्क सभला सभ वं परिचित होमय
जगकि आ सभ-सभ समाधान ओचि
ओकर मन आनन्द विमोर म बाइ।
भारतक खाबीना कपडा ओकरासन मे
स्थान कनेते गेल आ देख छेक प्राणे
देवाक हेतु ओ देवारा म गेल।

अन्नाइर कोब बीन रोच होइदि
बिहार केक आ तकर बाद आइर पडनाइ
आरम। नहीमा ई देखि अन्नाइर रदि
गेल जे अन्नाइर ओकर अपन कइरटा
राबनेतिक संगी वं पवित्र करेनाइ आ
सभ-सभ माय सभ कीमाइक आइ। फेर
होवेत जे म सभ पडनाइक कारणे जग
होमय आ पडनाइ रोच होइदि ओ पूर्ण-
रूपेण राबनेति मे भाग छे।

बहुत नदीमाक राकेतिक उखाड़ केना दिन-दिन बढ़त गेले, भगवतक उरग ठंडा पड़ेत, गेले। नदीमाक प्रसन्न उतर मे ओ नाना तरह बरना पवित्राव लावाल के बड़ोना कहिते- छिन्न हमरा लोकनि के संतान अह- परे कहिते कच्चा खानो तले छोट अह वे हफा छेनि ब्या केनार उचित नजि। सबन स्वयं काँ छिन मेले भा हानर नदीमा छेले बालन के राकेतिक कर्बव लेखर क केक उतर हकीन अतर बज्जने के बालनक सौह केक ओकरा नीक बको प्रसन्न भव नई भा पव केक बर नोकरिक प्रसन्न के कागि नेक।

से वे होइ, लम बतु, कम व कम पनी नं, केरी दिनकरि नजि तुकाओइ भा खंडर। ओना दोह-मरिग वं ओ हदर कहिते वे पारिवारिक काज मे वेना ने बाकि गेबद वे पलबतिर ने होइ उर। दोह-महिम सोचेत-सरिणुं वेबाप विचार क क फंसि गेक।

किन्तु तकर बाद नदीमा अतलः दुकि गेल वे देव-पेय देकर ओहि अवसर वं अर किछु पार नजि जगते, वे शाव ओकरा ने नजि उर।

सते-रीरे अतलक सपु-क-बक दजिज किछु ओकेल भा हफाकी कने- कनी करि छिन-द म केले, वे कम दिन मरि टकर किन्ता ने गल रीत कम। नदीमा के व के काव ओकरा सेव सज्ज- नन होइ करल दुन्ना ने भाक नजि रले वे नदीमा ओकरा दसपानी कुलेत उर भा म्मादि मन पुनाओ करे उर। नदीमाक कुन्नी वं ओ तलेक पिरक म बाट ने सज्जो-कवतो ओकर अतर माकर अपर मोरेक रच्चा होइते। स नदीमाक उतराव, भगदा केनार हरि कुनी वं नीक ओ होइते।

हज्जारीक समय म गेले। खानम क्या मेले। हर गोटे बररा स भा ओकी बाद कवने ने सज्ज। नदीमा बिदकी का छदि नीचा बाट वर देखि दस छति। मरिजक मय क हक मेले हेते ओकरा वन के हर मकान मे हता। खान दम सेहो ओकर मुह निहारत कयलसन म गेल छल। तार पर एकर उदासीना देखि ओहो सय आव नेही कवि नजि लेत। भा टीक हरि समय ओकरा समक ध्यान केन्द्रित रेडि ल्याक मरिबिद पर, बसप वं वे कुनू समय अतलक अपर मुनार पंदि सके छले।

कुनू शनी वं एहो बुद मीखतंगा योइत-वेहेत भावि हाकिर मेले। हाकक छाठी पर भार देलाक वालो ओ अपन देर कं सोक नजि क पावि रख छल। ओकर बर्गान करे छले। नदीमाक मकानक सामनेक बाट पार करेत ओ ओना हकिम गेल हो भा वं एहो देवाल ने पीठ अरा तादु मे गेल।

नदीमाक नाहिदा नवा अलाम सेहो ता बिदकी लम आवि गेले। ओकर नबरी साने मीखतंगा पर पड़ेले। ओ पुछले- मां देखही व, ओह मीखतंगाक हाथ मे की उर?

‘ओ लज्ज लेखि देत, मरिजक लेखक इर लेखि देत।’

—तुमन कार किर ने उर?

—म स्केर से रोबा रखते हो भा ते अतलक बट केले हो।

—ओ लेख नई करे छे ना?

—नदीमा छाने देत दिव देखि केले किन्तु- केत का नक-तलक दुहो रिखा देले।

—तुमन समयजन से हज्जारीक के कहियत। ओ दुवि राखब रहित।

नदीमा किछु बोचि बाबलि-से बाव तो अपन अन्वेधान वं पूछि छियहुत।

—किछु मां, तो किए ने रोबा करे छे?

नदीमा विनैर वं देत के हुलारेत बाबलि-तो नजि करे छे ने-वे।

—सम व नवा छी। राख करे छर वे से रोबा नजि करेद तकरा ने कि नई मे बाव पड़े छद। भन्ना-नई भेल होइ उर मां।

—नई! राख व हस्य ओकेनिक सज्जारी कर-नीचा ने। टीक पुनाक हव नहीवा भरके।

अतलम राज्ज बाक मर तलेत पुछ के-अपन।

—नीचा ने-उतर हतय ओ मीख-मंगा तादु मर, हतय कोहर, कुहार, तानी, नोनिहार सम रीर।

—मुदा राख व करे छवि व नई मे भागि होइ उर?

—हं सोना, टीके।

—भा सगो केनर होइ उर?

—हर उर लग-सम तो, हम भा तोर वार री छयन। वार ठाम येव-वेव, शाक दुधरा भन्कक करोत वर उरन छर। मरिताल नीक-नीकुत लेबाक, नीक-नीक पारिवाक लेक, नाना तरह लेखनोना सम उर।

—शहर मे सजन किरक ने सम लगो ने रीर?

—कारण स्वयंक लोक अनका सगो मे नजि आवय रे उर। ओकरा सम वं काव करा ले छर भा फेर बजिया क नई मे छेले दे उर?

—भा ओ सम मान्दरो म वार उर?

—हं सोना, नई मान्दर लोक वं मरल छर।

भा टीक हरी समय अतलक लग हुनार पड़ेले। मरितुका उरालक सम-तिरक पोपनाक संग मरिबिद मेले रंग-मिरंगक यातिथवाची। खान सम भरकर करव लागल। ओ बुद भवाक भगवोना अपन हाकक बतु मुदे मे देवाक प्रसाव केक पारव उरिना वं ओकर हाथ कापव लगलेक भा

हलात मयुर खवि पड़ेले। ठेठन पर मर द क ओ मयुर उडवाक प्रयास काय लागल। ओकर बापु-भपु बरि वाद-वार ता केसरी वं एहो कुहर आवि छकि छेले। भा छिमे भार भइकटा कुहर बजि गेले भा भउक कर लाले। दुकि कौ कुहर सम कं वारेक प्रयात केक परव कुहर समक आवाव भार लेख म गेल। मूख भा बर्बोता व म्मुअ मोर बुद माति पर बरि मूख भा नवा बको रिक्कम डगाह।

कोरि छुनि दू को खान मरदिन समर कव देकलक भा कुखो वं हव जगल। ‘मां!’ मारक बजा दुइ टुककोले देणल अलाम किरकिता क अवेदन बलाओक। भा हर प्रदम ओकर मनोब मन नई समक प्रकृत बाजबना उपकवि केक।

‘धयताने!’ खान सम दिव देखि नदीमा पुण मरल लगो भाले वं जगलि। हलात मयुर खवि पड़ेले। ठेठन पर मर द क ओ मयुर उडवाक प्रयास काय लागल। ओकर बापु-भपु बरि वाद-वार ता केसरी वं एहो कुहर आवि छकि छेले। भा छिमे भार भइकटा कुहर बजि गेले भा भउक कर लाले। दुकि कौ कुहर सम कं वारेक प्रयात केक परव कुहर समक आवाव भार लेख म गेल। मूख भा बर्बोता व म्मुअ मोर बुद माति पर बरि मूख भा नवा बको रिक्कम डगाह।

कोरि छुनि दू को खान मरदिन समर कव देकलक भा कुखो वं हव जगल। ‘मां!’ मारक बजा दुइ टुककोले देणल अलाम किरकिता क अवेदन बलाओक। भा हर प्रदम ओकर मनोब मन नई समक प्रकृत बाजबना उपकवि केक।

‘धयताने!’ खान सम दिव देखि नदीमा पुण मरल लगो भाले वं जगलि।

दू गोद गोद

मुदा वागरण गीत/पहटा किसानक लेख

छड हो किसान मया पटछइ किनिमा।
पूख स बरछल ज्ञाय दुनिवां कमनमा।
राष्ट्रीयक राज्ज वंय सुछे उनेरा
उछप विमात चदि मन्त्रीक, फेरा
दूवे पूते वृद्ध ‘सोम’ मान यान यत्ता। ४८५
रागिय सं देरा सेने कौरी मठेरिया
ओरे गवाक वर मे पाहुन समरिया
भोट मंगलअथला सतराधिया सजनमा। ४८६
रड ने बहाना कयने
मूखकेर घडत धयने
अपना करम सं मरिड मूखकेर बहनमा। ४८७
—सोमदेव

मिथिलाक वसन्त

वीन कात मे, सदिया रे नदिया वहर दिम पहादे हो
बिचले माफे
रामा हमरो मिथिला देरा हो बिचले माफे।।
वीन लोक ने सुभर मिथिला पावन जो मनभावत हो
लोभाओलु हाने
वीची के फुलेले रामा लखिओ जे फुलेले हो
फुलाइय गेले
रामा यन के यनफुला फुलाइय गेले।।
सबल घबल गिरपी जगने नव कनिये हो
अवेया भेले
रामा पडुना राज बसन्तक वतु अवैया भेले।।
कीटे अतर बसात हुलसि के बैनिया वतु डोलावे हो
अलावे लगले
रामा कोइकी कनिया पखिन गीत अलावे लगले।।
—राम लोचन ठाकुर

ड्यौढ़ १० जनवरी, ८२ । आह इत्य
डा० ब्रजकिशोर वर्मा मंगिरह्मक अध्यक्षा
मे विद्यापति पर्व समारोह मनायोक नेह ।

इसके १० अंतर्गत, २२। आर इतय
डा० ब्रजकिशोर वर्मा मणिरामनक अध्यक्षता
मे विधायित एवं समारोह मनावोल नैक।
वर्माजी कहलिन के कोहनाक पूर के पाइल
विश्विद्य आयोशल थिक। उरुवाल सोलन
कहत हा० काँचीनाथ म्हा इण्डन बाबलिन
के मेचिली माभी क्षेत्र भाषाई उपपदेश-
बादक थिकार भइल। ओ संकृत आ
हिन्दी सं सोषित भइल। बाबरि पर
नन्दर आ पाठशाळाक भाषा हक नहि
होत, ताबज ई मुरगा विरुद्ध रहत।
ओ कदवाड भिन्न अमर बनोलिन
के मातृभाषक नाथन सं थिया नहि
देवाक कारण कतस हतेक दिनक बादो
शिक्षाक प्रतियोग-वाक्यताक प्रतियोग
परीस सं आगा नहि शुरूकल भइल।

पंचायत सभागां नई छुसइल भांड !
आचार्य नाचिप रिखी बट्ठाय ले
अपन अधिकार लेख मुखिया, श्री० डी०
बो०, विषयक आ सारद लोकनि
देरायो कर जहि सं सरकारी कर्माइ ने
ऐबिही भाषा मे हार बऽ सकय ।

श्री भुमावधूत यादव जनैकानि ते
मिथिलाक लोक मे संवर्ष जेतना कागदवा
लेख विद्यावति पर्वक उपयोग करबाक चाही।
इहि समारोह मे मंच संचालन कऽ
रहल छलाह श्री बाबूकान्त ।

कवि उद्योगक उपलब्ध कृतानि
 श्री चन्द्रनाथ मिश्र भग्न । एहि मे धारा
 लेखनि मापदण्ड, किरण, चन्द्रभानु विह
 रम्भ, प्रवासी साहित्यलंकार, चौबाला,
 उदयचन्द्र का विमोद, योगविबुद्धन, नाजिन
 विखरी, पवन कुमार, योगलेश्वर चिह्न प्रो.
 बा० दयानन्द झा, प्रो० देवकान्त मिश्र,
 प्रदीप मैथिली पुत्र इत्यादि ।

संस्कृतिक कार्यक्रम मे अपने आर्कषक
गीत सय सुरेजनि शशिहान्त सुबाकान्त,
चन्द्रमणि, सुमन माया कान्त, गान युवन
बा गंगाधर भ। एरि कार्य-क्रमक संचालन
करै रमक लखन वीरकु भत शानवरद ।
विशाल्यक छाना लोकनि उगण, रुद्र,
विन्नी कार्यक्रमक आरम विद्यापतिक
गोसाइनिक गीत सं कमलनि ।

ब्याचार्य नासिम रिजवी राजवाचार्य
शास्त्री भा दामोदर लाल दासक मृत्यु पर
योग्य प्रस्ताव भनर्हनि ।

किंग जीक प्रस्तावक अनुसारन करैत
जोकाकान्त बिहार सरकार सं माऊ कयलनि
वे मैट्रिक परीक्षा मे निचरित मैकली
गय पण संगह अनुपयुक्त आलाउ लोकनिक
खर सं बाहर भळि, तें अनुभवी पिपसक
लोकनिक नव सप्यादक पढळ नव गय-
पय संगह लगभगत करय ।

भोला उच्च विद्यालय इंदौरक प्रधाना-
ध्यापक श्री बिहारी झा स्वगत भाषण
कृतकर्मि आ कार्यक्रमक अन्त मे वसुधादे
शरण कयलनि विद्यालयक वरिष्ठ शिक्षक
श्री लोचन झा ।

★ वेना क्रि वर्माजी कहलनिहे के हे
आयोजन एहि अंचलक पहिल विधिष्ठ

मन्मथसिंह नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥

[illegible]

बर्बादरि मैट्रिक परीक्षाक निमित्त
निर्धारित मैथिली गद्य-पद्य संश्लेष
प्रस्तावक पत्र आह मायः समस्त मैथिली
भाषी हरि सं समस्त देवार्ह बं हुनका
बिषय बोध देवति । वरंच प्रत्य वं आह

प्रयाग गिरि केरि या स की समस्था
 समाधान म कहेउ ? सरकार मैथिलीक
 हित करि नहि आते ओकरा पर रहि
 प्रस्तावक ऊन प्रभाव पढ़ाव संभवना
 कहल नहि बा सकेउ । की भाषा की ले
 एकर समायक कोन के निश्चित मैथिली
 भाषी विद्यालय छथि हुका जाकनिक अखि
 खुजनि आ ओसध रहि काज सं अपना
 के पराक राखि समुल लोक छेल स्थान
 आली करताह ? योदेक काजक निमित्त
 मिथली के इरो लोकनि से नहि क
 विहारक मुख्यमंत्री बाबासाहेब मिश्र सन
 मातृभाषक एही ने अपना नाम लिखेनाह ते
 बखतन प्रफुलित व की छाथ शिक्षक लोक-
 निक रहि सहर्म मे कुन कर्तव्य नहि ?

बाहरीर हमरा लोकनिक विषयत
अर के एकर सवाजान छात्र-छिहक लोक-
निक शय मे छनि । ओ लोकनि निरिन्तो
एहि निमित्त प्रयोजन मेने पेव स पेव
आन्दोलन रहताक सकेत छथि । अप्प
आ छिहक लोकनिक संगठन खरिणहु
वखक आर बे सरकार के नमरा सकेद आ
अन्तर्गतन मैनाक भविष्यक बाट परिष्कार
क सकेद, सतुभाषा मातृभूमिक मयदा
दा सकेद !

★ बख्शता, २७-१२-६१ । कबानीय
नरामण पालि निज्जन्मिक दे नराण्डितं नव
तत्तातारण मेखल सपेक पण्डि सभा मेळ
कर अथथकता कबळनि मैथिलोक योयवूद
नानांनी हरिस्वरिणं मिम भियिल्लेऊ ।
हि अक्षर पार मयिजेल्लु बीक मतिरिक्
वर्षी नावू सवैव चोवरी, रामलोचन
कुंरु योगेन्द्र ठाकुर ज्ञानारण्य झा. वन्द
अशोर मिम अहि वक्ता लोळनि संघाम
नि अयन-अयन दुमकेयनाम प्रकट कळटनि

78212 गीत कालिका १०० ०३३ - २

तथा उपयोग युक्तावक आभूषित देलिन ।
मिथिला मैथिलीक लक्ष्मीणि विहाय लेल
इकट्ट भू कार्य कलाक आभूषकता पर
बोरे देल गेल । संस्था हिलसं संयोजक
श्री वैद्यनाथ मिश्र आगत गतिवि लोकनिक
प्रति आभार प्रकट करैत संस्थाक उद्देश्य
पर प्रकाश देलिन तथा अग्रगणी मैथिली
सेवाग्री लोकनिक अभिनंदनक आबेदन
कलनि ।

तात्काल ओ वेंचनाच मिश्रक संयोजकद
ने हगो स्टूडिंक कर्मिटीक निर्माण कळ
गेट्ळ बाद ने सर्व ओ राजवती ठाकुं
रामनारायण कुमर, दुरेय भा, बाबू कुमार
भा, लखन निश सदस्य रहताह ।

★ मैथिली मे प्रायः संस्था नेतेर रहल अर' संस्थाक निर्माण नीके नमि अइबाको छैक खाद्यक मिथिलाक मैथिलीक वर्तमान स्थिति मे । परंच संस्थाक निर्माण अगला अपा मे कुनू मडल नमि रहल मसख-पूर्ण होइछ ओकर काण' इदर कारण छैक के कतेको संस्था आयल पानि गेल पानि बाटे बिबाहल पानि बना कइकी क' चलिअर करैत रहलअ । नव जगतर मैथिल संघ' अलिखल विपरित अगल कार्य मे अगत अलिखल मान मैथिल छुट्ठा कइको क'रा-मोय तथा मैथिली आन्दोलनक आगामी

एक प्रति—

सल्लिखाना 'वारुद' प्रति ।
पांच सालक (साइठ प्रति)

विज्ञापनदाता लोकनि सं—

‘देसिल बयना’ में अपन विज्ञापन ह
हंग सं अधिक प्रचारक एक मात्र साधन

सर्वार्थकं कुरु

विज्ञापन व्यवस्थापक
अरुणोदय प्रकाशन

अरुणोदय प्रकाशनक पहिल पुस्तकालि :—

प्रातिपद्वन्ति

माओ त्से तुङ्ग, हो चि मिन्ग, ल्हा शून्, नेपेहा, जे ह्यु, लुमुखा, गुंटर प्राव, महमुर दारमिख, लेंडन हिम, ह्मिरो दोतेव जोस के भिरहा, डेविड हियोप, शेव अयाज, खादि चिरवक पसिद कान्तिकारी कवि लोकनि बनल कतिता समक मैथिली रूपांतर ।

दाम-चारि टाका मात्र
तर

कह लोचन कविराय

तेल इन्डोलेक उत्स थिक तेल शक्ति केर सान
तेलक बल डिबिया जस्य तेलहि उद्यय विमान
तेलहि उद्यय बिमान तेलबल मंत्रीक आपन
ते जनसेवक राज तेल पर कपलक रासन
कह लोगन कवियाय रुश स कपल गेल-ए मेल
बदला मै द चाउर गरीबक लेल ओए तेल

र भा द्वारा प्रकाशित तथा पायनियर आर्ट प्रिंटर्स, ३२-बी, इन्दुबाबन
: श्री जनार्दन भा

प्रज्ञान रोशनी

वर्ष-२ अंक-६ मार्च, १९८२ मूल्य-पचास

सम्पादकीय

फगुआ

देविकी मे एगो नेह प्रचलित करी कर-जे बीयर से लेबर फगु। कहलाक प्रयोग नहि जे फगुआ जीवितताक प्रतीक बिब आ जीवितताक उच्च श्रेष्ठ आनन्द उमंग उल्लास। तें फगुआ आनन्द-उल्लासक प्रतीक बिब। परन्तु आनन्द उल्लास करतो हकक नहि।

मनुष्यक सामाजिक प्राणी बिब। ओ मान भले सुख सं सुखी आ दुख सं दुखी नहि हार नहि भ सं खेद। अथवाद गर फराक कर। आनन्द मे काह म खेद, फगु प्रकृतिक वा दानवीय प्रकृतिक मनुष्यक देववारी कनु अलकेद। तें फगुआ सामाजिक उल्लाह उमंगक प्रतीक बिब। पारस्परिक सहयोग, सहसामाजिक परिवारक बिब। हकर काम सं प्रत्यक्ष प्रमाण मिथिलावलक गाम-ग्राम मे पाखोल आ फेक-आहटाम धर, बग, उत्प्रासिक मे-पाव तिवरि कोक-एक सं-आनन्दोलस मनेह-रंग-अबीर खेकार-भाटि के काक देह।

फगुआ समृद्धि परिपूर्णताक प्रतीक बिब। अमावी मन मे आनन्द उमंगक स्फूर्तिक बरसा केनाई मूर्खता छोड़ि आर किछु नहि म खेद। फे मे मन आ बेर पर वन नहि रहितो आनन्द खरिखन हवेत ररेह। तें पाह हदि निमग्नक संगहि जलेक सामाजिक नियमक अन्वय बिब।

फगुआ सामाजिक प्रतीक बिब। जातीय प्रतीक बिब, राष्ट्रीय प्रतीक बिब, दुगो सं हस्ता कोकन हकर हदि रूप मे मनोत मानि रहल हो। परन्तु प्रतीकक कहितो खेबकक सताता नहि उमंगक प्रतीक के पास मे कतमान संदर्भ मे एग्रा मिथिलावासीक एक हदि जातीय आनन्द उमंगक प्रतीक बिब सिरिपुं ऊरु अथ सेष रदि तेह मर। सं सिरिपुं सिरिपुं त निश्चये आह-मिथिला-मे-बिब-देविकीक दोहर रूप ररेह।

हमरा मनते मेथिल जाति मरि सुख भद्र आ दृढ जाति मे हकत, सहयोग समझौता के ताब 'बोवेटिया पर रतेरी तकनार' सं देवो आर किछु नहि म खेद। ओका मे उल्लाह उमंग के ताब 'दुख बाटो मे अनन्त भगवान के ताब' छोड़ि आर किछु नहि। ओका मनुष्यक नाम मालमा गोरी होतो कर आ तें लोक के रतेरी छोटि आह कर आ मनतो भगवान मेतिह आर छिबन। परल है-आमावाती प्रकृति बिब। लोक अतका भनहि ठाकि लोक-असता आप के ठकनार-संभव नहि म खेद।

आह मिथिला विश्व मानचित्र पर नहि मर, देविकी भारतीय संविधान सं भारत आह मेथिल अनरि बर-भाऊन मे दुहाइल मर। फरियोक विद्युत बिबलात मिथिलाक नाम आर ओकर अथो सतान मे भते कर। आह मिथिला मे रोदी-रोही सुखमरी महाप्राणीक लवाओ बाव छेक। आदि बिप्लवा हकर रीढ़ के तोरो देने छेक आ सरकारी असेलमा मालमा वेमनवालाक सप वा काएन सन नाउदि हिम्मत मने सतानक अथमन हकर माब कजे मुग देने छेक। देरना बिबति मे आनन्द उल्लाह उमंग फगु पावो। है मित्र कथा जे अन्धकार चहुक कावक घरीर संतोषक कारण हिल्लाह-बोक्ला के कोक जीवितताक उच्च मानि लिख्य।

कहल बाइक जे हरी तिथि के भोगानन्द राख के पारि लंका विजय केजनि आ देविकीक संग अथोपा मुला। सीता समक भावमनक उपलक्ष्य मे है उल्लसक भावो-बन मेह छल आ तदिया सं प्रियल होशत वरि भावि रहल-ह। कीता-यमक शिराक पाछा अपन आत्मीय के पैराक आनन्द त छेके संगहि दुनक विषय गाथा स्वभावोपक विस्तारी पर विषय, मातृवीय चरित्रक दानवीच चरित्रकक महान गाथा के बयना मे खेदते मर। आहो भारतक कदक छेव मे राखक प्रतिभा बरामोड आरल आ तकर बादक दिन रंग अवीरक संग आनन्द उल्लस मनामोड बाइल। मिथिला मे पहिल दिन रातिमे 'अमर' जराभोड बाइल, दोहर दिन फगुआक उल्लस होए।

सं आखु संदर्भ मे नीक जंका बिचार करी त स्पष्ट हैत जे मैथिली एखनो लंकाक अशोक नाटिका मे मणालन छैय। राम कथं हुनका राखक बाज मे फंका देने छिबन आ लम-कुणक काम देवे नहि कहल केर आनन्द कथिक।

संविधान विनु मैथिलीक ओ
मानचित्र विनु मिथिला धाम
छाहि-आरि सुहाह करब हम
विद्रोही मिथिलाक जवान

श्री मार्कण्डेय प्रवासी पुरस्कृत

मैथिलीक सुपरिचित कवि आ लेखक श्री मार्कण्डेय प्रवासीक सदा प्रकाशित 'महाकाल' 'आत्मवाणी' के वर्ष १९८२ क सर्वश्रेष्ठ रचना मानिके साहित्य अकादमी पुरस्कृत कने छल। गत २६ फरवरी के कपरी (गोवा) जे साहित्य अकादमीक एकटा भव्य स्मारक मे फरिबर प्रवासी के पींच बरल ठाका उत्तरीय तथा सरल-लोक प्रतीका अरित रूपक गेजनि।

लमलपुर (मिहिर) बौलाक गमभारा गाम मे २ मार् १९४२ क हकरा मय-वर्गीय रूपक परिवार मे जनक ओ प्रवासी संप्रति रचना मे 'आवाज' देलक क सभादकीय विभाग से सेवारत छल। हिन्दी आ मैथिलीक साहित्यिक क्षेत्र मे दिनक लिखात 'बुद्धिलानंद को चिट्ठी' आ 'आमलाक आमा लम रचनात्मक दृष्टिकोण आ स्वातंत्र्य भाषाक कारण हकरा विविध उल्लेख मानक बाइत छल।

सुवर्णित महाकाल 'आत्मवाणी' क अतिरिक्त दिनक लेखन संघर 'दुर्दर्श' 'अभिराम' उपन्यास तथा विभिन्न पत्र-पत्रिका एवं ग्रंथ सम मे प्रकाशित ग्रंथः एक सहेर रचना मैथिलीक अमूल्य रत्न मानक बाइत। हिन्दी मे सेहो है 'कविता

वसंत केहन होइछ !

पर क रेवाळ क स्टूड पखतर
सोँक क सोंक आगिक मुँह
नहि देखलवा चूँचिर
खाकी थारो-वासनक
पेवंदु लाल साँदो
भनिया - बेताळ क तगादा
धीया-पुलाक पाकळ पात-सन
पीयर हवहव अलि
हम तें नहि पूँकै छो
की होइछ फागुन,
की होइछ वसंत।
अँ अहाँ दुम्मेत होइ तें
कने हमरो बटा दिवस
बसंत कोन बाब मे
अटक मेळ अछि।
आपि के

—बुद्धिनाथ मिश्र

तें ई वसंतक माछ बिब जे हम मिथिलावासी हदि वर्षक अक्षर पर अपनावीच एकता-सहयोग-सहमनाक बीजारोप करो-जातीय मुक्तिक मैथिलीक मुक्तिक, मिथिलाक मुक्तिक अथव प्रण करी। आदिक विप्लवा, कुंधिया-कुंधिया-वेमनवाला आ हदि वसंत केक दायो मिथिला-मैथिल विरोधी तथा कथिक मानविक संस्कार सं कडवा, कदि के अपन न्यायोचित अधिकार प्राप्त करवाक प्रविश करी। तेबन वास्तविक उल्लस, आनन्द-उमंगक साथैफता।

फगुआक उपाधि

कवि बृहस्पति श्री कारीकान्त मिश्र मयुध—मयन न विरविन भेळ ।

प्रो० सुरेन्द्र मां 'सुमन'—बुढ़ारी में बिहारी ।

महाकवि यात्री—पैर में चुरचुरा बान्हल अई ।

कविबर किरण—हम पारसे लेब ।

श्री चन्द्रनाथ मिश्र अमर—हम पंजी रेक डाल के ।

डा० ब्रजकिशोर बर्म मणि पदम—आब अगिला साळ ।

प्रो० राधा कृष्ण चौधरी—खादि खनवाक सुख ।

श्री जोष कान्त—कय बंढल पठाव ?

॥ सोमदेव—रुक्म, पर टेंकल लागाय ।

॥ कीर्ति नारायण मिश्र—विद्वत तें कई छर, तकरे परि ।

॥ ईशराव—मानसरोवर कहिया जायब ?

॥ तीरेश गुंअत—भागलपुर कइलस गुलजार ।

॥ घन चक्र—यक्ष प्रदम

॥ स्नेन्द्र दोबो—असक्ये हमही दोबो नहि ।

॥ महरा पकासी—सोर भेले हे पिपा ।

॥ सुभाष चन्द्र यादव—छिलि के की होयत ?

डा० चोरेन्द्र (बनकपुर वाली)—बिचि कइतो न सक ।

श्री महेन्द्र मल्लिंगा—कमलाकाक रसिया ।

॥ रामभरोस कापकिन्नर—गोमू, माक बिजादि ।

॥ घूमकेतु—नब पछाटक तेयारी से ।

॥ प्रदीप मैथिली पुन—चाह बाऊस दिथो ।

॥ हृदय चन्द्र मां बिनोद—खम सं ओट कबिता तीन हायक ।

॥ रमानन्द रेणु—एलत भइबा छै ।

॥ छलित—कापर करत विगार ।

डा० गोरी मिश्र—दिबिया लेखत छी ।

श्री मायाचन्द मिश्र—माछक मुढ़ा ।

श्रीमती जीली रे—आब फुराइत अछि ।

श्रीमती रोसाखिका बर्मा—निहुरि फुह आनि ।

श्रीमती शान्ति सुमन—वितरत्यन्ताम ।

श्रीमती स्वाकिण खान—नखदेवर कमा ले भागा ।

श्रीमती प्रसाशा—हलै । संतो जो के यहाँ से बोल यही ह ।

डा० सुभद्र मां—किरिब करिअ मन लाइ ।

डा० जयकान्त मिश्र—मैथिलो हमरे चारक कइया छी ।

डा० सुधाकान्त मिश्र—आब कइता चन लगाबी ?

डा० शैलेन्द्र मोहन मां—बरिसाखत कहिया अई ?

डा० रामदेव मां—हुम्का काहे कोइ ।

डा० अनन्द मिश्र—अनहि विद्यापति ।

डा० जानन्द नाथ शर्मा—मुँगेरी गंवर 'सर' ।

डा० चोवाराय मां श्याम—युवराजस पंडित ।

डा० जयमल मिश्र—हमरा सं जइवाटन कराइ ।

श्री दमन कान्त मां—एलत टोहू जुनि ।

॥ श्रीकान्त ठाकुर (बियालंछार)—आर केजो बाबल की ?

॥ हीरानन्द शास्त्री—एक घन्का बार ।

प्रो० श्री हरिमोहन मां—बन्ये मां शापदा निति कइतर ।

श्री आरसो प्रसाद सिंह—अहुता कतो भेलैय ?

सुबोधु शेखर चौधरी—एकदन्त ।

॥ सीमनाथ मां—हमर अमाग हुनक कोल दोष ?

॥ गोडुलनाथ मां—बिकापार ।

॥ प्रभावी जो—एक व दाढ़ गोरे बहि-दोसर नहेजी हे ।

॥ राजमोहन मां—हम गुमसुम एक छी ।

॥ स्नेन्द्र नाथ मां च्यास—हमरा देखे घन सब ।

॥ गोविन्द मां—केसब केसन बास करी ।

॥ गोरी कान्त चौधरी कान्त—चूपाळक बाछि ।

॥ जयानन्द सिंह मां—हम को सय दिन बटुके रहब ?

॥ प्रभास कुमार चौधरी—कते सुखा छियड ।

॥ नंदशर मां—मारत-मारतो एकदोस ।

॥ मोहन भारद्वाज—तनी प्यारो पैली, प्यो ।

॥ कुलानन्द मिश्र—पै बंढला रात्र मे ।

॥ रामानन्द रायण—सुकर जे लखत नहि गेलौ ।

॥ परम नारायण मां 'बिरिचि'—खरपो सं घमोक्षा गइं की ।

डा० इन्द्रकान्त मां—विद्यापतिक केश : फस्ता सूक्ष्म विवेचन ।

डा० बासुकी नाथ मां—साढ़, पुरक गोवाइ ।

श्री अमिन्दर—अनमलक थोक ब्यापारी ।

॥ पूर्णेंद्र चौधरी—नेहन सुहुइधर नहि छी हम ।

॥ विमृति आनन्द—छठा रहक चीच विळक ।

॥ मियाराय मां सरस—शिव गठ पर ।

श्री बिहंगम—पांजी आकर चो मे ।

॥ रघुनाथ मिश्र—आत न पूछो साधु की ।

॥ रवीन्द्र नाथ ठाकुर—सिलेमा मे काज करब याइ ?

॥ महेन्द्र मां—गावि सुताओल हे ।

॥ फज्जुर रहमान हासनी—हम मिथिले मे रहबे ।

॥ प्रभाषती + गोपेश—आब कहु मन केहन लगेय ?

॥ वैद्यनारायण मां—गोसेवेकइस अई ।

डा० विनोद शमिन्दर—छरातो प्रमाणपत्र बितरण केन्द्र

श्री बाबू साहेब चौधरी—जोड रोडिंग ।

आचार्य रिजबो—हम मैथिल, ह हम मैथिल ।

डा० प्रबोध ना० सिंह—अन्तर-मन्तरक नामो दोकान

डा० वीरेन्द्र सखि—रंझाह सोबय दिअ ।

श्री सुकान्त सीम—राष्ट्रसं बिलिडगर स्टुर (मस) ।

॥ सुदिनाथ मिश्र—बलम कइलया पहुँच गये ।

॥ राम जोषन ठाकुर—हम की करब ?

॥ अनिल ठाकुर—हम आत्म समर्पण नहि करब ?

॥ कुमाल—कई है कोई न करे यही प्यार ...

॥ राजनन्दन ताल हास—संतो, करमन को गतिनयारी ।

॥ निरखन लाम—माई पतोलनि बिरा ।

॥ अनादन मां—'पेचिड बयता' दोल करय लइ ।

॥ सुरील—बरादी पल गेल—खेतक बिस्वा ।

॥ रामाचर मिश्र—बाइ की गाछी ओगारब ।

॥ महेश्वर मां—समय आबय दिथो ।

॥ ऋतु नारायण मां—कोइ साछी अद ।

॥ श्रीकान्त मंडल—छडका पाग ।

॥ शरद चन्द्र मिश्र—गइयो ह बरदो ह ।

॥ भोगेन्द्र मां—पबित्र पावो ।

॥ शिवचन्द्र मां—हमहँ छी ।

॥ इन्द्रदेव नारायण यादव—मगाजोगमनोह जोत ।

॥ राजेन्द्र प्रसाद यादव—हम किसी से कम नहीं ।

॥ भागतल मां 'आजाय'—ताला कहिया खुबत ?

॥ बालेश्वर राम—खेत चढ़ने किसान ।

॥ लक्ष्मी कान्त मां—निर्वल के बल राम ।

॥ श्री इतिनाथ मिश्र—काशी से ठे के भाइ आ के पटकी ।

श्री जगन्नाथ मिश्र—कुइहँ हँ ५ ५ ५ ।

॥ राधानन्द मां—जय सन्तोषी मां ।

॥ कुमुद रंजन मां—कनारी कइय हमहँ ।

प्रो० नागेन्द्र मां—हम बोटंगर नहि कूटब ।

प्रो० रामाकान्त मां—भसे सं बेबस छी ।

श्री कमलनाथ सिंह ठाकुर—बोरिक बूळ ।

॥ कपूरी ठाकुर—भनटा अलूरा ।

॥ राध कृपार पूरै—आगते यही ।

॥ दिगम्बर ठाकुर—खम गुन गोबर भेल ।

॥ रघुनाथ मां—घरा खेलायल की ?

॥ विद्याकर कवि—हंठ-देवकीक अरयाव ।

नोट : महलुभाय लोकनि सं आग्रह जे ओ लोकनि अपन उपाधि-पत्र

श्रीमान फगुआचन्द श्री महाराजक रंग-अचोर, कार्यालय सं

यथा शिक्ष प्राप्त क छेलि । बाद साहित्य शर, नेता लोकनि के

पदि छेय उपाधि नहि भेटलनि-हुनका लोकनि सं आग्रह जे

नवका बचट के प्यान मे रखैत हमरा लोकनिक अनुविधा के

धूमनि आ नवय प्रण नहि गमा अगिला साठक प्रतीक्षा करथि ।

दिल्ली संसदनारायण मंडल

नवकी दिछो, १४ फरवरी ८२ ।
 ब. भारतीय मिथिला संघ द्वारा इन्डियन
 मेडिकल एसोसियेशन समारोह मे प्रातः
 १० बजे सं 'हेमिस्फार' तथा 'मिथिला
 विभूत' श्रुति समारोहक आयोजन कइल
 गेल । समारोहक इन्डियन कर्मि मे भार-
 पति ओ पु. रिदायकाक इन्डियन मे भार-
 तक भन्ने कए मे इन्डियन कर्मि मे भार-
 उदाहरण अइ त ओ मिथिला बिबा ।
 प्राचीनकाल मे मिथिले मे इहल एकटा
 राजा मे शाह के सर्वप्रथम परिभयक नहिमान
 के लीकल देलनि यद्यपि त राजा जन-
 कक राक्षसपुत्रा ने (मिथिलाक अछा ने)
 इरक छप छल ।

उपराष्ट्रपति मिथिलाक गोरखधो
अतीवक चर्चा करैत आंगा कएलनि के
वस्तुतः मिथिला अवधार आ विज्ञानक
भूमि पिक । मिथिले महाकवि बिद्यापति
केँ बन्म देलक किन्कर अयोधोक बोल
आहरो सानाम गुनित भइदइ । ओ
आशा इएक केँलनि जे मिथिलाक लोक
भरत गोरखधो पभरा केँ अधुन रलैत
वर्तमानक विविध समस्यक समाधान हेतु
कइत जे कइदा मिथिला केँ अनुभावत रहत ।

[illegible]

हृदि अवतर पर श्री भोगेन्द्र तनू,
श्री राजेश्वर प्र० वायव्य, श्री रमानन्द शुक्ल,
श्री वसुदेव कुमार आदि वरुण लोकनि
सेही वन्दन मत प्रकाश करवर्धन । 'सम के
सम पाप' मिथिलचक्रक दयनीय यात्रा-
यात्रक व्यवस्था, कृपिक अवस्था एवं
उद्योग-बन्धा नहि रहवा पर विनित्त व्यञ्ज
केहन भा हृदि मे सुभारक डेल कोर
देवन । नादिक वं प्रच्छिन्न रंगारि विव-
लीक भापूर्ण तथा विचार केल कोपी
नहरिक रंगारि कर्मजा-वागमरक
विप्र बगता पर प्रकाश देल रोक

● **महात्म्यातीव मिथ्या संघ,**
नको दिकों, यथार किंतु दिन संपूर्ण
संघि याद—वे धन लयाव भववाक
चाही। योगा हो निविदा भर वे इहिय
महात् संकिता अं यदर डेहिय गामे ने
देखाभोट चाय र किंतु भयाभो केड
आ सकेड। उतराहृतिक लकय उत्साह
वर्द्धक दिक भयसे आ टुका नं वेडी

मायाध की कहल जा सके ? बर्बाद
 योगेन्द्र बाबू रूप अह, ओ भयान
 नेता स एहि सदस्य स बहुत अगुआइल
 छथि आतं ताकल हुनको डोहि देल जा
 किन्तु एं-उत्तमोकात्ता आ हरो
 पुरान हलो राखल आह पर्यंत मिलन-
 मैत्रीकी सदस्य स उल्लेखनीय काब त
 नमि केनिये, देल हउ-उत्साह सेरो
 नहि देखभालनि। धरमर नं सगिष्ट
 हुनका भयन भूत-भाषाक क्याल मैत्रिय
 है-देरपो स सही-नीक बकान-पञ्चनि
 हरो लोकनि स नीक बकान ओ सत्य
 भेते होइताह जे भाव वक्तव्य स धर्मोपा
 वसाधान बर्गमभ। एहि घेर हुनका एते

संक्रय होमय पवतनि आ अपन प्रमोव
धमरा के व्यावहारिक रूप देमय पवतनि ।
हमरा लोकनि जनैत छी जे भाषा के
संविधान से प्रभाव भेट्लेक तकर पाछाँ
रखने किछु समयवाली व्यक्तिक हाथ छळ,
बनता त किछुओ भारी त बड़ बगुमाइल
सदस्य से मैथिली भारी त बड़ बगुमाइल
अछि । ओ भाषा भरिख नैकी नकाँ
जनैत रैवाह जे बातता पैस त पैस आदो-
हन आसल क लेख पत्रब ओखत त पाछु
रौए—आगु नेताइ रहैत छेक । तै
बनतो—पल्ले ओ बुद्धिपीए के किछु
से माहल कैन छथि—तोखन किछु करत
बखन कि ओकरा सुनयो नेता थला
भेटेक ।

एम्बर भी गणेश्वर राम की सेहो
 एहि सेव मे सक्ति यह पान्च मुख
 बात ने ओहो मनेबरि सौमिउ छबि ।
 श्री राजेश्वर प्रसाद यादव आ भी हुकुम-
 देव यादव सेहो कहियो काल भगवतोपनी
 नकां भइखोजत कर कर निनुमान म
 बार लयि । एहि तरह प्रवृति वातके
 पिक—नीक नहि । हमरा मन भर बे
 श्री भावस भा आकाद एहि वंदन मे
 कहियो नाचक छडाइ जे कि हुनका लोक-
 किक मुँह मे ताका लाग्य छनि । बान ने
 ई देखन तांका बिन्द—या कहियाबरा
 कासल रहत ? अग्रगण्य विषय देल कहा
 ताका रहत छनि ? दोसर मान्यक नेता
 लोकनि के अग्रत भूमि-भाषक विकास
 देल मान्य बखसि नहि आयौं सभाधीनता
 रहैत छेक—देहा ठाम दिनके कोनिक
 मुँहर ताका किचक लागि वाहर छनि
 से विचारणीय ।

बर्दाश्त भी कैदार पायेव चीक
प्रबल भर, हरि सँ पुषी भवन कि रेल
मंत्रालयक भार छेलनि, कति वायू
सपना बाकार करैक नात मावल छलह।
परख दुखसँ लिख्य पहेइ जे एहि वंदस
मे भो पूण निश्चय रहलह भा निश्चिंत
चलल छल—जे कि हुनका सँ बड़ बेसी
भाखा करैत छल—पूण निराश न गेल।
आब ओ पटोनी मंत्री भेल छथि—आ
कोशी समस्याक निदान, धायाहि त

स्वर्गलोक मे मजदूर

[illegible]

मखदूर के त अहोभाग्य भानक बारी

[illegible]

कृष्णा समाचार

[illegible]

सदस्य श्री लक्ष्मण राय श्रीक सम्मान मे
समा मेक तथा हुनका सम सदस्य भाव-
मीनी विदाह देलिन। एहि अवसर पर
संघक अध्यक्ष श्री यमनायण राय श्रीक
पदोन्नति उपलक्ष्य मे माध्य भवान करब
गेब। श्री राय भवन परोक्षम भा दुर्गक
कक्ष पर एगो साधारण स्टाफ सं पंचम
आतिथ्यक पदबसि पहुँचि बुकलान-ए
से निश्चित संघक लेख ग्रांथ विषय बिक
तथा सदस्य लोकनिक केन्द्र शिखामद।
संघ आभा करेब एहिना भाओ सदस्य
कोनिक भाग्य बदहाल आ मयम संघक
संगहि आनक गौरव बढाओल।

—रामाधार मिश्र
सचिव
मित्र संघ

महाराष्ट्र राज्य सरकार
मुंबई, १२ नोव्हेंबर १९६०

बेधाथ लीड, कक्का-५ मे मुद्रित । सपादक : श्री अनार्दन भा

प्रमिन्न रेखा

वर्ग—२ संक—७ अग्रणी, १६८२ मूल्य—पचास

सम्पादकीय

मोक्ष नहि अधिकार चाही

संघटन मे फेर एक छेप मैथिली के संविधानक आठम अनुच्छेद मे सम्मिलित करवाक प्रयत्न भाषल । श्री योगेन्द्र झा बतबै सहस्रता सं ई प्रश्न रखलनि सरकारी पत्र ततबै सहस्रता सं दस्ता बहरीकारि देखल आ फेर ततबै सहस्रताक संग योगेन्द्र बाबूक संगारि समस्त मिथिलावासीक संघटन लोकनि दुनि छेकनि सिता खलम पेशा दखम ।

मोगेन्द्र बाबूक एहि तरहक प्रयत्न-प्रयास एहि सं पूरै राखि चुकल छथि । प्रस्ताव आगो सदस्य (इन्दिरा फ्रिड जोर्दि) राखि चुकल छथि । किन्तु एहि दिशा मे मोनेन्द्र बाबू आ हुनक रत्न कम सं भाग्य अछि—से बरि निर्विवाद ।

मोगेन्द्र बाबूक अतिरिक्त भार के सदस्य मैथिलीक कर्ष संघटन मे सहिरोषात करै छथि तार मे सर्वेक्षी योगेन्द्र प्रजाद भाव आ 'विपक्ष' भाक नाम देल जा सकैछ । ओना शपथ ग्रहणक समय मातृभाषा मैथिली मे शपथ कैबाक केन्द्र दृष्टान्तक ओ हुनकरेव नारायण 'शपथक चात' विवरण नहि बा वनेछ के मतदाता संघटन मे शपथ कैनि परबत हिन्दी मे नहि । शपथ की एहि केन्द्र संस्थागतक प्राप्त छनि । विपक्षक भाषा प्रयत्न वक्तव्य मैथिली मे नहि राखि सकबाक विरोध मे प्रयत्न व्याप्त करै एगो उदाहरण प्रस्तुत कैने छथि । पाठक दुखक संग विषय पढ़ि रहल अछि के खलन मैथिलीक संविधानक मान्यताक प्रश्न उठैत छैक त ई लोकनि एकरा नहि म पवैत छथि—जेना पंजाब, तामिलनाडु आ बंगालक सांसद लोकनि मे देखल जाएछ । हुना-बयल आ कुर्ची फेकरादक कथा संघटनक इतिहास मे पुरान आर सत्यक हिनका लोकनिक न्यायोचित माह बलत लजिबा देल बाहरत छनि तखन ई सभ विविधभाव मे रहैत छथि के अपरबलक बात भएलै छथि । एहि सं कम सं कम एतेकरि त भएलै छथि रोहोके के किछु फलक केन्द्र संघटक कार्यवाही कर रहितेक आ प्रेरणाक ध्यान एहि तिल बरहेक । पाठक के देह ई छेकनि प्रस्तावत राखि पुर म वाहरत छथि तें दिनाका लोकनिक नेत पर संघटन स्थापनाक ।

बहादुर सरकारक प्रश्न अछि, इमरा लोकनि कतेको बेर लिखि चुकल छी जे काब्रिही सरकार कमबलत मिथिला-मैथिली विरोधी अछि, ओ एकर कस्यान नहि देखय चाहैछ । ओकर एहि बात मे कतियो दम नहि छैक जे संविधान मे नहि रहनो सभ भाषा के समान विकासक सुयोग सुनिबा देल जाएत । ई मित्रा फ्रिड बिन्दु—चालीसक बिन्दु, छठ्ठनीसक बिन्दु । इमरा लोकनि बनेत छी जे सरकार ओही भाषाक विकासक हेतु कर्ष करै जे संविधान मे छैक । संविधान मे नहि रहलाक कारणे मैथिली केन्द्रीय लोक सेवा आयोगक परीक्षा सं बाहरत अछि । केन्द्र सरकारक पोसा विहार सरकारक बलर उर् के दोसर राक्षसाभा घोषित कैने छल त ओ एत कहैत छल जे मैथिली के राक्षसाभा एहि केन्द्र नहि बनाओल जा सकैछ जे ओ संविधान मे नहि अछि । ओना इमरा लोकनि बनेत छी जे मैथिली संविधान मे नहि रहितो पंगालक शेरख राक्षसाभा बिन्दु । इमरा लोकनि बनेत छी जे संविधानक बलता बना के वल्लो पडिने विधान सभाक सदस्य ओ नमस्तेभर विद आचार के मैथिली मे शपथ ग्रहण करबा सं रोक्क लेल छथनि आ शपथ मे ओ हुनकरेव नारायण यादवक संग संघटन मे सेहो बनेत पटना भेटल । संविधान मे नहि रहलाक कारणे सं सरकारी कोनो विधेयक मैथिली मे नहि छयेत अछि आ एहि राशि सं मैथिली कम-गतिमा के संविधान राखल जाएछ । संविधानक कारणे आकाशवाणी वा दूरदर्शन सं मैथिली प्रसारण नहि कइल जाएछ आ एहि तारे मिथिलाक प्रतिभा के सुयोग सं तथा सरोराय सं वंचित कइल जाएछ । न संघर्ष एहि सं फल नहि पड़ितेक, जेना कि देर-देर सरकारो पक्ष देखीत पवै करैत रहल-रहल, त संविधानक एहि अनुच्छेदक प्रयोजन की छैक ? फिरक ने एकरा फाड़ि फेकल जाएछ ?

भोगेन्द्र बाबूक छेक न मानियो छी जे सरकार यथर बर्तमानक पाठन करत आ संविधान बहिर्भूत भाषाओ के ओ वल्ला दुनिया देहक जे संविधान समग्र भाषा के देल जाएछ त कि ई मौल देनाह नहि भैक ? सरकार के ई बानि केबाक चाहियेक न मैथिलीक

संविधान किनु मैथिलीक ओ
नानिचित्र किनु मिथिला धाम
डाहिजाति सुहुह कल हम
विद्रोही मिथिलाक जवान

श्रमएव जयते

अमरा देव मे कहियो सतक बीत होत छैक । ई ओ समय छल बलन भारत एतन-विद्वानक रूप मे जानल जाएत छल आ एतनम दूकक नदी नीत छैक । इन्दिरा एमर नेता लोकनि मे स्वरदीनता भएलै छलनि, काबिलीक अभाव छलनि, परब ओ लोकनि नरमान नहि छल । न बहामनी कती सुकाएयो पवैत छल त से सत्यदीनताक कारणे नहि अथिष्ट दूरदर्शिताक अभाव । तें हुनका लोकनिक मन मे सतक इकगोट आग छल आभोर ओ लोकनि सत्यमेव बदेक नारा जगैत छल । किन्तु आर सत्य शरि के हक छल मे अमरा सुद उठओने देखल अछि आ सतक विरंगा फहरा रहल छैक । इमरा समकै तत्कालीन नेताजनक मन मे ई प्रश्न उठलनि जे बलन सतक विषय रोहोने छैक तखन सत्यमेव बायते कइनाक भय छी ।

'सत्यमेव बदेते' मोहनदास अम्बालान म नेत छैक । 'चार भारत सरकार द्वारा चलाओल गेल टाका पर भयो'क संसभ नीचा सत्यमेव बदेते लिखल रहैछ ओकर अधिकारा भाग (मेहनति के छोड़ि के) भूत-बाबाकी सं कमाएल जाएछ । नारी-चलाकी सं कमाएल टाकापर 'सत्यमेव बदेते' मोहने मोहल बिन्दु जेना कचरई मे भाराक आहार द्वारा मीठापर शाय राखि कइनाह—जे वाचक सभ जानब... इन्दिरा गोपी एहि बातक सत्यमेव के बलताक नकईए पकड़ि छेलनि आ ओ एक गोट नभ नारा देलनि—अम

मे आन कोनो बल भेल नहि रोहक पाठक आत्मनिमान असेहो छैक । अमलीक संमान मौल कमजि नहि प्रयत्न क सकैछ । जगन्नाथ मिश्र तथा अन्य काब्रिही नेता बल्लो न ओ चारि कोट मैथिल वलान के खान प्रतिक मानैत हो त ई ओकर संघर्ष भूत किनेक ।

मिथिलावासी के अपन अधिकार चाहियेक । न सरकार ओकर भारतीय नागरिक मानैत अछि त अन्याय नागरिक बल्लो ओकरो समग्र अधिकार नेटक चाहियेक । आ न से नहि भेटैत छैक त नागरिकोचित कर्तव्यो करै छैक ओ बाध्य नहि अछि । बाद संविधान मे मैथिलीक चर्च नहि, बाद मानचित्र पर मिथिलाक नाम नहि तइत सम्मान देबाक छैक ओ बाध्य नहि अछि आ ओ दिन दूर नहि जे मिथिलाक नाम-नाम मे सर्वजनिक स्थान पर एहि संविधान आ मानचित्रक होलिना दाह कइल जाएत । बाद अंतिम पर ओकर अधिकार नहि छैक तकरा उदाहरि अपन स्वतंत्र भंडा फहराक छैक ओ छतत नेवार रहत—जे सरकारक इशारे रहैत रहैत ।

कोनो बलुक सीमा होइत छैक । सत्य-सत्यमेव सीमा छैक । पैतृव बल्लो सं मिथिलावासी सतत आग्रह-द प्रयत्न ई बाह्य-बाह्य दृष्टि केतक भारत सरकारक सेमारा नहि छैक जे ओकरा मान्यता । मिथिलाक औद्योगिक-वैज्ञानिक अवस्था के हकार एक बेर नीक बल्लो मन पडि छैत आ समय रहिते हमरि बाय ताही मे सरकारक संग राष्ट्रीय कथान छैक । संगहि मिथिलाक नेता लोकनि के सेहो संवेत म बलाक चाहियनि । ओ दिहना छनि मैथिल के आर अधिक दिन अप मे नहि राखि सकैत छथि । समय कुरो केन्द्र वलन नहि रहैत । काबि अमरा दिन तका जे नहि पवैत ।

* जय मैथिली

अमरव जयते...

टाइम'क अम देवाक मादो अपन स्त्री-
बन्धक आवसक भावप्रकटामोके प्रति
नहि के पेटेछ। पता नै इन्दिराभी एहि
दुर अपन मे वं कर विषय चारैद छबि।
आर देय मे अमक आदर होइ छइ
जाइ आम लोक देवीभार नहि होइयरो
किन्तु मरान मात वष मे इन्मीनियरो
इबारोक संघरा मे बेरोबगार अछि। एमए
अछि बे अरु देय मे गल विचारक
बोझा नहि अछि। अमा' बोझा रहिते
त कोनो इन्मीनियर के बेरोबगार होवक
प्रश्न नै उठैत। आओर अपना देवक
इन्मीनियर ठीकेदरीक छेक बसलोक
खान्ने रंगिगड बाचक ननि ठाढ़ नहि
होएत।

आर त आर, पूरा देय मे रोग आओर
रोगीक संघरा मे रोबीना इन्दि मरल
छेक, किन्तु अपना देवक शकडर देवीभ-
गार अछि। एहि समय बाबूहो जं
इन्दिरा गोभी अमक विषय चारैत छबि
त एहि मे हुनकर कौन दोष ?

इन्दिरा गोभी एखन बार भोजनक
संग अमक विषय चारैतछि। सारी भोजन-
वनक संग बीघ सूरी के विषय सेरो चारैत
छबि। ओहो भोजनक संग बीघ पछिछा
जिन रही कबजिन के 'अमीर' चाहे आर
बेडी अमीर किछक मे म रहल हो किन्तु
सारीव आओर गरीब नहि म रहल अछि।
पूर्विक देवक जेना 'अना' देवक 'सरोवर'
हुनका प्रतिक सूचना मेलेत होनि। ओना
अमर दीपे दिन वं ओ एहि बात के
दोहरा रहल छबि बे चीच वखन राम
बटि रहलए। एखन मन्नाक बात त ई
बिक के सखी-बेचारी भाखि मे
मलेक आदमीक मरगार भखा बटि रहल
छेक। अमर चीच-वखन दाम बटि रहल
छेक तखन मरगार अपनक कहनारक
गणित त बेवो श्रोतियोएक सकेत छबि।
ओना म सकेत बे कोनो दिन भोरे
नोक टुटैते इन्दिराको के मन मे ई बात
भायल होनि बे पहिलका सखल नाग
पुनत म गेब, तें शीमार देय के एक नव
भोजनक खगता छै। हुनका मरियक
हो भेल होनि बे आर संस्थान मे रहिते
लोक अम करे वं बिचकिचारात नहि छब,
तते आई-काँच ताथ खेबाएत देलार
पढ़ि रहलए। जेना कि नैक कर्मचारी,
कोयला उद्योगक वरिष्ठ कर्मचारी। हुनका
एहनो सुभाएक होनि बे रेल के देरी वं
सबनार अमक प्रति लजामावक कारण
बिक। तें ओ नारा देबनि कि हे राष्ट्रीय-
कृत संस्थानक कर्मचारी लोकनि आनो
अही सव के अम करे से लबेनाक नहि
चारी। किछक त भान्सा बीत अमे के
होएत छैक।

अन्धत आन समय नहि बिबो म
सकत। समय वं पेय चीज अम बिक।
हुनकर एहि बात के यदि सभ लोक गंभी-
रता वं ग्रहण करब त नेता भट्ट बाबरा ने
आर देवी सरोवरम शुक्र कटार। देवीभ-
गार नमो बुधान के सम्मानन आ कुछाक
कारणे गलत दिशा मे देव ठका सुखए

कल्पित विद्यापति के जं मैबिली
ग्राम-साहित्यक पिता मानल जाय त
कवि शेखराचार्य श्रोतिरीश्वर ठाकुर के
विदु संक्षेपक अमक स्थान पर प्रतिष्ठित
करल जा सकैत। दुर्भाग्यवश बात के एहन
अप्रतीम परक अपिचारी, निम्बिका-विपुति-
पर श्रोतिरीश्वरक विषय हमरा लोकनि
के बड़ निम्ब वं मेलेक, आ आओरबि
पूर्ण परिचय नैहने प्राप्त म सकल। इक
दिव बं ई 'निम्बिका-मैबिली'क ह्य दुर्भा-

ओ ओर दिशा मे आर देवी सन्धिप
मं बायल। किछक त बाय ओकर अमक
विषय हेतैक।

एहि समय संग ई मन ओहो मन
मे बटि सकेल बे आन अमक भीत हेतैक
त कि पहिले अमक भीत नहि होइत छेक ?
त आर, हमर एक विषय खगार मानू जे
एहि विषय पर आर अपन माय बुनि
मनाइ। किछक त हमरा लोकनिक प्रधान
मंत्रिके कहियो फाट एखन 'नारायण'
मजाक करीव आदति रहलनि।

ओनुहुना अपना ओलप नाराक पुरान
परमपा रहल-ए। दुःप्रम नोत कते छगइ
—तो हमरा एक हे, एन तोरा आबतो
देनोक। एक निदोष तरक अम ओहो मे
छब। लोक एक देवाक छेक तेवरो मेब।
अन्ततः आबादी मेलेक। किन्तु एक
देवा मे ओहो कवर रहि गेलैक आ हमरा
लोकनि के जे आबादी मेलेक से अलकी
आबादी नहि, कारण ओ उदाई वं नहि
समझेता वं मेलेक छब। एही कारणे किछु
सवाल उठिया नहि हब म सकल आ हमरा
लोकनि के माउन्ट नेटन क बच्चा नेहक
मेडि गेलाइ। आओर जे हेड माउन्ट नेटन
अन्ता संग जुली आ अपन व्यवस्था नहि
न गेलाइ आ तकरा उपहार मे भारत के
देने गेलाइ, तें उअइ व्यवस्था इंदिराम
कुछाएत करैत रहत आ ओहि मे बखन
फल मेलेक त ओकरा संभव के रूप मे
प्रतिष्ठापन बनता देखलक। ओहो अपन
पविच सूची लएर क हमरा लोकनि समय
भायल छल।

आबादीक बार उदाइ मे तिलक
'आबादी हमर अमविद अन्धकार अछि'
कते छगइ, तकर अर्थ आहुक नेतागण
गलत बगओलनि। तें इन्दिरा गोभी इह-
ताल आओर उचित माँगक छेक आबाब'
उठमोनाइ पर पबारी लगा देलनि। लाख
नवातुर कबजिन—अब खान बर किसान।'
'अब खान' पर लिखलक घुट नहि कारण
प्रतिष्ठापक मामिला छैक, एखन 'अब
खान'क बारे मे त एते कहिए सकत छी
जे ओकर बिचक कतरे वं मुकाबल नहि
छैक। अल उपवा क भरि देवाक पेट
मरतिहार बिचन थाने भूले गरि रहलए।
इहना राकत मे बं इन्दिरा गोभी अमक
विषय बाँटैत छबि त एहि मे हुनकर कोनो
दोष नहि।

—असिष्ठ ठाकुर

कवि शेखराचार्य ज्योतिरीश्वर ठाकुर

यक विषय पिह व दोसर दिव मैबिल
आतिक निमित्त चोर लुपताइ इव पुनो-
न्युकी प्रवृत्तिक परिचायक। इंदिराम ई
खनका अमरक नहि हबत के प्रतिवर्त
मैबिली मे दबनो 'विद्यापति' रो-ए-बी-
डि-० किट प्राप्त करैत छबि एखन किनको
अन एहि बा एते कतेको विपुति—
अनिक परिवर्ष एहनो अन्धत आर दिव
नहि गेलनि। अथवा एना करी जे विद्या
नहि मात्र उपाधिक पूछब, निम्बिका-
मैबिलीक नहि मात्र आन स्थाप पुति
लेक आहुक तथाकथित विद्यापति लोकनि
एहि मे अपन अपन समय देखाइ केनाइ
उचित नहि बूझि—विद्यापति, जिनका
पर नव देवी काब मेलेक—अन्धरि ओ
सम काएरएर किछक नहि हो—तिनका
पर ओब केनाइ ओकर इमेत छबि,
काल विभिन्न पोथी वं दस-बीस लाख
नकब क छेने सखरहि पेय पोबा तैवार
म आहत छनि आ उपाधि लेल टार वं
देवी वादये की करी !

'धुलु सनाम', पंचायक तथा रंग-
शेखरक उचितता कवि शेखराचार्य श्रोति-
रीश्वर ठाकुर संकृत साहित्य मे पूर्ण
प्रतिष्ठित आ परिचित रहिहए। मैबिली
भगत मे अपरचिते छगइ। १९४० मे
बखन मं मं। इपसवद शाली द्वारा
नेपाल राज लाहनेरी वं प्राप्त हिनक
मैबिलीक आदि गद्य ग्रंथ वर्ण रत्नाकरक
प्रकाशन भाषाचार्य सुनीति बाबूक प्रयास
इन्कहि सभाएत मे इतिहासिक सोचारी
वं देल—एकर मादे अपन किशुति के
हमरा लोकनि बोधि सकली।

'धुलु सनाम'क अनुसार हिनक
समय तेरुम शताब्दी छल तथा ई एतेपरक
पीठ ओ श्रोतपरक पुत्र छलार। स्व-
इश्वाराय बाबूक अनुसार ई बाबू पाही
(पाही मोन) गामक छगइ। संभवतः
इश्वाराय बाबूक एहि मान्यताक आधार
सेहो उक्त पोथीए हो बार मे ओमरवृद्ध
कर्मभूमिना.....'क वर्ण कवि ओकर
स्वयं केने छबि। ओना नेगेटि नाब गुप्त
महाययक अनुसार श्रोतिरीश्वर ठाकुर
अविपति विद्यापतिक पितामहक पितृवेल
छलार। शताब्दिकता जे हो, एखन
ईअरि समय जे एहि संदर्भ मे अपेक्षित
अनुसन्धानक त क्ये की—वर्ण रत्नाकरक
बुनो नीक संस्करणो आइबि मैबिली
मे प्रकाशित नहि म सकल।

कविशेखराचार्यक विद्यापति अनु-
दिशा मे सीमित नहि छल। दखन,
साहित्य, संगीत मे हिनक स्थान अपिचार
छलनि तथा कतेको भाषाक प्रकाइ पंडित
छलार। पंचायक मे ई अपना सखन
मे कते छबि—

असिष्ठ प्रखरमंडितामरकः

लुपतेक दीक्षा गुनः

श्रीकण्ठाचनंतरो सुनि

चटुपटो कलानी निधिः।

संगीतागमधर्मेय रचना

चातुर्ण चूडामणिः (स्व-)
स्वतः श्रीकविशेखराचितरः
श्री श्रोतिरीश्वर कविः ॥
इतिवर्दीक ओष ओ निम्ब श्लोक वं
हेने छबि—

बाबूचू कडा किटीट दुरदे
शेखरमा तिष्ठति
बाबू इच्छति माधवस्य सकला
सामनदमादिपति।
बाबू कामकाम विवर्त बटुका
छोनोले सवैया
ताबल श्री कविशेखरम कृतिना
तबलदे दीप्यताय ॥

धुलु सनाम मे ओ विखेत छबि—
तल्लोए-सुभराय ददन
आबा निरुसायरो
राशः सर्वगुणगुण्य परवी
विद्योतनाचार्यकः।

ओ ओरेश्वर वंश मोडितिको
दलावदाताधायर,
तक्ष ओ कविशेखरस्य कृतिता
सज्जितनाकमते ॥

सदनेन सकल संगीत विशेष विद्यो-
नाभिनव भतेन पुराभवन-वराविद इव-
वरावकापकेने निबिब, आनोएनायामने
भाहुक सरस्वती कलाभारेन अनन्तरताम
रत्नावादकभायककृष्ण कन्दकोनो-दुलमान
मीमांसा मोखेनेन रामेश्वरस्य वीक्षण तब
मस्ता एकिन कीते ओरेश्वरस्यमनेन मा-
याहन ओहीअर आमनलि (मीमराछि-
Nepal N.S.) कर्मभूमिना कविशेखरा-
चार्य श्रोतिरीश्वरके निरुपार विवर्त
धुलु सनाम नाम भाटकर, परधनमंअभि-
नेतुनाभिडिम।

एवंपकारे कविशेखराचार्य श्रोतिरीश्वर
ठाकुरक व्यक्तिक आहुतिक विषय हमरा
लोकनि के हुनके देखन द्वारा प्राप्त होछ।
वर्णरत्नाकर मैबिलीक आदि गद्य-
ग्रंथ देवाक गौरव बार पोथी के प्राप्त
छेक से पिक वर्णरत्नाकर—कविशेखरक
एकमात्र मैबिली कृति के आधारि हमरा
लोकनि के प्राप्त म सकलए। ओना बहुतो
विद्यापति हिनक 'धुलु सनाम' के सेहो
मैबिलीक मानि एकरा मैबिलीक प्रथम
नाटिका करैत छबि, एखन एहि क
मतेम नहि म सकलए।

वर्णरत्नाकर मात्र मैबिलियक अदि
गद्य-ग्रंथ नहि, अपितु समस्त नव्य भार-
तीय भाषाक आदि गद्य ग्रंथ बिक कारण
आर बरि कुल भाषा मे एहि वं पंडितक
बा एकर सम सामाजिक गद्य-ग्रंथ नहि
प्राप्त म सकलए।

मं मं। इपसवद शाली तथा सुनीति
बाबू इकरा 'वर्णन रत्नाकर' कते छबि आ
एही वं एकर मस्ता ओ पिय वखनक
परिवय प्राप्त होइछ। हिनका लोकनिक
मतानुसार एहि गोथीक उद्घा-भाभी कवि
ओ कसक लोकनिक निमित्त एकटा वक-
पदेशक ग्रंथ न्नाइव छलनि, यथा, यदि
(देवाय पृष्ठ पंच पर)

८

३

८४७

नारी, विधवा काटर आ हमर समाज

अजगुन-अनटोटल

"आ, विधवाक दुख-तीन खेक बाद कादम बिचवा भ' गेलीह। कादम अपवि कादम बिचवा छथि आ चलन एहि अस्थान दशमवींका बिचवा के देखैत छी त' मोन होइत अछि बे आगि नैलि वी बेर आ पुरान मे आ मजबूति मे आ एहि देशमे 'जा' कादम वन स्त्रीक शरीरकेँ बेबबक आगिमे सभम क' देल बाइत अछि। ओहि दिन कादम मेट कर बाइलि छलीह त' कनौडीवालीक नमनात छिछ' के केसर विदेस कोरमे छुंमस लखि छजबिन, अनेक दुबार करैत रहनि छओह। ओखिमे केन मातुल छलनि...ओखि निहुइयोने दोकान आ ठाढ़ युनक सभक पिमासठ रहिब' संग-अंगक चुकमोने, नहुँ-नहुँ देग करैत कादम बलनवीक देवावाक भ'हुने वनिदा बाइत छथि—बीवनक अन्धार आकास मे भविष्यवाक बाइत बह-सब ठहर मेव वन कादम।

...जेता निम रंगक, लिन याहि बहान ओल मारवीक-सूर्यक बहक होवा... रोगक पायल, मुखाक बहक, कोरलत, पवन-पवन अलि...ओखिनि, सन-सनिन टाहि, मेक, परम मेक दूधा आ तेमो एसा या वेपरी आगल आ तेमो एसा ठाम पाठल नुशाल बीवनक दिर-दिरा, देहक दिरदा, अखिलक दिरदा, प्रदक्षिण होइत।

...आइ निरल्ला दीदी मेनका छथि, काहि कादम देवीह, पाय कपूर दार देवीह, कतेक कपूर दार देवीह आ कोनो कस्य मृगि नहि देहाइ के मेनका-पल्लनक रखा करिब। सय विस्मयिग देहाइ, मेनकाक शरीर वं पाल्पापनक कामसुखक अन्धाल' करवला, सय दुपट्टे देहाइ, मेनका एलीक देह-राय-ओला करवला..."

राम कसब ओबरीक एक कबा "दखल मेनका" ह' छैत ई तीन सवतलण बिक। एहि कबाक तीन ठामठ वलखीक नेठ तीन या अस्तान मे एकटा बाट छैक, एक गोट पीदा छैक। ई पीदा एसा-जाब बलक पीदा बिक। एहि पीदाक कोनो मानवीय पयासान नहि अछि। सय पीदाक हल छैक, एसा एहि पीदाक कोनो हल तकवाक कोनो प्रयास आइयो नहि भऽ रहल अछि।

निबिंका आइ पछड़क-पछुनावक अछि। दरिद्रता छैक। मछिछा छैक। कुरीति छैक। तन आ धार्मिक कर्मकाण्ड उलस बहाइले नैसाइत जनता छैक। दक्षिणक शोषण होइत छैक।

दक्षिणमे एहिछ छथि मेबिच नारी। बिछा नहि बन नहि। बापक बन मे ध्यावरिक हल नहि। अपन रोबवार कर नाक करि नहि। नोकरि आ दोकानदारी कलाक कोनो सामाजिक परम्परा नहि। मेबिच नारीक कतेक शोषण आ दमन भऽ रहल अछि। तकर ओला संसारक नौ मागमे, कोनो काबने नहि भेटल।

संयुक्त राष्ट्रसंघक मानवाधिकार समिति वेदेन-वेदेन शोषण दिव-सिब-जनमतक ध्यान आकृष्ट करैत अछि, ताहिसें भयावह आ अमानवीय ई शोषण बिक। एसा संयुक्त राष्ट्रसंघो एकर ध्यान नहि देत, तकर कारण छैक जे मनु माराबक बिकबा मे इबि कऽ गलाइल मेबिच नारी ननक भरिनुछट मे जोबिते कराओल बाइत अछि। धर्मक दखन-रेलोमे राबनीति, समाजवालय, अर्थशास्त्र शोषिभयना मे होइत अछि।

लोक करैत अछि जे अहाँ लोकनि समाजक नेता छी। अहाँ लोकनिक कलमे कद शक्ति अछि। समाज केँ सुधारक धर्मस्थान-न्यायपर हमका बह। बिचवा-विचार छैक समाज केँ प्रेरित कर।

हम करैत छियेक सलन कुमारी कन्याक विवाहे वरपण एसा-जाब भेटैत छैक, तं विधवाक विवाहे परबल कतेक मल्लक।

कुमारी कन्याक रूप गुन-विधाक कोनो मूल्य सलन एहि समाज मे नहि छैक, तं विधवाक मूल्य केँ दुरुत। तें विधवा-विवाहक सांस्कृतिक-सामाजिक प्रयास अपन कोनो काम होबनाक सयासन नहि अछि। कोनो नव रीति कल्पन हमरा उत्तरे सभ्य नहि लगेत अछि।

लोक करैत अछि जे अन्धकार-भया आकाश बागि नेठ। कन्या सभ अभाव मेठ बा रहल अछि। एहि व्यवस्था कोनो आ कचहु भयत छैक की नहि? हमरा दुनले एहन आ एहि विधि मे ई प्रथा एहन बहूत आ एकर अन्त एहन सभ्य नहि अछि।

काटर-भया चरि रूप मे एहन प्रचलित अछि, ओकर इतिहास नव छैक। पतिने, आइ सं तीर-वालीस सय पूर्व जातिक मूल्य बुकाओल बाइत छलैक। ओ एकरिपार वरपुले नहि छलैक, कन्याक मूल्य छलैक। आ जे ओ वरपुल्य छलैक आ जे कन्यामूल्य छलैक, ओ जातिक मूल्य छलैक। एहि मे नगरीक कारनाग मेनो संकेत छलैक आ नर्सियो भऽ सकै छलैक। तें एक प्रकारे वासितात लेखल मूल्यांकन आ लोकार छलैक। ई कहु आ सयाव नहि छलैक। ई समाजक अभिशाप नहि छलैक।

विधाक प्रचार-प्रचार, युरोपीय विधाक अपाक होयवा तं हम आहुक व्यवस्था-प्रथा केँ जोड़ैत छी।

बापरि कर कापर-इंजीनियर नहि होइत छथार, नोकरि कोनो योग्यता-अन्तता हुका मे नहि रहैत छलनि, तहिना एहि लोक बाति सं कुल वं अंश बूझल बाइत छल। आहुक लोक जन वं, जन कमवाक जसता वं, पर वं सय दुरुत बाइत अछि।

बहिया चरि लोक भार बहाँ युरोपीय कुछिछा वं पीकित नहि छल, तहिना चरि

...जेना कि पता नबबब, निर्धारितक संगि सगुण विचारि-प्रदेश (विचार) मे प्राथमिक कडाक छप लोकोनिक शीव पोषीक छैक हाहाकार मल्लक भऽ। मार्च मास बीति गेलैक परब पोषीक फटी पवा नहि छैक। विचार मे एहि एकर पोषी निगर देख दूक कपोरेपन एकर आ ओकरे द्वारा एकर वितरणो कएल बाइत। ई वंस्था विहार सरकारक निजी वंस्था बिक। ओना एहि संस्थाक छेक ई कुन नव पटना नहि। प्रायः प्रति बल दहिना होइत छैक। विचारवा एहि छेप ई छेक जे मेबिचो छंगारि आनो भाषाक पोषी उपलब्ध नहि छैक जलन कि आन-वेर आन-आन भाषाक पोषी त समय पर भेटि जाइत छलैक परब मेबिचो-पोषी अगला-वित्तमर ह' पडिने नहि पठाओल आइत छल। भ' वल्ल मेबिचोक छाप-चित्तक मुल्यमंती पर फेर ने करी मेबिचो विरोधक आरोप लागनि आ तें 'लोक चरित कपुनाम नमः।

ओना विचार मे छाप लोकनिक छेक ई एकमान समस्या नहि छैक, एहन कतेको समस्या छैक। उल्ल संस्थानक पोषी सभ छुपरा पोषीक दोकान सं विवाही सभ कोनैद। युवा ई पोषी ओकरा तलनहि दोकानदार देत छैक जलन कि ओ ओर विषय नोटक पोषी भिने छैक विचार हो। नोटक पोषी त एहने रहैत छै जे ओकर व्यवस्था-प्रथा एतेक भयावह नहि भेल छलैक। जेना-जेना द्वारा लोकनिक युनक नोकरि वना विधा पलत जसता, नीक वन कपोरे वना पर आ नोकरि एतेक अन्धकार, दुनक दाम बहूत कमनि। आहुक प्रताप विधा आ विधाक बल नोकरि लकबाक ई दोह व्यवस्था केँ बढी-हक अछि, बहा रहल अछि आ आहुओ बढाओत। लोक विधाक प्रति हाकां-हाकायन सेठ अछि। लोक नोकरि मे बार कमायवाला परक प्रति हाकां-मेठ अछि। तें लोक व्यवस्था आ वर-मूल्यक प्रति दिनोदिति मेव आसक सेठ बा रहल अछि। तें हम देखैत छी जे व्यवस्था प्रथा वल्लक स्थान पर बढैत अछि।

लोक करैत अछि जे विधा बहल, बागल बहलैक, लोक व्यवस्थाक कूला, अमानवीयता आ अनुपादेयता केँ दुरुत आ काटर-भया समाज भऽ बायल। हम एकर उतता देखैत छी, विधा कूलाक वल्ल वल्ल काटर-भया बढैत अछि, बढैत नहि अछि।

हम आहुक प्रबलित विधा-प्रणाली केँ, युरोपीय विधा प्रणाली केँ कुछिछा करल अछि, जे हम बागि कऽ करल अछि। आहुक विधा नोकरि कऽ पला लोक जसता रहल अछि, विदेकडील मल्लक निमाग नहि कऽ रहल अछि। प्रबलित विधा वं लोक बन-जोखन मेठ

एको पति छुट नहि रहैत छैक आने टेकल्लक वग कुन सगल। दाम टेकल्लक सं ठामहि दोर-देकर रहैत छैक। परब मे नहि कीने जे हेतु दोकानदार दोर दूक देवेक नहि तें बाण्य भ ओहो कोनहिटा पडैत छैक। अखल जे टेकल्ल दूक कनिटीक संग खुबरा बिकना सगल कोठि-गोठि रहैत छैक आ रहैत छैक नोट विखनिहार जवनिहारक। आ एहि वंछित परबत्रक शिकार कोत भर छाक अभि-भाषक सभ। सरकार सभ कोत भर-परब ओकरा छेले जलन छ।

मेबिचो लोक माधम वं बहनिहार तथा मेबिचो बहनिहार छात्रक छैक त ओकरो समस्या ई छैक जे जलन कि ओही वग आन भाषाक पोषीक दाम दू-तीन टाका रहैत छैक तार ठाम मेबिचो पोषीक दाम ठामहि दोर रहैत छैक आ से शोषण रहल बाइत छैक लोक लोक मेबिचो नहि पडि हिंदी वा अन्य भाषा पढ़य।

टेकल्ल दूक कनिटी आ निहार कर-करक ई वनिमिच्छा परबत्रक जेना वं बनि लल्लक आ पता नै करिवापरि जलत रहत। अन्धकार नात जे जे जेना आन भाषाक लोकनिक जलन यद नहि होइत छति जे एहि दुनित परबत्रक विरोध करता। विधाक वल्लापक एक वेव (रोबोक पुठ वांन पर)।

अछि। देखैक पार नहि, बारलो पारोकर लोम नोकरि पोषा बला सभ मे हुरि-हुरि भरल छैक, ई लोम मेर विधा उल्ल कल्लक अछि। काटरक लोम आ नोकरि द्वारा वेव-अन्धकार टंग वं अन्धित काल बाय वना वनक लोम केँ हम एकरा-एकर नहि हुनैत छी।

बापरि ई विधा बिकली, लोमो, सयाव-वेतना सं बिदीय लोकक निर्माण करैत रहैत, तापरि ई विधा कुछिछा रहैत करत। कुछिछा ओ बिक जे व्यक्ति केँ वैयक्तिक लाभ-सार्थक विज्ञता सं उतर उठा कऽ ओकरा सामाजिक हानि-हानिक विज्ञता सं उबार, बलिदानी आ अंध जनपय।

निबिंका जे जागर-शोरीक मूल्य छैक, वद-नरीबक मोठ होइत छैक, कुमारि कन्याक कोनो नोक नहि छै। कऽ कुमारि कन्याक मोठ नहि छैक, ततऽ बिचवा लो आ साधारण स्त्रीक की मोठ होइत छै?

निबिंकाक लो जलन मल्लक नहि छथि। कन्यादान अन्धो सुचित भेटत अछि जे नारो दान मे देयाक वल्ल बिक। जनानी लोक नहि बिक। जनानी जान, चाउर, गाछ भा दूकरी-दूकरी बकौ दान देग योगद दूकद बल्ल पोद। बिबला नेतु' वहाँ एक गोट बल्ल, एक गोट "कपोरेटी पोद।

● जीमिकान्त

लालबुभुक्षक चिट्ठी

श्रीमान् सभापद वी महोदय

वय मैथिली।

आमा हाउसुति ई जे अप्पके पत्रिकाक पसुआ अंक मे अपना डेल हुय, उपार्थि चीनत नहि देखि बगिडुमरि कइ लाल बुभुक्षक के मेळनि। परन्व करवे की करिवा, बना क्पावे बाल छनि त अहाँक दोरे की? सभापद जी वं सच पुछी त कम वं कम यदि सदन मे लाल बुभुक्षक शत प्रतिशत मैथिल छथि। तें वं हुय, प्रायो कबु नहि भेटैत छनि त अपन भाय के दोप दूय लंडनट भ भारत छथि। ओना ई गय त कहु के हुम्मे हयत के कउन कोऊ के काब पड़ेत छैक त इन्को वं तेदक बोगार कर लाल बुभुक्षक द्या दोहेर किनु जहाँ कि काब भ गेलै त फेर फेरी तेरी रंगा। तें ते बादबर्हि केनरो काब उदेम कतौ रोऊक, लालबुभुक्षक के लोक नोटो हकार देवाक खगता नहि बुझेह। आ एक छथि लाल बुभुक्षक, जे निनु हकारि वगैराम उपस्थित। से कहे ली सभापद जी, भनहि मन बडि गेल, यत फरकरी से पुर्णिया से बाबा विद्यापतिक प्रहरी तदे धूम-धाम वं मनाबोल गेल छै। भरि ज्वार मे बलरगा नोट, छलक। बाल छनार त लालबुभुक्षक। मुदा लाल बुभुक्षकरी त तेरी, भनकी पतिवै उपस्थित। ओना गाम वं जेवा मे कने विहस भ गेलनि आ तें ओ दोहर दिन रहूचि छुछा। सुख जेगा कि कइती छै— बाबू तेगल क्यार उगहि, गेह परि हुनकी संग सेठनि। जाते देखैत छथि जे मंगर मैथिल कुम्हण—गुल्ल मंत्री दान् भी कासाय मिश गरथि रहल छथि। से बहैत ठी देखि तेरी त लाल बुभुक्षक के सलाह प्रदि टिकावत चडि गेलनि। परन्व कता की? छहारी त चिनु नैतके।

सभापद जी, अहाँ एक पत्र मे लिखैत रही के वादक्य करण स्मरण शक्ति कबवार पवि गेलथ। यदि निमित्त हम निरामित श्रीमान् कोऊ सभा देने रही। नं अपने से क्रेत हेव त निचिते स्मरण शक्ति बढल होयत आ तें अपने स्मरण होयत जे पटनाक जेतनादीन सनितिक मंच वं जगलाय बाबू बाबल छलार जे ओ मैथिलीक हेतु किनुभोटा नहि करताह। परन्व एहिदाम ओ पर सष्ट भाषा मे कहनि के मैथिलीक संबैधानिक मान्यता दिखल छेल बिहार सरकार बनन कइ आइ। ओ आरो कहनि जे प्रवान मंत्री या एर मंत्री नै कि आशावन देने छनि के संबैधान संशोधनक समय बहि पर गभीरता पूर्वक विचार कएल जावत।

सभापद जी अहाँ के भनहि बनाव जगलाय बाँक बोली परिवर्तनर भयव लयाय परन्व जानथि तिनकर दिनानाथ

जे लाल बुभुक्षक के कनिषो खुता, लाल होइत। अथल मे लाल बुभुक्षक के नीक बकी बुभुक्ष छनि जे भारतीय नेता लोकनि के नात बदल मे ओलवो समूह नहि संगैत छनि जते बसेया जिना कनायिका के झुंझा बदल मे। तें वं सुलभमैरी महीदय कयती मे परिवर्तन सेने केकनि त बहि मे अवरख गुंवारय कय छैक। आव गय रहल प्रधान मंत्री आ एर मंत्रीक आशयनक। नं अपने झुंझार, इदेत हयत त नीक बकी बुभुक्ष हयत जे किनुह दिन पतिवै हायवारी झुंझ मेवा भी भोगिद भा जीक प्रकाक सुबाव मे रहसनी बाके कने रहिनु जे मैथिली के संबैधान मे स्वाम नहि देल जेतैक। कइना ई जे संबैधान संशोधन सह भन्मदिया होइ छइ। ओना अहू के झुंझ हयत के अपना जेगरो सरकार—उदेत-बसेत बहि मे संशोधन क्रेत रहइ-इ। आ माया बिबूक छोट-छोट रायको निर्माण करि रहइ-इ।

जहाँबि प्रधान मंत्रीक बात आइ त लिनका व हमरा वं नीक बकी अहाँ चिन्त होएनि, कारण १९७० मे जे प्रतिनिधि मंडल हुनका वं मेट केने कउन ताई मे अपना रहने करी। ह पत्र छैन- बरि अवसे अइ जे तवन प्रतिनिधि मंडल संग अइय डक्ति, नायू, क्पाइ आ प्रवान मंत्री 'धरातुमति पूर्वक' विचार कलाक आख्यान देने छलथिन। यदि लेख डक्ति नायूक अग्रगण्य स्वात धूचकारी जगलाय शत्रुक एकान्ती मे ओ 'गभीरता पूर्वक' विचार करवाक बात थकीह-इ।

त से करी ली सभापद जी, स्थिति त अहू वं अपन तुकाइत नहि रहल हयत। परन्व बाध बुभुक्षक के दुख यदि शत्रुक सेठनि जे बनाव जगलाय बाँक उपरोक्त घोषणा पर ओहिना कयती गद-गाढ़ा उठल जेना बुभुक्षती मे छप गइय-दाइय आ बिभरे-विभरे वं बाकी ओकरे आवाज सुनार पड़ेत छैक। इरा अहाँ के हरो बुभुक्ष जे ओह वं दखिा नहिनेटा पढ़ाहत छैक। ने त कहु भूखा, पुर्णिया जे कि मिथिलाक एक महत्वपूर्ण स्थान अइ, मैथिलक गद अइ ताइ ठामक कलेब मे मैथिली-प्रतिष्ठाक वद्वार एखन बरि नहि छैक। हमरा त हरिरो बुभुक्षी ने छल ई बात। आ बहू छेल मैथिली भाषी के माऊ काय पढ़लनिहै। आरो हसीक बात त ई मेळ जे ली सादेव पुर्णिया मे विद्यापतिक मंदिरक निर्माण छेल एक लाख याका देवाक भाषावन देठनिहै। अहाँ के हुम्मे हयत जे विद्यापतिक दीपार निवसी मे संकिर्पाति वं नहुंया कानन आरम्भ क देछ। सभापद जी बलिहारी करी मैथिलक विवेक के जे मान बहन मातृवाती सय के बामांजित नहि करैछ, तकर स्वा-चनाओ करैछ आ ओकर ककथ पर

कविता

मिताक नाम

लिसबा ले बैसे छी

मंगा अवतरणः कथा

लिसने चलि जाइत छी

कोशी-भ्राणक वधा

स्वभाविक

खन्ध-संभ

अभिधापित क्रोशिको

आतनाद कोलाहल

मैथीक नृत्यक क्षंग

क्रन्दन चिरकातिक थिक

संभय शमयान मे

किन्नाहु नजि स्तोत्र-पाठ

वटा ध्वनि

शंसनाद

रुक्मिणी, सांसेहीन

कंकालक द्वेष

हमर मातृभूमि मिथिला

'विस्थाता सुवनत्रयम्'

सिन्धुना ई-

विसरल कि जाइत अछि

माने छी मोत

सत्य सप्रियहुं अष्टांप तोहर

होति गेल हमर, असुय

लिखि नजि सकै छी आव

व्यर्थ करै छी प्रलाप

संकुचित विचार बोध रहने चलि जाइत अछि

किन्तु

हम बाध्य छी

जखय त चाहै छी

आयक आलोक नय

निराशाक बिहरो

मिथलांने चलि जाइत अछि

लिखबा ले बैसे छी

कथा आजादी के

वधा त्रेपवादी के

लिखबा ले बैसे छी

—राम सोहन ठाकुर

बपदीयो भीछ। भव मे मिथिला मे एक बड़ प्रबलित बहरी नहि छैक—सकाइक प्रयासा बला—से प्रसिद्ध मैथिली लयण ताही मथाया से छथि। आ फल जे की हयत से त अहाँ सन हुम्मुक कोऊ वं तुकाइत नहिहै हवाक चारी। ह त कहैत छै छब्बु, ओहीदाम वं फिर्लाक पचात लाल बुभुक्षर भावन-रखनि ब्याधि वं प्रल सय ओकावन जने छथि आ ते अहाँक आदेशाद्वार रचना पठेवा मे अपनय छथि। भरोष राख जे सत्य मेवा पर स्वना अक्से पब्रोताह।

अपने के रचनाक अभाव नहि हो ताई निमित्त ओ अपन प्रिय-बन्धु 'विषय-वंधक' भी के सेहो अंदुरीय मल सरकारी हाक वं पठा चुकल छथि आया करैत छथि जे छिमे हुनक सहयोग अहाँ के प्राप्त रह्य। एखन बतने।

आपकी

श्रीमान् लाल बुभुक्षर

उभयुक्त भाषावादी

★

अज्ञगुत अनटोटल...

हिसा के हेतु यह कहि कहवंच मे समझिहि
अह—हो ओ सम किहु करत हो अयाए
बेनाह अर्थ—

०० पवित्रम वंगालक सहराक शम्भर बाट
 बामक बरबा बामक 'द्वान-रिक्शा' चल
 फरे लेक उनाहुअ अथ। ओना कोक कोनै
 ने कदवाबारा लन अथ। इलाक के टुक
 आ टेम्पु बाम कोनै रीत इलाक के कि
 रिक्शा। पंखत गावक रिमायटी शेवाक
 दाबी कैनिहार माक्यवादी सकार टुक-
 टेम्पु पर कुल कारवाह कबा ने पूण अल-
 मर्क काह, अलान कि अविदिगक बी-योकि
 पवित्रम बाट ५-१० टाका उर्वाणन कैनि-
 हार अमिकक मुदक आहार ओ जीनि
 रहख।

संस्कारक कदव जे हरि ठाम जाइलें ते
 प्राप्त रिधा स' देसी नितु जाइलें सक
 रिधा छेक आ मात्र तकर पर रोक लग-
 न्न वारि छे । किंतु अं सवाल मात्र बाह-
 सेवक रतिक जे लाइसेन्स देनाइ संस्कार
 लेल पेय वात नहि छेलें । जे ओकर
 मासिक वस्योन नहि कते छेक ते रिधा
 बालक नामे किंतु पाद्यों ल कें लासेन्स
 देल जा मुक्त छेलें । हरि सं स्कारो
 ते किंतु आम्हनी होतैक आ गरीबक
 भारी नहि जिनैतैक । मुदा वात से
 हरि सं स्कारो देक तखन नै । जेना कि पता लागल,
 संस्कार लासेन्स प्राप्त रिधामो कें भाट
 जे संस्कार स' आठ नवें राति परि मुख्य
 बरबर चत्वारशर मनीचिय लगैवाक सोबि
 हल्लद । एत छेक जे भाट वजे रातिक
 चत्वार स' आठ नवें सकाळ वरि रिधाक
 चत्वारश नहि चल्लाएक वरार्य भीक—
 काण जे एही समय मे वगरी भेटव कते
 होतैक ।

'हरि' सं जो मात्र 'विश्वोवाक' अति
 तेक से बात नहि। साधारण लोक, केकरा
 त त अपन गाड़ी छैक आ तेनेकी पर
 दुइवाक सेक जेवो मे पाइ, तकरा छैक त
 एर सुलभ साधन छैक। गरीबदाक
 पोषा-पुला क झूक पठेवाक छैक हरि सं
 स्या आ विवश दोवर साधन की
 दरेक ?

एखन जहाँ तारी पुलिख सभ रिखा
 आमा करे मे देश सक्रिय देखल बाइल ।
 रहिने चौबन्ती-थन्ती ओमुल्लिख छल
 एखन रिखा के पुलिख मेन पर लहि
 आमा ने जमा क रहल-ए । एखन बाइल
 ने सभ के तोड़ि वो करा देल जायत ।
 पढ़ल छैक आ रिखाबादक
 सभ हताश सेल अर । ओकरा सभक ने
 ने कुन नेता—ओकरा
 लख छौबनिहार ।

जना कि पता आया-ए आ लोकसभ
बस-ट्राम मे चले, से देह रिखा बिब-
निरार प्रायः सभ से सभ अंगारी बिक
ते ओकरा सेवनाक छे ई परकरी नाहि
बिके । ई ई बात सत्य हो त एहि क्षेत्रीय
इतिहासक जते निन्दा कएल जाए बाड़
इत । एहि विषय पर मानवीय इतिहास
सं सोचल जेनाक चाही । ई सूरियह

रिक्शा-अवरोधक तत्व शिक त सरकार
मोकरा हटा दोक, परन्व ताह सं पहिने
जगभग दस हजार लोकक रोखो-रोटीक
व्यवस्था त मोकरा करक चाहिएक ।

खनोत्री सं रामचन्द्र विनोयो
 झिलेत छथि—इदिमंगा आकाशवाणी केन्द्र
 विहार राज्यक सभ सं बटिया केन्द्र अछि ।
 एकर जतेक प्रसारक इन्ता छैक तार स
 नेही गुटवाही, भार-तोषाबाद, बातिबाद
 आ आ आराधनी इतय ब्याप्त अछि ।
 ओतये नहि कार्य-क्रमक स्तर आओर नेही
 घटियै रहैत छैक । फेब्रोको बालाकाय,
 कषाकार आ भयम स्वनाकारक रचना
 एहन गरोछ जेना हुनका पढ़ावै-लिखनावै
 सं कोनो मलबब नहि होएन । मुदा केन्द्र
 मे जे हेछ हुनक धर्मवी छनि तें हुनका
 कोकय आर्मबै ।

भाषायाणी दक्षिणा क्षेत्रे मे सुव-
वाणी आ जातिवादक बोधबाह अछि ।
अबकी रचनाकार त पाबनि-तिहार अपन
रचना द देवत छथि, परन्तु से रचनाकार
नहि छथि तिनका वेद-देउ सुनल आ सकैत
छथि । कार्यक्रम संयोजक इन्द्रा विशेष
संग के कार्यक्रम दय बन आ यश देवाक
निचयनक केने छथि । एक दोसर के
संगम पहुँचैक थपसाय सुब बाद पढ़ने
अछि ।

प्रतिष्ठित रचनाकारक नामिता ये
प्रमाणवाणी प्रायः ई कते भलि जे स्वतः
रचनाकार के हुनक पता व अनुभव पता
है। मुता बहिम ठीक त कर उतया
रीहल। रचनाकार द्वारा प्रेषित रचनाभो
तयल देल बारह भववा हेरा जेवक बहवा
बदल वाहल। अनुभव जत त हुनके पटा-
गोल बारह जे मीयक स्वायत्तिक छनि,
अर्थात् छनि, यीयै छनि वा कमि-
न देत छनि।

यदि केन्द्र वं जे कार्यक्रम प्रचारित
 इच्छा ताह मे एकलपता नहि रहैछ ।
 केन्द्रक मुख्य भाषा मैथिली बिक्रम आ ते यदि
 उच्च मैथिली कें मुद्रिक वं घंटा भरि
 समय देल गइल आ जे कार्यक्रम प्रचारित
 इच्छा से जातिनाद, भाद-अन्धोबाबाद मे
 चल रहैत अछि ।

बहिर केन्द्रक कर्मचारी लोकनि आवे-
 ला निदेशक के अपन बाइ मे फंसा लेत
 यि जरूरी ओ तोड़ि नहि पवेछ आ ते
 ओनो समाधान-सुधार नहि क पवेछ । ओ
 कर्मचारी सभक हाक सेलओना मात्र वनि
 रहि जाइछ ।

उचित त छलै के केहीय सयना
के प्रमाण मन्त्रालय एहि दिख ध्यान दित
बाहि-बाहि घोटाळाक जांच करैत । बाति-
पुनः, गुटबाद के तोड़ि सांभूतिक अग्रचार
रौनक परम आवश्यक देखन घरी रच-
नकार के अग्रसर भेटैत, लोक के नीक
सँ परिवर्तन होएतके भा एहि केन्द्रक
संस्था विद्य होएत । की सरकार हकका
व्यवस्थाक नहि ओरोठ ? की ओकरा एते
बलति छै के एहि दिख ध्यान देत ।

★

कवि शेखराचार्यः...

नाथक वर्णन करवाक हो तं कोन-कोन
विषयक उल्लेख करव उचित, यदि नाथि-
काक वर्णन करवाक हो तं की सम नितरण
करव आवश्यक ।

वर्ण-रत्नाकर सात कळोळें मे विमान-
कित अह । यथा—(१) नार वर्णन (२)
नारिणां वर्णन (३) माध्यान वर्णन (४)
अष्टम वर्णन (५) मयानक वर्णन (६) भट्टादि
वर्णन (७) इमान वर्णन । इह सात कळो-
ळेंक पयान वर्णनक संगति कतेको अपयान
वर्णन अह । इयम प्रकार ई वर्णनक हेतु
विरुध्द रत्नाकरे बिक ।

वर्ण-रक्षाकर पट्टा सत्ता दू गोद
 वात स्पष्ट परिलिखित होइय । पहिल त
 र के छकर भाषा शिखर तथा विषय वस्तु
 हरि वातक अष्टाष्ट्य प्रमाण बिबि के नैबिबि
 भाषा साहित्यक शुभारंभ हरि व कर्म सं
 सम ५ र ६ वर्य पलिनहि मेळ होइत ।

मैथिली विश्वविद्यापीठ केन्द्रीय

[illegible]

डा० दिनराज शर्मा
कुलपति

सम्बन्धन तथा परीक्षा केन्द्र स्थापना

मैथिली विषय विद्यारथी केन्द्रीय विश्वविद्यालय संकटोत्थान दारंग जे
शैक्षणिक संस्था सम्बन्धन परीक्षा केन्द्र स्थापना अथवा मान्यता चोरीत छु भो कुर्या
चारि सौ टाका निरीक्षण शुल्क संग अपन बिबल्नी अधिष्ठान प्रस्तुत करबि ।

डा० प्रोमप्रकाश शाण्डिल कुल.मित्र

नेशनल मेडिकल रजिस्ट्रेशन बोर्ड

नेरगल मे दिहल जित्टुवन बोर्ड, संकटमंचवाम, दुसंगा द्वारा आर० एम० पी०
ए० पी० आर० एम० एच० तथा आर० एम० ए० क प्रमाण पत्र अनुभव एवं मौखिक
परीक्षाक आधार पर माति करवाक छै १५- टाका मे नियमबद्धी एवं २०३ ग्राम
इन्ड्रज वा संकेत ।

डा० जयनारायण शर्मा सचिव

(विज्ञापन)

—मुजतबा अली.

देखिल बयना

पाठकीय परिचारक (सलियना) सदस्य

१६. श्री कर्मायालभा, कलिकाता	२७. " स्वाम नारायण भा	बर्नपुर
१७. " मोहित मिश्र	२८. " कुण बिहारी भा	खिडुआ
१८. " रामचन्द्र भा	२९. " तारा नन्द भा	नरुआर
१९. " विष्णुकांत भा	३०. " दुर्गानन्द राय	हवड़ा
२०. " देव कुमार भा	३१. " सुभकांत भा	हवड़ा
२१. " कुण कान्त चौबरी	३२. " गीतानन्द चौबरी	उषानगर, कल०
२२. " गोपी कुण भा	३३. " हेम भा	" "
२३. " विनोद राय	३४. " रामाश्रय खत्री	नवकी दिखी
२४. " आदिल नाथ भा	३५. " श्रीमती अंबती भा	" "
२५. " रामनाथ राय	३६. " श्री देव भा	हिन्द मोटर
२६. " वंशीधर भा	३७. " स्वामा भगवतो	'पुस्तकालय, मछोडा, दक्षिणगंगा

विशेष-बयना

मैथिली शुक्ति मोर्चा, कलकत्ताक एक आवश्यक बेशर आरामी २८ अप्रैल १९८२ के बेरिया ४-३० सं उषानगर स्टेशन में होइत। मोर्चाक प्रत्येक सदस्य तथा सदस्यी लोकनि सं एहि बेशर में उपस्थित होवाक अनुरोध कइल जाएत।

एहि बेशर में आमद-खर्चक हिसाब सेहो प्रस्तुत कइल जाइय तें प्रत्येक सदस्य सं निवेदन के हुनका पास के रहीद बरी अवबद्ध/अवबद्ध होनि तथा बन्द्याक पाह होनि से ११ मार्च १९८२ बरि संयोगक डग (देखिल बयना कार्यालयमें) अथवा श्री बनार्दन भा, उषानगर लग बना के देखि। एहि अवसर में प्रत्येक सदस्य के १५ मार्च १९८२ क पोस्ट कार्ड सेहो लिखल जा सकल छनि। कुनू कारणवस बिनका पत्र नहि सेटक होनि से ११ अप्रैल १९८२ बरि रहीद बरी तथा बन्द्याक पाह-बन्दा के सकल छनि।

कुनू कारण वश जं किनको उक्त लिखिबरि रहीद बरी वा पाह बना कइला से अनुविभा होनि आबोर। अथवा बेशर में उपस्थित होइला से अनुविभा होनि तें ओ तकर पूर्व सूचना देखिय बयना कार्यालय में लिखित रूप में प्रताबधि से अनुरोध। बेशर में विचारणीय विषय रहत—

१. आमद-खर्चक हिसाब
२. अगिला कार्य-क्रम निर्धारण तथा
३. सन्धान

बिनीत :

रामाश्रय नारायण ठाकुर
संयोजक

'देखिल बयना' चरदारक दर :-

१ प्रति	५०) पइसा
१ बर्षक	५) टाक
५ बर्षक	२०) टाका

पाह पड़ेवाक पता :-

श्री बनार्दन भा,
१७/६, उषा नगर,
कलकत्ता-७०००६८

विज्ञापन दाता लोकनि सं :-

'देखिल बयना' में अपन विज्ञापन दय लाभ चलाइ। कम खर्च में सुन्दर ढंग सं अधिक प्रचार एक मात्र साधन।

सम्पर्क कइ
विज्ञापन व्यवस्थापक
अखणोदय प्रकाशन,

अखणोदय प्रकाशन, ३३/५, देवदार रहमान रोड, कलकत्ता-७०००३३ क लेल श्री मोहम्मद भा द्वारा प्रकाशित तथा वामनियर आर्ट प्रिंटर, ३२-बी, बुद्धबद वैशाख स्ट्रीट, कलकत्ता-५ में प्रिंटित। सम्पादक : श्री बनार्दन भा

बाल गीत

झिझिर कोना

झिझिर क'ना झिझिर काः कान काना जाउ
मिथिला के आखन ने समतार खेलाउ-

उत्तर हिमालय आ दक्षिण में रंगा छइ
कोशी आ गंडक में हेलू नहाउ।

उत्तर आ दक्षिण के भेद बिसराउ
मिथिला के सन्तति छी मैथिल कहाउ

कन्हा स कान्हू जोड़ि जाति-पाति आड़ि तोड़ि
मिथिला के नाटि उठा साथ सं लगाउ।

मातृभूमि, मातृभाषा महान
कसनी ने होमय एकर अपमान

मायक जे बोल छुनि बाजें में लाज करी
अपनी बाजू आ अनको सिसाउ।

राखू नमस्कार काठी के कान्हू
चीन्तल ने जाएत के अप्पन बा आन

मैंत जखन होइ वा जाइए लगे छी
'जय मैथिली' केर आदति लगाउ।

—रामलोचन ठाकुर

• ई गीत एहि सं पहिलहु एकठाम प्रकाशित भेल छल। 'देखिल बयना'क पाठक लेल पुनः प्रकाशित कएल जाइछ।

'देखिल बयना'क पाठक लेल विशेष उपहार

राम लोचन ठाकुरक तीन गीत बहुचर्चित पोथी—

१. इतिहासहंता (कविता संग्रह)

२. वेताल कथा (हास-व्यंग्य रचना)

३. प्रतिध्वनि (विदेशी कविताक मैथिली रूपान्तर)

बारह टाकाक पोथी मात्र आठ टाका में।

सलियाना सदस्यक हेतु मात्र सात टाका में।

बी० पी० खर्च अविरक।

इच्छुक न्यक्ति सम्पर्क करिय—

अखणोदय प्रकाशन

३३/५, डा० देवदार रहमान रोड,

कलकत्ता-७०००३३

कह लोचन कबिराय

सरकारी फरमान थिक श्रमिक मजदूरक नाम

ई उत्पादन वर्ग थिक सुनू सोलि सम कान

सुनू सोलि सम कान न बिसरू एसमा नासा

मूह जाबि करू काज, न हो अधिकार-तमासा

कह लोचन कबिराय श्रमिक काजक सरकारी

लाभक मालिक मात्र घोषणा थिक अधिकारी

प्रगति रचना

वर्ष-२ अंक-८

मद्र, १९८२

मुख्य-संचालक पांडे

सम्पादकीय

मैथिली आन्दोलन आ माटि-पानिक प्रश्न

मैथिली नाम पर अगर बरि के किछु देख-इ से प्रकटि सं मेबर। यद्यपि एहि आन्दोलन उपरक के नकार नहि बा सकैछ, तथापि एतबाधरि मानहि पड़ैत के आइ मुल सत्यक रचनाकार्य एहि आन्दोलनक अंगरूठ नै छै, से एतहुँ ओहिना पड़ैत अइ। चारि ओटि मिथिलावासी मैथिलक संग स्वाधीनता प्राप्तिक पैरील बरल परवातो भारत सरकार दोसर लोक नगरिक सन व्यवहार कए रहल अइ। ओकर भाषा-संस्कृति मात्र अनदेखेला नहि छैक, अपितु ओकर विनाशक छैल गेल तहि दृष्टिके रचक बाहर रहल ए, आरतन-आरतन बनाओल बाहर रहल-इ। ओकर आर्थिक विकासक कथा त कहल रह्यो, उनटे एहि पैरील बरल से कम-कमो ओकर रीढ़ तोड़ि अंगरूठ देल गेल-इ। अइ मिथिला देखि स्थिति दुनू, समाजवादी-युवावादी देशक उपनिवेशी सं अवच्छेद छैक। अइवक प्रयासक नहि के एहि स्थिति सं उपरालक एक मात्र ब्य छैक संघर्ष, जनसंघर्ष रक्त-धरी संघर्ष।

आब प्रश्न उठैत जे ई संघर्ष कत के ? लोक उत्तर छैक—मिथिलाक जनता। दुनू कति क्षेत्रक अपन पराक विधोपता होइत छैक, पराक समस्या होइत छैक आ तकर सम सं नीक आ सटीक जानकारी आही कति लोक लोक होइत अइ। तहिना सत्यक समाधान सं क्षेत्रक विकास सं लामान्वितो ओहीनामक लोक होइत अइ। कहिया शोषक-शालक के त एही में लाम छैक जे ओ क्षेत्र विशेष पिछड़ल रहे, ओइ ठामक लोक पिछड़ल रहे आ एकरा लोकनिक शोषण अवशरू से चला रहैक। आ एहीनाम बय छैक संघर्ष—शोषक आ शोषक लोक बीच संघर्ष, मुक्ति संघर्ष। मैथिली आन्दोलन उपर मुक्ति संघर्ष किन। मिथिला-मैथिल-मैथिलीक नीचाक अनिवार्य शर्त थिक।

अब क प्रश्न उठैत जे एहन अनिवार्य शर्त होइतहुँ एहि दीर्घ अवधि में मैथिली आन्दोलन कतहुँ के कइय समताओ के किछक नै प्राप्त क सकल ? विद्वान लोकनिक कह्य छैत जे इकर प्रथम कारण थिक जे प्रभाव में एकर अन्य क्षेत्रक आ ओते पसवो मानिते नहि छी, पूरा विचारक संग मानत छी। हमरा लोकनि मानैत छी जे अपन देशकें, परिवहन-पुनर्जन के छोड़ि प्रदेश केओ सेहत नहि, खराते बाइल आ इहल खगात ओकर शक्ति-सामर्थ्य के सीमित क देत छैक। तँ आइधरि जे मैथिली आन्दोलन सफल नहि भेल त सेहो सामाजिक थिक। तहिना सामाजिक थिक मैथिली आन्दोलन के प्रभाव में जम्मू लेना—कलान प्रभाव में लोकक चेतना विकसित होइत छैक, अपन माटि-पानिक प्रति भगल बढ़ैत छैक। इतिहास सही अइ जे कतेको आन्दोलनक कम एहिना प्रभाव में सेहो आ प्रभाव ओ क्षेत्र में पहुँचल ए। कतेको एहन आन्दोलनक म सुखलवैक जरूर पूर्णता-सफलता बरि संचालन प्रभाव से होइत रहल छैक आ लड़ाइ क्षेत्र में सफल भेल अइ।

इहल सन लोचि के 'मैथिली मुक्ति मोर्चा' गत बरल २३, २४ आ २५ मद्र के दक्षिणोक्त नगर प्रदेन में तीन दिन सम्मेलनक आयोजन केने छल। एहि आयोजनक एकमात्र उद्देश छैक मैथिली आन्दोलन के माटि-पानि सं कोटनार, मिथिलाक माटि आ मैथिली आन्दोलनक लक्ष लेबल।

एहि अवसर में मिथिलाक विद्वान मैथिली लेखी संस्थाक प्रतिनिधि, विद्वक संस्थाक, छात्र संस्था, राज्यक एक संस्थाक प्रतिनिधि एवं साहित्यकार लोकनि उपस्थिति छल। राज्य केन्द्राचलक मोर्चाक प्रथम कर्णालेन दक्षिणोक्त में जनप्रवाक बोधना कल्ल गेल छल तइत एतहुँ कमिटीक गठन भेल। बरल दिनक प्रोग्राम लेल गेल। बरल में संघर्ष नहि के कमिटी में विभिन्न अवलोक आ अवलोक प्रतिनिधि सभ छलाह जनिक लोकनिक मैथिली आन्दोलनक क्षेत्र में पर्याप्त नाम-बना छैन। पञ्चक क्षेत्रक संग लिखल पत्रि रहल-य जे सभ अम आ अर्थ व्यर्थ में चल गेल। प्रोग्रामक कथा त कात साओ, कमिटीक एकता बँधारी नहि भेलक। आ एहि तरहे मैथिली आन्दोलन के माटि-पानि सं बोधनाक अपन पहिल प्रयास नै मैथिली मुक्ति मोर्चा पूर्णतः असफल रहल।

मैथिली मुक्ति मोर्चाक पहिल काज १९८० के पटनाक प्रदर्शन छलक बाइ नै पटनाक निखिल भारतीय मैथिली मापी छात्र संघ एकर व्यवस्था छलक। ६

संविधान विनु मैथिलीक ओ
मानाचत्र विनु मिथिला धाम
डाहि जासि सुइहा करब हम
विद्रोही मिथिलाक जवान

मिथिलाक विभूति-१८

कवि विद्यापति

आइ सं लगभग साढ़े छहो सय बरल पूर्व मधुबनी जिलाक बिसफी ग्राम में विद्यापति ठाछुरक कम भेल छलनि। दिनक पिताक नाम गणपति ठाछुर ओ पितामहक नाम बपदर ठाछुर रहनि। दिनका नेना में दुइतरा सं लेखन कहल जाइत, ककर कतेको ठाम कब अइ।

विद्यापति नेने सं संस्कारी छलाह आ कनिजो अवस्था में पूर्ण पाण्डित्य के प्राप्त छेलनि। काव्य स्वनाक नवृत्ति सेहो हिनका नेनाहि सं छल जे बलक संगहि बद्धत आ बलक होइत गेल। हिनक प्रतिभा बहुमुली छल—ककर प्रत्यक्ष प्रमाण हिनक उपलब्ध पोथी सभ अइ। हिनक रचित पोथी के आइधरि उपलब्ध नै सकल-ए निम्न अइ :

- (१) कीर्तिस्तो
- (२) श्री परिक्रमा
- (३) कीर्ति पताका
- (४) पुष्प परीक्षा
- (५) शैव संस्कार
- (६) गंगा वाक्यावली
- (७) विभागलार
- (८) दान वाक्यावली
- (९) दुर्गाभक्ति तरंगिणी
- (१०) बालि माँकि तरंगिणी
- (११) विद्यापति पदावली

मिथिला संस्कृत पंडितक गढ़ रहल ए आ विद्यापति से हो संस्कृतक विद्वान छलाह। दिससक प्रदर्शन पूर्ण सफल रहलक तथा प्रमाणित क देलक जे मिथिलावासी सेहो अपन अधिकार लेल संघर्ष क सकैए रल सकैए। हमरा जनैत एहि में दू सन नहि भ सकैछ। अपन दोसर काज में असफल होइतहुँ मोर्चा बैसि नहि रहल। तेकर डेग भेलक देखिल बयानाक प्रकाशन। मैथिली आन्दोलनक निमित्त आन्दोलन पत्रक खसता के जातिना अस्वीकारल नहि जा सकैछ तहिना देखिल बयानाक प्रकाशन के पूर्वभर मुक्त व्यक्ति अस्वीकार नहि टा क सकन छथि। देखिल बयाना के ई आठम अंक थिक परञ्च नाइ रूपे एकर स्वागत मिथिलावल सं प्रचलधरि भेल छैक आ जेना सहायोग भेटि रहल छैक लाए के दिखी राजबेला आदि प्रवासक मैथिल कनु लोकनि सं तकरा देखि एकर दीर्घजीवनक प्रति निश्चित हमरो लोकनि निश्चय छी आ अथा करैत छी जे निश्चय नै बिलय में एकरा पाण्डित्य बनेवा में सफल भ सकब।

एतना होइतहुँ ई मानना में आपत्ति नहि जे पत्रिकाए सभ किछु नहि थिक आ एही सं मोर्चाक दायित्वक निवारि भ जेतैक। पत्रिका आन्दोलनक वातावरण तयार क सकैछ, आन्दोलन के गति प्रदान क सकैछ परञ्च मैथिलीक मुक्ति लेल बाइ छेल 'मोर्चा' क कम भेल छैक—चाही साहित्यिक आन्दोलन जे मिथिलाक माटि-पानि पर होइत। दक्षिणोक्त अवस्था सं हमरा लोकनि के एते शिक्षा अवलोक सेहो के मनीष नेता सं, विद्यापति एवं मात के अन्दरेखन कुम्भिनार नेता सं वास्तविक आन्दोलन संभव नहि। एहि लेल कागजक पत्रकक काजक के, छात्र-युवा बर्ग के आ तर छेल सीधा-समरा बाहिर गाने-नाम सभ रहलत सफल कलिय में बाधक पड़ैत। मैथिली मुक्ति मोर्चाक अगिला प्रोग्राम उपर होइत जरूर विस्तृत विवरण दिन्न प्रकाशित होइत।

अनन्य जे लिखि देनाह आन्दोलन जे दक्षिणोक्त आयोजनक समय सं 'मोर्चाक' बहुतो सहायोगी उदासीन बा पराक न भेल छथि। हुनका लोकनि सं पुनः पुनः निवेदन जे 'तेरह पक्' बला बहरी चरितार्थ नहि कायि ओ। जे सपरिहृ मैथिली-मिथिलाक मुक्ति चाहैत छथि त पहिनिह बर्ग संग मीलि काज करथि। हुनका लोकनिक स्वागत लेल सतत हमरा लोकनिक बलि पवारल अइ। संगहि तबीनी सत्या। अस्ति विद्रोह जे मोर्चाक संग काज करलाक रज्जुक होथि त हुनको स्वागत छनि। मोर्चाक गारा छैक पूर्ण स्वाधीनता अथवा मृत्यु।

—जय मैथिली